LOK SABHA DEBATES

(Tenth Session)



(Vol. XXVIII contains Nos. 31 to 40)

LOK SABHA SECRETARIAT NEW DELHI

Price : Rs. 4 00

CONTENTS

. No 40-Friday, April 19, 1974/Chaitra 29, 1896 (Saka)

ı, î		CHLAMINS
Oral Answers to Questions:		
•	1,753,754,757,758,760 and 764	1-29
Written Answers to Questions.		
Starrad Questions Nos 752,	755, 756, 759, 761 to 763 and 765 to 769	29—36
Unstarred Questions Nos.	7303 to 7346, 7348 to 7358, 7360 to 737 7379 to 7385, 7387 to 7390, 7392 to 7423, 7425 to 7446, 7448 to 7462,	1-
	7464 to 7492, 7492 to 7502'	36211
Statements correcting Answers and USQ No 2724 dated	to USQ No 5678 dated 5-4-1974 9-3-1973	211-13
Question of Privilege—	*	
	ng Information given by the Minister	213-14
Papers Laid on the Table		215
Public Accounts Committee— Reports and Minutes—Prese	nied	215-216
Committee of Privileges— Eighth Report—Presented		, 216
Discussion Re Situation in Bil	har	216366
Shri Bhogendra Jha .	•	217-32
Shri Nawai Kishore Sinha		23337
Shrı Bhagwat Jha Azad	,	237-43
Shri Satyendra Narayan Sin	ha	243-48
Shri R. P Yadav		248—53
Shri Ishwar Chaudhry		26063
Shri Jyotırmoy Bosu		26371
Shri Shankar Daval Singh		271-76
Shri Sukhdeo Prasad Verm	a ·	27680
Shri V Mavavan		28083

^{*}The signt marked above the name of a Member indicates that the question was actually asked on the floor of the House by that Member.

0									COLUMNS
Shri Jagannath Mishra								•	28387
Shri Hari Kishore Singh					•				288-92
Shri Ramavatar Shastri		610	, ,	. 43	٠.				29296
Shri D. N. Tiwary		49 2 4	•	•	•		•		297-301
Shri Chiranjib Jha .		•		, • ,	٠.				301-06
Shri Atal Bihari Vajpayee	:.`	. *	!" .						306-16
Shri Bibhuti Mishra		•	•		•	•			317-21
Shri Yamuna Prasad Man	dal				•	٠,		•	. 321-25
Shri Samar Guha .				•		•		, .	325-29
' Sardar Swaran Singh Soki		•	•					•	329-32
Shri Ram Bhagat Paswan						. •		. ′	332-34
Shri Piloo Mody	. •	•	•	•	• *	•			33438
Shri N. P. Yadav .	•		•	•				, -	338-42
Shri Trldib Chaudhuri				•		•	. ′		342-44
Shri M. Satyanarayana Ra			•	•	•	•	•		444-46
Shri Uma Shankar Dikshi	t	•	••	•		•		•	34666
Pratap Singh (ii) Prevention of Pood A of new sections 4A, 4E (iii) All India Services (A)	dul Beta	teration.) by S	on (A	mend	lment)	Bill	(Inse	rtion	366 367
	7.	idmen	t) Bil	(Inse	rtion	of new	şecti	•	
2B, 2C. etc.) by Shri V (iv) Homoeopathy Centra of eastion 2) by Shri I	Vist I Co	iwanat ouncil	h Pra (Ame	tap S	Singh	•	•	ons	367—68
(iv) Homoeopathy Centra of section 2) by Shri F	Vist I Co Iari	wanat ouncil Singh	h Pra (Ame	ndme	Singh int) Bi	II (An	nend n	ons sent	
 (iv) Homoeopathy Centra of section 2) by Shri F (v) Homoeopathy Central of sections 2, 5 etc.) b 	Vish I Co Iari Co y Si	ouncil Singh uncil (uncil (hri M.	(Ame (Ame (Ame (C. D	ndme ndmer	Singh ent) Bi nt) Bil	(An (Ai	nendm nendn	ons nent nent	367—68
(iv) Homoeopathy Centra of section 2) by Shri F (v) Homoeopathy Central	Vish I Co Iari Co y Si	ouncil Singh uncil (hri M.	(Ame (Ame (Ame (Ame	ndmendmendmendmendmendmendmendmendmendme	Singh ent) Bi nt) Bil	(An (An	nendm nendn	ons nent nent	367—68 368
 (iv) Homoeopathy Centra of section 2) by Shri F (v) Homoeopathy Central of sections 2, 5 etc.) b (vi) Homoeopathy Central 	Vish I Co Iari Co y Sh Co Sh dur	ouncil (hri M. ouncil o	(American) (American) (American) (American)	ndmendmendmendmendmendmendmendmendmendme	Singh ent) Bi ent) Bil ent) Bi		nendn nendn nendn	ons . sent nent . sent	367—68 368 368
 (iv) Homoeopathy Centra of section 2) by Shri F (v) Homoeopathy Central of sections 2, 5 etc.) b (vi) Homoeopathy Central of Second Schedule) by (vii) Code of Civil Proce 	Vish I Co Iari Co y Sh Co Sh dur	ouncil (hri M. ouncil o	(American) (American) (American) (American)	ndmendmendmendmendmendmendmendmendmendme	Singh ent) Bi ent) Bil ent) Bi		nendn nendn nendn	ons . sent nent . sent	367—68 368 368 369
 (iv) Homoeopathy Centra of section 2) by Shri F (v) Homoeopathy Central of sections 2, 5 etc.) b (vi) Homoeopathy Central of Second Schedule) by (vii) Code of Civil Proce section 80 and insertion 	Vish I Co Iari Co y Sh Co Sh dur	ouncil (hri M. ouncil o	(American) (American) (American) (American)	ndmendmendmendmendmendmendmendmendmendme	Singh ent) Bi ent) Bil ent) Bi		nendn nendn nendn	ons . sent nent . sent	367—68 368 368 369
 (iv) Homoeopathy Centra of section 2) by Shri F (v) Homoeopathy Central of sections 2, 5 etc.) b (vi) Homoeopathy Central of Second Schedule) by (vii) Code of Civil Proce section 80 and insertio Mother's Lineage Bill—Motion to consider . 	Vish I Co Iari Co y Sh Co Sh dur	ouncil (hri M. ouncil o	(American) (American) (American) (American)	ndmendmendmendmendmendmendmendmendmendme	Singh ent) Bi ent) Bil ent) Bi		nendn nendn nendn	ons . sent nent . sent	367—68 368 369 369
 (iv) Homoeopathy Centra of section 2) by Shri F (v) Homoeopathy Central of sections 2, 5 etc.) b (vi) Homoeopathy Central of Second Schedule) by (vii) Code of Civil Proce section 80 and insertio Mother's Lineage Bill—Motion to consider Shri S. P. Bhattacharyya 	Vish I Co Iari Co y Sh Co Sh dur	ouncil (hri M. ouncil o	(American) (American) (American) (American)	ndmendmendmendmendmendmendmendmendmendme	Singh ent) Bi ent) Bil ent) Bi		nendn nendn nendn	ons . sent nent . sent	367—68 368 368 369

LOK SABHA

Friday, April 19, 1974/Chaitra 29, 1896 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[Mr. Speaker in the Chair]
ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

गोरसपुर को विमान सेवा शुरु किए जाने का प्रस्ताव

*750. श्री राम सूरत प्रसाद : क्या पर्यटन ग्रीर नागर विमानन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) गोरखपुर को विमानन सेवा कब से शुरू किये उतने का प्रस्ताव है; ग्रौर
- (ख) क्या गोरखपुर के स्रायुक्त ने, जिसको प्रस्तावित सेवा के स्राधिक पहान की जांच करने के लिए कहा गया था, यह सिफा-रिश की है कि स्राधिक दृष्टि से उक्त विमान सेवा लाभप्रद सिद्ध होगी। ?

पर्यटन और नागर विमानन मंत्री (श्री राज बहादूर): (क) विमानन ईंधन के मूल्यों में अत्यधिक वृदि हों जाने तथा अपने डकौटा व वाइकाउंट विमानों का परिचालन कमशः बंद कर देने के कारण, इण्डियन एयरलाइन्स को कई स्थानों के लिये अपनी विमान सेवाएं स्थागित अथवा समाप्त कर देनी पड़ी हैं। इसलिये यह बता सकना संभव नहीं है कि गोरखपुर के लिये सेवाएं कब परिचालित की जाने लगेंगी, परन्तु मामले का पुनरालोकन किया जाता रहेगा।

(ख) इंडियन एयरलाइन्स को गोरख -पुर के कमिश्नर द्वारा की गयी ऐसी किसी जांच के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

श्री राम सूरत प्रसाद : श्रीमन्, माननीय मता जी ने जो उत्तर दिया है उस के संदर्भ में मैं यह कहना चाहुंगा कि गोरखपुर उत्तर प्रदेश के पूर्वीचल का एक ऐतिहासिक स्थान है ग्रौर जहां पर उर्वरक कारखाना, विश्व-विद्याल, मेडिकल कालेज, इंजीनियरिंग कालेज, रेडियो स्टेशन, एन० ई० रेलवे का प्रमुख केन्द्र है ग्रौर यह नेपाल की सीमा से केवल 52 मील की दूरी पर है। साथ ही साथ भगवान बुद्ध की जन्मस्थली लुम्बिनी ग्रौर उन का निर्वाण स्थान कुशोतगर भी निकट में ही हैं जहां पर विदेशी याती बराबर म्राते रहते हैं म्रीर म्रीद्योगिक उत्थान के लिए पुंजी लगाने वाले लोगों को भी इस से प्रोत्साहन मिलेगा ग्रौर वे इस तरफ ग्राकर्षित होंगे। इन बतों को ध्यान में रखते हुए क्या माननीय मंत्री जी बनारस लखनऊ की जो सेवाएं हैं, उन से सम्बद्ध कर के इस सेवा को शिष्ट्र चालू करेंगें।

श्री राज बहादुर : जहां तक गोरखपुर के महत्व का सम्बन्ध है, मैं उस को पूरी तरह से मानता हूं कि वह हर एक दृष्टिकोण से एक बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है, किन्त महत्वपू स्थान होने के साथ साथ वहां से काफ़ी माला
में यात्री धाने जाने चाहिएं धौर सामान
भी चलना चाहिएं धौर सामान
भी चलना चाहिएं धौर तिमान
भी हम ने पंचवर्षीय योजना में गोरखपुर
में सेवा परिचालन करने की व्यवस्था रखी
थी किन्तु उस के बाद जैसा कि मैं ने बताया
पयूल में बहुत वृद्धि होने के कारण हमे बहुत
सी सेवाधों को कम करना पड़ा धौर डक़ीटा
व वाइकाउंट विमानों को घाउंड करना पड़ा।
मैं विभ्वास करता हूं कि जब विग्टर का
भौड्यूल बनाएंगें, तो उम में हम इस बात
का ध्यान रखेंगें कि हम गोरखपुर के लिए
सेवा चालू कर सकते हैं या नहीं।

श्री राम सुरत प्रसाद : दूमरा मवान में यह करना चाहता हं कि गोरखपुर में बहुत पहले, मेवा चालु की गई थी लेकिन लाभ नहोने के ख्याल से उस को बन्द कर दिया था ! भ्रव मंत्री महोदय का यह ख्याल है कि वहां के लिए सेवा चलाने में लाभ नही होगा, नेंकिन मुझे जो सूचना मिली है वह यह है, कि वहां के कमिण्नर ने एक रिपोर्ट भेजी है जो उन से मांगी। गई थी, भीर उन्होंने लिखा है कि यह मेवा लाभ प्रद मिद्ध होगी। मैंने जो पहला प्रकृत किया था. उस के मंदर्भ में मैं यह बहना चाहता हं कि वहां पर यह सेवा लाभप्रद रहेगी वयोंकि वहा पर विदेशों के बहुत में यात्री ग्राते है श्रीर वहां पर सेवा चलाने में ग्राप की कोई घाटा नहीं रहेगा। वहां पर एक छ एकड़ का फार्म, जो कि सरदार नगर के मरदार साहब का है, ले लिया गया है ब्रीर हेंगर भी ले लिया गया है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हए क्या मंत्री महोदय इस पर पुनिवचार करेंगे कि वहां पर्यं सेवा चालू की जाए अगर पूर्वाचल स्थाना के खिए सेवा चालू होगी, तो उम में घाटा नहीं रहेगा और फ़ायदा ही होगा।

MR. DEPUTY-SPEAKER: 1 think you have replied to that.

SHRI RAJ BAHADUR: I want only to say that I am not aware of the Commissioner's Report.

SHRI NAWAL KISHORE SINIA: Sir, may I know from the hon. Minister that there is a feeling in some of the most populous parts of the country like Gorakhpur that his Ministry is not interested in the development of communication and industrial expansion in those parts and always finds some excuse to stop a flight?

SHRI RAJ BAHADUR: I may assure him there is no lack of interest in providing air communications to different parts of the country but air services have to be viable by and large.

Shortage of Small Coins

•751. PROF. NARAIN CHAND PARASHAR:

SHRI BISWANARAYAN SHASTRI:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) the total number and face value of small coins in circulation in the Country as on the 31st December, 1973;
- (b) whether Government sre aware of the shortage of the small coins; and
- (c) the steps proposed to be taken to meet this shortage?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) The details of small

	Decimal coir	18		(000's Omn	nitted)	
Value in Rupees	50 P.	25 P.	20 P.	1 o P	5P	
varue in Rupees	30,49,81	30,41,73	8,03,77	29,91,02	19,39,89	
No. of pieces	. 60,99,62	121,66,92	40,18,85	297,10,20	387,97,80	
		3 P	2P	τP	Total	
		4,57,89 152,63,∞	7,85,10 392,55,00	5,66,89 566,89,00	136,16,10 2020,00,39	

- (b) No report of shortage of small coins in the country has been received by the Government in the recent past.
- (c) Government is continuing its efforts to turn out larger quantities of small coins in the Mints and increase the not issue to the public through the Reserve Bank of India. Steps have also been taken to introduce a second shift in the Hyderabed Mint and for the expansion of the Mint during the 5th Five Year Plan period.

PROF. NARAIN CHAND PARA-SHAR: I am simply surprised and shocked at the answer to part (b) of the main question that there is no shortage, because the entire country is experiencing this shortage, and this shows that the Finance Ministry is not in touch with the pulse of the people. May I know whether Government have taken care to probe into the causes of this shortage? Formerly, the copper coin's were melted and sold as metal. But now what is the cause of the shortage? In fact, the hon. Minister's reply to part (c) of the question implies that Government are aware of the shortage and that is why they are going to have larger quantities of these coins.

SHRI K. R. GANESH: When I made the specific statement that there had been no shortage in the country, it was based on the following facts. As the House was aware, in June, 1970, the shortage was found out. Then, it

became widespread in the beginning of 1971 and it continued thereafter, and steps were taken by the Reserve Bank and by the various mints to find out the reasons for the shortage reasons have been mentioned in the House on a number of occasions. The shortage declined from 1971 and since June, no specific complaint has been received by the Finance Ministry or by the Reserve Bank. Between 1973 and 1970 complaints used to come and they used to be looked into, and the Reserve Bank made many arrangements to send small coins to various depots and open more depots. Reserve Bank is still sending small coins to banks, to institutions, to transport depots, and to various commercial establishments. Since no specific complaint has come to light, therefore, we come to the conclusion that the shortage has been minimised to a considerable extent.

PROF. NARAIN CHAND PARA-SHAR: Does the Finance Ministry act only on the complaints specifically received, or has it got any machinery to find out for itself whether there is any shortage or not? If there is none, may I know whether the hon. Minister has any proposal to set up one for this purpose?

SHRI K. R. GANESH: Since the complaints were there is very large number when the shortage started, a large number of coins have been put into circulation. There were mainly

two reasons for the shortage, Firstly, certain coins had more metallic value than their face value and hence there was large-scale melting of those coins for various other purposes, and as a result of this, a psychology of shortage was also there. These reasons have been gone into and the metallic value of some of these coins of 10 paise, 25 paise and 50 paise denominations has been changed so that the metallic and face values are almost identical at this moment. Further, the Small Coins Offences Act has come into being and the necessary legal machinery is now there to look into these things. Formerly there was no Act before this question had come up. So, that is also being attended to now. Further, more coins have also been into circulation. Earlier, mints were producing 12 lakh pieces per day. By August, 1970 as a result of the augmentation of the shifts etc. the mints are producing 75 lakh pieces per day. As a result of this very large increase in production and their going into circulation, it can reasonably be said that the matter has, to an extent, been attended to.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Shamim, on condition that you do not ejaculate from your seat again.

SHRI S. A. SHAMIM: I was shocked to hear from the Minister that there is no shortage. Now he has improved upon it by saying that no specific complaints have been received. The fact of the shortage of coins is known to every member of this House and to the country at large. The fact that we are experiencing it in our daily life is enough proof of it. I would like to know from the Minister who, in the absence of specific complaints, informed him that there is no such shortage. Does he or does he not know that for every telephone call we have to use 30P in coins at the public telephone booth? Even if you waste half an hour, you will not be able to get three 10 P coins. Lastly, a Government which cannot provide small coins, let alone the question of food, railway, airlines and others, has no moral right

to exist. What moral right has this Government to exist in these circumstances? I have to pay the scooterwala for 60P fare Re. 1 because he does not have change.

SHRI K. R. GANESH: As to the specific question as to who informed us that there is no shortage, my reply is that the various State agencies, State Governments and the Reserve Bank of India have done so.

SHRI S. A. SHAMIM: What about the people?

SHRI K. R. GANESH: The fact that we who have been receiving complaints from 1970 onwards have not received specific complaints in this regard proves this.

SHRI S. A. SHAMIM: You have not received any complaints from Bihar also. But you have killed so many people there.

MR. DEPUTY-SPEAKER Please co-operate. This is not the way to conduct the proceedings. I want your co-operation.

की हुकम चन्द कछवाय : उपाध्यक्ष महोदय, में आप के माहमम से मंत्री महोदय से जानना चाहना हूं कि जिम ममय मुक्ता जी वित्त मंत्रालय में उपमंत्री थे. उन्होंने मदन में कहा था कि जो मिक्का गलाने वाले हैं, उन के खिलाफ़ मजा का कोई नियम नहीं है, इसलिय वे शीघ ही कानून बनाने जा रहे है। मैं जानना चाहना कि हूं कि वह कानून कब तक बनाने का विचार है...

एक माननीय सदस्य : वह कान्न तो बन चुका है।

श्री हुकम चन्द कछवास . सगर वन गया है तो उस पर कितना समल हुसा है, कितनों के खिलाफ़ कार्यवाही की गई है ? साप जो सिक्के इस समय बना रहे हैं वे घटिया किसम की धातू के हैं, इन सिक्कों का जीवन स्रिक्ष लस्बा नहीं है । इन सिक्कों का जीवन स्रिक्ष लस्बा हो, इस दृष्टि से क्या श्राप किसी अन्य धातु के सिक्के बनाने पर विचार कर रहे हैं ?

SHRI K. R. GANESH: The House is aware that the Small Coins (Offences) Act has come into force. Over and above this, in December 1971 the Defence of India Rules were promulgated under which also, melting, hoarding etc. of coins are punishable offences. In all 14 persons involved in 5 cases of offences under the Small Coins (Offences) Act since 1971 have been arrested in Delhi, UP and Maharashtra. The cases are going on.

श्री हुकम चन्द कछवाय : मेरे प्रश्न के दूसरे भाग का उत्तर नहीं आया । ये जो सिक्के बनाते हैं, वह घटिया धानु के हैं. जिन से उन सिक्कों का जबन अधिय लम्बा नहीं होता, क्या किसी अच्छी धानु के सिक्के बनाने का विचार है ?

MR. DEPUTY-SPEAKER: This relates to shortage of coins. Your other question relates to the quality of the present coins. It is a different thing altogether and so does not arise.

श्री हुकम चन्द कछवाय: ऐसालगता है कि मैं हिन्दी श्रापको श्रच्छी तरह समझा नहीं सकता

SHRI JAGANNATH RAO: From the point of view of the Reserve Bank, there may be no shortage of small coins in the country because a large number of coins is being minted. Only 14 cases have come to the notice of Government and action taken under the DIR. May I know what is the minimum quantity or maximum quantity of small coins for hoarding for which these 14 persons have been prosecuted?

SHRI K. R. GANESH: Those persons who were arrested by the various State Governments, and so I do not have the necessary details.

SHRI H. M. PATEL: Some three years ago, the Minister stated in the House that the small coins shortage

will disappear within a matter of two months as a result of steps Government had decided to take. But the shortage nevertheless still continues. It may not be as acute as in 1971 but it certainly is there. Therefore, the question is, why is it that the assurance that was given has not up till now been implemented and what steps have Government still in mind. they deny that there is a shortage, then all one can say is that their impression is wrong, and even if more coins are now being minted, even larger numbers must be minted here-Will the Government please indicate why it is that they have not fulfilled the assurance that they had then given?

SHRI K. R. GANESH: I think from the body of my replies which have been placed before the House from what the hon. Member himself was saying, namely, that any shortage today may not be, according to him, as acute as it was in 1971, his questions have been answered. I have already indicated the various steps that are being taken, namely, increasing the issue from 14 lakhs to 75 lakhs pieces per day, double shift being run in various places, the content of the coin being changed so that melting does not take place, and so on. There is a projection also for the future.

SHRI H. M. PATEL: The fact of shortage must be borne in mind by them and even though they may have increased the production they should increase it still more.

SHRI P. GANGA REDDY: May I know whether the hon. Minister is aware that there has been great pressure on these small coins in Maharashtra and Madhya Pradesh and in the Hyderabad Reserve Bank, because I myself personally had been to the Reserve Bank in Hyderabad on the 4th May last and found the difficulty.. (Interruptions).

MR. DEPUTY-SPEAKER: All right; your question is whether he is aware of shortage of small coins in Ardhra Pradesh and other places.

SHRI P. GANGA REDDY:.. I want to know whether he is in a position to supply more small coins.

SHRI K. R. GANESH: This information that the shortage still persists in Maharashira and Andhra Pradesh, we will inform the Reserve Bank so as to see that the shortage is removed.

श्री रामावतार शास्त्री: उपाध्यक्ष जीं क्या यह सच हैं कि आगरा, दिल्ली श्रीर देण के कुछ दूसरे भागों में रेजगारी छिपाकर रखने वाले गिरोह समय समय पर पकड़े जाते रहे हैं? यदि हा ता पिछले दो वर्षों में ऐसे गिरोहों के पास से कितनी रेजगारी बरामद की गई है और इस तरह के गिरोहों को रोकने के लिए आपने कीन सी कार्यवाही का है ताकि जो रेजगारी छिपाकर रखी जाती है यह ब्यापार बन्द हो सके।

SHRI K. R. GANESH: I have already indicated that 14 persons involved in five cases of small coins have been arrested in Delhi, Uttar Pradesh and Maharashtra. I may also inform him that small coins worth Rs. 79,154,94 were seized by the State Governments during police raids on unauthorised premises of persons engaged in hoarding and profiteering.

MR. DEPUTY-SPEAKER: He has given some tips for your consideration.

SHRI K. R. GANESH: We till take them into consideration.

SHRI SAMAR GUHA: The Minister says there is no shortage and there is no specific complaint. I want to make an honourable offer to the hon. Minister and I want to know if he will accept it. Will the hon. Minister honourably keep his identity undisclosed, and by sending any person to the market, if he can get a change within two hours for this five-rupee note, then I offer this sum of Rs. 5 to the austerity fund of the Government. I am prepared to contribute it. Will the Government accept this offer?

MR. DEPUTY-SPEAKER: It is a suggestions for action. (Interruptions). You have made a suggestion. (Interruptions). Order, please, Shrimati Lakshmikanthamma.

SHRIMATI T. LAKSHMIKAN-THAMMA: Mr. Samar Guha said he wanted to have change for Rs. 5.

MR. DEPUTY-SPEAKER: You are not asking Smar Guha. You have no question.

SHRIMATI T. LAKSHMIKAN-THAMMA: Sometime back there was some trouble but is it a fact that now it is not so bad as it is sought to be made out?

MR. DEPUTY-SPEAKER: The hon. lady Member has no question... (Interruptions). Gentlemen are hard enough; if ladies are hard it becomes very difficult for me. Madam, you wanted to go on record and you have gone on record. Shri Shankar Dayal Singa.

श्री शंकर बयाल सिंह : मान्यवर, मैं आपके माध्यम से मन्त्री जी से जानन चाहता हूं छोटें सिक्कों का श्रावटन किस प्रान्त मे या किस नगर में किस श्राधार पर किया जाता है तथा पिछले एक माल में सबसे श्रीधक छोटें सिक्कों की खपन किस प्रान्त में श्रीर किस नगर में हुई हे ?

MR. DEPUTY-SPEAKER: It is a different question; you require notice for that. Next question.

Demand of Engineering Goods abroad

-

753. SHRI MUKHTIAR SINGH MALIK:

SHRI S. N. MISRA-

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

(a) whether Government have made any study about the increase in demand of Indian engineering goods in world market: and

MR. DEPUTY-SPEAKER. You require notice for that.

(b) the steps Government propose to take to step up production of engineering goods for export?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Yes, Sir.

(b) Steps taken to strengthen base for export production have been laid down in Section I parts 'A' and 'B' of the Import Trade Control Policy for Registered Exporters (Volume II) for 1974-75; a copy of which was laid on the Table of the House on the 2nd April, 1974.

SHRI MUKHTIAR SINGH MALIK: Time and again the hon. Minister of Commerce and the hon. Minister of Industrial Development have declared that foreign collaboration proposals involving foreign financial participation would be cleared as early as possible if 60 per cent or more of the production of engineering goods is guranteed for export. Perhaps the hon. Minister will agree that several such proposals had been received by the Government for the manufacture of engineering goods for export and they are awaiting a decision by the Government for more than 11 years. Why does not the Government accept such proposals with a high level of exports? May I also know whether the Government had rejected several proposals for the manufacture of engineering goods where exports would have been more than 60 per cent"

SHRI A C. GEORGE: It is true that as an incentive for higher export of engineering goods it has been decided to allow foreign collaboration of 60 per cent export is guaranteed. I hope the hon Members will appreciate that in the matter of foreign collaboration a blanket decision cannot be taken and it has to be examined in depth and from different angles. Quite possibly there might be some delay. He has asked how many applications have been rejected. Since it is a specific question....

SHRI R. V. SWAMINATHAN: May I know, after the study by the Government, what are the types of engineering goods that have increased demand in the world market, and which are the countries where there is good potential for export of these goods?

SHRI A. C. GEORGE: Sir, it may be a long list. But, I will take only some important items. They are auto and auto parts, industrial rlant and machinery, electrical wires and cables, railway wagons and coaches, MS tyres and tubes, bicycle parts etc. These are the important items. I have taken only those items, where the export is more than Rs. 10 crores. Regarding the countries, it is a global phenomenon almost, so to say.

Trade Pacts with Communist Countries

*754. SHRI BHARAT SINGH CHOWHAN: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state the number of trade pacts entered into with the countries in the Socialist block during the last year and the date and nature of each pact?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): A statement is laid on the Table of the House.

Statement

Trade Plans for 1974 have been concluded with the eight socialist countries during the year on the dates shown below:—

St. No	Country	Date of signing the Trade Plan
t.	U.S.S.RY	21st January, 1974
2.	Poland .	7th December, 1973
3.	Czechoslovakia.	28th November, 1973
4.	G. D. R	23rd November, 1973

1	2	***********	3
-	Hungary	•	14th December,1973
6.	Bulgaria ,		15th November, 1973
7.	Romania		22nd October, 1973
8.	DPRK	•	18th February, 1974

These Trade Plans provide for India's exports to these countries and imports therefrom during the calendar year 1974 on a balanced basis. In preparing these Trade Plans, special attention is paid to promotion of exports of non-traditional items and import of important requirements of our economy such as fertilizers, steel and steel products, non-ferrous metals, petroleum products and industrial materials, etc.

In addition, long-term Trade and Payments Agreement with Bulgaria was signed on the 6th March, 1974. This provides for bilateral and balanced trading pattern between the two countries for a period of five years 1974—78, and payments for all commercial non-commercial transactions in, non-convertible Indian rupees.

बी भारत सिंह चौहान : स्टेटमेट में यह बनलाया गया है कि कम्यूनिस्ट कर्न्ट्रांज के साथ प्रायात ग्रीर निर्यान के संबंध में ज्यापार समझीता हुआ है, उन के नाम दिए हैं. नो में यह जानना चाहता हूं कि जो ग्रायान इन देशों में हुए हैं. जो भी चोजे ग्राई है वह ग्रन्य देशों में ग्रगर मंगाई जाती तो उस में क्या ग्रांतर होता ?

SHRI A. C. GEORGE: Sir, the trade with socialist countries are guided by annual trade plans and in each trade plan, we fix up items which are needed by the country for import as well as export items needed by the concerned countries for their requirements. All these imports are made only after strictly looking into the prices and there is no item where imports are made at a price higher than from other sources. The international price is well kept in mind.

श्री भारत सिंह श्रीहान : ऐसे कई उदाहरण हैं कि कम्यूनिस्ट कम्ट्रीय से जो ट्रैक्टर घाए या फैक्ट्रीय के लिए मशीनें धाई जैसे हमारे मध्य प्रदेश के कोग्बा में जो मशीनें धाई हैं उन में एक न एक डिकेक्ट रहता हैं, तो क्या इस संबंध में शासन ने विचार किया है कि इस तरह की राटेन चिजे इंडिया में भेजी जाती है श्रीर ऐसी कई शिकायतें धा चुकी हैं कि ट्रैक्टर भेजने है तो टायर नहीं भेजते है, तो क्या इम नग्ह का समझीता कग्ने में इस देश को फायदा हो सकता हैं ?

SHRI A. C. GEORGE: Sir, first and foremost fact is, tractors are not now imported. They might have been imported earlier. About the machinery that have been imported for the Korba project, we have not received any complaint about the quality.

SHRI SAMAR GUHA: I would like to know, whether the attention of the Government has been drawn to a news item that has been circulated by New China News Agency on the 14th April and this has appeared in almost sil the Indian newspapers on the 15th April. Sir, the news item which relates to India, says:

"India has had to pay 20 to 30 per cent more for Soviet machinery and industrial products sometimes even treble than the prevalent international market price".

It also says:

"The price of raw materials imported into Soviet Union from India is 20 to 30 per cent lower than those at the international market."

If so, will the Government make a factual study and let this House knew whether there is any basis for those allegations. I use the word 'allegations' because it has not been proved-contained in the news item circulated by New China News Agency?

SHRI A. C. GEORGE: This particular item has come to the notice of the Government, as soon as it was published, obviously as the hon. Member pointed out, in almost all the Indian newspapers. It is not borne out by facts and more so, on a careful examination of the allegations, it is seen that there are no specific items pointed out, either exports or imports. All the items that have been imported from Soviet Union have been at competitive rates and it has been to the advantage of both India and Soviet Union.

SHRI SAMAR GUHA: I used the word 'allegation'. He should not be so prompt in his reply. I would like to know, whether Government will make a study.

MR. DEPUTY-SPEAKER: They have studied this.

SHRI SAMAR GUIIA: He has rot studied this.

MR. DEPUTY-SPEAKER: You can study it again.

SHRI SAMAR GUHA: It is a very verious thing, if there is any basis in it.

MR. DEPUTY-SPEAKER: What else do you want? I told him to study it. If you have studied it already, study it again.

SHRI SAMAR GUHA: Will the Government make a study in depth?

MR. DEPUTY-SPEAKER: You study it in depth again.

SHRI BHOGENDRA JHA: In view of the fact that we have a rupee payment trade with the socialist countries and prices are fixed on a competitive basis, may I know whether Government have already made it or are going to make it a policy that we must have our imports from rupee payment countries to save foreign exchange?

SHRI A C. GEORGE: Every day our trade with socialist countries is going up. It is to the interest of Iudia

and of the other country also. Ultimately in a spirit of goodwil, we come to a solution which is mutually advantageous to both. The import items are definitely advantageous to us.

SHRI DINEN BHATTACHARYYA. The Government of India made a trade agreement with 8 socialist countries on rupee payment basis. During this period, have the Government made any trade agreement on rupee payment basis with USA or any other country in Europe?

SHRI A. C. GEORGE: There is no trade on rupee payment basis with the USA or any other country in Europe.

SHRI B. K. DASCHOWDHURY: In view of the encouraging trends in both import and export trade with socialist countries, I would like to know whether all these export and import trading activities are being controlled by public sector undertakings like STC?

SHRI A. C. GEORGE: Most of the exports are controlled by public sector organisations. But there are some items exported through the private channel also.

SHRI MOHANRAJ KALINGARA-YAR: There was a trade pact between Czechoslovakia and India for importing 20,000 tractors. Has the consignment been completely delivered? Some of the imported tractors do not have spare parts.

SHRI A. C. GEORGE: We have decided not to import tractors because our indigenous capacity has come up very well. We were importing tractors from some East European countries, but now we have stopped it.

SHRI MOHANRAJ KALINGARA-YAR: I put a specific question whether the consignment of 20,000 tractors is completely over.

MR. DEPUTY-SPEAKER: He says it has been stopped now. Next question.

Production and Distribution of Standard Cleth

*757. SHRI BHOGENDRA JHA: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state the estimated minimum annual requirement of controlled cheap cloth for those below poverty line and the specific steps being taken to ensure the required production and proper distribution?

THE MINISTER OF COMMERCE (PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA): According to the approach document for the Fifth Plan, the requirement of cotton cloth by people in the per capita expenditure class of upto Rs. 50 per month, during 1973-74, is estimated at 2,570 million metres annum, which is mostly of coarse and medium cloth. The production of such cloth of wearable varieties the mill sector alone is around 3,000 million metres per annum, out of million metres per annum, out of will, from the 1st April, 1974, constitute controlled cloth sold at controlled prices. This cloth is only to be distributed through approved retail channels.

SHRI BHOGENDRA JHA: In view of the reply given by the Minister that there is dearth of such cloth for people below the poverty line, which he has fixed at Rs. 50—I think it should be much beyond that in today's rising prices—is there any proposal to ensure through rationing that the actual users below the poverty line do get it? Could the retail shops be put under the supervision and control of the popular committees to ensure proper distribution?

PROF. D. P. CHATTOPADH-YAYA: We are not satisfied about the quantity available. So, I would not claim that it is adequate to meet the requirements of the category I have referred to. But the increase in the quota of this variety from 400 million metres to 800 million metres is a big step forward. We will try

to increase it still further later on. Coming to distribution, to reach three-fourths of our population is not a very easy thing. Bearing in mind the magnitude of the complexities of the problem, we are in touch with the State Governments, other agencies and also fair price shops. We are doing this exercise as to how many agencies, government or quasi-government, could be involved. We are processing the scheme. So, I cannot give a final reply just now.

MR. DEPUTY-SPEAKER: What about the popular committees?

PROF. D. P. CHATTOPADH-YAYA: We will certainly examine this.

SHRI BHOGENDRA JHA: The hon. Minister stated that there is a big gap between demand and supply. In view of this reality, may I know whether the quantity of coarse cloth to be produced by the private mills is going to be increased to ensure that the minimum requirements are met? Is the Minister aware of the fact that the mill owners are spreading the news, which you would call a rumour. that several crores of rupees been taken by the ruling party during the UP elections, and that is this 30 per cent price hike has been allowed? If so, may I know whether it is true?

PROF. D. P. CHATTOPADH-YAYA: It is absolutely baseless. We had occasion to explain on the floor of the House the reasons for the price rise. During the last six months, from 1968 to 1974 the cost of production of controlled cloth has risen by about 87 per cent, according to our estimate, and about 100 per cent according to them.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The most important question is about the rumours spread by the mill-owners about the collection of money.

PROF. D. P. CHATTOPADH-YAYA; It is absolutely baseless.

SHRI BHOGENDRA JHA: The first part of my question was whether the quantum is going to be increased.

MR. DEPUTY-SPEAKER: He has said so.

श्री शकि भूषण : उपाध्यक्ष महादय, स्टैन्डडं क्लाथ पर्याप्त माता मे देश मे नहीं मिलता है, उस का ग्रभाव है। उस का डिस्ट्रीं ब्यूशन भी मुनासिव नहीं है। में माननीय मती महोदय में यह जानना चाहूगा कि सूपीरियर क्लाथ जो इस देश में बनता है विकत बहुत बड़ी माता में बनता है लेकिन स्टैन्डडं क्लाथ कम बनता है, जो फ़ाइन क्वालिटी क्लाथ बनाने वाले मिल्स है, उन पर कोई बिदश लगाने की बात है कि वह ज्यादा से ज्यादा स्टैन्डडं क्लाथ बनाए ताकि लोगों को ग्रामान, से वह प्राप्त हो मके ?

PROF. D. P. CHATTOPADH-YAYA: This obligation has been imposed on all mills, whether government or not. There is a provision for setting off of control cloth obligation against export also. This will be in the ratio of 3:1 beyond the obligation to export and to produce controlled cloth and there is provision for inter-mill transfer. So, nobody has been exempted. Those who will not fulfil the obligation will have to pay Rs. 2.50 per metre, as against Re. 1 formerly. We have taken care of all contingencies.

SHRI P. M. MEHTA: Because of the price rise allowed by the Government, the coarse cloth or standard cloth has become costlier. When the textile industry has earned huge profits in the year 1970, what are the reasons for giving this price rise?

SHRI JYOTIRMOY BOSU: How much did you collect from them?

PROF. D. P. CHATTOPADHLYAYA: No money at all. As I have explained, the cost of production of cloth has increased by about 90 per cent and 103 mills have fallen sick, which had to be taken over by the Government. The price rise was allowed because of the high cost of production.

SHRI D. N. TIWARY: It is seen from the Approach Document to the Fifth Plan that the per capita availability of cloth has gone down by more than a metre from June 1969. What is the reason for it? Is the Government going to take any steps to increase the per capita availability of cloth?

PROF. D. P. CHATTOPADH-YAYA: The fall in per capita availability is due to the fact that the increase in production has not kept pace with the increase in population. We have taken a policy decision for substantial expansion of investment in the textile industry.

SHRI TRIDIB CHAUDHARI: The hon. Minister just now mentioned that about 103 sick mills have been taken by the Government. Is there any proposal under the consideration of the Government that the productive capacity of these mills would be utilized for the production of only coarse cloth or cloth of cheap variety?

PROF. D. P. CHATTOPADH-YAYA: As I have submitted, the cost of production has not been neutralised by the price rise allowed by us. So, if we force the NTC mills to produce exclusively standard or coarse cloth, they may run into difficulties. So, this obligation has been dispersed over all mills, both private and public.

Equity Participation of S.T.C. in Small Scale Industries Corporations

+

*758. SHRI YAMUNA PRASAD MANDAL:

SHRI RAM PRAKASH:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether State Trading Corporation has decided in favour of equity participation in the Small Scale Industries Corporations of various States; and
 - (b) if so, the reasons therefor?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Yes, Sit.

(b) The participation in equity capital of the State Small Scale Industries and Export Corporations will enable the STC to participate and strengthen the management of these Corporations. The effectiveness of the Small Scale Industries Corporations as agents for distribution of imported raw materials and in the production of exportable commodities can as a consequence be increased.

SHRI YAMUNA PRASAD MANDAL: Will the hon. Minister kindly tell the august House what are the States where the equity participation capital has been issued in favour of different State Small Scale Industries and Export Corporations by the S.T.C.?

SHRI A. C. GEORGE: Rs. 10 lakhs equity capital for the Maharashtra Small Scale Industries Corporation; Rs. 1 lakh for Andhra Pradesh Small Scale Industries Corporation and the proposal is under consideration for equity participation in the Small Scale Industries Corporations of Mysore, U.P., Haryana, Rajasthan and for the Gujarat Export Corporation also.

SHRI YAMUNA PRASAD MANDAL: So, the poorest State of Bihar has been left out, unfortunately. Is it not a fact that the efforts made during the last 10 years for the participation of equity capital in the State Small Scale Industries Corporation particularly in Bihar by the S.T.C. has not made any progress whatsoever?

SHRI A. C. GEORGE: Unfortunately, the files and records of our Ministry do not show a single application either from the Bihar Government or from the Bihar State Industries Corporation for participation.

बर्ष 1974 क दोरान पटसन फिल्लों महडताल

*760. श्री मूलवन्द हागा क्या वाणिज्य मत्नी यह तताने की कपा करेगे कि:

- (क) वश 1974 से ब्राजनक पटसन मिलो में हड़ताल कितने दिन तक चसी श्रीर इसके परिणामस्बन्ध उत्पादन में कितनी क्षति र्डं ; र
 - (ख) कर्मचारियों की मागे क्या है ?

THE MINISTER OF COMMERCE (PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA):
(a) 33 days; the estimated loss in production is about 1 lakh tonnes of jute goods. valued at around Rs. 30 crores.

(b) The main demands of the workers were (i) non-implementation of certain items of May 1972 settlement signed by the Management of jute mills and workers; (ii) revision of piece-rates, time-rates; and grades/scales of certain categories of workmen; (iii) standardisation of workenen; (iii) standardisation of workers and DA in respect of jute workers on all India basis; (iv) relief to Badli workers; (v) 20 per cent bonus; and (vi) nationalisation of jute industry and raw jute trades etc.

भी सल चन्द्र शाना : उपाध्यक्ष जी, 30 करोड़ का घाटा हुआ और 33 दिन हड़ताल चली । तो उस के पहले सेट्ल गक्निमेट ने इंटरवीन क्यों नहीं किया ? वह ऐग्रीमेट इन-राइटिंग था और 1972 में माइन हो चुका था उस के बाद ग्राज तक 30 करोड़ का चाटा डालने के पहले सेंटर ने इंटरबीन क्यों नहीं किया ? क्या कारण है ?

PROF. D. P. CHATTOPADH-When the YAYA: discussion was there, I was myself present and I was a party to the discussion. Also, the Union Labour Minister was consulted; he was in touch with the discussion. But since these were located in eastern India, particularly, in West Bengal and the Ministry of the State was conversant with the details of the problems and they had also negotiated the settlement of 1972 which had allegedly been violated, we thought that for day-today handling of the negotiations, they would be the right type of persons. It is not that they alone looked into it and we were not consulted.

About the loss, as I have said, it is a matter of fact and we regret it. But the question is, unless the industrial relations are sorted out by the industry and the workers themselves, the Government can only try to sort them out but cannot force them.

श्री मल चन्द हाना : हिन्दुस्तान में जो जुट बर्कर्स है भिन्न भिन्न स्थानों पर उन की बेजेज एक है या ग्रलग भ्रलग हैं?

standardisation of about wages of workers in different parts of India?

CHATTOPADH-D. P. PROF. YAYA: In 1972 settlement there was, more or less, parity all over the country. But this time they insisted on

standardisation, on a uniform basis. In principle, the Government agreed, but in practice there are some difficulties—in implementing However, this is the latest position.

श्री हकम चन्द कछवाय : ग्रभी मंत्री जी ने प्रम्न के उत्तर में बनाया कि जो ऐग्रीमेट हुन्ना है वह कुछ हद नक पूरा हो गया है । मैं जानना चाहता हं कि कितना बाकी रह गया ? नया यह बात सही है कि पूरा लाग नहीं करने के कारण लोगों में असंतोष है और क्या आप इस तरह की कोई नीति बनाने वाले हैं कि जब हडनाल की नोटिस ग्राए उस समय तन्काल कार्यवाही की जाये?

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA: About Badh workers, about piece rate and time rate, some agreements were arrived at. But the Union's contention is that those have not been implemented cent per cent.

SHRI DINEN BHATTACHARYYA: one of the demands, which the hon. Minister very well knows and which concerns him, is the take-over raw jute trade. May I know whether it is within his knowledge-as a matter of fact in the paper his statement has come—that the growers are not getting the support prices fixed by the Jute Corporation at the instance of the Central Government? If so, may I know whether he is taking any steps diately to see that the actual jute growers get the prices which have been assured to them by the Government of India?

P. CHATTOPADH-PROF. D. We have already expanded the area of operation of the Jule Corporation of India and more and more jute is being purchased by the Corporation. The question of taking over of raw jute trade entirely does not arise.

Appointment of Contractors in International Airports for carrying Luggage of Passengers

*764. SHRI B. K. DASCHOW-DHURY: Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

- (a) whether the International Airports Authority of India has appointed contractors in four International Airports of the country for carrying the luggage of passengers;
- (b) whether any open tender for the contract was invited for the purpose; and
- (c) whether the contractors are big air-operators like Jam Air Company and in all four airports same firm is given the contract only in different names?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR): (a) Yes, Sir, from the city side to the booking counter and from the point of delivery to the transport outside only.

- (b) Tenders were invited through newspapers for all the contracts excepting for the domestic wing at Calcutta airport where the contract was settled through negotiations.
- (c) I lay a statement on the table of the House showing the names of the contractors at the international airports.

Statement

Names of the porterage contractors at the international airports.

				International Wing	Domestic Wing
Delhi				M/s. Cambatta Aviation Pvt, Ltd.	M/s. Jamair. Co (P) Ltd.
Calcutta	•	•	•	M/s. Air Terminal Services Pvt. Ltd.	M's. B. Ghosh & Son.
Bombay				M/s. Cambatta Aviation Pvt. Ltd.	M's. Kleenwel (India)
Madras			•	M/s. Asian Air Associates .	M/s. Suja Commercial Agency

SHRI B. K. DASCHOWDHURY: I would like to know from the hon. Miruster what are the dates when the advertisement for the contracts appeared in the newspapers except Calcutta; secondly, what was the reason for entering into a negotiated settlement without putting this matter in an open advertisement; thirdly, what is the total amount that the International Airport Authority is going to realise from those contractors so far as major international airports are concerned, both the international wing and the domestic wing.

SHRI RAJ BAHADUR: The question is a very comprehensive one. I can give the number of tenders re-

ceived for international airports: Delhi 3, Calcutta 1, international side, Bombay 9, Madras 3...

SHRI B. K. DASCHOWDHURY: What are the dates when the advertisement appeared?

SHRI RAJ BAHADUR: I do not have that information.

SHRI B. K. DASCHOWDHURY: As a matter of fact, it was not published.

SHRI RAJ BAHADUR: I have given the statement. Tenders were invited through newspapers. As many as 20 have been received. Domestic side—20 parties at Delhi

offered tender and in Calcutta 2 parties came and they both belong to the labour side. Madras—as many as 5 tenders were received....

MR. DEPUTY-SPEAKER: You may pass on the rest of the information to him. Now the Question-Hour is over.

WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

Non-Lifting of Bales by Shippers at Bombay Dock

*752, SHRI C. K. JAFFER SHA-RIEF: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state:

- (a) whether Government are aware that four ships, which had firm bookings to lift about 25,000 bales of Bengal Deshi Cotton from Bombay, have left without the cargo, as the exporters could not reach them to the docks; and
- (b) if so, whether Government would be losing valuable foreign exchange thereby at a time when exports are the prime need of the hour?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) and (b). It is understood from Textile Commissioner that one or two ships left Bombay last one month which could not lift about 20,000 bales of Bengal Deshi cotton. But the cargo has been subsequently shipped by other steamers.

India's Participation in Colombo Meet

*755. SHRI ARVIND M. PATEL: SHRI D. P. JADEJA:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether India attended the Colombo meet held during last week of March this year; and
- (b) if so, whether any agreements have been signed by India?

THE MINISTER OF COMMERCE (PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA):
(a) India attended the 30th Session of the United Nations Economic Commission for Asia and the Far East (ECAFE) held at Colombo from 27th March to 6th April, 1974.

(b) Yes, Sir. An agreement for the establishment of an Asian Clearing Union (ACU) was signed at this Session by the Reserve Bank of India.

Difficulties faced by Govt. Employees in regard to Production of House Rent Receipts

*756. DR. H. P. SHARMA: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether there has been any proposal to raise the pay-limit for Government employees for purposes of payment of House Rent Allowance to them without the production of House Rent receipts, above Rs. 750 in revised and Rs. 530 in old scales; and
- (b) if so, the decision, taken in this regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K R. GANESH): (a) and (b). The pay limit upto which the production of house rent receipts was dispensed with for grant of house rent allowance was Rs. 628 (inclusive of dearness pay) in the scales in force before the introduction of the revised pay scale consequent on Third Pay Comnussion's recommendations. With the introduction of the revised pay scales, Government have decided in improvement of the recommendation of the Third Pay Commission that the pay limit should be revised Rs 750 Some representations have been received with reference to this decision asking inter alia that this concession should be extended to higher pay groups. These are being examined.

Disposal of properties in claudestine , manner by Fereign Companies

*759. PROF. MADHU DANDA-VATE:

SHRI VIKRAM MAHAJAN:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether many sterling companies in India are resorting to clandestine deals through which they dispose of their properties and drain out the foreign exchange; and
- (b) if so, what steps are taken to prevent such malpractices?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): (a) and (b). Under Section 31 of the Foreign Exchange Regulation Act, 1973 no foreign company can hold, acquire or dispose of property in India without the prior approval of the Reserve Bank of India. Applications for disposal of property are scrutinised with reference to the valuation of the assets, etc. and permission given. These powers came to be acquired from 1st January. 1974 and are adequate. While Government have not come across instances of clandestine deals, further investigation could be instituted if specific instances involving violation of Foreign Exchange Regulation Act could be supplied.

Export of Textile Goods

*761, SHRI PRIYA RANJAN DAS MUNSI: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state:

- (a) what was the total export of textile goods in the years 1972-73 and 1973-74;
- (b) whether nylon or synthetic fabrics are in high demand abroad; and
- (c) if so, whether Government proposes to ban internal consumption of Nylon clothes and Nylon textiles?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) India's total exports of cotton textile goods during the year 1972-73 were worth Rs. 160.51 cross. During 1973-74, these are estimated to have been worth Rs. 199 crores upto February, 1974.

- (b) Yes, Sir.
- (c) No. Sir.

Entry of Japan in India's Cotton Market

*762. SHRI S. A. MURUGANAN-THAM: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state:

- (a) whether Japanese buyers have re-entered our market for Deshi Cotton; and
- (b) if so, the broad outlines contracts made so far?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Japan has been a major buyer of our Bengal during the period April—October, years.

(b) 1,22,800 bales of Bengal Deshi cotton had been shipped to Japan during the period April—October, 1973.

Uncovered Deficit of States and its Effects on the Economy of the Country

•763. SHRI DEVINDER SINGH GARCHA: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether most of the States have left large uncovered deficits partly because of generous allocations from the Centre following the recommendations of the Sixth Finance Commission; and
- (b) if so, the reaction of Government to this trend and its effects on the economy of the country?

THE MNISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN):
(a) Yes, Sir. Most of the States have left uncovered deficits in spite of larger transfers of resources from the Centre following the recommendations of the Sixth Finance Commission.

(b) The State Governments are being urged to review their budgetary position and to re-adjust it in such a way that the expenditures are matched by available resources.

राजस्थान में फर्मों के नाम एक लाख रुपये रे प्राचिक प्रायकर की बकाया राजि

*765. श्री लालबी भर्छ: स्या विस्त मंत्री राजस्थान में फर्मों के नाम एक लाख स्पये से प्रधिक धायकर की बकाया राजि के बारे में 4 मई, 1973 के धतारांकित प्रश्न मं० 9246 के उत्तर में दिये गये धाश्वासन की कियान्विति के बारे में 27 जुलाई, 1973 को सभा-पटल पर रखे गये विवरण-मंख्या 111 की मद 65 के बारे में यह बनाने की भूषा करेंगे कि.

- (क) वर्ष 1970 से 1973 के दौरान जिन जिन वडी फर्मों के नाम आयकर बकाया था उनमें में कितनी फर्मों ने आयकर चुका दिया है भीए कितनी फर्मों ने आयकर की बकाया राणि का भर्मा तक भुगनान नहीं किया है, और
- (ख) जिन फर्मों ने ग्रमी तक ग्राय र^र की बकाया शांश जमा नहीं की है उनके विरुद्ध क्या कार्यवादी की जा रही है ?

बिस संवालय में राज्य मंत्री (श्री के कार गणेश): (क) श्रीर (ख). 4 सई, 1973 को पृष्टे गये धताराकित प्रश्त 426 LS—3

संख्या 9246 के उत्तर में दिये गये आक्ष्वासन की पूर्ति के विवरण-पत्न में बड़ी फर्मों के जिन 20 मामलों का उल्लेख किया गया था उनमें में 14 मामलों में आयकर की बकाया वसूल की जा चुकी है। शेप 6 मामलों के नाम और की जा रही कार्यवाही का व्यौरा मदन की मेज पर रखे गये विवरण-पत्न में दिया गया है। श्वन्थालय में रखा गया। बेकिए संहरा LT-6750 74]

यूनियन बंक भाफ इंडिया की साखों को काम (हाक ए मिलियन बोब स्कीम) की योखना

*766 भी सरजूपांडे: स्या क्सि मंत्री यह बताने कं: क्रुपा करेंगे कि

- (क) क्या यूनियन वैक माफ इंडिया ने क्षाखों को काम देने (हाक ए जिलियन जोब स्कीम) की योजना की श्रींघसूचना दी थी;
- (ख) क्या उक्त योजना के संतर्भत यह कहा गया था कि स्नातकों को रोजगार हेनु धन दिया जायेगा; सौर
- (ग) क्या उक्त योजना को कियान्कित नहीं किया गया है ?

विस मंत्री (श्री यशवन्तराव श्रक्शण): (क) जी हा।

(ख) और (ग) यूनियन बैंक याफ इण्डिया महिन कर ारी क्षेत्र के मधी बैंक सक्षम उत्पादक योजनाओं के निए ऋण दैकर शिक्षित बेरोजगार व्यक्तियों के लिए लाभकारी भ्रात्म-नियाजन की व्यवस्था करने के लिए 5 नाख नीगरियों के कार्यकम की कियानित करने ने हिस्सा ने रहे हैं।

36

Blacklisting of Hosiery Experiers of Ludhiana for Import of Woollen Rags

*767. SHRI M. S. PURTY: SHRI P. M. MEHTA:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether the Controller of Imports and Exports has backlisted some hosiery exporters of Ludhiana for the import of woollen rags from abroad; and
- (b) if so, the names of such exporters and further action taken against them?

THE MINISTER OF COMMERCE (PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA): (a) No. Sir.

(b) Cases have been registered by Central Bureau of investigation. Prosecutions against some of the defaulters are being launched Departmental penal action against the offenders is also in progress

Import of Sunflower seed oil from Russia

SHRI RANABAHADUR ***768**. SINGH: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state:

- (a) whether Russia has agreed to supply 19,000 tonnes of sunflower seed oil on commercial basis; and
- (b) if so, the terms and conditions thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Yes, Sir

(b) The contract for the import is under negotiations.

Coca-Cola Export Corporation

*769. SHRI SHASHI BHUSHAN: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) what percentage of products produced by Coal-Coal Export Corporation is exported; and
- (b) to what extent this company has been asked to accept Indian participation?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): (a) The Coca-Cola Export Corporation exported 25.52 per cent of its production during the year 1973.

(b) According to the guidelines announced by the Government for administration of Section 29 of the Foreign Exchange Regulation Act. 1973, all branches of foreign Companies except those engaged in the production of items specified in Appendix I of Industrial Licensing Policy, 1973, or tea plantations or in predominantly export oriented industry will be required to convert themselves into Indian Companies with foreign shareholdings not exceeding 40 per cent. The Coca-Cola Export Corporation has to make an application to the Reserve Bank of India in this regard latest by 30th June, 1974. On receipt of their application the same will be examined in the light of the guidelines referred to above and decision taken.

गत तीन वर्षों में करेंती नोटों का मुद्रम

7303. बी शंकर बयाल सिंह : पग बिल मंत्री यह बताते की कृपा करेंगे कि मत नीन वर्षों में कमशः एक सी, दस, पांच, दो एवं एक काये के कितने नोट महित हुए ?

विस मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री के॰ भार॰ गणेश) भावश्यक सूचना नीचे दी गयीहै :--

नोट का मह	u		वर्व के दौरान छ।		
			1971-72	1 9 72-7 3 (लाम्बों में)	1 473-74
। ०० रुपये	•		1200.0	1190.0	1210.0
10 रुपये		•	10000.0	7850 0	8150.0
५ ए (बे		•	5000.0	590). 0	6100.0
2 हाथे			3000.0	3310 в	434 0. 0
। रुपये			18200. 0	2457 (21439.5

बस्तर के पर्वतीय क्षेत्रों में बाय उगाने की योजना

7304. भी लम्बोबर वलियार : स्या वाजिक्य मंत्री यह बताने की क्षता करेंगे कि :

- (क) का बन्तर के पर्वर्तय क्षेत्रों में चाय उनाने की कोई योजना सरकार के विचाराधीन है; धीर
- (ख) यदि हा, तो तत्मम्बन्धी व्यौरा क्या है भीर इस कब तक कियान्वित किये जाने की भाषा है ?

वाषिक्य मंत्रालय में उप मंत्री (श्री ए० सी॰ वार्ष): (स) जी नहीं।

(ख) प्रश्न नहीं उठता ।

Number of Employees in Offices of Indian Airlines in Assam

7305. SHRI BISWANARAYAN SHASTRI: Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

- (a) the total number of employees in the offices of the Indian Airlines located in Assam;
- (b) the total number of employees out of them which belong to Assam;

- (c) whether out of 90 employee₃ on 30th April, 1972 holding the posts of peon, porter and cleaner as many as 72 have been recruited from outside Assam; and
- (d) if so, the reasons for ignoring the claim of the local people for those posts for which no technical qualification is necessary?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SIIRI RAJ BAHADUR): (a) 203

- (b) and (c). Many of the employees presently in the offices of the Indian Airlines located in Assam are those taken from the privately owned Airlines at the time of the nationalistation. However the required information is being collected and will be placed on the table of the Sabha at soon as received.
- (d) Every attempt is made to confine recruitment to the posts of peons, porters, cleaners, drivers, etc. to local candidates by notifying vacancies to local employment exchanges and local organisations of Scheduled Castes and Scheduled Tribes and Ex-Servicemen.

Coffee Plantation in Tribal Areas

7306, SHRI Y. ESWARA REDDY: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether Government have decided to develop coffee plantations in tribal area; and
- (b) if so, the particulars thereof and steps taken in this regard?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) and (b). The question of developing coffee plantations in tribal areas has been engaging the attention of the Government of India but they have yet to formulate their views.

Agreement for Industrial Joint Venture with South Yemen

7307. SHRI BANAMALI BABU: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether an agreement is proposed to be signed for industrial joint venture with South Yemen; and
- (b) if so, the main features of the proposal?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) and During the recent discussion held with the visiting delegation from Peoples Democratic Republic Yemen, it was agreed to examine the possibilities of setting up joint ventures. It was decided that the Republic of Yemen would send a delegation of planning experts to discuss specific projects with the Indian Ministry of Planning.

Misappropriation of Excise Duty by Tea Estates

7308. SHRI B. K. DAS CHOW-DHURY: Will the Minister of FIN-ANCE be pleased to state;

- (a) whether the three tea estates in Darrang District of the Bishnauth Tea Company controlled and managed by M/s Williamson Magor and Company Limited were found to have taken credits of Central Excise Duty totalling over Rs. 18 lakhs in their Personal Ledger Accounts on the basis of challans, which were later found to be forged;
- (b) if so, what amount has so far been realised from the three tea estates and what action has been taken against persons involved;
- (c) whether M/S Williamson Magor and Co, has recovered over 18 lakhs of rupees on this account as loss in transit from the National Insurance Co. Unit, Calcutta; and
- (d) whether Government propose to investigate into the circumstances under which a nationalised insurance unit could compensate for forged deposit challans of Central Excise Duty?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) Yes, Sir. Three Tea Estates, namely (i) Dekorai Tea Estate, (ii) Pertabghar Tea Estate and (iii) Majuligarh Tea Estate, in Darrang District of Assam. under the management of M/s. Williamson Magor Co., Ltd. took credit of Central Excise duty for an amount of Rs. 18,60,76100 on the basis of a number of challans which were later found to have been forged.

(b) An amount of Rs. 3,96,600.00 has so far been realised. Realisation of remaining amount is pending due to writ petition filed by parties in Gauhati High Court. For the fraud

4I

case, police conducted the investigation and have initiated Criminal proceedings. They had earlier arrested one Superintendent of Central Excise and one inspector of Central Excise as also the proprietor and some employees of the firm M/s. Murulidhar Rampal.

- (c) No. Sir.
- (d) Does not arise.

Sale of Imported Goods in Modern Baxar, Vasant Vihar, New Delhi

7309. SHRI CHANDRA SHEKHAR SINGH: Will the Minister of FIN-NANCE be pleased to refer to reply given to Unstarred Question No. 4233 on the 24th August, 1973 regarding sale of imported goods in Modein Bazar, Vasant Vihar, New Delhi and state:

- (a) whether imported goods are still being sold in Modern Bazar, at C-8/3, Vasant Vihar, New Delhi,
- (b) whether there was another raid on the premises and imported goods seized,
- (c) if so, what action is being taken by Government to stop the illegal sale of imported goods; and
- (d) whether foreign liquor is also being sold in the premises?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K R GANESH). (a) There is no specific information that imported goods are being sold in Modern Bazar Vasant Vihar, Delhi at present

(b) Another raid was conducted on the above-mentioned premises on 27th August 1973 and goods worth about Rg 12,000 seized. The seized goods included cigarettes, cosmetics, trov come and a Calculating machine

- (c) Close surveillance is being maintained on the premises. The proprietor of the shop was arrested following the raid refered to above and produced before a Magistrate The Magistrate released him on bail with a personal bond of Rs. 3,000 plus a surety bond of like amount
 - (d) No. Sir.

भागरा में भायकर भविकारियों हा ग छापा भारकर काला धन बरामद किया जाना

7310. श्री हुकम चन्द कछ्दाय: क्या विक्त मन्द्री यह बताने की हुन दी कि

- (क) क्या भायकर भिन्न ।रिया ने भागरा जिने में मार्च, 1973 में कियो फर्म पर छापा मार कर भारी मान्ना में काला धन बरामद किया था , भीर
- (ख) यदि हो, तो छापा मार कर बरामद किये गये सामान ना सिक्षण्त स्थोरा तथा मूल्य क्या हैं?

विस मंत्रालय मे राज्य मंत्री (थी के अगर गणिका) : (क) भीर (ख) मार्च, 1973 मे भागरा जिले में विसी भी फर्म पर छापा नही मारा गया। किन्तु भायकर विभाग के भ्रष्ठिकारियों ने फिरोजाबाद में कुछ रसायन के व्यापारियों के व्यापार भीर रिहायशी स्थानों की 4 भीर 5 मार्च, 1974 को तलाशी ली बी जिसके परिणामत खाता वहियो तथा दस्नावेजो के भ्रलावा 18 लाख व० मूल्य की लेखा बाह्य परिमम्पलिया पकडी गई।

ग्रमरीका से ग्रावातित बस्तुएं

7311- श्री हुक्स व्यय कल्लवस्य : क्या वाणिक्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि वित्तीय वर्ष 1974-75 के दौरान ग्रमरीका में ग्रायात किये जाने वाले तथा ग्रमरीका को निर्यात किये जाने वाले तथा ग्रमरीका को निर्यात किये जाने वाले माल का भारतीय मुद्रा में ग्रनुमानत . कितना मूल्य होगा।

वाणिष्य मंत्रासय में उपमंत्री (की ए० सी० वार्ष): 1974-75 के दौरान मं० रा० ग्रमरीकः। में क्ये जाने वाले हमारे श्रायानों नया उन्हें किये जाने वाले नियातों के मूल्य का श्रनुमान लगाना इस श्रवस्था में सभव नहीं हैं।

भीकोगिक विकास के लिये क्स सरकार से ऋण श्रीर अनुदान

7312. श्री हुकम चन्द कछवाय स्था वित्त मंत्री यह बताने की कुपा करेंगे कि :

- (क) भारत सरकार की इस सरकार से श्रीशोगिक विकास के लिये वर्ष 1971-72, 1972-73 श्रीर 1973-74 के वित्तीय वर्षी में कितना अनुदान श्रीर ऋण प्राप्त हुआ; श्रार
- (ख) प्राप्त हुए ऋग पर भदा की जाने वाली ब्याज की दर भीर गर्ने क्या हैं ?

बित मंत्री (श्री यक्षाम् राव चक्षाण):
(क) विन वर्ष 1971-72, 1972-73
और 1973-74 के दौरान श्रीकोरिक विकास
के सिये नं विश्वत समा जवादी जनतंत संख् द्वारा कोई अनुदान या ऋण मजूर नहीं किये गये थे लंकिन सावियत समाजवादी जनतंत्र संख्दारा 1966 नक जिन ऋणां के सबझ में मजूरी दी गयी थी, पिछ ने नीन बित्त वर्षों में उनमें निम्नानिखन रकम काम में लायी गयी थी.--

(करोड़ नपयी में)

1971-72 14.03 1972-73 8.52

1973-74 (मनुमानित) 8.26

- (ख) 1966 तकः मंजूर किये ग्रंथे क्सी ऋणों पर 2 श्रे प्रतिज्ञत वार्षिक अ्याज लगेगा और उन्हें 12 वर्ष की अवधि में वापक्ष किया जाना है। मूलधन की वापकी गंवधित परियोजना को चालू करने के लिये आवश्यक उपकरणों की मुपुर्वगी का काम पूरा होने के एक वर्ष बाद शुरू होती है। लेकिन निम्न बो ऋणों के मंबंध में अते थोड़ी भिन्न हैं—
- (1) भौषध परियोजनाए-ऋण की वापनी 7 वर्ष की श्रवधि में की जानी है।
- (2) बोकारो इस्पात संयत्र के लिए ऋण-वापसी घटायगी उम वर्ष के एक: वर्ष बाद शुरू होती है जिसके दौरान रचम इस्ते-मान में लाय: गयी हो।

ब्याज की घदायगा मौर मूलघन की वापमी भारतीय रुखें में की जाती है। इस राशि का इस्तेमाल रूसी घधिकारी भारत में ऐसी वस्तुएं खरीदने के लिए करते हैं जो सोवियत समाजवादी जनतत्र सप की नियात की आती है।

मध्य प्रदेश में सध् बचत योजना के प्रमार्गत जमा की की गई राशि

7313. श्री गंगा चरण दीक्षित: क्या विक्त मत्री यह बताने की कुशा करेंगे कि .

- (क) वर्ष 1972-73 में मध्य प्रदेश में लघु बचन योजनामां के धन्तर्गत किननी राशि जमा हुई ,
- (ख) ग्राप्रेल, 1973 के दौरान कितनी राशि जमा की गयी , भीर
- (ग) मध्य प्रदेश सरकार ने नया अन्य ने अलग अलग किननी राणि निकाली तथा जमा की?

वित्त संज्ञालय में उन संजी (श्रीमती सुत्रीला रोहलनी):(क):1972-73 में, मध्य प्रदेश में ब्रह्म बचत थोजना के ब्रन्तर्गत जमा की गयी राणि 11.87 करोड़ रुपये (निवल) थी ।

- (ख) अर्थेल 1973 में मध्य प्रदेश में विभिन्न अल्प बचत प्रतिभृतियों के अन्तगत 2.51 करोड़ रुपये की रकप निकाली और भुनाई गयी ।
- (ग) अप्रैल 1973 में मध्य प्रदेश और अन्य राज्यों में विभिन्न अन्य बचत प्रतिभूतियों के अन्तर्गत जमा की गई और निकाली गई राणियां इस प्रकार हैं:—

(करोड़ रुपयों में)

राज्य	सकल राणि	निकाली गई राशि
ग्रान्ध्र प्रदेश	3, 13	2.04
अ स्म	1.48	1.34
बिहार	7.58	4.94
गुजरात	3.26	3.60
हरियाणा	11,65	19,11
हिमाचल प्रदेश	. 98	.64
जम्मू ग्रार करमी	78	. 5 7
क्निटिक	1.84	1.40
करल	2.11	1,76
मध्य प्रदेश	3.00	2.51
महाराष्ट्र	10,96	7.75
मणिपुर	. 04	.04
उड़ीसा	2.75	1.50
पंज ्व	5.08	6,93
राजस्थान	1.42	1.26
तमिलनाडू	4.09	3.85
विपुरा	18.16	. 15
उत्तर प्रदेश	13.16	11.72
पश्चिम बंगाल	9.59	5.86

तौलिये ग्रौर चावरें ग्रादि जैसे कुछ मर्वों के उत्पादन के लिये विद्युत करघों का ग्रारक्षण

7314. श्री गंगा चरण दीक्षितः क्या वाणिज्य मंत्री यह बताने की हुआ करेंगे कि :

- (क) क्या सरकार का विचार मिलों द्वारा विद्युत करवां पर बनाई जाने वाली मलमल और वायल के उत्पादन पर, प्रतिबंध लगाने तथा तौलिये, चादरें और णॉटंग आदि मदो का विद्युत करवां द्वारा उत्पादन आरक्षित करने का है; और
- (ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है ?

वाणिज्य मंत्रालय में उप-मंत्री (श्री ए॰ सी॰ जार्ज) : (क) ऐमी कोई प्रस्थापन-विचाराधीन नहीं है।

(ख) प्रश्न नहीं उठता ।

मध्य प्रदेश मं बुनकर सेवा केन्द्रों की स्थापना

7315. श्री गंगा चरण दीक्सित : क्या वाणिज्य नंत्री यह बताने की कृषा करेंगे कि .

- (क) क्या सरकार का विचार मध्य प्रदेश में बुतकर सेवा केन्द्र स्थापित करने का है ; प्रौर
 - (ख) यदि हां, तो कहा कहां पर ?

वाणिज्य मंत्रालय में उप-मंत्री (श्री ए० सी० जार्ज): (क्) और (ख) रुध्य प्रदेश ियन इंदौर में पहले ही एक वृनकर सेवा केन्द्र है । फिलहाल, राज्य में कोई अपैर केन्द्र खोलने भी गस्थापना नहीं है ।

गैर सरकारी तथा सरकारी क्षेत्र में जापान के साथ ग्रायात-निर्यात व्यापार

7316. श्री गंगा चरण दीक्षित : क्या वाणिज्य नंत्री यह बताने की ग्रुपा करेंगे कि :

- (क) वर्ष 1971-72 तमा 1972-73 के दौरान जापान के साथ गैर-सरकारी जंब की फर्नी द्वारा अलग अलग निर्मात तमा अप्यात व्यापार कितना हुआ तथा किन किन वस्तुओं का हुआ और भारतीय मुद्दा में उनका मूल्य कितना है;
- (ख) क्या जापान के साम उक्त फारी द्वारा होने वाले निर्योत और ग्रायात व्यापार को बढ़ाने की ग्रीर ग्रधिक गुंजाइण है; ग्रीर
- (ग) यदि हां, तो इस दिशा में क्या कार्य-वाही की गई है अपवा करने का विचार है ?

वाणिज्य मंत्रालय में उप-मंत्री (श्री ए० सी० बार्ज): (क) 1971-72 श्रीर 72-73 के वर्शों के दौरान भारत से जापान को कृत निर्मात तथा जापान से श्रायातों को दशित वाला एक विवरण सभा पटल पर रख विया गया है। [प्रन्थालय में रक्षा गया। देखिए संख्या LT 6751/74] श्रायातों तथा निर्यातों के क्षेत्र-नार श्रांकड़े नहीं रखे जाते

(ख) जीहां।

(ग) जापान के साथ भारत के व्यापार का निरन्तर पुनिशोकन किया जाता है। समस्याओं का पता लगाया जाता है और व्यापार को बढ़ाने के लिये समय समय पर यथा आवश्यक तथा समुचित उपाय किये जाते हैं। 1973-74 के प्रथम छः महीतों (अप्रैल—सितम्बर) में भारत और जापान के ीच दुतर ता व्यापार के परिमाण 1972-73 के दौरान उसे खबा में बढ़कर 262.51 करोड़ हु० की तुलना में बढ़कर 262.51 करोड़ हु० हो

Ceiling on Export of Beugal Deshi Cotton

7317. SHRI M. KATHAMUTHU: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether Government have decided to impose a ceiling on export of Bengal deshi cotton; and
 - (b) if so, the reasons therefor?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Yes, Sir,

(b) Because of lower production and higher pace of registration for export of Bengal Deshi cotton, prices of this variety of cotton in the domestic market had registered a sharp rise. With a view to arresting the rising tendency in the prices of Bengal Deshi cotton and eusuring adequate availability of the cotton for spinning coarse counts of yarn which goes into production of controlled cloth, it has been decided to limit export thereof at 2.25 lakh bales during the current cotton season.

Export of Essential Commodities

77318. SHRI M. KANHAMUTHU: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether Government propose to restrict the export of essential commodities in view of meeting the country's laternal requirements; and
- (b) if so, the broad features there-of?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) and (b). Due consideration is given to the internal requirements of essential commodities, and a balance is sought to be achieved between the requirements of domestic consumption and the need to earn larger foreign exchange through export of these goods.

Scheme for Regularisation of Unauthorised Powerlooms

7319. SHRI S. A. MURUGANAN-THAM; Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state:

- (a) whether Development Council for Man-made Textiles has recommended a Scheme for regularising the unauthorised powerlooms; and
- (b) if so, the particulars thereof and Government's response thereto?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Yes Sir.

- (b) The Development Council for man-made Textiles in its meeting on 26th February, 1974 has decided to recommend to the Government.
 - (i) State Governments may be urged to desist from issuing permits for fresh powerlooms without reference to the Textile Commissioner.
 - (ii) Wherever expansion of industry was thought of, the existing unauthorised powerlooms may be taken into account in fixing the quantum of fresh capacity to be set up;
 - (iii) Those unauthorised powerlooms that agree to an export obligation of Rs. 5,000 worth of fabrics per year for a period of five years may be regularised and offered varn entitlement

The above recommendations will be taken into account while formulating the policy for the V Plan period.

Setting up of Somanathan Committee on Handlooms Industry

7320 SHRI S A. MURUGANAN-THAM: Will the Minister of COM-MERCE he pleased to state:

- (a) whether Tamii Nadu Government have accepted the recommendations of the Somanathan Committee on Handloom Industry set up by the State Government, and have written to the Centre for concurrence to enact the necessary legislation; and
 - (b) if so, the particulars thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A C. GEORGE): (a) The question, perhaps, refers to the Santhanam Committee If so, the Tamilnadu Government have not written to the Central Government about the recommendations of this Committee so far.

(b) Does not arise

Development of Tourist Centres in Bihar during 1973-74 and 1974-75

7321. SHRI SUKHDEO PRASAD VERMA: Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

- (a) the names of the tourist centres which have been developed as tourist spots in the State of Bihar with the central assistance during the year 1973-74, and
- (b) the names of the tourist spots selected for development during the year 1974-75 in the State of Bihar with the Central assistance?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR): (a) The schemes proposed for implementation at Bodhgaya, Nalanda and Rajgir during 1973-74 could not be taken up as the land required for the purpose at Bodhgaya and Rajgir had not been transferred by the State Government and at Nalanda by the Archaeolo-

gical Survey of India to the Department of Tourism. An amount of Rs. 2.54 lakhs, however, was released by the Department to the State Government for meeting the additional cost of the installation of the chairlift at Rajgir

(b) During the year 1974-75, the Department of Tourism proposes to prepare a master plan for the development of Bodhgaya in the Central Sector. This will be taken up as soon as the land is transferred to the Department.

Recovery of Loans given by Nationalised Banks to Farmers in Bihar

7322. SHRI SUKHDEO PRASAD VERMA; Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether the loans given to the farmers by the nationalised banks in Bihar during the year 1971-72 have not been recovered so far; and
- (b) if so, the total amount still outstanding and the measures Government propose to take for the speedy recovery of the same?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI-MATI SUSHILA ROHATGI): (a) According to the data available upto the end of June 1972 in Bihar, as against the total demand of Rs. 203.11 lakhs, the recovery of agricultural advances (direct) was Rs. 148.63 lakhs, i.e., 58.5 per cent, so far as public sector banks were concerned.

(b) The amount outstanding in respect of direct agricultural advances provided by the public sector banks in Bihar at the end of June 1973 was R₅, 1103.83* lakhs.

In case of continued defauit, the banks resort to the civil courts for

recovery of sums overdue from the agriculturists. However, quick settlement of such dues is sought to be secured through a legislation already drafted by the State Government of Bihar on the lines of the Model Bill recommended by the Expert Group on State Enactments having a bearing on Commercial Banks' lending to Agriculture (Talwar Committee).

Area of Uneconomic Rubber Plantation

7323. SHRI VAYALAR RAVI: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) the area of uneconomic and low yielding rubber plantation in the country;
- (b) how much of this is in the small holdings sector;
- (c) the steps taken by Government and the Rubber Board to get these uneconomic and low yielding areas replanted with high yielding planting materials?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) 70,000 hectares.

(b) 55,000 hectares

(c) A scheme for grant of subsidy for replanting rubber in low yielding and uneconomic areas in operation since 1957 is being made more broad based so as to include all low-yielding uneconomic areas planted upto 1962 and registered with Rubber Board. Annual target for replanting during 5th plan has been fixed at 5,000 hectares. Enhancement of rate of subsidy would be considered on the basis of a cost study which is being undertaken.

^{*}Figures are provisional.

Selection of new group of Air Hostesses in Indian Airlines

7324. SHRI VAYALAR RAVI: Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

- (a) whether the Indian Airlines Corporation has made it compulsory for some Air Hostesses to proceed on leave,
- (b) whether a new proup of A1 Hostesses has been selected and they are undergoing training, and
- (c) if so, the reasons for recruiting this new group while those already in service have been asked to take leave on being considered surplus?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR). (a) During the period of curtailed services, the employees of the Corporation including air hostesses were encouraged to avail of the privilege leave due to them as it was then possible to grant them leave without any dislocation of work

(b) and (c) Eleven candidate airhostesses, selected in October, 1973 commenced their training at Deihi on the 19th November, 1973. Their training had to be suspended due to the lock-out in Indian Airlines from 24th November, 1973. On resumption of normalcy of operations, the said eleven training were recalled for completion of their training from 25th February, 1974.

Review of working of canalisation policy in Foreign Trade

7325. SHRI Y ESWARA REDDY: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state

(a) whether the report of the Committee set up last year to review the working of wie canalisation policy in foreign trade, has been received; and

(b) if so, what are the main recommendations of the Committee and Government's decision thereon?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A C GEORGE) (a) and (b) The report of the Committee has not been received as yet. It is expected to be received shortly

Boosting export of Handicrafs

7326 SHRI Y ESWARA REDDY: Will the Minister of COMMERCE by pleased to state:

- (a) whether any efforts have been made by Government to boost the export of Indian handicrafts during the Fourth Plan and if so, the results achieved,
- (b) whether Government are aware that Indian Craft Society's venture has an abmition and commandable plan to boost the exports, and
 - (c) if so, the facts thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A C GEORGE) (a) Yes, Sir. Exports of handicraft items increased from Rs 40 45 crores in 1969-70 to Rs 5500 crores (Provisional) in 1973-74

- (b) Government has not been informed about this
 - (c) Does not arise

Export Corporation for Diamonds

7327 SHRI DHAMANKAR. Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

(a) whether any decision has been taken to set up a new export corporation for diamonds; and 55

(b) if so, whether some steps are being taken to depend less on import of diamonds and increase our own production?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) and (b). No such proposal is under Government's consideration.

Overtime allowance paid in L.I.C.

7328. SHRI BISHWANATH JHUN-JHUNWALA:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) the total overtime allowance paid in Life Insurance Corporation during the years 1971, 1972 and 1973;
- (b) the total amount paid in Defence establishment and Central Secretariat during the above period; and
- (c) whether due to revision of pay scales of Central Government employees the quantum of overtime is likely to be inflated further and if so, what economies are proposed in the

above mentioned organisations for 1974 and proposed economy for 1975?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) and (b). A statement giving the required information is laid on the Table of the House.

(c) So far as office staff and comparable staff are concerned, the emoluments slabs with reference to which the rate of overtime allowance is determined have been revised consequent on revision of pay scales to ensure. by and large, that the same rate of overtime allowance as admissible earlier will continue. Where overtime allowance is payable under statutory provisions, there is likely to be some increase in overtime bill consequent on the increased emoluments admissible under the revised pay scales. Overtime allowance is paid in circumstances where it becomes essential to put the staff on beyond the normal hours of work The question of containing the expenditure on this account is constantly under review by the authorities who control the detailing of staff for overtime work.

Statement

(Rs. in lakhs)

	1970-71	1971-72	1972-73	Total
Life Insurance Corporation	67.72	91 · 53	101-13	260-38
Defence establishments .	863.47	1551.07	2266·73 (Provisional)	4681-27 (Provisional)
Central Secretariat .	76 · 86	83-37	90.29	250-52

Manufacture and export of Jute Goods

7820. SHRI BISHWANATH JHUNJHUNWALA:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

(a) whether the demand for jute goods has recorded a fairly good in-

crease in the world market during the last two years;

(b) if so, to what extent manufacture and export of jute goods have been stepped up during these two years with figures of manufacture and export;

- (e) whether the jute industry has failed to avail of this opportunity fully and if so, whether Government have tried to find out the causes for the same; and
- (d) the factors impeding the progress and the steps proposed to be taken to get over the difficulty?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI

A. C. GEORGE): (a) There has been a spurt in the demand for jute goods in the world market from about September, 1973.

(b) During October—December, 1973, exports of jute goods from India rose to about 58,000 tonnes a month against an average of 45,000 tonnes during the previous nine months. Production and export figures are given below:—

	1972-73	1972-73 (April-Feb.)	('000 tonnes) 1973-74 (April-Feb.)
Production Exports	1211.3 578.4	1105.9	980.2
trybotes	3/0.4	534 .4	500.2

- (c) and (d). Industry has endea-voured to avail of the opportunity provided by the revival of demand fully but various factors like chronic power shortage, labour trouble in the industry as well as Calcutta Port have stood in the way. State Government has been requested to avoid unscheduled power cuts and labour disputes have been settled. In addition steps like imposition of compulsory quotas on production of items having a ready market abroad, surveys of potential overseas markets, grant of assistance for Research and Development activities of industry for cost reduction and diversification etc. are also continuously taken.
- increase in D.A. of Central Government employees from March, 1974
- 7330. SHRI GAJADHAR MAJHI: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:
- (a) whether after the presentation of the Budget for the year 1974-75 the prices of all essential commodities have shot up tremendously and Government employees have been very badly hit by this spurt in the prices;

- (b) whether Government have reviewed the position in the light of the increase in prices and considered the case for further revision of dearness allowance from the month of March, 1974;
- (c) if so, the decision taken in the matter; and
- (d) whether Government propose to revise the Dearness Allowance formula to cope with the ever increasing rise in prices?

THE MINISTER OF STATE IN MINISTRY OF FINANCE THE (SHRI K. R GANESH): (a) to (c). For purposes of grant of dearness allowance to Central Government employees, the rise in prices is measured by the All India Average Consumer Price Index Number for Industrial Workers, with 1960 published by the Labour base. The Index figures for the Bureau period subsequent to 28th February, 1974 have not yet been worked out by them. They are in the process of preparation, and will be avoilable only in May, 1974 The latest figures available, are for the month ending 28th February, 1974. On the basis of these figures, the 12-monthly average

has not reached a level which would call for a further increase of the dearness allowance which was last revised with effect from 1st February, 1974.

(d) The formula for the grant of dearness allowance which is being followed by Government at present is actually an improvement on the D.A. formula recommended by the Third Pay Commission. There is no proposal at present to revise this formula.

Arrest of an Employee of Bharat Heavy Electricals Bhopal on charge of Circulating Counterfeit Currency Notes

7331. SHRI YAMUNA PRASAD MANDAL:

SHRI R. S. PANDEY:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether an employee of Bharat Heavy Electricals, Bhopal was arrested on charge of circulating counterfeit notes;
- (b) if so, whether any enquiry has been made into his activities; and
- (c) the names of his accomplices and action taken against them?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R GANESH): (a) and (b). Shri Daniel an employee of Bharat Heavy Electricals, Bhopal, was arrested by the Kerala Police in connection with a forged currency racket unearthed in Kerala The case is under investigation.

- (c) Police have arrested a number of persons including the following:
 - (i) Jamna Dass Chhalofre, an employee of Security Paper Mill, Hoshangabad.

- (ii) Nithyananda Swami of Gumburn (Kerala) who is reported to have financed the printing of the forged notes.
- (iii) Surulivel and his brother Krishnan of Gumbum who were the owners of the printing press and the cutting machine.
 - (iv) Thomas Chacko (of Kerals).
 - (v) K. J. Joseph (of Kerala).

Further investigations are still in progress.

Financial Malpractices by Duncan Brothers

7332. SHRI PRIYA RANJAN DAS MUNSI; Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether any complaint has been lodged in C.B.I. against Shri R. P. Goenka and management of Duncan Brothers for financial malpractices and black money:
- (b) if not, whether the Ministry are aware that huge amounts of black money have been diverted to tea plantations by R. P. Goenka and his brothers; and
- (c) whether any enquiry can be made in this regard by C.B.I.?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) Yes, Sir

(b) and (c). There is no specific information about the diversion of the black money to tea plantations by Shri R. P. Goenka and his brothers. However in the course of income-tax assessments if any information comes to light which needs investigation by C.B.I. necessary action would be taken by the Government.

Production of Semi-Tanned Leather Hides and Skins in West Bengal

7333. SHRI ESHAQUE SAMBHALI: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) the number of factories, small, medium and large-scale, producing semi-tanned leather and hides and skins in West Bengal and the number out of them which had exported semitanned and blue-tanned leather during the years 1969-70, 1970-71 and 1971-72; and
- (b) the number of applications from the State received for export quota for semi-tanned leather and the number of them which were given export quota?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTER OF COMMERCE (SHRI A. C. GERGE): (a) The number of factories producing semi-tanned leather and hides and skins in West Bengal is 199. Out of them, 22 made exports during 1969-70, 22 during 1970-71, and 27 during 1971-72.

(b) Export quotas have not been allotted State-wise. The quotas have been given to exporters and non-exporting tanners. From West Bengal, applications from 107 units were received and quotas were allotted to 79 units.

भारतीय लेखकों के विदेशों में प्रकाशित प्रका-शनों से श्राय

7334. श्री जगन्नाथ राव जोशी : श्री श्रटल बिहारी वाजपेयी :

क्या जिल्ला मंत्री यह वताने ही कृपा करेंगे कि :

(क) गत वर्ग विदेशी प्रकाशनों द्वारा प्रकाशित स्वर्गीय श्री जवाहर लाल नेहर की पुस्तकों से किन्ती विदेशी मुद्रा श्रक्तित की प्रयी

- (ब) उपरोक्त ग्रःय में से कितनी रिश उनके उत्तरिक रिशों द्वारा विदेशी में जमा की गरी तथा कितनी रिशि गत वर्ध स्वेश भेजों गयी; ग्रीर
- (ग) उन पर कितना स्रय-कर दिया गया।

वित्त मंत्री (श्री यशवन्त राव चव्हाण) :

(क) 1973-74 के वित्ती वर्ष में स्वर्गीय श्री जब हर लाल नेह इ के प्रक.शनों से राय टी के अप में कुर 200150 रुपये ती ग्रामदनी हुई।

- (४) उक्त सारी धन⊹िश स्वदेश श्रा गरी ।
- (ग) इस द्याय ो प्रजान मंत्री ती के द्याय कर विवरण में शिमित कर लिया जायगा द्यौर यह च लूर्वा में किया जायगा। रायल्टी के द्यंग पर पहले ही स्रोत पर कर लग चुका है द्यौर इस सीमा तक ठूट दी जायगी।

Mismanagement of Laxmi Rattan Cotton Mills, Kanpur

7335. PROF. MADHU DANDAVATE: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether repeated complaints have been lodged regarding the mismanagement of the Laxmi Rattan Cotton Mills, Kanpur and particularly the total failure of the management to comply with the requirements of the Provident Fund Act; and
- (b) if so, what concrete and prompt steps are proposed under the Industries (Development and Regulation) Act?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Yes, Sir.

(b) Recommendations of the Government of Uttar Pradesh in this regard are awaited.

Foreign firms which have been subjected to export obligations

7336. SHRI C. K. JAFFER SHARIEF: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) the names of the foreign firms with majority foreign capital holding which have been subjected to export obligations; and
- (b) the investment of these firms alongwith the amount repatriated towards dividend by these firms to their parent units during the last three years?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) and (b). The information is being collected and will be placed on the Table of the House.

Impact of shortage of Raw Material on Export of Chemicals

7337. SHRI K. M. MADHUKAR. Will the Minister of COMMERCE be pleased to state

- (a) whether due to shortage of raw materials the prospects of exports of Chemicals and allied products for 1973-74 are very bleak; and
- (b) if so, what steps Government intend to take to revitalise the export prospects of chemicals?

THE DEPUTY MINISTER IN 111E MINISTRY OF COMMERCE (SARI A. C. GEORGE): (a) and (b). Exports of chemicals and allied products have shown an increasing trend during the recent past despite shortages of raw materials.

Supply of Wood-pulp for Rayon Tyre Yarn from U.S. Firms

7336. SHRI R. V. SWAMINATHAN:

SHRI P. M. MEHTA:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether three U.S. firms have conveyed to the Indian Government their inability to supply in full woodpulp, the raw material for the production of rayon tyre yarn;
- (b) if so, the reasons for their refusal; and
- (c) whether the supply of this wood-pulp has been very bleak since October, 1973?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Yes, Sir.

- (b) A statement is enclosed.
- (c) The supply position since October, 1973 is unsatisfactory.

Statement

The reasons for inability of manufacturers of wood pulp to meet the full requirements of the country are:

- (i) Due to a severe winter haulage of wood and other raw material to the factories become difficult resulting in production losses
- (ii) Pollution cost increase and low profitability proved a damper to any increase in capacity. In fact some units changed to production of more lucrative lines. One unit had to close down. The increase in demand for paper pulp and better profitability led to a diversion to paper pulp manufacture.
- (iii) The world demand increased with the result that the suppliers had to ration out supplies.

Representations received from Delhi Aayakar Sanyukt Karamchari Sangh

7339. SHRI JHARKHANDE RAI: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether the Central Board of Direct Taxes have advised the Commissioner of Income-tax, Delhi not to entertain any representation on various problems of the employees of the Department; and
- (b) if not, the number of representations received from Delhi Aayakar Sanyukt Karamchari Sangh from 1st April, 1973 to 31st December, 1973 and number of communications replied to?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) No, Sir.

(b) Ten representations raising matters of specific nature were rεceived by the Commissioner of recome-taχ, Delhi, from the Delhi Aayakar Sanyukt Karamchari Sangh between 1st April, 1973 and 31st December, 1973. All were replied to. Nine other representations of general nature did not call for a specific reply.

12-बोर के कारतुसों के ग्रायात पर प्रतिबंध

7340. श्री फूल श्वन्द वर्माः क्या शासिश्य मंत्री यह इत ने की कृपा करेगे कि:

- (क) क्या केन्द्रीय सरकार द्वारा वर्ष 1970 में केवल राइफनों के कारतूसों के भायात के लिए साइसैंस दिए गए थे परन्तु 12 बोर के किसी भी प्रकार के कारतूसों के भायात पर प्रतिबन्ध था ;
- (ब) क्या वर्ष 1970 में फांस में बने 12-बोर के विश्लोट मार्का कारतूसों का भारत में बड़ी माला में झायत किय गया य ; बौर 426 LS-4

(ग) यदि हा, तो किसने और कैंस इन कारतूनो का आयात किया था ?

वाणिक्य मंत्रालय में उप मंत्री (श्री ए० सी० वार्क): (क) 1969-70 तथा 1970-71 लाइसीमग प्रविश्वित के लिए ब्रायात नीति के अनुमार, मलग्न विवरण में बताए गये कारतूमों को छोडकर इस प्रकार के कारतूमों के ब्रायात ती अनुमिति है।

(ख) ग्रीर (ग) कारतू रो के ग्रायानों के ब्रांड-दार तथा भ्रायानक-वार भ्राकडे नही रखे जाते ।

विवरण

1969-70

- (क) 8 मि० मी० / 315 स्पोटिंग कारतूम ।
- (ख) 22 बोर लम्बी राइफलों के कारतूस।
- (ग) कारत्स 12 वोर 2-1/2" छोटे साइज 7, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 बी बी, एए ए झादि एल जी, एस जी, गोली वाले तथा 12 बोर 2-1/2" कारत्म ।
 - (घ) कारतूम एम ए बाल रिवोल्बर 380 ।
 - (ङ) कारतूस 380 ब्लैंक।
 - (च) कारतूस 12 बोर 2" लम्बी छोटी 2, 4, 6 तथा 7।
 - (छ) गोला बारूद मदों के सम्बन्ध में जिसके झायात की अनुमति नही है, कारतूस के खोल झादि जैसे संघटक ।

नोट:—अमरीकन 12, जी ए नं० 00 बक कारतूसों का आकार एस जी कारतूसों के बराबर होता है।

1970-71

- (क) 8 मि॰मी॰/ 315 स्पीटिंग कारतस ।
- (ख) 22 वोर लम्बी राइफलो के कारतूस ।
- (ग) 8 मि॰ मी॰ / 315" स्पोर्टिंग कारतूस 244 ग्रा० सोफ्ट नोज्ड गोली ।
- (ब) कारतूस 8 मि० मी० / 315" ग्रा० स्पिलिट सोफ्ट नोज्ड गोली।
- (ङ) 200 ग्रा० ठोस गोली सहित 8 मि० मी० / 315" कारतुस ।
- (च) कारतूम 22" झार एफ छोटी।
- (छ) कारतूस 22" ग्रार एफ लम्बी।
- (ज) कारतूस 22" उच्च वर्ग।
- (झ) कारतूस एस ए बाल रिबोल्बर 380
- (ट्रा) कारतूस 380 ब्लैक
- (ट) कारतूस 32" रिवोल्वर लम्बी ।
- (ठ) कारतूस 32" रिबोस्वर छोटी।
- (ड) कारतूम 32" रिवोल्वर स्टार्टर।
- (इ) कारतूस 32" (8.65) मि॰ मी० पिस्तील
- (ण) कार्त्स 12 बोर 2-1/2" सभी छोटे झाकारों की, वी० बी०, एएए, मादि एल जी / एम जी तथा गोली बाल।
- (त) सभी छोटे साइजों की 12 बोर 2-3/4" की कारतूस
- (ब) सभी छोटे साइजों की 12 बोर 2" की कारतस
- (द) 16 बोर की कारतस।

- (व) 29 बोर की कारतूस ।
- (न) गोला बारूद महों के सम्बन्ध में जिमके भायात की भ्रम्भित नहीं है कारतूस के खोल जैसे संबटक ।

नोट :--- प्रमरीकम 12 जी ए नं० 00 बड़े कारतूम जिनका भाकार एस जी कारतूस के बराबर है।

Misuse of Import Licences

7341. SHRI DHAMANKAR:

SHRI D. B. CHANDRA-GOWDA:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether there have been any instances of misuse of Import Licences in the shape of illegal transfers of the licences and failure to fulfil conditions stipulated in the licences:
- (b) if so, whether Government contemplates to impose any deterrent fines and penalties to curb their misuse by the defaulters;
- (c) whether there is any statutory provision for imposition of penalty against such defaulters:
- (d) if not, how the levy of penalty is proposed to be regulated, and
- (e) will there be any appellate authority?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Yes. Sir.

- (b) here is no provision at present for imposing fines for such offences except by a Court of Law when prosecution of the party is undertaken.
- (c) and (d). Statutory provisions exist for penalising the person who misuses an import licence. They are
 - (i) Prosecution in cases of serious offences: and

- (ii) Debarment for recified periods, in which case during that period, the party will not be entitled to import licences or allotment of imported raw material canalised through State Agencies.
- (e) The Chief Controller of Imports and Exports and the Appellate Committee are the appellate authorities for reviewing the decisions of the licensing authorities on the penal action taken by them.

Reorganisation of Government
Agencies assigned with the Jobs of
Checking rise in Prices

7342. SHRI P. A. SAMINATHAN:

SHRI P. M. MEHTA:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether an inter-Ministerial discussion has been held by Government for reorganisation of Government's two important wings which were set up and assigned the important job of helping to fight the menace of price rise and shortage of essential commodities in the country:
- (b) whether the recent investigation has proved that both organisations lack the necessary facilities to discharge the tasks assigned to them; and
- (c) if so, what steps are being taken to improve their working so that the menace of price rise is tackled immediately?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) to (c). An Interdepartmental review of the functioning of the Units in the Department of Internal Trade was recently held with a view to strenamlining this Organisation and functions.

Progress of Fixation of Pay of Government Employees under Revised. Pay Scales

7343. SHRI NATHU RAM AHIR-WAR:

> DR. GOVIND DAS RICHHA-RIYA:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) the progress made in the fixation of pay under revised pay scales of Government employees belonging to uncommon categories in various Ministries, their attached and subordinate offices and Union territories;
- (b) whether all the technical employees belonging to uncommon category are still awaiting revised pay in the Ministry of Health and Family Planning and its attached offices for want of notification of revised pay scales; and
- (c) how much time will it take for the Implementation Cell to decide the cases of uncommon categories?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): (a) to (c). The decisions of Government on the recommendations of the Pay Commission relating to Third revised scales of pay of the common categories of Central Government employees in Classes II, III and IV were notified on 13-11-73. Thereafter 11 more notifications have been issued so far in respect of employees of these classes, working under a large number of Ministries/Departments (which include also a number of categories of technical employees belonging to uncommon categories under the Ministry of Health and Family Planning) and Union Territories of Delhi and Goa, Daman and Diu. The Ministries of Railways and Defence have also similarly issued notifications in respect of various categories of employees working under them. The work relating to the issue of notifications in respect of remaining employees under the

various Ministries/Departments and Union Territories is proceeding apace. As information in regard to the existing scales of pay and other particulars necessary for notifying the revived scales of pay is to be obtained from the various Ministries/Departments, who in turn have also to consult their attached and sub-ordinate offices, it is not possible to indicate any firm time limit for notifying the revised pay-scales in respect of all the remaining categories of employees. Every effort is, however, being made to notify these scales as quickly as possible.

Assessment of Cooch Behar Refugee Service for Income Tax

7344. SHRI B. K. DASCHOW-DHURY: Will the Minister of FIN-ANCE be pleased to state:

- (a) whether the Cooch Behar Refugee Service has already been assessed by the Income Tax Officer, Co ch Behar, West Bengal;
- (b) if so, the year from which the assessment started and the amount rea ised; and
- (c) whether the Income Tax Authorities at Cooch Behar have received relevant details as to their means for acquiring money, proper bank receipts, spending and giving away of money to various individuals and other relating data and if not, the reasons therefor and the steps taken?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) and (b). Enquiries made so far reveal that Cooch Behar Refugee Service has not been found to be liable to pay income-tax for the calendar year 1971. Enquiries are being made in respect of subsequent years.

(c) The information is being collected and will be laid on the table of the House as early as possible.

Misuse of Import Licences

7345. SHRI HEMENDRA SINGH BANERA: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state:

- (a) whether Government have received complaints that while Import licences are issued by the Central Authorities, there is no Central Agency having inspecting and investigating powers regarding their misuse:
- (b) whether it is proposed that the inspection and investigation regarding misuse of Import Licences above a certain value, will be conducted by a Central Agency; and
- (c) if so, the particulars thereof and if not, the reasons therefor?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE); (a) and (b). No, Sir.

(c) Does not arise. The Directors of Industries in the States and other sponsoring authorities are required to watch the proper utilisation of the import licences. Complaints received by the Central Government are enquired into by the State Government agencies and/or the C.B.I. according to the gravity of the affence.

Cost of production of Tea Per Kilo

7346. SHRI G. Y. KRISHNAN: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether the average cost of production of tea per kilo touches Rs. 5.50 in Kerala and the producers get about Rs. 5 to 6 per kilogram while consumers pay between Rs. 10 to 12; and
- (b) if so, whether Government are going to announce a support price for tea which would ensure the producer of an adequate return, declare the tea industry to be a protected one and to take over 'sick' Estates under Government control?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SRRI A. C. GEORGE): (a) Average cost of production of tea in Kerala estimated by the United Planters Association of Southern India worked out to Rs. 5.18 per kg. in 1971-72 against average price of Rs. 6.14 per kg. fetched by Kerala teas in Cochin Auctions in 1971. Information on prices paid by consumers for Kerala tea is not readily available.

(b) Does not arise.

Foreign Exchange earned by Expert of Beef

7348. DR. KARNI SINGH: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state the amount of foreign exchange expected to be earned annually from beef export?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): No foreign exchange earning can be expected as there is a complete ban on the export of beef.

Price of Tea

7349. DR. KARNI SINGH: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether in spite of increase in the prices of all foodstuffs, including coffee and cocoa all over the world. the price of tea of which India and Sri Lanka are principal exporters. has registered a fall; and
- (b) if so, the reasons for this strange phenomenon and the steps proposed to be taken singly or jointly with Sri Lanka not to allow the prices of tea to fall?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) International price of tea as reflected in the tea prices in London Auctions obtained

during 1973, have tended to rise as compared with prices in 1972.

(b) In the discussions held between India and Sri Lanka in Colombo in February, 1974, the need for joint programme for improving realisation on exports of tea was accepted by both countries.

Decline in Export of Chemicals, Soaps and Cosmetics

7350. SHRI DHAMANKAR: W.ll the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) the total amount of exports in terms of foreign exchange in respect of Pharmaceutical and chemical products during April, 1973 to February, 1974:
- (b) how far does it compare with the corresponding period of the last year;
- (c) whether there have been any decline in the exports value of soaps, synthetic detergents, cosmetics and toiletries despite the increased exports of synthetic detergents and hydrogenated castor oil compared to the corresponding period of last year; and
- (d) if so, the reasons therefor and the amount of loss in foreign exchange?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) and (b). The export figures available for the period April to September. 1973 for Pharmaceutical and chemical products as compared with the corresponding period of the last year are as follows:—

April-Sept., 1972 .. Rs. 1876.79 lakhs April-Sept., 1973 .. Rs. 1718.52 lakhs

(c) and (d). The export of soaps, perfumery, cosmetics, dentifrices and

other. Toilet preparations declined from Rs. 275.99 lakhs to Rs. 200.16 lakhs during April-September, 1973 as compared with the corresponding period of the last year. The main reason for the decline is that a bulk order for one of the items received in the previous year was not repeated during the current year.

Revenue accruing from Excise levy on Petrol and Diesel

7351. SHRI ARJUN SETHI: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) the revenue to be realised during 1974-75 on account of increase in the excise levy on petrol and diesel oil and other petroleum products; and
- (b) the specific projects on which the amount is likely to be spent?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) The estimated additional Central Excise revenue likely to be realised during 1974-75 on account of the changes made in the excise duties on petrol, diesel oil superior kerosene in November, 1973 and as a part of 1974 Budget proposals in respect of other petroleum products are placed respectively at Rs. 69.79 crores and Rs. 22.48 crores. (In November, 1973, there was no increase in excise duty on diesel oil. In fact, there was a reduction in duty thereon to the extent of Rs. 100 per kilolitre at 15°C so as to maintain parity in price with kerosene).

(b) In reply to Lok Sabha Unstarred question No. 2420 on the subject answered on 11th March, 1974, the Minister of Shipping and Transport had already indicated the broad outlines. The details of the final allocation of the additional revenue have, however, still to be finalised.

Less emeluments to Employees in Revised Scales due to Non-grant of Rs. 15 for Fixation of Pay

7352. SHRI RAJDEO SINGH: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether the employees getting a pay of Rs. 150 and Rs. 210 after 1-1-1973 will get less emoluments in the revised scales due to non-grant of Rs. 15/- for fixation of pay after 1-1-1973 under Rule No. 9 of the Central Civil Services (Revised Pay) Rules, 1973;
- (b) whether his Ministry has received many representations against Rule No. 9 of Central Civil Services (Revised Pay) Rules, 1973; and
- (c) if so, the time by which decision thereon would be taken and orders issued?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): (a) According to the recommendations of the Third Pay Commission, the pay of an employee who opts to come over to the revised scale after earning the next or any subsequent increments in the existing scale, had to be fixed in the revised scale under the Fundamental Rules under which only the basic pay on the date of option could alone be taken into account for fixation of pay in the revised scale, and not under the special pay fixation formula recommended by the Commission. Government have, however, improved upon this recommendation by providing that in such cases not only the basic pay of such an employee on the date of option but also the Dearness Pay, Dearness Allowance and Interim Reliefs relatable to that basic pay at the rates in force prior to 1st January 1973 should also be taken into account for fixing his pay in the revised scale.

(b) Yes, Sie.

(c) The matter is under discussion in a Committee of the National Council set up under the Joint Consultative Machinery. The report of the Committee will be considered by the Government as soon as it is received.

Ancillary Industries around Public Sector Undertakings

7354. SHRI DHAMANKAR: SHRI K. M. MADHUKAR:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether any concentrated efforts are being made to streamline ancillary industries around public sector undertakings so as to create more employment potential;
- (b) whether any areas have been identified, techno-economic survey undertaken and time-bound programme drawn up to see where more ancillaries can be set up on a priority basis: and
- (c) what is the capital-labour ratio at present per employee on the total investment in the public sector undertakings and whether the development of ancillary industries around the public sector undertakings will have the desired effect of diluting the ratio?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) Government have decided to utilise the potential of ancillary industries for promoting regional economic development and increasing employment opportunities. For this purpose the Central Government Industrial Undertakings have been directed to sub-contract as many items as possible to ancillary units. The instructions require the main units to take the following action so as to implement a time bound plan of developing ancillary units:—

(i) the setting up of Anciliary Development Committee under the Chairmanship of the Chief Executive,

- (ii) appointment of full-time Ancillary Development Officer of senior status.
- (iii) identification of items which could be produced in the ancillary sector and provision of technical as well as material assistance to the small scale enterpreneurs.
- (iv) contracting for a guaranteed off-take of atleast 50 per cent of the production of the ancillary unit and conclusion of long-term contracts, and
- (v) constant liaison with the Development Commissioner, Small Scale Industries.
- (b) Some of the important areas identified for production in ancillary units are fabrication, machining, lathe work, forgings, metal gratings, and machanical electrical ponents, tools and gauges, instruments, valves, fastenders, containers and packing materials, safety equipment, etc. The main units have undertaken techno-economic survey in relevant areas and drawn up project proposals for the ancillary units. These efforts, which have to be undertaken on a continuous basis, have resulted in establishment of about 140 ancillary units in a period of 2 vears.
- (c) The investment per employee works-out to about Rs. 70,000. The farming out of items to the ancillary units would undoubtedly go to reduce the capital structure of the main unit and increase the employment potential of the industry.

Assistance to Small Scale Industries from World Bank

7354. SHRI DHAMANKAR: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) whether a team from the World Bank is currently visiting India for the study of problems of Small Scale Industries here and if so, when is the team likely to formulate its recommendations:

- (b) whether as a result of the study any assistance is likely to be made available by the World Bank for the development of small scale industries in India and if so, to what extent; and
- (c) how will Government ensure the meaningful utilisation of the World Bank assistance to small units?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN).

(a) A World Bank team had recently visited India to identify a project for which World Bank Group assistance could be made available for Small Scale Industries in the country.

(b) and (c). The report of this team is not yet available and as such it is not possible to anticipate the extent of any assistance which may be forthcoming.

Modernization of Textile Industry during the Fifth Plan

7355. SHRI R. V. SWAMINATHAN:

SHRI P. M. MEHTA:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether faced with a huge gap between demand and indigenous avallability of cotton textile machinery, Government have decided to go alow with the programme of modernisation and to concentrate on the setting up of additional capacity for the textile industry:
- (b) if so, the remons therefor, and

(c) the estimated requirement of textile machinery for modernisation and expansion during the Fifth Five Year Plan recommended by the Task Force on Textile Industry?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) No. Sir.

- (b) Does not arise.
- (c) The Task Force on Textile Industries has estimated the requirement of machinery for modernisation and expansion of the cotton textile industry during the Fifth Plan at Rs 1,250 crores at 1973 prices

Import of Fertilisers through M.M.T.C.

7356 SHRI GAJADHAR MAJHI:

SHRI RANA BAHADUR SINGH

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state: :

- (a) the names of the countries with whom Government have decided to go in for larger imports of fertilisers, particularly from the rupee-payment countries, thiring 1974, and
- (b) the names of the countries with whom Minerals and Metals Trading Corporation has concluded contracts and the quantity of fertilisers that has been decided to be imported?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) and (b). Amongst the Rupee Payment countries larger quantities of fertilisers are proposed to be imported from USSR, Poland, Romania, Bulgaria and German Democratic Republic. A statement showing details of the contracts concluded by the MMTC so far with various countries is attached.

Statement

SI.	Country	Country Commodity		Contracts concluded			
N o.			Quantity (M/T)	Delivery schedule			
I	U.S.S.R.	(i) Urea	2,00,000	March to Dec. 74			
		(n) Ammonium Sulphate	75,000	March to Dec. 74			
		(mi) Muriate of Potash,	50,000	January to Dec. 74			
2	G.D.R.	М. О. Р.	2,00,000 (incuding 20,000M, T at Sellers option)	January to Dec. 74			
3	Bulgaria	. Urea	46,000	July to Dec. 74			
4	D.P.R.K.	. Urea	120,000	July to Dec. 74			
5 .	Poland	(i) Urea (ii) C. A. N.		April to Dec. 74 April to Dec. 74			

Steps to check smuggling of Foodgrains out of India

7357. SHRI G. Y. KRISHNAN: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether Government have considered the proposal to deploy the Navy to curb the 'flourishing' illegal export of foodgrains, vanaspati and edible oil to West Asian countries by sea; and
- (b) if so, the main features thereof?

THE MINISTER OF STATE IN FINANCE MINISTRY OF THE (SHRI K. R. GANESH): (a) and Increased co-operation of the (b). Navy along the Gujarat and Maharashtra coasts is being sought for preventing illegal export of goods including food grains and for checking the smuggling of goods into the country.

In addition to the help of the Navy which has been sought to check smuggling of goods, following other steps are being taken by the concerned authorities to prevent illegal export of food grains etc.

The State Governments who are concerned with the movement of food grains out-side the States have alerted the Police authorities and Directors of Ports to check smuggling of food grains and pulses etc. check posts have also been opened by the State Police near the coast line of South Gujarat. Customs officers have also been aierted about such smuggling. In addition to directions to intercept any vessels engaged in illegal export of food grains and pulses the officers have specifically been directed to collect intelligence about storage of pulses and food grains in places near the coast for purposes of illegal export. Instructions have also been issued to the officers incharge of minor ports to keep a strict watch over the coastal movement of these commodities to ensure that the articles are not taken out surreptitiously te places outside India.

Ban on Export of Writings and printing Paper

7358. SHRI RAM BHAGAT PAS-WAN: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state:

- (a) whether Government have banned the export of all varieties of writing and printing paper: and
- (b) if so, the extent of foreign exchange loss therefrom?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Yes, Sir.

(b) The exports of writing and printing paper during 1971-72, 1972-73 and April-September, 1973 are as indicated below:

			lakhs Rs.	
1971-72 .		•	•	76.23
1972-73 .	•		•	56.50
April-Sept., 73	3			52.69

No precise estimate of the actual shortfall in earnings of foreign exchange as a result of the ban on the export of writing and printing paper can be framed.

Foreign Exchange earnings from Export of Shoes

7360, SHRI M. S. PURTY: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

(a) the foreign exchange earning from export of shoes and other footwear, country-wise during the last year; and

(b) the names of the countries who have placed order for footwear and the particulars regarding the number of shoes asked for?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) A statement is enclosed.

(b) According to available information, USSR and G.D.R. have placed orders for 6 lakh pairs and 1 lakh pairs of leather shoes respectively, and Bulgaria for 1.25 lakh pairs of canvas shoes.

Statement Showing Country-wise Exports of Shoes and Other Footwear during April—October, 1973-74

(In lakhs of rupees)

S. No	Name of the o	Value of exports of shoes and other footwear during April-Oct- ober, 1973-74			
ı.	Australia				24.3
2.	Denmark.				15.3
3.	Netherlands				5.0
4.	U. K.				43.0
5.	USA .		•		79.9
6.	USSR				161.7
7.	Zambia .		•	•	26.4

			TOTAL	•	358· 6
	Other countrie	es	•	•	30% • 0
	Grand Total	١.	•	•	559-6

Seizure of Smuggled Goods from Pakistani Smugglers

7361. SHRI R. S. PANDEY:

SHRI PRABODH CHAN-DRA:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether six Pakistani smugglers were arrested in the month of January with goods worth Rs. 10 lakhs at Worli, Bombay; and
- (b) if so, the particulars of goods smuggled and steps taken to check such activities?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) Officers of the Marine and Preventive Division of the Customs (Preventive) Collectorate, Bombay, intercepted an Arab Dhow in the sea off Worli, Bombay on 3rd January, 1974, and seized goods worth Rs. 8 lakhs from the vessel. The vessel valued about Rs. 2 lakhs was also seized. 8 crew members were arrested out of whom 6 are Pakistani nationals.

(b) The seized goods consist of Japanese Suiting, English Suitings. Shirtings, T. V. Sets, Transistor Batteries and Cinnamon. The following steps have been taken to check smuggling activities:—

Systematic collection and follow up of information, keeping a watchful eye on suspected smugglers, rummaging of suspected vessels or aircraft, and checking of vulnerable sectors along the coast and the land frontiers. Additional launches and vehicles are being provided from time to time for effective interception, prevention etc. Some senior officers of the rank of Collectors of Customs, Additional Collectors of Customs and Assistant Collector of Customs have been posted in vulnerable areas to

look after anti-smuggling work exclusively. Recently, the Customs Act, 1962 has been further amended to provide more severe punishments for smuggling offences and to plug loopholes.

Orders for purchase of 20 fast launches have been placed. A large complement of anti-smuggling staff has been sanctioned to check smuggling at major ports and airports and for combating smuggling on the West Coast and Tamil Nadu Coast. A Wireless communication net work is also being established.

Supply of Newsprint by Finland

7362. SHRI R. S. PANDEY:

SHRI PRABODH CHAN-DRA:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether Finland was approached for the supply of newsprint to our country; and
- (b) if so, the reaction of that country?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Yes, Sir.

(b) A quantity of 2135 tons of glazed newsprint has been supplied. Negotiations for obtaining further quantities are continuing.

De-licencing of **Textile Industry** 7363. SHRI R. S. PANDEY:

SHRI M. RAM GOPAL REDDY:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether Government have been urged to delicence the textile industry; and
 - (b) if so, the reasons therefor?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI .A. C. GEORGE): (a) Yes, Sir.

(b) Delicensing has been suggested by the Indian Cotton Mills Federation to facilitate speedy expansion of the cotton textile industry without requiring clearances under the Industrial Development and Regulation Act, 1961

Expansion of Cotton Textile Industry in Fifth Plan

7364. SHRI M. RAM GOPAL REDDY:

SHRI PRABODH CHANDRA:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether Government preposes to expand cotton textile industry in the Fifth Five Year Plan, and
 - .(b) if so, the extent of expansion?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Yes, Sir.

(b) The Task Force on Textile Industries has estimated the requirement of cotton yarn and cloth by 1978-79 at 1300 million Kgs. 10,400 million metres respectively. This would require creation of 5.71 million additional spindles and 85,510 additional looms over the levels obtaining in 1972. After reckoning with the expansion of spindleage and loomage already recommended during the Fourth Plan period, the capacity to be created during the Fifth Plan works out to 321 million spindles and 70.510 looms.

All India Training Institute of weights and measures, Pains 7365. SHRI BHOGENDRA .THA:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

(a) whether the All India Training Institute of Weights and Measures at Patna started by the Government of Bihar in 1962 was transferred to the Government of India in the same building and premises on the 1st January, 1970;

- (b) whether the West German expert, assigned by the Government of India for selection of site, selected Ranchi as the proper site through his report in August, 1973;
- (c) whether the Government of Bihar have already provided 17.30 acres of land valued at Rs. 30 lakhs along with other facilities for transfer of the re-named Indian Institute of Legal Metcorology; and
- (d) if so, what is the time schedule for the transfer of the Institute to Ranchi and other salient features thereabout?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A C GEORGE) (a) to (c). Yes. Sir

(d) The Institute is proposed to be shifted to Ranchi in the near future and developed on lines similar to the suggestions made by the German expert under the Central Plan Scheme.

Request from M.M.T.C for import of rough Diamonds

7366. SHRI M. SUDARSANAM:

SHRI R S. PANDEY:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether the Minerals Metals Trading Corporation has urged the Government to import more rough diamonds from abroad to meet the requirements of the diamond cutting and polishing industry; and
- (b) if wo, the decisions of Government thereon?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) and (b). No, Sir. However, Minerals and Metals Trading Corporation, through whom the import of rough diamonds is partially canalised, are trying to tap primary sources, in addition to getting supplies from Diamond Trading Company, and other sources.

89

1 जनवरी, 1973 से पूर्व सेवा निवृत्त हुए कर्मकारियों को तृतीय बेतन झायोग के प्रति—

7367. भी घटल विहारी वाजपेयी: भी फामनाथर व केही:

क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेगे कि

(क) क्या उन सरवारी मैंचारियों को. जो 1 जनवरी, 1973 में पूर्व सेवा-निवृत्त हो गये थे, तृतीय वेतन भ्रायोग की सिफारिणों के भ्राधार पर किये गये सरका ी निर्णयो तथा, महंगाई भत्ता वृद्धि से उन्ह विचत रखा गया है; भीर

(ख) इस सम्बन्ध में पूण तथ्य कथा हैं भौर इस विषमताको दूर करने के लिए क्या कार्यवाही की गई है?

विस्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री के० आर० गणेश): (क) ग्रीर (ख) तृतीय बेतन ग्रायोग द्वारा सिफरिश की गयी महनाई भने की यौजना केन्द्रीय सरकार के सेवारत कर्मचारियों को लागू होती है। परन्तु तृतीय बेतन ग्रायोग की सिफारिशों को लागू करने की तारीख ग्रयांत् 1 जनवरी, 1973 को ग्रयश उसके बाद मेवानिवृत होने वाले केन्द्रीय

सरकारी कर्मचारियों के मामले में श्रायोग ने जीवन निर्वाह सूचनाक में वृद्धि होने के कारण राहत की मंजूरी के लिये एक अलग योजना की सिफारिश की है। म्रायोग की सिफारिशों के अनुसार यह राहत सभी भावी पेंशनरों को मंजूर की जानी है, चाहे उनकी पैंशन की रकम कुछ भी हो। यह राहत उनकी पेशन के 5 प्रतिशत की दर में दी जायगी जिस की न्यूनतम रकम 5 रु० प्रति माम ग्रीर अधिकतम रकम 25 रु० प्रति माम होगी। प्रखिल भारतीय श्रीमक वर्ग उपभोक्ता मन्य सूचनांक (1960-100) के 12 महीनो के भीसत में जब जब 16 ग्रको की वृद्धि होती है तब तब इन दरो पर राहत दी जानी है। 216 मंकों पर राहत पहले ही 1 मगस्त 1973 मे और 232 ब्रक्तो पर 1 जनवरी 1974 को देय हो चुकी है। भायोग ने सिफा-रिण की थी कि इस योजना को 1 मार्च, 1973 से लागु किया जाय परन्तु उदारता के रूप मे सरकार ने श्रेणी II, III, ग्रौर IV के कर्मचा-रियों के संबंध में इस योजना को लागू करने की तारीख 1 जनवरी 1973 नियत की है।

2. यद्यपि आयोग की सिफारिशे केवल भावी पेशनरो पर लागू होती हैं. तथापि आयोग की इस सिफारिश से सबंधित लाभ को उन केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों को भी देने का निर्णय किया गया है जो 1-1-1973 से पूर्व सेवा निवृत्त हुये थे।

3. वर्तमान केन्द्रीय सरकारी पेंशनरों को, धर्मात् जो 1 जनवरी 1973 से पूर्व सेवा-निवृत्त हुए थे, ध्रतिरिक्त राहत देने के उपाय के रूप में और सेवारत केन्द्रीय सरकारी; कर्भचारियों के लिये पेंजन संबंधी लाभ देने के मामले में तृतीय बेतन धायोग की सिकारिशों को ध्यान में रखते हुए, सरकार ने इम कार के पेंशनरों को 1 जनवरी 1973 से निम्न लिखित तदर्थ राहत प्रदान करने का निगंय भी किया है:--

पेंशनरेंज	पेंशन में तदर्थ वृद्धि		
85 ६० से नीचे	15 T o		
85 इ० मे 209 इ० तक	21 হৃ৹		
210 इ० से 499 इ० तक	25 ই০		
500 रु॰ तथा उस मे उरर	35 ₹∘		

इस मामले से भावश्यक मादेश भी जारी कर दिये गये हैं।

World Bank Loans for Medernisation of Coal Mines

7368. SHRI S. N. SINGH DEO. Will the Minister of FINANCE pleased to state:

- (a) whether the World Bank released any credit for the modernisation of coal mines in India:
- (b) if so, when the World Bank released the credit and the amount of credit received, year-wise, during the last three years; and
- (c) the name of the Coal mine units which utilised the amount up to date?

MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): (a) Yes, Sir.

(b) and (c). No loan Agreements had been signed with the World Bank during the past three years for modernisation of coal mines in India. However, Indian Iren and Steel Co., (IISCO) had

utilised during the last three years an amount of Rs. 1.95 crores which was available out of the Agreement signed in 1961.

सरकारी क्षेत्र के उद्योगों में विद्युत की कमी तथा हड़ताल के कारण हुई हानि

7369. भी नाबु राम शहिरवार : न्या विसा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) गत एक वर्ष के बौरान हडतालों तथा बिजली की कमी के कारण सरकारी क्षेत्र के उद्योगो को कितनी हानि हई ;
- (ख) प्रन्येक मामले मे, अलग अलग उनका मुख्य ब्योरा क्या है ; भीर
- (ग) देश के मरकारी क्षेत्र के मभी उद्योगों को सुचारू रूप से चलाने के लिए सरकार द्वारा क्या प्रभावी कार्यवाही की जा रही है ?

विस मंत्रालय में राज्य मंत्री (भी के० श्चार गणेश) (क) में (ग) विजली की कमी और बिजनी बीई के कमंचारियों में श्रमिक ग्रमन्तीय के कारण सरकारी क्षेत्र के उद्योगों में उत्पादन में जो हानि हुई उसके बारे मे सूचना इकट्री की जा रही है और वह यथा शीध्र सभा-पटल पर रख दी जाएगी।

Increased levy on Steel products of Furnace Steel Plants

7370. SHRI C. K. JAFFER SHARIEF:

SHRI GAJADHAR MAJHI:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether Government have realised that the increased levy on the steel products of furnace steel plants will affect the production and the growth of the steel industry;
- (b) whether Government have considered the question of the production of glant units and small units while proposing the same rates of duty;

(c) whether Government realise that the ferrous scrap is considerably costlier than the raw materials used by the main producers; and

(d) if so, the broad outlines of the policy of Government in this regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) to (d). In view of the existence of a capacity considerably in excess of the availability of scrap, this industry has been brought within the purview of licensing under the Industrial (Development and Regu lation) Act, 1951 with effect from 31st October, 1973. Notwithstanding increased cost of ferrous scrap, these furnace steel plants have been doing well in view of the higher prices of their products and the absence of price control thereon. Further, the question is not to be looked upon only from the point of view of comparative costs of production but from other angles as well, including their present economic viability and the desirability of continued excise concession for their expansion. The Government are of the view that the expansion of these electric furnace units does not require continued excise relief and hence the withdrawal of the excise concession is not expected to have any adverse impact on the production and growth of this industry.

Agreement with USSR for Supply of Fertilizers by M.M.T.C.

7371. SHRI BANAMALI PATNAIK: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether a contract has been signed with Soviet Union for Supply of fertilisers worth Rs. 58 crores by the Minerals and Metals Trading Corporation;
- (b) if so, the terms and conditions thereof; and
- (c) how far it is going to meet our requirements?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Yes, Sir.

- (b) A statement showing details of the contracts is attached.
- (c) These imports would meet a portion of our total requirements.

Statement

Sl. No.	Commodity	Date of contract	Quantity (Tonnes)	Delivery Schedule
I Ure		28-1-74	2,00,000	March-December,74
2 Amn	onium Sulphate	28-1-74	75,000	March-December, 74
3 Musi	et of Potesh	28-1-74	50,000	January to Dec., 74
,				

Credit from I.D.A. for marketing facilities of Apples

7372. SHRI RAJDEO SINGH Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether the International Development Association nas extended a credit of about Rs. 10 croses to help in improving the processing and marketing facilities for apples in Himachal Pradesh:
- (b) whether this project envisages to provide some 10,000 small holding farmers with at least a 10 per cent increase in their average income; and
- (c) whether such schemes cover only Himachal Pradesh or other apple growing States too?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN). (a) and (b). Yes, Sir.

(c) The schemes covers only the State of Himachal Pradesh.

Tea Output

7373. SHRI RAM BHAGAT PAS-WAN:

SHRI M. RAM GOPAL REDDY:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether our tea output during 1973 has been beyond expectations;
 - (b) if so, the total production; and
- (c) the quantity exported out of this?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE); (a) and (b). Production of tea during 1973 was 468.28 million kgs. which exceeded the target by 8.3 million kgs.

(c) Exports during January-November, 1973 was 165.4 million kgs.

Cotton Procurement

7374. DR. KARNI SINGH: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) the target that was fixed for cotton procurement during the years 1972-73 and 1973-74 and its actual procurement during each of these years;
- (b) the quantity of cotton imported during each of these years; and
- (c) the estimated production, procurement target and proposed import of cotton during the year 1974-75?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Government did not prescribe any procurement targets for 1972-73 and 1973-74. Actual purchases during 1972-75 cotton year amounted to 3.20 lac bales of line and from 1st September, 1973 upto end of March, 1974, to 3 lac bales, during cotton year 1973-74

- (b) 3.32 lac bales of cotton were imported during 1972-73; and during 1973-74 the quantity of cotton likely to be imported is 1.00 lac bales.
- (c) This assessment has yet to be made.

Credit to Cotton Corporation

7375. SHRI M. RAM GOPAL REDDY: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state:

- (a) whether the tardy flow of credit to Cotton Corporation of India has resulted in slowing down its cotton purchases; and
- (b) if so, the remedial measures proposed?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHE)! A. C. GEROGE): (a) The Cotton Corporation's purchase programmes for

cotton in the domestic market are being implemented within the credit facilities available to the Corporation.

97

(b) Government is watching the cotton market situation with particular reference to the price levels obtaining for cotton. The need for taking special remedial steps has not arisen so far.

Advancing of Loans by Nationalised Banks to Farmers for Setting up of Gobar Gas Plants

7376. DR. LAXMINARAYAN PANDEYA:

SHRI SHANKER DAYAL SINGH:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) the names of the nationalised banks which have started advancing loans to the farmers for setting up Cow Dung gas plants; and
- (b) if so, the number of persons given loans for the purpose so far?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRIMATI SUSHILA ROHATGI): (a) All the nationalised banks have recently decided to finance the programme of setting up of gobar gas plants.

(b) Banks do not maintain separate data on advances for this purpose. Such advances would, however, figure under advances to the agricultural sector. According to information specially collected from the banks, 5 of the nationalised banks are reported to have taken action to sanction loans for setting up of gobar gas plants. A statement indicating the progress of sanction of loans is enclosed.

Statement

Central Limit of Rs. 10 lakhs sanctioned for financing 500 beneficiaries Individual proposals not yet received.

Bank of Kolhapur branch received 6 proposals which are being processed. Canara Out of 35 proposals received, the Bank has sanctioned 22 for Rs. 41000.

98

Dena Sanctioned a scheme of cow dung plant with outlay of Rs. 28 lakhs for financing 1000 plants in Gujarat.

Syndicate 55 loans for Rs. 1, 20, 000 have Bank been sanctined.

Short Fall in Nylon Yarn Output

7377. SHRI G. Y. KRISHNAN: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether there is an acute shortfall in the nylon yarn output;
- (b) if so, to what extent, and the reasons thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) The production of nylon yarn during the last 3 years is given below:—

	 	Nylon textile yarn	Nylon tyre yarn
1971	٠.	9,840	610
1972		11,712	2,090
1973		11,350	2,188

There is thus no appreciable fall in nylon yarn output.

(b) Does not arise.

Experiments in Artificial Rain

7379. SHRI RAJDEO SINGH: Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

(a) whether in order to obtain more rains, cloud seeding experiments, particularly using sophisticated techniques like dynamical cloud seeding have been made or are being planned;

(c) whether the experiments in different regions have the same cost and success or do they differ in North and South regions?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR): (a) Cloud seeding experiments using dynamical cloud seeding techniques have not so far been carried out in the country, nor are there any plans for doing so. Experiments using conventional techniques, however, have been made in Tamil Nadu (May 1973) and Maharashtra (June, 1973.)

- (b) Experiments using dynamical techniques are undoubtedly costly in view of the high foreign exchange requirement and that the expected benefits are indeterminate. Indigenously developed techniques are comparatively cheap.
- (c) The cost of experiments would be almost the same any where while the degrees of success in the different regions is being evaluated.

Setting up of a Textile Mill in Guyana

7380. SHRI V. MAYAVAN:

SHRI P. M. MEHTA:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether Union Government have allowed the Tata experts to set up a textile mill in the Guyana; and
- (b) if so, when the same is likely to be set up and what are the main terms and conditions of the agreement?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) and (b). The Government has so far not received

any proposal from Tatas for setting up a textile mill in Guyana. However, M/s. Tata Exports are understood to have indicated their willingness to the Government of Guyana to undertake feasibility study of the project.

किरोजाकार में धावकर समिकारियों द्वारा छापे

7381. **जी जूल अन्य कर्जा:** क्या बिक्श मंत्री यह बताने की क्रपा करेंगे कि :

- (क) क्या मागरा के मायकर प्रधिका— रियों ने मार्च, 1974 में फिरोजाबाद की एक फर्म पर छापा मारकर लगभग 25 लाख रुपये का काला धन बरामद किया है . ग्रीर
- (खं) यदि हां, तो इस बारे में मुख्य बाते कौन सी हैं ?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री के० प्रारं गणंत्र): (क) ग्रीरं (ख) ग्रायकर विभाग के ग्राधिकारियों ने 4 तथा 5 मार्च, 1974 को फिरोज्याबाद में कुछ रसायन व्या-पारियों के व्यापारिक तथा रिहायणी स्थानों की तलाशिया खी जिसके परिणामस्वरूप लेखा बहियों तथा दस्तावेजों के ग्रालावा 18 लाख रुपयं मूल्य की लेखा-बाह्य परिसम्पत्तिया पकडी गईं।

डाकधर बचत बैंक इनामी बीजना

7382. भी चिरंजीय का : क्या विश्त मंत्री यह बढ़ाने की कृषा करेगे कि :

- (क) क्या प्रामीण केलो में स्रिधकाधिक वचत को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से शाखा डाकबरों में सीसतन जना रुपये का कुछ प्रतिकत साखा डांकघरों में कार्य करने बालों को भी दिया जाता है: और
- (ख) यदि हां, तो उमका संक्षिप्त विवरण क्या है ?

विश्व शंत्रासम उप शंकी (श्रीमती पुत्रीका रोहतणी) : (क) और (ख). ब्रम्मीम क्षेत्रों से और घिषक वथतें जुटाने के लिए इस समय मतिरिक्त विभागीय शाखा भोस्ट मास्टरों को विशेष प्रीत्माहन दिये जाते हैं। इसकी खाम खास बातें इस प्रकार है।

- (i) प्रतिनिक्त विभागीय णाया पोस्ट मास्टरों को उनके डाक बरों में चल रहे डाकघर बचत बैक खातों में पिछले वर्ष जमा के रूप में मृद्ध प्राप्तियां से, वर्ष के ग्रन्त में कम से कम 500 रुपये की मृद्ध वृद्धि पर, जिसमें व्याज शामिल नहीं है, 1 प्रतिशत कमी मन दिया जाता है।
- (ii) प्रतिरिक्त विभागीय शाखा पोस्टमास्टरों को उनके द्वारा प्राप्त 2, 3 भीर 5 वर्ष के डाकचर सावधिक जमा खानो पर भी एक प्रतिशत कमीशन दिया जाता है।

Supply of Raw Cashew Nuts to Factories

7383. SHRI C. JANARDHANAN: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) Whether the Kerala Cashew Development Corporation has urged the Centre to supply all the raw cashew allotted to the 34 factories which are being taken over by the Corporation; and
 - (b) if so, the decision taken thereon?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) and (b). The Cashew Corporation of India received from the Kerala State Cashew Development Corporation in January 1974 a list of 34 factories and it was indicated by the Kerala State Cashew Development Corporation that they were negotiating with the owners of the concerned factories for long term lease. The allocation of raw cashew

nuts will be made to such of the factories as satisfy the conditions laid down in Public Notice No. 18:-ITC (PN)/73 dated the 3rd November, 1973.

Revision in Leather Export Policy

- 7 84. SHRI YAMUNA PRASAD MANDAL: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:
- (a) whether Tamil Nadu Government have urged the Centre to revise its leather export policy; and
- (b) if so, the decision taken thereon?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE); (a) While agreeing with the policy of the Central Government that the export of semi-processed hides and skins should be reduced and the export of finished leather increased, the Tamil Nadu Government have rucommended that finishing units be set up jointly by the Central and State Governments so that the small tanneries can utilise such facilities and produce finished leather, and that the small tanneries might be allowed to export their semi-finished hides and skins till the finishing centres facilities become available.

(b) The Central Government are trying to ensure that measures to reduce the export of semi-processed hides and skins keep in step with the development of leather finishing and leather manufacturing industry in the country. The Central Government have especially kept in view the interests of the small tanners while formulating the quota scheme and they have not imposed any further cut in the export quotas for 1974-75. Further, the Central Government with the help of the State Governments are establishing finishing centres.

Purchase of Rough Diamonds from M.M.T.C.

7885. SHRI K. MALLANNA. Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether internal trade in diamonds has been badly hit by the strict credit squeeze and the small exporters are finding it extremely difficult to get finances for purchasing rough diamonds from the Minerals and Metals Trading Corporation; and
- (b) if so, the policy of Government 1) this regard?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A C. GEORGE): (a) and (b) Credit squeeze by the Reserve Bank of India did effect the availability of finances with the exporters for purchasing

rough diamonds from Minerals and Metals Trading Corporation. Now credit facilities under the Bill Marketing Scheme are being given to the exporters to enable them to purchase rough diamonds from the Corporation.

टैनसटाइल उद्योगों में उत्पादन में कमी

7387. श्री लक्ष्मीनारायण पांडेय. क्या वाणिज्य मनी यह बताने की कृपा करने कि टैक्सटाइल उद्योग ने उत्पादनों में गत वर्ष (1972-73) की तुलना में इस वर्ष कितनी कमी रही तथा इसने क्या कारण है ?

वाणिडय मंत्रालय में उप मंत्री (श्री ए० सी० जार्ज): 1972 तथा 1973 के बीरान सूत तथा कपड़े के उत्पादन के झाकड़े नीचे दिये जाते हैं—

वर्ष	स (लाख रिष्यामः)	ग् नी क्पडा (लाख मीट र मे)				
	14 \ %(4)	मिल क्षेत्र	विकेन्द्रीकृत क्षेत्र	योग		
1972	9722 29	42448 64	37770 00 8021	8.64		
1 97 3 (जून-नवम्द ⁷)	9058 87	38054 95	33256 50 713 1	6.45		

चूंकि अब तक उत्पादन के अन्तिम आकड़े
1973 के केवल स्थारह महीनों के सम्बन्ध में
उपलब्ध हैं अतः इस अवस्था में उनकी नुनना
1972 के बीरान हुए उत्पादन में करना
सभव नहीं है।

Import of Aluminium by private cable Units

7388. SHRI RAMAVATAR SHASTRI; Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether Government have decided to permit the private Cable Units to import Aluminium; and
 - (b) if so, the reasons therefor?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C GEORGE): (a) and (b). In terms of the import policy for 1973-74 period. import of Aluminium was not permitted. In order to meet the shortfall, it has been decided to make an actual user provision in the import policy for 1974-75 period for import of E.C. Grade Aluminium through the Minerals and Metals Trading Corporation.

Outstanding amount of Foreign Debt

7389, PROF. NARAIN CHAND PA-RASHAR: Will the Minister of FIN-ANCE be please to state:

- (a) the total amount of Foreign debt outstanding against India as on 31st March, 1974, as also the amount of interest paid by India on this amount in the months of January, February and March, 1974; and
- (b) the country_wise break-up of the total amount of Foreign debt against India and the rate of interest m each case?

OF FINANCE THE MINISTER (SHRI YESHWANT RAO CHAVAN). (a) and (b). A statement giving the information is laid on the Table of the House (Placed in Library. See No. LT-6752/74).

Arrears of Income Tax in Punjab, Haryana and Himachal Pradesh

7390, PROF. NARAIN CHAND PA-RASHAR: Will the Minister of FIN-ANCE be pleased to state:

- (a) the outstanding amount of Income Tax as on 31st March, 1974 to be realised by Government in Himachal Pradesh, Punjab and Haryana, respectively; and
- (b) the amount of Income Tax realised by Government in each of the three States in the past three years?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) and (b). The requisite information is being collected and will be laid on the Table of the House as early as possible.

Export of Wool and Woollens

7392. SHRI C. K. JAFFER SHARIEF:

SHRI K. MALLANNA:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) the particulars regarding the earning in foreign exchange from export of wool and woollens during 1972-73, country-wise; and
- (b) whether any study group on woollen sector for the improvement of woollen industry was appointed by Government and if so, the broad outlines regarding its recommendations?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) The information is given in the statement attached.

- (b) Yes, Sir. A Working Group on Wollen Textiles under the chairmanship of the Textile Commissioner was appointed in order to formulate the guidelines for development of woollen industry. This group has made the following recommendations:-
 - (i) As far as existing units, which are running very much short of raw materials, are concerned, it should be ensured that their availability of raw material is improved.
 - (ii) Certain expansions had been sanctioned by the Ministry in the 4th Five Year Plan period on some assumptions. There was need to reexamine these commitments and except where effective steps had already been taken the capacity should be cancelled.
 - (iii) Expansion to be sanctioned in future should be utilised for the export generation only and that there should not be any slant for domestic consumption. This policy should be applicable to new as well as to existing units.

Statement

		Siu	LE110E16		
	S. Con No.	untry		i	Value n lakhs of Re
I.	RAW WOO.	L		-	49.00
2.	U.K		•	•	48·33
3.	Netherland		•	•	24.01
4.	U. S. S. R.				149.99
11.	WOOLLEN IND MIXEL	SIWC FAB	RSTE RICS	D	
r.	U.K.				72.38
2.	U.S.S.R.		•		14.42
3•	Canada				18.80
III.	woolle!	V BLA	INKET	·s	
1	. Banglades	h			138-71
IV.	WOOLLEN ARMENIS	REAL	DY-MA	1D	
1.					8 6 -०९
2.	Sweden				30.67
V . 6	VOOLLEN I	iosii	RY		
1.	U. S. S. R				1215-20
2.	Bangladesh				94.40
3.	Czechoslov	akia			95.₹5
4.	Hungary		•		12.80
5.	Poland.	•	•		142 67
VI.	WOOLLEN RUGGETS	CARI	PETS	ANI	D
ı.	Australia	•	•	•	63.48
2.	Canada.		•	•	116.65
3.	France	•	•	•	22 03
4.	Federal Rep	of Ge	rmany	•	775*93
5.	Netherlands	•	•	•	64 · 48
6.	l'ioand .		•	•	69-88
7.	U.K	•	•	•	23 8· 76
8.	U. S. A.	•		•	504.49
		.,			

No.	Country				Value in lakhs of Rs		
9.	Belgium				38.04		
10.	Denmark				17.53		
II.	Switzerland				20.34		
12.	Sweden				35.13		
13.	U.S.S.R.				70.47		
Total	value of expor	t du	ıın g I	4 la	3 Rs. 819·62 khs or say 1·20 Rs.		

than Rs. 10 lakhs only have been included in the statement

Demand of Indian Fibre Yarn Abroad

7393, SHRI S N. MISRA: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether the increase in demand for Indian Fibre Yarn in the world market has been assessed by Government;
- (b) if so, the broad features thereof; and
- (c) the steps Government propose to take to step up production of fibre yarn for export?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) No, Sir.

(b) and (c) Do not arise.

Results of Inquiry against the Sanction of Loan to Durgapur Chemicals Limited by United Commercial Bank

7394. SHRI S. N. MISRA: Will the the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) whether the inquiry against the sanction of loan to the Durgapur

Chemicals Limited by United Commercial Bank has since been completed by Government;

- (b) if so, the result thereof; and
- (c) if not, the reasons for delay?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESWANTRAO CHAVAN):
(a) Government have not instituted any enquiry against the sanction of loan to the Durgapur Chemicals Ltd. (a wholly owned undertaking of the Government of West Bengal). by United Commercial Bank.

b) and (c). Do not arise.

Decision taken about Dummy Employees of General Insurance Companies

7395. SHRI S. N. MISRA; Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether General Insurance Companies which have now been nationalised had several thousands of dummy employees; and
- (b) if so, the action taken by Government in their case?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI-MATI SUSHILA ROHATGI): (a) and (b). In the General Insurance Companies, the practice of dummy appointments did exist on the Development side. Scon after Nationalisation, the Custodians were asked by Government to terminate all such appointments and to reduce the salaries in other cases where they were on exaggerated scales. As a result of this, the Custodians terminated 1037 appointments and reduced salaries of 80 Development Officers/Inspectors.

Compensation to Central Government Employees not aliotted Government Accommodation

7396. DR. H. P. SHARMA: Will the Minister of FINANCE be pleased to state what compensation, if any, is proposed to be paid to such Central Government employees as have not been allotted Government accommodation to put them at par with the allottees of such accommodation?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): In the case of Central Government employees who have not been allotted Government accommodation, compensation is granted in the shape of house rent allowance. Government's decisions on the recommendations of the Third Pay Commission in respect of house rent allowance have already been notified in Resolution No. 70 (34) 78-Imp.Cell dated 1st November, 1973, published in Part-I, Section I of the Gazette of India-Extraordinary No. 257 dated 1st November, 1973, copies of which have been placed in the Parliament Library on 8th November 1973.

Proposal for Compulsory Savings for Industrial Investment

7397. SHRI BHOGENDRA JHA: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether it is proposed to introduce compulsory savings for industrial investments by the income tax assesses in the highest category at least of the amount left to them as a relief given by this year's budget; and
- (b) if so, the salient feautres thereabout?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) No, Sir.

(b) Does not arise.

Disposal of Smuggled Goods

7398. SHRI BHOGENDRA JHA: Will the Minister of FINANCE be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 3366 on the 15th March, 1974 regarding smuggled goods seized in 1972-73 and state:

- (a) what is the manner and method of disposal of seized goods;
- (b) how many smugglers have been convicted or acquitted or are being prosecuted during the last three years for having been found in possession of smuggled goods;
- (c) what steps are being taken to eliminate the free sale of smuggled goods in the markets of Bombay, Calcutta, Madras and Delhi; and
- (d) whether responsibilities are being fixed and action taken for failure to stop the same?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) A statement setting out the procedure for sale and disposal of confiscated goods is annexed.

(b) The number of persons who were convicted, the number of persons acquitted by the Courts and the number of persons against whom prosecutions were launched by the Customs authorities for smuggling offences, during the years 1971, 1972 and 1973 was as follows:

Ma of Ma of the of

37---

уеаг	per	o or sons victed	persons acquited by the courts	persons	
1971	*	351	125	~<8	
1972		523	130	984	
1973		503	208	1217	

(c) and (d). Every possible effort is being made by the Customs authorities to check sales of smuggled goods in the markets of Bombay, Calcutta, Madras and Delhi and with this end in view they have been organising several raids not only on hawkers, shops and stalls but also on storage godowns and Transport Depots which feed these. These measures are being further intensified. Suitable action is taken against any officer who is found corrupt or negligent.

Statement

PROCEDURE FOR SALE AND DIS-POSAL OF CONFISCATED GOODS

- 1 Consumer and luxury goods are, except as indicated below, sold through National Consumers Co-operative Federation Ltd., New Delhi and also to certain Canteens and Co-operatives controlled by Government, such as Canteen Stores Department, Central Government Employees Consumers' Co-operative Society Ltd
- 2 Cloves and spices are sold to M/s. National Consumers Co-operative Federation Ltd., New Delhi, Government controlled Cooperatives and Canteens and also by Public auctions restricted to import quota holders.
- 3. Nylon and other synthetic yarns are sold by the Department directly to the Weavers' Associations/Cooperatives and certified actual users in restricted auction
- 4 Diamonds, precious and semiprecious stones and conveyances are sold departmentally.
- 5 Gold and Silver are despatched to the Mint.
- 6. Currencies are deposited with the Reserve Bank of India.
- 7 Launches and arms and ammunition are kept for departmental use for anti-smuggling work.

Trade Consortium with Sri Lanks

7399. SHRI YAMUNA PRASAD MANDAL: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state:

- (a) whether our country plans trade consortium with Sri Lanka; and
 - (b) if so, the particulars thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) No. Sir.

(b) Does not arise.

Exports to and Joint Ventures with Gulf Countries

7400. PROF. MADHU DANDA-VATE:

SHRI RAGHUNANDANLAL BHATIA:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether the Institute of Foreign Trade has identified more than 40 items that have potential for export to Persian countries and also areas where joint ventures in these countries can be fruitful;
- (b) if so, the names of the items and the areas so identified; and
- (c) what steps will be taken by Government to utilize the findings of the survey of Institute of Foreign Trade?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) to (c). Following items have been identified by the Indian Institute of Foreign Trade as

having potential for exports to Gulf countries:-

- I. Tea (tea bags)
- 2. Coffee
- 3. Fruits & Vegetables (fresh & Processed)
- 4. Meat, Poultary & meat products
- 5. Rice
- 6 Barley
- Sugar
- 8. Tobacco & tobacco manufactures
- 9. Confectionery Products
- 10. Cotton Fabrics
- 11. Readymade garments
- 12. Woollen fabrics
- 13. Blankets
- 14. Carpets & other floor coverings
- 15. Road Transport Vehicles
- 16. Auto spare parts
- 17. Cycle & Parts
- 18. Tyres & Tubes
- 19. Excavating & leveling machines.
- 20. Material Handling equipment
- 21. Machinery for construction and cargo handling
- 22. Refrigerators
- 23. Air conditioners
- 24. Electrical machinery
- 25. Flectric Motors & generators
- 26. Diesel Engines
- 27. Internal Combustion engines
- 28. Sewing machines
- 29. Handtools including tool sets.
- 30. Conduit Pipes
- 31. Steel Pipes
- 32. Pumps (both booster & centifugal)
- 33. Scientific Instruments
- 34. Iron & Steel construction materials
- 35. Agricultural implements
- 36. Tube & Pipe fittings
- 37. Transmission Line Towers
- 38 Cable & Wires (incl. insulated)
- 39. Telecommunication Equipment
- 40. Aluminium Ware
- 41. Office machines
- 42. Cement
- 43. Asbestos Cement Pipes
- 44. Sanutary ware and fittings
- 45. Tiles
- 46. Creckery

- 47. Glassware
- 48. Plywood & Hard board
- 49. Wood, wood products, timber & lumber
- 50. Wooden & Steel furniture
- 51. Clocks
- 52. Plastic Goods
- 53. Travel Goods
- 54. Footwear
- 55. Medicinal & Pharmaceutic Il Products
- 56. Paints & Varnishes
- 57. Essential Oils, perfumes, Perlumery and cosmetics.
- 58. Vegetable Oils & fats
- 59. Detergents
- 60. Hand bags
- 61. Brushes & Bijoms
- 62. Razor Blades
- 63, Playing Cards
- 64. Industrial Fasteners
- 65. Vacuum Flasks
- 66. Toys

Besides these items, the Indian Institute of Foreign Trade have also identified following fields which offer scope for joint ventures in these countries:—

- (1) Petrochemical Industries
- (2) Gas Turbines
- (3) Fertilisers
- (4) Mini steel plants and rerolling mills
- (5) Printing industry
- (6) Cement Plants
- (7) Porcelain products
- (8) Servicing industries and work shops,

These findings are bing brought to the notice of Indian exporters and entrepreneurs through the Export Promotion Councils etc., so that full advantage may be taken of the opportunities existing in the Gulf countries.

Demand for reduction in Tariffs proposed by European Economic community

7401. PROF. MADHU DANDA-VATE: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state:

- (a) whether India has sought further reduction in the tariffs proposed by the European Economic Community under its generalised scheme of preference; and
 - (b) if so, the outcome thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) and (b) India has been making efforts with the European Economic Community for improvements to their generalised preference scheme. The Community's 1974 scheme already contains some improvements in regard to product coverage, reduction in the number of "sensitive" items etc. Further improvements required in their 1974 scheme have already been brought to the notice of the Community and these are under consideration of the Community.

Study of Yarn situation in consultation with Textile Commissioner

7402. PROF MADHU DANDA-VATE: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state:

- (a) whether a comprehensive study of the yarn situation has been made recently in consultation with the Textile Commissioner;
- (b) if so, what are the salient features of this study; and
- (c) what steps are proposed to implement the suggestions regarding export of yarn, emerging from the study?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SIIRI A. C. GEORGE): (a) Yes, Sir.

(b) and (c). On the basis of the recent study of the yarn situation, it has been decided to allow export of 24 million kgs. of cotton yarn during 1974. Another one million kgs. have been set apart for exports against earlier orders pending on account of the Government ban on yarn exports. The necessary Public Notice is under issue, and shipments are expected to start very shortly.

श्रवल सम्पत्ति का श्रविप्रहण 7403. श्री मृत कम इ.गा : क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृता करेंगे कि :

- (क) दिसम्बर, 1973 मे पारित आय कर (मंणोधन) अधिनियम, 1973 के अधीन अभी तक अधिश्रहित सम्पत्ति का मूल्य कितना है, किन स्थानों में यह सम्पत्ति अधि— अहित की गयी तथा उससे सरकार को कितना साम हुआ; और
- (क) इस समय नोटिस दिये जाने के बाद मक्षम अधिकारियों के पास कितने मामले अम्बित है ग्रीर यह मामले कब से लम्बित हैं ?

विस मंत्रालय में राज्य मंत्री (भी के० बार • गणेश) : (क) . 31 मार्च, 1974 तक मक्षम प्राधिकारियों ने 26 सम्पत्तियों के अभिग्रहण के आदेश पारित किये है। इनमे से पाच मम्पत्तियां दिल्ली मे, चार जयपूर मे, पाच चीम्गढ मे, तीन मद्रास मे दो बाना में भौर एक एक भ्रम्तसर, चडीगढ, मद्रै, सेलम, श्रहमदाबाद, नासिक ग्रीर वरहामपुर मे स्थित है। इन 26 सम्पत्तियों का कूल उचित बाजार मल्य जैमाकि ग्राभिग्रहण ग्रादेश मे श्रनमान लगाया गया है, लगभग 33 लाख रुपया है जबकि अन्तरण विलेखों में दिखाया गया कुल प्रत्यक्ष प्रतिफल लगभग 17है लाख रु० है। ये सम्पतिया सरकार में तभी निहित होगी जब सक्षम प्राधिकारियो द्वारा पारित ग्रभिग्रहण ग्रादेश ग्रन्तिम हो जाएंगे भीर जब सम्पत्तियों का कब्जा सक्षम प्राधिकारी द्वारा इस संबध मे जारी किये जाने व ले लिखित नोटिस के अनुसरण में समर्पित अथवा दे दिया जायगा । ग्रभिग्रहण श्रादेश तभी अन्तिम होगे जब इन आदेशो की अपीलो मे पुष्टि की जायगी भयवा यदि भादेशो के विरुद्ध कोई अपील नहीं की गयी हो तो उस हालत मे भी तब ग्रन्तिम होगे जब ग्रपील दायर करने के लिए निर्धारित समय-रामः मभाप्त हो जायेगी। इनमें में किसी बादेश के बन्तिम होने की कोई सुचना नही है। इन परिस्थितियों में, इन

श्रादेशों से इस समय सरकार को कोई लाभ होने का प्रक्त पैदा नही होना ।

(ख) सूचना तत्काल उपलब्ध नही है। इसे इकट्ठा किया जा रहा है और इकट्ठा होते ही सदन की मेज पर रख दिया जायगा।

Proposal to form State Jute Corporation in West Bengal

7404 SHRI PRIYA RANJAN DAS MUNSI: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state.

- (a) whether Union Government have received recently any proposal or suggestions from West Bengal Government or non-official sources to form State Jute Corporation; and
- (b) if so, the decisions of Government thereon?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C GEORGE): (a) and (b). Though so far no specific proposal has been received, Government have in principle no objection to the setting up of such a Corporation.

Advancing of Loans by Nationalised Banks under Self-Employment Scheme

7405 SHRI PRIYA RANJAN DAS MUNSI, Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether Self-employment Scheme through nationalised banks and the amount allocated for that have not been fully utilized in the year 1972-73 and 1973-74,
- (b) the total break-up of allocation of advance or loan for such programme, State-wise, during that period; and
- (c) the amount already disbursed. State-wise?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN):
(a) to (c). Presumably the Hon'ble Member is referring to banks' participation in the 'Half-a-million Jobs Programme' being implemented by the State Governments to provide gainful employment to the educated unemployed

All banks have issued instructions to their branch managers to participate in the programme fully. It has, however, not been considered feasible or desirable to set down State-wise or bankwise targets Banks are yet to gear up their data flow System to provide information pn a uniform basis regarding their

lendings under the programme. A progorma calling for such information every quarter has now been prescribed for them. It is expected that such reports would be compiled by the banks from the quarter ending March, 1974.

Besides, the 'Half-a-million jobs Programme, public sector banks have been financing self-employment ventures of the educated unemployed m such priority sectors as Small Scale Industry, Retail Trade and Small Business and Professional and Self-employed. State-wise data on their outstanding credit to these vectors as at the end of June, 1973 is setout in the attached statement

Statement

Advances to Priority Sectors by Public Sector Banks as at the end of June 1973 *

(Amount in Rs. Lakhs)

State/Union Territories	Small Scale Industry		Retail Trade Small Business.	Professional and Self-employed			
	No. of Units	Amount outstand- ing	No of A/cs	Amount outstand	No of 1- A'cs	Amount outs'and- ing	
1	2	3	4	5	6	7	
1. Andhra Pradesh	18008	3752.52	16901	544.03	8868	109.90	
2. Assam	1335	528-25	2902	292.12	405	16 00	
3. Bihar .	2951	1516-94	6961	539.90	2588	55 09	
4. Gujarat	13461	6638-77	21121	787.73	14239	170.14	
5. Haryana	3166	1926.06	2777	140.27	606	12 65	
6. Himachal Pradesh	208	60· 07	699	34 41	174	1.29	
7. Jammu & Kashmir }	785	200-96	1317	67.90	259	6.59	
8. Karnatak:	11767	3870.45	43326	1025 73	17537	CI-95	
9. Kerala .	9084	1315-46	16137	sco 34	9188	155.23	
10. Madhya Predesh .	4 9 89	1768-82	7596	327.18	3433	67.71	
11 Maharashtra	26199	14383-14	33211	1534 32	22919	535.83	
12. Manipur	128	12.91	262	19.47	60	3.85	
13. Meghalaya.	49	7 37	319	31 · 38	35	U 53	

^{*}Provisional

1		2	3	4	5	6	7
4 Nagaland	•	19	10, 68	93	7 x 6		
5. Orissa .		1417	387.74	3767	173.31	977	14.11
6. Punjab		7105	3529.79	36 79	191.59	1297	24.97
17. Rajasthan .		8635	1149.03	5256	233-61	2738	25.08
18. Tamil Nadu		16708	7281-94	28003	9 66·84	9062	295.06
19. Tripuia.		54	5.83	365	39·8 9	19	1.04
20. Uttar Prad sit		16339	4159.40	16100	545.98	7526	113.56
21. West Bengal.		11146	5409.62	13911	969.72	3334	111.36
UNION FERRITOI UNSPECIFIED BA 22. Andaman & Nic	NKS	4793	3248 · 49	469	29·96	153	3. 1 3
bar Islands			••	214	4.55	48	0.84
23. Arunachal Prade	sh	• •	••				
24. Chandigarh .		• •	••	222	21.02	18	0. 22
25. Dadra & Nagar Haveli		••	••	119	1.04	178	0.5
26. Delhi		••		3508	247.77	776	72.3
27. Gua, Daman & I	Diu	••	••	2128	185-28	849	20.9
28. Lakshadweep	•	••	••	19	0.16	3	0.0
29. Mizoram, .	•	••	••	••	••		
30. Pondicherry	•	••	••	360	14.82	54	2.7
TOTAL	•	158376	64164-24	231742	9477:52	107343	2122.5

Scarcity of Yarn for Distribution to Handlooms

7406. SHRI S. A. MURUGANAN-THAM:

> SHRI M. KALYANASUN-DARAM:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether yarn is being sold in black market in Tamil Nadu; and
- (b) if so, what steps Government have taken to stop this?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) There is no

price control on cotton yarn. The question of black-marketing it does not therefore, arise.

(b) Does not arise.

Proposal of Indian Airlines for Imposition of Fuel Surcharges

7407. SHRI DEVINDER SINGH GARCHA:

SHRI GAJADHAR MAJHI.

Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

(a) whether the Indian Airlines has proposed to Government for imposi-

tion of fuel surcharge on its ticket to meet the enhanced fuel bill; and

(b) if so, the reaction of Government to the suggestion?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR): (a) and (b). A proposal in this regard has been received from Indian Airlines. No final decision has been taken so far.

Tea Replantation Subsidy to Gaya Ganga Tea Estate in Siliguri

7408. SHRI B. K. DASCHOW-DHURY: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state:

- (a) the amount of tea replantation subsidy and loans granted and disbursed to Gaya Ganga Tea Estate in Siliguri. Darjeeling district for the last two years, together with details of date of application received, date of approval, date of completion of uprooting and date of disbursement of first instalment of subsidy;
- (b) whether any other tea estate in any part of the country has been paid the first instalment of for such huge area and within such short time since the introduction of the scheme in October, 1968; and
- (c) if not, whether Government are going to institute a special and independent investigation into affairs as to the physical and financial feasibility of uprooting an area of 153 hectares of old tea bushes within a few months from the date of convey of approval of application for subsidy, co-relation with figures of crop with Central Excise and Tea Cess and status of land proposed to be replanted to vesting of surplus land of the estate with the State Government?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) to (c). Information is being collected and will be laid on the Table of the House.

Longview Tea Co.

7409. SHRI B. K DASCHOW-DHURY: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state:

- (a) whether Chairman, Tea Board and a Deputy-Secretary of the Finance Ministry have jointly filed an affidavit in opposition on behalf of the Union of India in the Civil Revision Case No. 3142(W) of 1970 in the High Court of Calcutta in which Longview Tea Company have challenged classification and grouping of Longview Tea Estate in Darjeeling Excise Zone; and
- (b) if so, whether Chairman, Board has brought to the notice of Government and High Court consequent to its filing the case in 1970, Longview Tea Estate, had accepted in 1972 Tea Board's Prize for highest yield in Darjeeling Hill Excise Zone; and if not, the reasons thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) The joint affidavit affirmed by the Chairman, Tea Board and Deputy Secretary to the Government of India, Ministry of Finance on 24th August, 1970 in connection with a similar writ petition filed by Balimara Tea Co. before the High Court of Calcutta was used as a supporting affidavit in all other individual writ petitions including that of Longview Tea Company.

(b) It was not considered relevant to the case to draw the attention either of Government of India or of the High Court of Calcutta to the

fact of acceptance by Longview Tea Estate of a prize for highest yield for Darjeeling area for years 1969 and 1970 at a function held in the office of Tea Board in Calcutta on 23rd March, 1972 as the prizes were not awarded on the basis of excise zones in the country. Under the Board's scheme of awards for highest yields and prizes, the tea producers in the country are divided into eleven areas as against only five excise zones.

Foreign Exchange Earnings of Coca Cola Export Corporation

7410. SHRI SHASHI BHUSHAN: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) the cost at which Coco Cola Export Corporation i_S earning foreign exchange with reference to Mr. Justice Nam's observation on Gabriel's expansion and the Ministry of Finance formula of 20 per cent net gain in foreign exchange; and
- (b) whether the same privileges as are given to this Corporation shall be given to other companies also?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): (a) and (b). No such study has been undertaken.

According to Government's present policy, Branches of foreign companies are allowed freely to remit the profits after taxes earned in this country and such remittances are generally not linked to their export earnings. However, with a view to limit the repatriation of profits etc. by the Indian Branch of Coca Cela Export Corporation, from April 1972 its remittances on all counts (Profits, expenses, imports) were limited to 80 per cent of

export spraings from its own items of production. Hence no privilege was extended to Coca Cola Corporation but a restriction was imposed on its remittances.

Replacement of one Rupee Notes by Rupee Coins

7411. SHRI PURUSHOTTAM KAKODKAR:

SHRI P. GANGADEB:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether Government are considering to replace one rupee note by rupee coins in a phased manner;
- (b) if so, whether the scheme is going to involve additional costs in view of rising prices of metals;
- (c) if so, the reasons for mooting such a proposal; and
- (d) when a final decision is likely to be taken in the matter?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) to (c). The proposal is under consideration. Some of the major reasons for mooting the proposal are:

- (i) To freeze the circulation of 1-rupee notes more or less at the existing level, in view of the limited printing capacity at Nasik and Dewas and of the paper making capacity of the Security Paper Mill, Hoshangabad.
- (ii) The life of the rupee note is 6 months and the note is required to be replaced frequently. On the other hand the life of the coin is expected to be 35 years. Over a period of 35 years the cost of replacing of a 1-rupee note will amount to many times

the present cost of production of a cupro-nickel rupee coin. In the long run the minting of cupro-nickel rupee coin will be far more economical than printing 1-rupee notes

- (iii) Delay in the examination and disposing off soiled notes.
- (iv) Increase in the total volume of work in servicing and replacing the soiled notes. necessitating the construction of more vaults and the opening of more Note Examination Sections.
- (v) The recent trend in countries of the world is to substitute metallic coins for the smaller denomination notes
- (d) At this stage it is not possible to indicate when a final decision is likely to be taken in the matter.

Timely Import of Fertilisers by India

7412, SHRI PURUSHOTTAM KAKODKAR:

SHRI P. GANGADEB:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether his Ministry has been unged for timely import of fertilisers; and
- (b) if so, what efforts have been made by his Ministry for the import of fertilisers in time before the sowing seasons starts?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Yes, Sir.

(b) All possible efforts through commercial and where appropriate diplomatic channels are being made to procure import of fertilizers, from countries European East other sources. A statement showing details of contracts finalised by the MMTC for supply of fertilisers 15 attached

Statement

Sl. No.	Country	Commodity	CONTR	ACTS CONCLUDED	
			Date of Contract	Quantity M/C T	Delivery Schedule
1	2	3	4	5	6
ı.	U. S. S. R.	(i) Urea	28-14	2,00,00	March to Dec. 74
		nium Sul- phate	28-1-~4	75,000	March to Dec. 74
		(iii) Muriate of Potash	28-1-74	50,000	January to Dec. 1974
2.	G. D. R.	МОР	27-9- 73	2,00,00 jincluding 20,000 M/T at Seller's option).	ian to Dec. 74

3	4	5	6
. Urea	19-2-74	46,000	July to Dec. 74.
. Urea	5-3-74	20,000	July to Dec. 74.
. (i) Urea	11-4-74	1,80,000	April to Dec. 74.
(ii) C.A.N	11-4-74	35,000	April to Dec. 74
	. Urea . Urea . (i) Urea	. Urea 19-2-74 . Urea 5-3-74 . (i) Urea 11-4-74	. Urea 19-2-74 46,000 . Urea 5-3-74 20,000 . (i) Urea 11-4-74 1,80,000

P.S.

Contracts with Romania & Hungary are Yet to be concluded. The matter is being pursued closely with them

Assistance to Orisma for Flood Relief Works

7413. SHRI GAJADHAR MAJHI: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) the amount of money sanctioned by the Central Government as flood relief between June and October last year in the State of Orissa;
- (b) the break-up of the amount sanctioned as grant and as loan for relief, repair and restoration work;
- (c) the money so far utilized by the Government of Orissa on the works of relief projects alongwith particulars thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) to (c). The ceiling: of expenditure on flood relief measures in 1973-74 approved as qualifying for Central assistance and the anticipated ex-426 LS—6

penditure reported by the Government of Orissa are as follows:—

Rs in Crores

		No. III Ofores		
		proved ilings	Anticipated expenditure in 1973-74	
Relief items		3.18	4. 43	
Loan items .	٠	0.80	0.80	
Repair items	•	7.76	7.76	
TOTAL .		11.74	12.99	

The expenditure on relief items in excess of the Finance Commission's margin of Rs. 1.25 crores is covered by Central assistance upto 75 per cent-50 per cent as grant and 25 per cent as loan. The expenditure on repair and loan items is provided with ad hoc loan assistance if the ways and means position of the State Government justifies such assistance. A grant of Rs. 1 crore and a loan of Rs. 8.00 crores have been sanctioned so far on a provisional basis. Final assistance will be settled on the basis of the actual figures of expenditure as verified by the Accountant General.

Rise in Prices of Consumer Goods

7414 SHRI GAJADHAR MAJHI.

SHRI D B CHANDRA GOWDA

Will the Minister of FINANCE be pleased to state

- (a) whether despite a five to seven per cent increase in the prices of consumer article since the beginning of the month, the post-budget scarcity of vanaspati, keiosene, gas, match box, baby foods, toothpastes, cheaper brands of soaps and detergents still continues.
- (b) whether prices of most of the consumers goods, which had been put up by the manufacturers in February this year, are going up again, and
 - (c) if so, the reasons therefor?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANIRAO CHAVAN)

(a) Price increases can help in improving availability only if the costs of inputs have risen and this has led to production being curtailed, despite price adjustments there may be no improvement in supplies if other constraints operate Thus, for example the controlled prices of vanaspati were raised with effect from 1st February 1974 because of the high ruling prices of the constituent oils However, an increase in production did not result because of overall shortage of edible oils, power cuts and industrial unrest in some of the larger units of the industry

As for other consumer items, there has been no shortage of cooking gas but supplies of kerosene had to be reduced temporarily so as to permit greater production of diesel for transport and agricultural purposes. No shortages of soaps of and detergents have been reported to Government In the case of baby foods, there is a continuing imbalance between supply and demand because of shortage of liquid milk and imported

skimmed nulk powder Some shortage of matches has been reported in one or two States, but this is likely to be temporary As regards tooth paste, Government have no reason to believe that the same is in short supply

- (b) A Statement giving wholesale price indices of principal groups, subgroups and selected commodities for the weeks ending 26th January, 1974, 23rd February 1974 and 23rd March, 1974 is laid on the Table of the House (Placed in Library See No LT-6753/74]
- (c) As has been muntioned in the Economic Survey for 1973-74, price of manufactured goods have been getting adjusted to changes in the cost of inputs as for example in the case of cotton textiles, vanaspati and kerosene Whereas the prices of controlled commodities would reviewed only at intcival, those of non-controlled items would tend to be revised at the discretion of the manufacturer and such revision may sometimes be carried out at relatively short intervals Similarly, year's budget levies would herve to raise the places of some consumer ıtems (like tobacco manufactures toilet requisites and plastic materials) but the necessary adjustments may spread over a period of time

Sea-beach Resorts

7415 SHRI D P JADEJA: SHRI VEKARIA

Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state

- (a) the names with locations of sea-beach resorts in India:
- (b) whether Government are considering to take up a sea-beach project in Gujarat in the near future, and
- (c) if so, the broad outlines thereof?

#33

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR): (a) Kovalam near Trivandrum and Goa are being developed as beach resorts in the Central Sector. Additional accommodation is also proposed at Mahabalipuram.

- (b) There is no proposal under consideration at present to deve op any beach in Gujarat in the Central Sector.
 - (c) Does not arise.

Investment of L.I.C. in U.P. 7416. SHRI D. P. JADEJA:

SHRI VEKARIA:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether L.I.C. propose to make myestments in U. P. in a big way;
 - (b) if so, in what manner; and
- (c) whether similar investment will be made in other States also particularly in Gujarat?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FINANCE MATI SUSHILA ROHATGI): Gross investments made by LIC in Uttar Pradesh (exclusive of mortgage loans for housing and house property, during the year 1973-74 are Rs. 32.18 crords (provisional, subject to audit) Rs. 24 24 crores and Rs. against 18.53 crores for the years 1972-73 and 1971-72 respectively. The allocation for the year 1974-75 has not yet been finalised.

- (b) L.I.C's investment in Uttar Pradesh consists of the following categories:—
- (1) State Government Securities.
- (2) Debentures of Co-operative Central Land Development Banks.

- (3) Bonds and Shares of State Finance Corporation.
- (4) Bonds of State Electricity Board.
- (5) Loans to Municipal Committees for Water Supply.
- (6) Loans to State Electricity Board.
- (7) Loans to State Government for Housing Schemes.
- (8) Loans to Cooperative Housing Apex Finance Society.
- (9) Loans to Cooperative Sugar Factories.
- (10) Mortgage loan to Public Limited Companies.
- (11) Debentures and Shares of Public Limited Companies.
- (c): L.I.C. avails of investment opportunities available in all the states including Gujarat through the above mentioned channels subject to surplus funds available.

Proposal to Organise International Trade Fair Annually

7417. SHRI D. P. JADEJA: SHRI VEKARIA:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether Government propose to organise International Trade Fair annually;
- (b) if so, when and where it is proposed to hold the Fair during 1975; and
- (c) the reasons for selecting that place from the international point of view?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) to (c). The matter is under active consideration.

Echeme for Tourist Attraction in Gujarat

7418. SHRI D. P. JADEJA:

SHRI VEKARIA:

Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

- (a) whether Government of Gujarat are preparing a comprehensive tourist scheme to provide more attraction for tourists in Gujarat; and
- (b) if so, the broad outlines there-of?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION): (SHRI RAJ BAHADUR): (a) and (b) The Government of Gujarat have included an outlay of Rs 100 lakes in the State Fifth Five Year Plan for development of tourist facilities The details are given in the attached statement

Statement

Statement showing the schemes included in Fifth Five Year P₂an for Tourism of the Govt. of Gujarat

(Rs in lakhs)

S.	٠.	Name of the Scheme	Fifth plan Outlay
	1	2	1974-75
	r.	Development of Sasan veraval-Porbandar Com- plex	20.00
:	2.	Development of Ahmeda- bad Comple	15.00
;	3.	Development of Palitana, Modhera, Dwarka, Sham- laji etc. and Ropeways at Gırnar, Pavagadh, etc	15.00
•	4.	Development of Hot-Springs, Pienic Spots Holidays Homes, Development and subsidy to Dharamshalas, etc.	10.00

1	2	3_
5.	Transport Facilities, Hotel and Motel Projects, Open- ing of Tourist Offices at Calcutta, Japur, etc. Training of Personnel of the tourist section etc.	10.00
6.	Coastal Conducted tours and Inter-State Tours .	10 CO
7.	Development of Hill Station	2 .00
8.	Publicity abroad .	3.00
9.	Establishment of Gujrat Tourist Corporation!	15 00
	OIAI :	100.00

Percentage of investment by Nationalised Banks and S.B.I. in States

7419 SHRI SAKTI KUMAR SARKAR Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) the percentage of investments by way of loans and advances by each of the nationalised banks and State Bank of India in the States with particular reference to West Bengal, District-wise during the last three years in agriculture and industry; and
- (b) what was the percentage of realisation by each of these banks from agriculture and industry, Statewise during the above period?

MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN). (a) The data flow system in the banking industry has only recently been revamped by the Reserve Bank of India and data on District-wise and occupation-wise classification of outstanding credit is available in respect of scheduled commercial banks for June, 1972 and December, Statewise figures of outstanding credit of all scheduled commercial banks to Industry and Agriculture and its proportion to total outstanding chedit as at the end of June, 1972 and December, 1972, are set out in Statement I laid on the Table of the House. (Placed in Library. See No. LT-6754/7). Similar data, district-wise, in respect of West Bengal is set out in Statement II laid on the Table of the House. (Placed in Library. See No. LT-6754/74).

(b) The present system of data flow provides for information on Statewise recovery position on direct finance to Agriculture alone. Available data relating to end-June, 1972, is set out in Statement HI. Laid on the Table of the House. (Placed in Library, See No. LT-6754/74).

Proposal of United Commercial Bank regarding advancing of loans for small Industrial Projects in States

7420. SHRI SAKTI KUMAR SARKAR:

SHRI A. K. M. ISHAQUE:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) the salient features of the proposal of United Commercial Bank regarding advancing of loans for industrial projects in States;
- (b) names of the States which had not accepted the proposal; and
- (c) the result so far achieved regarding these proposals State-wise and the impact thereof on the Small Industrial Projects in the States?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN):
(a) to (c). As part of the (bjective of stepping up the flow of credit to small borrowers in the different priority sectors, including small industries, United Commercial Bank has been taking steps to increase the advances to small scale industrial units. The outstanding advances to this sector as at the end of June. 1972, June, 1973, and September, 1973. State-wise are set out in the Statement laid on the Table of the House. (Placed in

Library. See No. LT-6755/74). The emphasis on lending to small scale industries is thus a continuing one and the Bank has not made any fresh proposal as such to the States for extending credit exclusively to small scale industrial units.

Complaints regarding functioning of United Commercial Bank, Calcutta

7421. SHRI SAKTI KUMAR SARKAR: Will the Minister of FIN-ANCE be pleased to state:

- (a) Whether Government have received any complaints about the functioning of the United Commercial Bank, Calcutta;
- (b) if so, nature of the complaints received; and
 - (c) the action taken thereon?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN: (a) Yes, Sir.

(b) The main allegations contained in these complaints relate to the slow progress of the bank in West Bengal in the matter of branch expansion and in the matter of advances to priority sectors; large advances by the bank to a few monopoly houses; lack of proper representation to local people in the staff recruited by the bank in West Bengal: purchase of a flat at a dispropertionately high price in Bombay for one of the bank's Assistant General Managers creation of new posts of Assistant General Managers in violation of Government's econ, my Instructions; irregularities in certain appointments made in the bank; irregularities in the matter of recruitment of staff; transfer οf senior Bengali officers from West Bengal and other irregularities in the matter of purchase of furniture. stationery and expenses relating to entertainment, publicity etc.

(c) The bank has reported that the slow progress during 1972 in opening of branches and in the matter of advances to priority sector in West Bengal was primarily due to certain difficulties the bank faced in 1972 in the matter of reciuitment of requisite personnel. These difficulties were overcome later in 1972. As against only 4 branches opened in 1972, the bank opened 37 branches in West Bengal in 1973. As regards advances to priority sector (excluding export credit) they increased from Rs. 935 crores at the end of 1971 to Rs. 10.70 crores at the end of 1972 and to Rs. 12.42 crores at the end of December, 1973 Such advances in the State of West Bengal formed nearly 22.2 per cent of the bank's advances to priority secto in all the States of India. The bank has also clarified that advances to monopoly houses have been and are being sanctioned after appraising their requirements for genuine productive purposes and after obtaining, in the case of amounts exceeding certain limits, prior authorisation from the Reserve Bank under the Credit Authorisation Scheme the matter of recruitment carried out in West Bengal, the bank has ported that more than 90 per cent of the recruits are from local people Regarding the complaint about the purchase of a flat in Bombay, the, bank has clarified that the flat was on rent in March, 1967 and was being used as residence for the senior officer posted in Bombay. As the building in which the flat is situated had been sold and the buyer was disposing of the flats to tenants, the bank has decided to purchase the flat at a cost which is reported to be lower than the prevailing rates for similar flats in Bombay. As regards new posts of Assistant General Managers, no decision has yet been taken by the Board of Directors of the Bank. Regarding the allegations in the matter of senior appointments recruitment of staff, transfer made. of senior Bengali officers from West

Bengal and other irregularities in the matter of purcase of furniture, stationery and expenses relating to entertainment, publicity etc., there are no reasons to believe, on the basis of material furnished by the bank, that these are correct

Opening of branches of Nationalised Banks and S.B.I. in West Bengal

7422. SHRI SAKTI KUMAR SARKAR:

SHRI S. N. SINGH DEO

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) names of the branches and branch offices of nationalised banks and State Bank of India which were opened in West Bengal District-wise; and
- (b) number of branches and branch offices of nationalised bank that will be opened in West Bengal during Fifth Five Year Plan period, yearwise and District-wise?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI-MATI SUSHILA ROHATGI). (a) Public sector banks had 877 offices in West Bengal as at the end of December, 1973. The District-wise distribution of these offices is set out in Statement 1 laid on the Table of the House. [Placed in Library. See No. LT-6756/74].

(b) In pursuance of the directive of the Reserve Bank of India, commercial banks formulate three-year rolling plans of branch expansion Currently the banks are engaged in formulating the plan for the three years 1974-76. The Reserve Bank of India has indicated that as at the end of January, 1974, public sector banks had on hand 241 licences/allotments for opening offices in West Bengal. The District-wise distribution of these licences allotments is given in

Statement II laid on the Table of the House. [Placed in Library. See No. LT-6756/74].

Proposal for Free Trade Zone near Calcutta

7423. SHRI SAKTI KUMAR SARKAR;

SHRI A. K. M. ISHAQUE:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether the proposal for free trade zone near Calcutta has been abandoned;
- (b) if not, the date when the proposal was taken up, salient features of the proposal and month-wise progress of work made up to date; and
- (c) whether any persons have been assigned the responsibility to work out the proposals; is not, the reasons thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) No, Sir.

(b) and (c). A project report on this proposal was received in April, 1973 from the West Bengal Government. It related to the setting up of a Free Trade Zone in an area of 400 acres in Salt Lake Area near Dum Dum, for the manufacture of a number of products for export, such as Stainless steel cutlery, Hand and Builders, hardware, Small tools, Finished Ready-made garleather ments, Scientific and Laboratory equipment, etc. The question of setting up Free Trade Zones has been under the consideration of an inter-departmental Working Group in a series of meetings. The details of the project for setting up a Free Trade Zone near Calcutta are being worked out in consultation with the Government of West Bengal.

Wholesale and Consumer Price Index

7425. SHRI HUKAM CHAND KACHWAI: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) the rise in Wholesale and Consumer Price Index, from October, 1973 to March, 1974 giving monthwise average of 12 months of 8 points;
- (b) the increase in the cost of Vanaspati, edible oils, milk, butter, ghee (deshi), rice, wheat, pulses, petroleum products, taxi, scooter fares and cloth registered from October, 1973 to March, 1974;
- (c) whether the expenditure on traditional items, such as, marriages, expenses on children's education are not taken into account while computing the cost of living index; and
 - (d) if so, the reasons therefor?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN):
(a) and (b). Two statements are laid on the Table of the House. [Placed in Library. See No. LT-6757/74.]

(c) and (d). Only items relating to consumption expenditure on current living are taken into consideration in the compilation of the Consumer Price Index. Thus, items like school fees, stationery articles etc. (covering the expenditure on childrens' education) are included, but items like expenditure on marriage etc. which do not form current consumption expenditure are excluded.

मध्य प्रदेश में बाढ़ पीड़ित लोगों के लिये केन्द्रीय सहायता

7426. श्री हुकम चन्द कल्लवाय : क्या विक्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या मध्य प्रदेश सरकार ने राज्य में 1973-74 की बाढ़ से पीड़ित क्षेत्रों भीर लोगों को रोजगार देने के लिए केन्द्रीय सरकार से कुछ सहायता देने का भनुरोध किया है;

- (ब) यदि हा, तो तत्मम्बन्धी मुख्य बाने क्या है, और
- (ग) सरकार ने इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की है ?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (भी के॰ बार गणेश) (क) से (ग) राज्य मरकार ने बाढ में सहायता देने के विभिन्न उपायों के लिए, जिस में सबधित निर्माण कार्य भी शामिल है , 15.30 करोड रुपयो के व्यय का भ्रनुमान लगाया था लेकिन भारत सरकार है ने केन्द्रीय दल की सिफारिशो 🖁 के ग्राधार पर 🌠 ग्रधिक से अधिक 2 44 करोड रुपयो के व्यय को इस योग्य माना है कि इसके लिए केन्द्रीय सहायता दी जाय । इस व्यय में निर्माण कार्यों के लिए 0 55 करोड़ रुपये शामिल हैं फिलहाल 1,52 करोड़ हपएे नज्य सरकार को दिये जा चुके है । महालेखा-कार द्वारा प्रमाणित निये जाने पर वास्तविक खर्च के प्राधार पर वाकी, सहायता की रकम दी जायगी।।

Long gives by Nationalised Banks to small Farmers, Adivasis and Industrialists in Orissa

7427. SHRI BANAMALI BABU. Will the Minister of FINANCE be pleased to state;

- (a) the amount of loan given to small farmers, Adivasis and small industrialists in Orissa during the last six months by the nationalised banks; and
- (b) the steps Government propose to take to increase banking facilities in these areas?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRIMATI SUSHILA ROHATGI): (a) Information regaiding advances made to small farmers and Adivasis by the nationalised banks is not separately maintained However, agricultural advances made by the nationalised banks to farmers in Orissa with land holdings upto 5 acres (constituting small farmers) and outstanding at the end of March, 1973 were Rs 31 25 lakhs

Advances provided to small scale industries in Orissa by the nationalised banks at the end of September, 1973 were Rs 21781 lakhs.

(b) In order to accelerate lending in relatively under-banked States like Orissa, the banks have been opening a larger number of branches in rural areas strengthening their organisational machinery by recruiting more technical field staff, simplifying their lending procedures and loan application forms, moving away from security-oriented lending to purposive, productive and incremental income-oriented lending and adopting the "area approach" for evolving programmes for intensive financing

Demand of Indian Goods in Maurillus

7428 SHRI BANAMALI BABU: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether there is an increasing demand for Indian goods in Mauritius;
- (b) if so, whether Government propose to send a trade team to finalise the terms of trade with that country; and
 - (c) if so, by what time?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A C. GEORGE): (a) In recent years exports from India to Mauritus have shown a rising trend.

(b) and (c). Various measures for increasing the Indo-Mauritian trade including sending of a trade team, are receiving the attention of the Government.

Proposal to start Air service between Srinagar-Kargil-Leh-Srinagar

7429. SHRI SYED AHMED AGA: Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

- (a) whether Government propose to start an air service between Srinagar-Kargil-Leh-Srinagar; and
 - (b) if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR): (a) Indian Airlines have no proposal to operate such a service at present.

(b) Indian Airlines worked out the route economies of such a service in January, 1974 and found that the service would be highly uneconomical. The position has been further aggravated by the recent steep increase in aviation fuel price.

Proposal to Place Srinagar Airport on International Air Koute

7430. SHRI SYED AHMED AGA: Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

- (a) whether Government propose to place Srinagar airport on international air route to facilitate foreign tourists to visit Kashmir;
 - (b) if so, when; and
 - (c) if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR): (a) No, Sir.

(b) Does not arise.

(c) Convenient air connections to Srinagar are available from Delhi which is well served by international airlines.

Joint Marketing of Tea by India and Sri Lanka

7431. SHRI MOHINDER SINGH GILL:

> SHRI BISHWANATH JHUN-JHUNWALA:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether under a mutually agreed arrangement India will now buy some tea from Sri Lanka; and
- (b) if so, the details of arrangements agreed upon between the two countries and the details of imports of tea from that country for 1974 and to what extent exports of Indian tea will be boosted as a result of the above arrangement during 1974?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) and (b). During the visit of the Indian Delegation to Sri Lanka in February, 1974, the prospects for joint marketing of packet teas containing selected teas of India and Sri Lanka were discussed. The details have yet to be worked out.

Decline in Export Earnings of Projects and Equipment Corporation

7432. SHRI MOHINDER SINGH GILL: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state:

- (a) whether according to a Government review, the export earnings of the Projects and Equipment Corporation have come down considerably during the last two years; and
- (b) if so, the reasons for the same and the steps that are being taken to improve the situation?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) and (b). Export earnings of the Projects and Equip ment Corporation have been lower during the last two years as completion of long term contracts for export of wagons were delayed on account of Indo-Pak Conflict, power shortages and labour troubles etc. In the meanwhile owing to the oil crisis there has been a further escalation of costs and shipping freights as a result of which efforts to renegotiate the contracts are being made.

Conference of Public Sector Marketing Companies to Co-ordinate Export Policy and Strategy

7433. SHRI MOHINDER SINGH GILL: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether the Bureau of Public Enterprises has convened a conference of the public sector marketing companies to coordinate export policy and strategy:
- (b) whether methods were devised for coordination in internal marketing, pricing and profitability also; and
- (c) if so, the outcome of this conference?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) Yes, Sir. The meeting was convened on the 14th March, 1974.

(b) and (c). This was the first meeting of the public enterprises providing marketing services to discuss various aspects of coordination in internal and international marketing, pricing and profitability, personnel policy and public relations. At this meeting the scope for greater coordination in these areas was identified. Certain suggestions also emerged for improving such coordination, which are being followed up.

Popularity of Cotton Garments Abroad

7434 SHRI MOHINDER SINGH GILL: Will the Minister of COM_MERCE be pleased to state:

- (a) whether demand abroad for cotton garments outstrips the demand for garment made from other fibres;
- (b) if so, salient features of the favourite markets outside and the foreign exchange earned in 1973-74; and
- (c) whether India exports only less than one per cent of the total world trade in garments due to a reputation for no durability m goods and lack of automation in the industry?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A C. GEORGE): (a) and (b). Demand abroad for cotton garments is around 30 per cent of total demand for gar-The major importers of our ments. cotton garments in the Free Foreigr Exchange Area are the countries in North America and West Europe. Also. U.S.S.R. imports substantial quantities of Indian garments against & payment in Rupees The total foreign exchange earned during through exports of garments amounted to Rs. 51.01 crores.

(c) It is true that India's exports of garments are less than 1 per cent of the world trade in garments. But this is mainly due to production constraints and not due to unsatisfactory market reputation of our garments.

Sharp decline in Export of Tobacco

7435, SHRI MOHINDER SINGH GILL: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state whether exports of raw tobacco have shown a sharp fall during 1973-74 as compared to previous years? THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): The exports of unmanufactured tobacco during 1973-74 are higher in quantum and value as compared to the previous years excepting 1972-73. Compared with 1972-73, the quantum of exports during 1973-74 is estimated to be less; but value-wise the foreign exchange earnings during 1973-74 are estimated to be higher, namely Rs. 64.23 crores which is the highest level achieved during the last five years.

देश में केन्द्रीय सरकार से पेंशन प्राप्त करने वालों की संख्या

7436. भी भटल विहारी वाक्षेपी : र्रें

क्या विसा मर्जा यहा बताने ति कृपा करेगे

कि: (क) राज्यवार केन्द्रीय सरकार से पेशन प्राप्त करने वार्लों की मख्या कितनी है, भीर

(ख) उन में से ऐसे पेशनर कितने हैं जिन्हें गरीबी के स्तर के समकक्ष या उस से कम पेशन मिलनी है ?

विल मंत्राच्या में राज्य मंत्री (श्री के० आर० गणेक): (क) अतिम उपलब्ध सूचना के अनुसार केन्द्रीय सरकार के पेशनरों की कुल बर्नमान संख्या 901,626 हैं। राज्यवार सूचना तत्काल उपलब्ध नहीं है।

(ख) मागी गयी सूचना उपलब्ध नहीं हैं । परन्तु 31 दिसम्बर, 1972 को कद्रीय सरकार के जो पेशनर प्रति मास 40 रुपये की न्यूनतम पेशन पा रहे थे उनकी कुल संख्या 413,789 ग्रीर इस संख्या में परिवार पेंशन पाने वाले व्यक्तियों की संख्या भी शा मेल है। इस में के परिवार पेंशन पाने वालों से शिक्स पेंशनरों को 1 जनवरी, 1973 से लागू करके
15 इ० प्रति मास की दर में तदर्श
राहत मंजूर की गयी है जिस से
उन की न्यूनतम पेंशन बढ़ कर 55 इ
प्रति मास हो गयी है; उका
अपनी पेंशन के 5 प्रतिशत की दर से
राहत भी मजूर की गयी है जो न्यूनतम
5- इ० प्रति मास होगी इस दर पर
यह राहन नब तक दी जायगी जब
प्रांखन भारतीय श्रीमक वंग उपभोक्ता
सूचकाक (1960----100) के 12
महीने की श्रीमत में 16 प्रकों की वृद्धि
होगी।

राष्ट्रीयकृत बैकों द्वारा लाभान्त्रित हुये भूमि हीन किसान तथा श्रमिक

7437. भी घटल बिहारी वाजपेयी : भी जगम्माथ राष बोशी :

क्या विक्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि .

- (क) गत तीत वर्षों में वर्ष वार राष्ट्रीय इत बैकों से कुल कितने भूमिहीन किसानों तथा श्रामकों को लाभ हुआ। तथा उन्हें किस प्रकार लाभ हुआ। ;
- (न्त) उन में से प्रत्येक वर्ष के दौरान उन्हें उद्योग स्थापित करने के लिए कितनी धनराभि दी गर्ड ; ग्रीर
- (ग) इस सम्बन्ध में किन किन राज्यों को कितनी कितनी अधिकतम तथा न्यूनतम सुविधाये दी गई है?

बिस मंत्रालय में उपमंत्री (श्रीमती भुषीला रोहतगी): (क) से (ग) जिस रूप में प्रांकड़े पूछे जा रहे हैं कि मिर्फ भूमिहीन किसानो व श्रीमकों को कितना ऋण भ्रादि दिया गया उस ं में राष्ट्रीय कुड़ वैंकों द्वारा घांकड़े नहीं हैं रखे जाते । ये बैंक उक्त श्रेणी में घाने वाले लोगों की कृषि से . सम्बद्ध उद्योगां जैसे हेरी, मुर्गी पालन, सुग्रर पालन, शहद की मक्बी पालन , मछली उद्योग के लिए ऋण देते हैं । उपलब्ध घांकड़ों के घनुसार मार्च, 1973 के घन्न नक राष्ट्रीयकृत बैंकों में इस तरह ऋण के लिए 1,67,906 खात खुन हुए थे । इन वार्तों में प्रत्यक्ष ऋण के रूप में 10.20 करोड़ रुपए दिये जा चुके है जिन में भूमिहीन किसानों व श्रिमकों को दिये गये घिंपम ऋण की राशि भी शामिल है ।

Issuing of Licence for Establishing a Punjab Co-operative Spinning Plant

7438. SHRI RAGHUNANDAN LAL BHATIA: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state:

- (a) whether National Co-operatives Development Corporation of India has issued any licence to the Punjab State Cooperatives Marketing Federation for establishing a co-operative spinning plant;
- (b) whether the Corporation has also prepared a scheme for marketing and processing of cotton in Punjab; and
 - (c) if so, the particulars thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) An industrial licence was granted by Government to the Punjab State Co-operative Supply and Marketing Federation Ltd., Chandigarh in December 1973 for the establishment of a new cotton textile spinning unit at Bhatina (Punjab).

(b) and (c). The National Cooperative Development Corporation has stated it has made an assessment of the need for additional cotton processing capacity in different cotton-growing

states during the Fifth Plan. In so far as Punjab is concerned it has been suggested that 10 ginning and pressing units, each having 20 gins and a press, should be established.

Development of Tourist Centres by ITDC during Fifth Plan

7439. SHRI RAGHUNANDAN LAL BHATIA:

SHRI D. D. DESAI:

Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleated to state:

- (a) whether India Tourism Development Corporation proposes to develop tourist centres in the country in the Fifth Five Year Plan;
- (b) if so, their names with locations, State-wise; and
- (c) the main features of the proposal?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR): (a) to (c). A Statement listing the schemes which the India Tourism Development Corporation propose to take up during the Fifth Five Year Plan is laid on the Table of the House [Placed in Library. See No. LT-6758/74]. They will be taken up after undertaking feasibility studies for determining their economic viability, and subject to the availability of resources.

Price Fluctuations in Delhi Markets

7440. SHRI RAGHUNANDAN LAL BHATIA:

SHRI P. GANGADEB:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) whether according to a survey conducted recently by the Consumer Council of India, prices of various commodities in Delhi's markets vary from shop to shop and fluctuate from hour and by hour;

- (b) if so, whether survey has also revealed that Super Bazar prices are higher than the prices at other places; and
 - (c) if so, the reasons therefor?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): (a) to (c). The Council has made a comparison between Super prices and those at which commodities could be obtained from wholesalers/producers if consumers were to organise themselves and make bulk purchases from the latter. This comparison quite naturally favours bulk purchases as against retail sales from the Super Bazar. Moreover the comparison does not take into account price variations arising from differences in quality, presence of foreign matter, retail packing etc.

Over-haul in Management of Indian Airlines

7441. SHRI P VENKATASUB-BAIAH: Will the Minister TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

- (a) whether a thorough overhaul of the top management of the Indian Airlines has been done to ensure optimum efficiency and increase in its profitability; and
- (b) how far this is going to reenergise and reform the airline's administrative and technical services?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHA-DUR): (a) and (b). With a view to ensuring proper co-ordination and control and to enabling the higher management to concentrate on basic policies and long-term plans, some re-organisation has been made at the headquarters. Further in order improve its efficiency and productivity, a special Group headed by one of the senior officers has been set up to study each department and region in depth identifying problems and problem areas and recommended solutions for them.

Changes made by Nationalised Banks in regard to Advancing of loans to Weaker sections of Society

SHANKERRAO 7442 SHRI SAVANT: Will the Minister of FIN-ANCE be pleased to state:

- (a) what changes are made by each of the nationalised banks in their pattern of advancing loans to accommodate the weaker sections of society;
- (b) the amount of loans advanced by each of these banks as a result of these changes during 1972-73 and 1973-74: and
- (c) the percentage of bad debts in such loans and how does it compare with the general percentage of bad debts?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): (a) to (c). Public sector banks have been endeavouring to enlarge the flow of credit to small borrowers in the priority sectors such as agriculture. small scale industry, road and water transport etc. To facilitate extension of credit to these categories of borrowers, banks have evolved special schemes, simplified their loan application forms and procedures, relaxed their security and margin requirements in respect of small loans, delegated sanctioning powers to branch managers and liberalised terms of repayment of loans. Public sector banks are also implementing the Scheme of Differential Rate of Interest in selected districts for extending credit to eligible borrowers at a concessional rate of interest of 4 per cent per annum. Data on advances of State Bank of India Group and each of the 14 nationalised banks to the priority sectors as at the end of June, 1972 and June, 1973, is set out in Statement-I laid on the Table of the House (Placed in Library. See No LT-6759/74) Similar data on their advances under the Scheme of Differential Rate of Interest as at the end of December, 1973 is set out in Statement-II laid on the Table of the House [Placed in Library. See No LT-6759/74]

The form of profit and loss account and balance sheet prescribed under the Third Schedule to the Banking Regulation Act, 1949, read with section 13 of the Banking Companies (Acquisition and Transfer of Undertakings) Act, 1970 do not provide for disclosure of actual provisions made for had and doubtful debts

Expenditure incurred by Indian Airlines on Passenger Coach services Breakfasts and Lunches

7443 SHRI SHANKERRAO SAVANT Will the Minister of TOURISM AND CIVIL ...VIATION be pleased to state the amount of expenditure incurred by the Indian Airliner during 1971-72 and 1972-73 on its (1) passenger coach services to and from airports and on (11) the breakfasts and lunches given to air passengers on board?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR) The expenditure incurred on passenger coach services during 1971-72 and 1972-73 was Rs 4810 lakhs and 4965 lakhs respectively.

Indian Airlines do not have figures of expenditure incurred separately on breakfast and lunches served to passengers. During 1971-72 and 1972-73 the total expenditure on inflight meals was Rs 75.29 lakhs and Rs 11331 lakhs respectively.

Pilots resigned or Discharged from service in Indian Airlines and Air India

7444 SHRI SHANKERRAO
SAVANT: Will the Minister of
TOURISM AND CIVIL AVIATION
be pleased to state

- (a) how many pilots from Indian Airlines and Air India have resigned from service or have been discharged or dismissed from service since August 1973, and
- (b) how many Indian pilots have accepted service in foreign countries since August, 1973,

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHA-DUR)

(1) Name of Airlines	Pil ts resigned	of Pil ts
Indian Airlines	2	3
Air India	3	
, 		

(b) None of the Indian pilots have applied through the Indian Airlines and Air-India for taking up appointment in foreign countries

Forged Currency Rackets unearthed

7445 SHRI P GANGADEB: SHRI D D DESAI:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether forged currency rackets
 were unearthed in Kerala, Tamiinadu,
 West Bengal and Delhi, recently;
- (b) if so the total number of forgod hundred rupee notes seized; and

(c) the total arrests made and whether all the cases have been investigated and if so, the results thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) Yes, Sir.

- (b) 1485 forged Hundred Rupee Notes were seized by Police in raids and another 36 were recovered in circulation.
- (c) 17 persons have been arrested and all the cases are under investigation.

Trade pact with Bhutan

7446. SHRI P. GANGADEB:

SHRI SHRIKISHAN MODI:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether any trade pact was signed with Bhutan on the 23rd March, 1974;
- (b) if so, whether the agreement also includes details in regard to the implementation of "Chukha Hydroelectric Project" in Bhutan; and
- (c) what other topics figures in the agreements?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) to (c). No trade pact between India and Bhutan was signed on 23rd March, 1974. However, an agreement relating to the Chukha Hydro Electric Project in Bhutan was signed between the two governments on the date mentioned above. A copy of the agreement is annexed to the Unstarred Question No, 6205 answered in the House on 5th April, 1974 by the Deputy Minister for Irrigation and Power.

Decline in Export of Spectacles

7448. SHRI RAMAVATAR SHASTRI: Will the Minister of COM-MERCE be pleased to state:

- (a) whether the export of spectacles has declined; and
 - (b) if so, the reasons thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) and (b). Yes, Sir. We are making in depth examination of the problems facing the export of this item.

Compensation for loss of money value deposited with Government as Provident Fund of Government Employees

7449. SHRI RAMAVATAR SHASTRI: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether the value of a rupee as measured by the All India Industrial Workers Consumers Price Index showed decline of 19 per cent in one year from 1972 to 1973;
- (b) whether the value of a ruped with 1960 as 100 was 47.6 paise in December, 1972 and 39.5 paise in December, 1973;
- (c) whether the wholesale price index of Vanaspati showed a percentage of increase of 46.4 per cent from beginning of 1972 to the end of January. 1974 coal marked an increase of 8.6 per cent during period, kerosene oil 42.5 per cent and edible oils other than vanaspati 96 per cent; and
- (d) if the answers t₀ parts (a) to (c) above be in affirmative how Government are going to compensate the loss of money value of deposits with the Government as Provident Fund of the Employees since 1960, and if not, the reasons therefor?

160

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN). information (a) to (c). The relevant has been provided in the replies to Unstarred Questions Nos. 1457 and 1473 given on March 1, 1974.

(1) Savings held in the form of general provident fund are usually for long periods and, as such fluctuations in the real value thereof are unavoidable. However the Government has tried to offset m a number of ways the effects of the decline in the real value of the general provident fund of their employees These measures include various tax exemptions, revision of pay scales, additional dearness allowance, higher interest rates on outstanding balances of provident fund and liberalistion of gratuity and pensionary benefits

Export of Carpets

7450 SHRI RAMAVATAR SHAS-TRI Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether any Central Project is being mooted for the manufacture of hand-woven carpets which have a sizable world wide market;
- (b) whether any survey had been undertaken to study the feasibility of embarking on such a project with a view to assessing the profitability and earnings in terms of foreign exchange and the assessment of foreign exchange earnings;
- (c) will the production be confined to quality carpets, chiefly for export purposes or mass production of Car. pets will also be undertaken; and
- (d) when is the project likely to come up and at what initial cost?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE: (a) to (d). No Central

project as such is contemplated for manufacture of hand woven carpets. However, in order to quickly and substantially develop the base of export production of hand-made carpets, a scheme is envisaged for massive training in carpet weaving.

Statutory Control on Synthetic Fibre

7451 SHRI RAMAVATAR SHAS-TRI Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether Government propose to impose Statutory Control on Synthetic fibre; and
- (b) if so, the broad features there-

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A C GEORGE) (a) No such proposal is under consideration at present

(b) Does not arise

Allocation for Development of Tourism in Orissa during Fifth Plan

7452 SHRI GIRIDHAR GOMAN-GO Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state the allocation made in Fifth Five Year Plan for development of tourist spots and tourism in Orissa?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHA-Completion of a Youth Hostel at Pull at a cost of Rs 5.41 lakhs and beautification of the surroundings of the temples at Konarak and Bhubaneshwar have been included in the draft Fifth Five Year Plan of the Department of Tourism.

In addition, the India Tourism Development Corporation propose to expand their Travellers Lodge at Bhubaneshwar, and to take over the Railwav Hotel at Puri for which a provision of Rs. 75 lakhs has been made. They also propose to set up a transport unit at Bhubaneshwar.

Opening of Branches of Nationalised Banks in Scheduled Districts of Origina

7453. SHRI GIRIDHAR GOMANGO: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) the names of the Branches of nationalised banks opened so far in the Scheduled Districts of Orissa to provide easier credit facilities particularly to the tribals and weaker sections of the Society;
- (b) whether his Ministry have issued instructions to the banks to open the branches in the district of Koraput in the near future; and
- (c) the reasons for not opening the banks in the backward districts of Orissa for which instructions has been issued by his Ministry?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN):
(a) In pursuance of the objectives of bank nationalisation, all branches of public sector banks endeavour to extend credit to small borrrowers in the priority sectors. The names of centres in the backward districts of Orissa having branches of public sector banks, as at the end of December, 1973, are set out in Statement laid on the Table of the House. [Placed in Library. See No. LT-6760/74].

(b) and (c). Commercial banks formulate three year rolling plans for breach expansion. The Reserve Bank has advised all banks to keep in view, while formulating these plans, the need to open more bank branches in under-developed/underbanked areas/States particularly in such of the districts as have very adverse population per bank office ratio. The Reserve

Bank has reported that as at the end of January, 1974 there were 19 commercial bank branches in Koraput District, Orissa, and that the Banks were also holding licences for opening two more offices in that district.

Allocation for Development of Tourism in Tribal areas of Orissa

7454. SHRI GIRIDHAR GOMANGO: Will the Miniser of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

- (a) the allocation made by the Centre and State Government for development of tourism in tribal areas of Orissa in the Fourth and Fifth Five Year Plan; and
- (b) whether his Ministry has prepared any scheme for tribal development as per the sectoral allocation policy of the Government of India in the Fifth Five Year Plan?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR): (a) and (b). No specific allocation was made for the development of tourism in tribal areas of Orissa during the Fourth Plan in the Central and State Sectors. Nor is there any plan to take up schemes for tribal development in accordance with the sectoral allocation policy of the Government during the Fifth Plan. The proposed development of wild life tourism, however, will be in areas largely inhabited by tribal people.

Un-Employed pilots absorbed during last two years

7455. SHRI JAGANNATH MISHRA: SHRI K. MALLANNA:

Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state the number of unemployed pilots absorbed by Government, Departmentwise, on ground duties and in the Ministry of Agriculture for crop spraying during the last two years?

164

Written Answers

CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHA-DUR): The required information is given below:-

- 1. Civil Aviation Department: During the last two recruitment drives for the post of Assistant Aerodrome Officers, 75 unemployed pilots were selected in the fist round and 34 in the second, 48 have been absorbed so far.
- 2. International Airports rity of India: 3 unemployed pilots have been appointed as Airport Managers.
- 3. Ministry of Agriculture: Nil.
- 4. Air India: Nil.
- 5 Indian Airlines. (i) Nil in so far as ground duties are concerned.
- (ii) With effect from 1-2-1973, 28 pilots have been recruited for flying duties and they are undergoing training, at present.

Contract with Bangladesh regarding Newsprint

7456. SHRI JAGANNATH MISHRA: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether India has agreed to revise the contract with Bangladesh to pay a higher price for last year's import of newsprint; and
- (b) if so, the broad outlines regarding the reviewed policy of Government in this regard?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) and (b). The STC had signed a contract for import of 10,000 metric tonnes of newsprint from Bangladesh Paper & Board Corporation in June, 1978. After the latter had supplied 3500 metric tonnes of newsprint, there was a rise in the international prices of newsprint and the Bangladesh Paper & Board Corporation asked for higher price in February, 1974 in line with the international price of newsprint. After considerable negotiations and in view of world shortage of newsprint, an increase in the price was agreed to for the balance quantity of 6500 metric tonnes of newsprint.

बेतन भोगी वर्ग द्वारा प्रायकर प्रदा करना

7457. भी लम्बोदर बलिबार : नया विला मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि बेतन भोगी कर्मचारियो के अलावा धन्य कोई वर्ष भायकर की पूरी राजि घदा नहीं करता ?

विस मंत्रालय में राज्य मंत्री (बी के द्यार० गणेश): जी. नहीं ।

Furnishing of Office of Chairman, State Bank of India

7458 SHRI JYOTIRMOY BOSU: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) break-down of the amount of expenditure incurred under each head for furnishing and decorating a whole floor for the use of Chairman of State Bank of India in the State Bank of India Building at Bombay:
- (b) names, addresses and particulars of the contractors who supplied materials for decoration and furnishing:
- (c) names, addresses and particulars of person or persons commissioned to plan the interim decoration?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): (a) The State Bank of India has reported that no floor of the bank's new administrative building at Bombay has been set apart for the exclusive use of its Chairman. There are in all 19 rooms on the 18th floor of the building of which one room is used by the Chirman for his office. The State Bank has further reported that consequent on the damage caused by a devastating fire in this building in January, 1972, the interior decoration and furnishing of some of the floors, including the 18th floor, had to be completely redone. The expenditure incurred by the Bank for redecorating

and furnishing the entire 18th floor is

reported to be Rs. 6.90 lakhs and its break-down is as follows:—

				Amount (Rs. in lakhs)
(i)	Carpets		•	2.57
(ii)	Furniture		•	3.57
(iii)	Curtains			0.41
(iv)	Art Object	3.		0.35
				
TOTAL	:			6.90

- (b) The information is given in the Statement.
- (c) The work of interior decoration of the 18th floor of the building was entrusted to M/s. Auroville Designs, 4, National House, Tulloch Road, Bombay-1.

Statement

S1.	Nature of Work	Contractor's and address	Amount Rs. in Lacs
x.	Carpets	M/s. Wooltop carpets Ratan House, 425 Lamington Road, Bombay-4-BR.	. 2-57
	Furniture including repairs Curtains:	M/s. Jasani Corporation Jayant Mahal, 'D' Road, Churchgate, Bombay-29	. 3.57
3.	(a) Fabric	M/s. Globe Gabrics Madan mansion, 67 Hunghes Road, Bomhay-7	. 0.22
	(b) Panelling & up- holstering furniture	M/s. Jasani Corporation, Jayant Mahal, 'D' Road Churchgate, Bombay-20	. 0.19
4.	Art objects: Photo- montage	M/s. Samanvey, A- 202 Simla House, Napean Sea Road, Bombay-6.	. 0.35
			6.90

Proposal to insue instructions in regard to cutting down the expenditure on Government Transport while receiving Ministers Officers on the Airport

7459. SHRI JYOTIRMOY BOSU: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) whether he is aware that when Ministers and Senior Officers of the Government of India, such as Secretaries or Chairmen of the Boards of Direct and Indirect Taxes go abroad or return from abroad, a number of Officers go to the Airport to see them off or receive them in staff cars and other Government transport;

 (b) whether in a number of cases even taxis are hired for the purpose at State expense;

- (c) whether flower bouquets and garlands are also purchased at Government expense at times and in certain cases; and
- (d) if so, the instructions which he proposes to issue to cut down such infructous expenditure in the context of the present economy?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) According to information made available by various Ministries/Departments of Government of India, officers, including members of the personal staff of Ministers, Secretaries, etc., sometimes find it necessary to go to the Airport in connection with official business. At times, personal staff has to be deputed to assist in securing necessary customs clearance etc. The available information does not indicate that officers go to the Airport for any other purpose.

- (b) and (c) According to information made available by the various Ministries and Departments, no such case has come to notice.
 - (d) Does not arise

Import of Wood Pulp for Rayon Industry

7460. SHRI JYOTIRMOY BOSU: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) the total value of wood pulp for the rayon industry imported, yearwise, during the last three years;
- (b) whether the price of imported wood pulp has gone up from about 240 dollars per tonne to 567 dollars per tonne; and
- (c) if so, what steps, if any, are being taken to reduce our dependence on imported raw materials?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Total value of wood pulp imported during last 3 years is as follows:—

				R	s. in Lakhs
1971-72		•		•	575-68
1972-73		•	•		1279 · 50
1973-74	,				887.75

- (b) No. Sir. The present price of wood pulp is around Canadian \$ 300 per tonne.
- (c) (1) Production of wood pulp by M/s South India Viscose is likely to be doubled in the next 3 years.
- (11) Letters of Intent have been issued to a number of parties for production of rayon grade wood pulp

देवास, मध्य प्रदेश स्थित सिथ्योरिटी प्रेस के

7461. भी फूल सन्द सर्वा नया किस मही यह बताने की कूपा करेगे कि

- (क) क्या मार्च 1974 में देवास (मध्य प्रदेश) स्थित सिक्योरिटी प्रैस के प्रधिकारियों को छान्नों ने चेराव करने का प्रयत्न किया और प्रैस कोक्षति पहुचाई थी: और
- (ख) यदि हा तो छाक्रो ने किन मांगो को लेकर उक्त कार्य किया और तत्सम्बन्धी मुख्य बाते क्या हैं?

विस नंत्रासय ने राज्य वंती (थी के० धार॰ गणेका): (क) बैक नोट प्रैस देवास के प्रधिकारियों का न तो कोई घराय किया गया था और न ही परियोजना केस मे प्रैस को कोई नुकसान हुआ था। किन्तु सागर महल कार्यासय (परियों-जना क्षेत्र के बाहर का प्रक्षासनिक कार्यालय) में कुछ छात्र जबरदस्ती चुल गये ये श्रोर कुछ, फरनिचर एक सरकारी बस श्रीर एक स्कूटर को नुकसान पहुंचा या जिस में 1200 रुपये के लेकर 1500 रुपये तक का नुक्सान हुआ।

(स) छात्रों की मांग थी कि बैंक नोट प्रैस. देवास में स्थानीय व्यक्तियों को मर्ती किया जाये। लगभग 40 छात्र सागर महल कार्यालय में भूम गये भीर मुख्य प्रशासनिक ग्रधिकारी तथा लेखा ग्रधिकारी से कहा कि वे बाहर ग्राकर उन से बात करें। छात्रों की काफी देर तक मनाने के बाद 4 छात्र अपनी मांग के बारे में बातचीत करने के लिए राजी हो गये। छात्रों की धारणा यह थी कि बैंक नोट प्रैस मुख्यतः स्थानीय लोगों को रोजगार देने के लिए हैं। छात्रों को कई बातों के बारे में गलतफहमी थी धौर उन लोगों ने जो तस्वीर सामने रखी थी उन्में कोई सच्चाई नही थी। छालों को यह बात समझाई गई थी कि सरकार का इरादा यही है कि प्रैस में विभिन्न पदों का कार्यभार चलाने के लिए स्थानीय कुशल व्यक्तियों की सेवाघो का उपयोग किया जारे भीर केवल उन्हीं पदों के लिए भोपाल भीर इंदौर के संयेजी अखवारां के प्रलाबा हिन्दी के प्रशाबारों में भी विश्वापन दिया जाता है जिनके लिए स्थानीय कुलल व्यक्ति उपलब्ध नहीं होते। छालों की यह भी बताया गया था कि जहां तक कुशल व्यक्तियों के उपलब्ध न होने का प्रमाण-पत्न जारी करने का सम्बन्ध है बैक नोट प्रेस के प्राधिकारियों के पास इस तरह के प्रमाण पक्ष भेजे काने से पहले जिलाधीन इस बात की छान बीन करने के लिए राजी हो गये । इससे आयों को जी गलत फहुना थी वह दूर हो नयी। इसके काप छत्र चले गये।

भग्य देशों से वाणिविषय समझीते

7462. श्री वाजू काल वाजाकार: क्या वाजिका मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) गत तीन महीनों के दौरान प्रन्य देशों के साथ हुए वाणिज्यक समझौते के साधार पर भारत को कितनी विदेशी मुद्रा की बचत होने की प्राणा है; ग्रौर
- (ख) उक्त समझौतों में से सरकार किस समझौते को अधिक अनुकूल तथा किस किस समझौते को अधिक प्रतिकूल समझती है ?

वाजिज्य मंत्रालय से उप मंत्री (भी ए० ती० जार्ज): (क) तथा (ख) जनवरी 1974 से इस मबिध के दौरान सोवियत संघ. कोरिया सोकतंत्रीय जनवादी गणराज्य, बल्गारिया. तंजानिया तथा कृषैत के साथ करार व्यापार संनेखंकरार किए गए है। इस प्रविध के दौरान पटसन. कयर तथा वाजिज्यक सहयोग के लिए यूरोपीय समुदायों की परिषद् क साथ भी करार किए गए हैं।

इत करारों का उद्देश्य हमारी निर्मात साय बढ़ाना तथा हमारी महत्वपूर्ण झाव-श्यकताझो के सायात सुनिश्चित करना है। इन करारों से हमारे व्यापार के विस्तार तथा विविधिकरण मे मदद मिलेगी भीर है ये सभी समुकूल हैं। तथापि. उपलब्धियों का परिमाण बताना संभव नहीं है।

चौची पंचवर्षीय योजना के दौरान प्रशासनिक व्यय में मितव्ययता

'464. शी सम्ब लाल सन्त्राकर: क्या किल मली यह बताने की क्रुपा करेंके कि.

- (क) चोथी पचवर्षीय योजना के दोरान वर्षवार पूथक-पूथक केन्द्र सरकार के प्रशासनिक ब्यय में मितव्ययता का क्या लक्ष्य निर्धारिक विया गया था,
- (ख) क्या केन्द्र सरकार ने उन ाज्यों को जिन्होन प्रशासनिक क्यय मे कर्म। की है शविष्य मे प्रोत्साहन देने की योजना बनाई है ;
- (ग) क्या केन्द्र सरकार ने इस सम्बन्ध मे राज्यों को कुछ निर्देश दिये हैं, भीर
- (भ) केन्द्र सरकार के उन मलालयों के विरुद्ध जिन्होंने इसकी उपेका की है, क्या कार्यवाही करने का विचार है?

बिस मंत्रासय में राज्य मंत्री(श्री के o आरo गणेक्ष): (क) बीबी पय-वर्षीय योजना के दौरान किसी भी स्तर पर प्रजासनिक व्यय में कभी करने के लिए न तो कोई सक्य सीचा गया न निर्म्वीरत किया गया। किन्तु पिछने कुछ वर्षों के दौरान सरकार ने प्रजासनिक व्यय में कटौली करने के उद्देश्य से मितव्ययता के बहुत से उपाय भ्रमल नाये गये जिन में से मुख्य थे हैं ——

- (1) वेतमानो के समोधन पर प्रतिबन्ध :
- (2) कतिपय श्रणियो के पदो पर नियंत्रिक करने पर श्रोशिक श्रतिबन्,
- (3) विदेशी मोटरकारी की खरीद बर रोक ;
 - (4) यात्रा भत्तों में कटौती, भीर

(5) कमंबारी निरीक्षण कार्यों (स्टाफ इस्पेक्सन स्टेडींब) में तेजी।

उपर्युक्त उपायीं के प्रलावा बगलादेश से शरणाधियों के प्रागमन तथा हमारी सीमाग्रो पर प्रानिश्चित परिस्थितियों के परिणामस्वरूप वितीय दवाव के सन्दर्भ में 1971-72 में मितब्ययता के लिए निम्निलिक्ति उपाय शुरू किये गये थे जो 1972-73 में भी जारी रहे —

- (1) भायोजना-भिन्न कार्यक्रमो में पदो के निर्माण पर पदिवन्ध ,
 - (2) मार्कास्मकता निधियो, यात्रा भत्तों, मनोरजन मादि के लिए की गई बजट व्यवस्था में कटौती,
 - (3) किन्ही परिस्थितियों में खानी पदों का न भरा जाना ,
 - (4) फर्नीचर सजावटी वस्तुओं भादि की खरीद पर रोक, भीर
 - (5) विदेशी शिष्टमण्डली पर पहले से अधिक कडा नियन्त्रण ।

प्रशासितक व्यय में होने वाली वृद्धि पर कावू पाने में पूर्ववर्ती उपायों के कारण विकेषकप में सहायता मिली ,। किन्तु जो सफलता मिली वह सरकारी कारों में धामतौर पर विस्तार होने के कारण व्यय में वृद्धि न मंचारियों को धित-रिक्त अन्तरिम सहायता की धदायगी करने तथा नेलभाडा में डाक-दरें धादि में वृद्धि के कारण कुछ सीमा तक बरावर हो गई। इन परिस्थितियों में यह सम्भव नहीं है कि भितन्थ्ययता के उपर्युक्त विभिन्न उपायों से 1972-73 के दौरान होने वाली बचतों को ठीक ठीक तरीकों से धलग से बताया जा सके।

2. 1973-74 में सरकार के आयोजना-भिन्न व्यय में मितव्ययिता के बहुत से भीर भी उपाय शुद किये गये थे ताकि धाटे की वित्त व्यवस्था को रोका व्या सके । ये उपाय थे :

निधियों भीर यात्रा ग्राकस्मिकता भत्तों में मितव्ययिता ऐसी इमारतों के निर्माण कार्यको रोका जाना जो चौकी के तल से अपर नहीं बनायी गई है कुछ विशेष महत्व वाली इमारतों को छोड कर शेख इमारतों की वार्षिक मरम्मत तथा मनरक्षण के कार्यों को रोक दिया जाना. हेंसे नये पदों के निर्माण पर प्रतिबन्ध जो छः महीने से ग्रधिक समय तक खाली पडे हए हैं, मरकार के विभिन्न शासाओं में ब्राधिकारियों के बारी बारी स्थानान्तरण का प्रास्थगन ताकि स्थानान्तरण प्रती की बचत की जा सके, दफ्तर की गाडियों द्वारा पेट्रोल की सपत में तथा टेलीफोन काल में बचतें. मनोरंजन धौर विदेश याता पर व्यय में किफायत, सम्मेलनों, बोध्ठियों तया बैठकों के बायोजन में होने वाले बर्च में किफायत, मन्तर्राष्ट्रीय बैठकों के भायोजन के लिए कम से कम निवन्त्रण देना, सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों को निर्देश देना कि वे दक्षतापूर्वक कार्यनिष्पादन बादि द्वारा बान्तरिक कोतीं से होने वाली नकद हानि को कम करें।

3. इसके अलावा यह आवश्यक समझा गया कि आयोजना व्यय में किफायत की जाय । यह किफायत इस प्रकार की गई कि मुख्य प्रायोजनाओं और कार्य-कर्मों पर जो कि आवश्यक हैं और पूरी होने ही वाने हैं, इसका प्रभाव न पड़े और ऐसी प्रायोजनाओं और योजनाओं को जो कि इतनी आवश्यक नहीं हैं भीर जिनके पूरा होने में अधिक समय लयेगा उन्हें धीमा कर दिया जाये। राज्यों की आयोजनाओं की लए केन्द्रीय सहायता

में भी 100 करोड़ रुपये की बचत का प्रस्ताव

4. ग्रामा भी कि इन उपायों के परि-णामस्बरूप लगभग 400 करोड रुपये की कुल बचत हो जायेगी । किफायत के इन उपायों को मोटे तौर पर विभिन्न मन्त्रालयों / विभागों द्वारा लागु कर दिया गया है। विभिन्न मंत्रालयों / विभागों द्वारा 1973-74 में भी की जाने वाली बचत के धनमान इस विवरण के धनबन्ध में दिये गये हैं। इन बचतों में निम्न-लिखित के सम्बन्ध में सरकार पर आने वाली प्रतिरिक्त देनदारियों को हिसाब में नहीं लिया गया था --सरकारी कर्म-चारियों के बेतन भीर भत्तों में संजोधन. बाब सम्बन्धी राजसहायता , देवी विपत्तियों के मम्बन्ध में राज्यों को प्रति-रिक्त सहायता भादि भीर मुख्य परि-योजनाओं भीर योजनाओं के सम्बन्ध में भिन्न मंतालयों / विभागों को दी वह कुछ ग्रतिरिक्त रकमें।

- (ख) जी नहीं। किन्तु राज्य अपने प्रशासनिक खर्च को जितना कम करते हैं इनकी योजनायों के लिए उतने से अधिक साधन उपलब्ध हो जाते हैं और इसे राज्य सरकारों की योजनाओं का आकार निर्धारित करते समय अ्यान में रखा जाता है।
- (ग) भारत मरकार राज्य सरकारों पर प्रायोजना मिन्न खर्च कम करने की प्रावश्यकता पर बार-बार जोर देती रही है जिस से उनकी प्रायोजना सम्बन्धी योजनाओं के लिए पर्याप्त साधन उपलब्ध हो सके। पिछने वर्ष राज्य सरकारों को सलाह दी गई थी कि वे प्रति-रिक्त प्रायोजना या घायोजना मिन्न के लिए केन्द्र की प्रत्याप्तित सहायता में खर्च न करें ग्रीर ग्रंपने बजट की स्थिति की

समीका करें जिससे जहां धायक्यक हो वहां उपयुक्त कमीबेशी की जा सके भीर पाय पीर व्यय में सतुलन लाया जासके।

(ब) जैसे कि उपर्युक्त पैरा 4, (क) में बताया गया इसका प्रश्न ही नही उठता ।

विवरण

(करोड रुपयों में)

`	
क्रम मत्रालय/विभाग स च्या	सूचित की गई कुल बचत
1 2	3
1 कृषि	13 84
2. বাল	4.47
3 सा मुदा यिक विकास	5 40
4 महकारिता	10 13
5 भारतीय कृपि अनुमधान परिषद्	7 3.87
6 वाणिज्य	0.34
7 सचार एव समुद्रपार सचार व्यवस्था	0.02
8. डाक एव तार	3 29
9. शिक्षा	11 76
10 समाज कल्याण	2 48
11 झर्ष विभाग (वित्त)	2.93
12 वेकिंग (विस)	7.50
13. व्यय (वित्त)	158.45*
14 राज्य एवं बीमा (वित्त	3.13
15 स्वास्थ्य	4.60
16. परिवार नियोजन	6.25
17. भारी उद्योग	8.54
18. गृह विभाग	1.40

1 2	3
19. ग्रीदोगिक विकास	
20 सूचना एवं प्रसारण	8.76 3.68
21 सिंबाई एवं विजली	23.98
·	
22 श्रम एवं नियोजन	0.32
23. पुनर्वास	2.52
24 पट्रोलियम भौर रमायन	15.62
25 जहाजरानी भीर परि- बहन	24.41
26 इस्पात	31 72
27 सनन	9 71
28 पर्यटन और मिबिल विमान	न 4 69
29. निर्माण भौर ग्रावस्त	5 30
30 विज्ञान भीर टेकनोलाजी	2 25
31 प्रधान मती का सचिवालम	v. 02
32 राष्ट्रपति का समिवालय	0.02
33 उच्चतम न्यायालय	0 01
34. योजना धायोग	0 06
जोड	381 47

*इसमें केन्द्र द्वारा राज्यों को दी जाने वाली सहायता में 93. 98 करोड रुपर्यों की बचत, नियोजन योजनाओं में 34 कर इ रुपयों की बचन और पाचनी पचवर्षीय योजना की समिम कारवाई में 30 करोड़ क्वरों की बचत शामिल है।

नुगकरों के लिए चुविवाओं की व्यवस्था

7465. श्री श्रम्भुलाल श्रम्झाकर: क्या शास्त्रिय मंत्री यह बनाने की कृपा करेंगे कि:

- (क) वाराणसी, मिर्जापुर ग्रीर इता-हाबाद जिलों के बुनकरों की पृथक्-पृथक् मंख्या किसनी है;
- (ख) उनके द्वारा रेशम, रेयन ग्रीर जरी तैयार की गई बस्तुगं कित-किन देशों को निर्यात की गई श्रीर उसमें कितत. विदेशों सद्वा ग्राजित की गई ;
- (ग) क्या सरकार का विचार इन बुनकरों को उनकी उत्योगिताको ध्यान नै रखते हुए कुछ सुविधाये प्रदान करने का है; ग्रीर
- (म) यदि हा, नो तत्म-बन्धी ह्यारा क्या है ?

वाणिक्य मंत्रालय में उप मंत्री (भी ए० शी० जार्ज): (क) जानकारी राज्य मरकार से एकत्र की जा रही है।

(क) जिला शाक्षार पर नियान श्राकड़े नहीं रखें जाते हैं। 1972-73 नथा 1973-74 के दौरान देश के कृतिन रेशम के वस्त्रों के कुल निर्यान नीचे दिये जाते हैं:

> 1972-73 9.32 करोड़ रुपये 1973-74 25.52 करोड़ रुपये (स्प्रील-फरवरी)

(ग) और (घ). सामान्य नीति के मनुसार धाने की प्रतिपूर्ति, मावात न्यापार नियंत्रण नीति खण्ड ii के धनुसरण में इन क्स्तों के नियात के बाधार पर की जाती है।

Air Service to Fiji

7466. SHRI NAWAL KISHORE SHARMA: Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

- (a) whether Government are considering to discontinue Air India services to Fiji Islands and if so the reasons therefor;
- (b) whether there is any proposal under the consideration of Governmentoduce some subsidiary air service to that Island:
- (c) whether Government have received some memorandum to continue the air service to Fiji for the residents of the Island; and
- (d) if so, the reaction of Government to the memorandum?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR): (a) Yes, Sir Air India commenced operations to Fiji in August 1964 by extending their weekly service to Sydney. As the traffic and financial results continued to show a downward trend, a market survey was conducted by Air India to assess the profitability of operations between Sydney and Fiji. The survey has left Air India with no option but to pull back from Nandi for the time being.

Although Air India bave withdrawn operations to Fiji, they continue to maintain their office in Fiji so that it can sell transportation on Air India's services world-wide and earn as much revenue as possible. When the situation improves and if it is felt that it will be commercially viable for Air India to operate services to Fiji, the service can be resumed.

(b) No such proposal is under consideration at the present.

(c) and (d). Government have received no such memorandum. However, there are a number of convenient flights operated by other airlines from Nandi to Sydney from where Air India flights are available.

Setting up Offices of Exporting Firms in E.E.C.

7467. SHRI NAWAL KISHORE SHARMA: Will the Munister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether there is a proposal under consideration of Government to provide necessary facilities to Indian exporting firms to set up their offices in East European countries to boost up trade with those countries;
- (b) whether some delegations had also been sent by Government in this regard to those countries.
- (c) if so, the broad features thereof and the particulars of the goods to be exported to those countries; and
- (d) the expected profits to be earned therefrom?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) Government would encourage reputable export houses and other exporting firms to set up their offices in East European countries. They have, however, to obtain the permission of the Governments of the respective countries for which those Governments require fulfilment of certain conditions (and down by them.

- (b) No, Sir.
- (c) and (d). Do not arise

Agreement with Iraq

7468. SHRI NAWAL KISHORE SHARMA: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether an economic pact has been signed between the Governments of India and Iraq recently;
- (b) if so, the broad features of the agreement arrived at. and
- (c) the extent to which India would be beneficiary as a result of the agreement with particular reference to oil imports?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN):
(a) to (c). Recently a loan agreement has been entered into with Iraq in connection with supply of crude oil. Under this agreement, the Government of the Republic of Iraq shall extend to the Government of India a loan to the amount of 110 million U.S. Dollars to cover patial value of crude oil supplies to India during 1974.

Export of Silver

7469. SHRI INDRAJIT GUPTA: SHRJ KRISHNA CHANDRA HALDER:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether there is a good market for export of Indian Silver at favourable prices;
- (b) if so, the estimated amount of exportable silver available in the country and its value at ruling international prices;
- (c) whether large quantities of silver are being smuggled out of India;
- (d) steps taken to check such smuggling and to canalise export through Government agencies?

182

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): (a) Yes, Sir.

- (b) It is not feasible to give an estimate of the quantity of exportable silver and its value.
- (c) Earlier, there was a ban on export of silver. However, recently this ban was lifted and export of silver is freely licensed.
- (d) There is no proposal to canalise export through Government agencies. Customs authorities continue to be on the vigil to check smuggling of silver. Administrative and legislative measures have been taken by them to have effective control. The regulations provide for declaration of promises to Customs, transport of silver under cover of vouchers, maintenance of prescribed accounts and reasonable steps to avoid sales in the name of fictitious persons. The position is kept under constant review.

Revenue from Excise Duty on Motor Spirit

7470. SHRI INDRAJIT GUPTA: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) the amount realised upto 31st March, 1974 from the excise duty of Re. 1/- per litre on motor spirit levied in November, 1973;
- (b) whether any portion of this has been or will be allotted, specifically for improvement of urban transport, particularly in Calcutta; and
- (c) is so, the agencies to whom the allotment has been or will be made?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) The amount of excise revenue collected on account of increase in excise duty by Re. 1/per litre on motor spirit during the period 3rd November, 1973 to 28th

February, 1974 (upto which the figures are immediately available) is provisionally placed at Rs. 57.84 crores.

(b) and (c). In reply to the Lok Sabha unstarred Question No. 2420 on the subject answered on 11th March, 1974, the Minister of Shipping and Transport had indicated the broad outlines. The details of the final allocation of the additional revenue have, however, still not been finalised.

Lapsed Policies of L.I.C.

7471. SHRI INDRAJIT GUPTA: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether about 14 lakhs of Life Insurance policies have lapsed in the course of one year;
- (b) if so, the reasons for this state of affairs; and
- (c) steps taken to eradicate the malpractice of "Benami" life insurance agencies?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI-MATI SUSHILA ROHATGI): (a) 5.38 lakh policies lapsed during the year 1972-73.

- (b) Policies generally lapse for one or more of the following reasons:
 - (i) Change in the financial condition of the policy holder.
 - (ii) Wrong and indifferent selling of life insurance.
 - (iii) Inadequate contact of the agent with the policyholder.
 - (iv) Inadequate facilities for remittance of premiums.

- (c) The LIC is alive to the need for eradicating benami agencies. Some of the steps taken by the LIC are:
 - (i) Application form for agency is required to be filled in the applicant's own handwriting.
 - (ii) The applicant is interviewed by the officer in charge of the Branch who is required to satisfy himself that the applicant is capable of working as an agent independently.
 - (iii) The statutory agents regulations which come into force from 1-5-72 provide that new agents must undergo training and pass a test to qualify for confirmation.

Special vigilance against 'Bad' Loans of Nationalised Commercial Banks

7472. SHRI INDRAJIT GUPTA: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether the Reserve Bank has recently asked the nationalised commercial banks to exercise special vigilance against 'bad' loans;
- (b) if so, whether such loans, have mainly accrued in the priority sector; and
- (c) whether greater reliance on Conventional standards of 'credit worthiness' will not adversely affect the credit requirements of small scale borrowers?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN):

(a) Banking being a business of dealing in credits, every bank has necessarily to take a certain amount of credit risks, if proper service is to be rendered to the public, particularly

number of new areas of when a lending are being taken up after nationalisation. However the nationalised banks have evolved suitable systems for periodical review of their advances in order to identify debts which may prove difficult of recovery that adequate and timely action may be taken for recovering such debts. Government as well as the Reserve Bank of India are also undertaking periodical reviews of the results of the nationalised banks and advising the banks to ensure that yearly appropriations from the profits are adequate to provide for bad and doubtful debts and other contingencies, so that the banks augment their inner reserves and strengthen their capital structure.

(b) and (c) Bad and doubtful debts could and do arise in both the priority as well as the non-priority sectors. In the matter of advances to small scale industries, small business, self employed professionals etc., the emphasis is that funds are lent for so that the schemes are viable and that the borrowers possess the requisite capacity and skills. Moreover, Credit Guarantee Corporation of India Ltd, which is jointly owned by the public sector banks and the Reserve Bank of India, which went into operation from 1-4-1971 provides for insurance of loans to any single party in the priority sector against losses to the extent of 75 per cent of the outstanding advances. Seventy-five commercial banks, including all the public sector banks, participate in this scheme. No credit institution had invoked the guarantee from the Credit Guarantee Corporation in respect of credit facilities covered the Corporation till 31-12-1972. During the first half of 1973 five banks submitted claims in respect of borrowers for advances aggregating to Rs. 2 lakhs only. Therefore the question of nationalised commercial banks hesitating to advance loans to the priority sector does not arise.

Under-invelcing by Jute Experiers

7473. SHRI INDRAJIT GUPTA: SHRI C. K. CHANDRAPPAN:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether jute exporters indulge in under-invoicing thereby depriving the country of precious foreign exchange;
- (b) if so, whether Government have made use of the new Foreign Exchange Regulations Act to detect such cases; and
- (c) the names of Jute exporters who have so far been arrested for under-invoicing?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) No specific case of under-involcing has been reported.

(b) and (c). Do not arise.

Moratorium on Foreign Remittances

7474. SHRI SAT PAL KAPUR: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether it is proposed to impose a moratorium on all foreign remittances for the financial year 1974-75 so as to tide over the difficult foreign exchange position; and
 - (b) if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN):
(a) and (b). No. Sir.

It is Government's policy to freely permit the remittances of profits and dividends earned by foreigners on their investments in India subject to payment of Indian taxes thereon.

The payments on account of royaltics and technical know-how fee arise out of agreements entered into with foreign collaborators and it would not be feasible to put any restriction on their remittances abroad.

The question of imposing restrictions on remittances of profits dividends on non-residents examined and it was thought any such steps would result either in accumulation of free reserves which would be available for capitalisation by issue of bonus shares or alternatively it could increase the fair value of shares as and when non-residents wanted to disinvest their holdings. It was, therefore, decided not to impose any general restrictions. In respect of utilisation of reserves for declaring dividends by 100 per cent foreignowned subsidiaries certain restrictions, however, have been imposed.

Remittances by Foreign Companies

7475. SHRI SAT PAL KAPUR: SHRI ATAL BEHARI VAJPAVEE:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state the total remittances made by various foreign companies operating in India under various heads, during 1972-73 and 1973-74, year-wise?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): Latest information regarding total remittances by foreign companies in India, based on balance of payments statistics, is available for the first half of 1972-73 and is given below:—

Remittances of	(Rs	. crores)
Profits by branches of Fo Companies.	oreign	8. 49
2. Dividends by Foreign *C trolled Companies .	Con-	18-49
TOTAL .		26.98

*It relates to subsidiaries of foreign companies, or companies with 40 per cent or more share capital held outside India in any one country or companies in which 25 per cent or more of the share capital is held by a foreign company or its nominee.

187

Teller System in the Branches of Central Bank

7476. SHRI SAT PAL KAPUR: Will the Minister of FINANCE be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 901 on the 16th November, 1973 regarding Teller System in the branches of Central Bank and state:

- (a) whether the Teller System has since been introduced in other branches of the Central Bank of India in Delhi and New Delhi where it was to be introduced;
- (b) if so, the particulars thereof and if not, the reasons for decay; and
- (c) whether Gole Market Branch 18 one of the branches of the Central Bank of India where Teller System is proposed to be introduced and if so. when and if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): (a) to (c). Central Bank of India has reported that the teller system has since teen introduced by them in one more branch, namely at Lajpat Nagar and that proposals for introduction of the said system in eleven more branches, including Gole Market branch, are under consideration. The exact date of introduction of the teller system in these branches will depend on the completion of requisite preparations and arrangements for the introduction of the system

Meeting of Aid India Consortium 7477. SHRI TARUN GOGOI: SHRI R. V. SWAMINATHAN:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) whether a meeting of the Members of the Aid India Consortium was held in Paris from 9th to 11th April, 1974

- (b) if so, the subjects discussed; and
 - (c) the decisions arrived at?

MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): (a) to (c). A Working Party meeting of the members of India Consortium was held in Paris on 9th and 10th April, 1974 to consider a paper prepared by the World Bank on India's foreign exchange requirements and to consider the Bank's suggestion that as large a portion of the assistance which the Consortium provides should in freely usable form The meeting did not attempt to reach any decisions. The matter would be pursued further at a meeting scheduled to be held in June this year.

Decision in regard to drawing of increments by Central Government **Employees**

7478. SHRI PRABODH CHANDRA. Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether Government decided to permit Central Government employees to draw their increments on the first day of the month in which it falls due with effect from November, 1973; and
- (b) if so, the reasons for not giving effect to this recommendation from the date the new grade have been given effect to i.e. January, 1973?

MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): (a) Yes Sir.

(b) The Third Pay Commission had recommended 1st March, 1973 as the date of giving effect to its recommendations on pay scales and pensionary benefits only, which has been modified by Government as 1st January, 1973. In respect of other matters including date of increment, no date

of effect has been recommended by the Commission. The normal procedure in this regard is that any revision of orders relating to benefits to Government employees is made effective from a prospective date or from a date specified in the orders. Commission's recommendation relating to date of increment has accordingly been given effect from 1st November 1973 i.e. the date on which Government's decisions on the recommendations of the Commission relating to employees in Classes II, III and IV have been formally notified in the Gazette of India Extraordinary of that date.

Agreement signed by Management of Indian Airlines with Pilots

7479. SHRI PRABODH CHANDRA:
Will the Minister of TOURISM AND
CIVIL AVIATION be pleased to state.
the broad outlines of the agreement
signed by the management of Indian
Airlines with its pilots on the 21st
February, 1974?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR): The agreement executed between the management of Indian Airlines and the Indian Commercial Pilots' Association on 21st February, 1974, inter alia provides for the following:—

- (i) the functions of the management in regard to supervision, laying down duties and responsibilities of employees, promotions and transfers, training and rostering of pilots, flight and duty-time limitations consistent with safety, efficiency and economy in operations, elimination of wasteful practices, etc. and
- (ii) closer co-ordination between the management and pilots.

Purchases by U.S.A. under PL 489 Agreement

7480. SHRI PRABODH CHANDRA: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether United States Government had sent a list of 30 items which it would like to buy under PL 480 agreement; and
 - (b) if so, the particulars thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) No. Sir.

(b) Does not arise.

Proposal to take over Management and Control of Private Flying Clubs

7481 SHRI M. RAM GOPAL REDDY:

SHRI R S. PANDEY:

Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

- (a) whether there is a proposal by Government to take over the management and control of private flying clubs in the country, and
- (b) if so, the broad outlines thereof and the reasons therefor?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR). (a) and (b) The Central Government has no such proposal under consideration. However, the Bihar Flying Club, Patna, has recently been taken over by the Government of Bihar and the management of the Amritsar Aviation Club, Patiala Aviation Club and Co-operative Hind Flying Club, Lucknow, has also been taken over by the concerned

State Governments by superseding the respective Managing Committees or Boards of Directors.

Representation regarding inconvenience to Passengers at Visakhapainam Airport

7482. SHRI R RAM GOPAL REDDY Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state

- (a) whether Government have recently received any representations from Visakhapatnam Chamber of Commerce that the new schedule of services of Indian Airlines announced recently as also the lack of a canteen at Visakhapatnam airport are causing much inconvenience to the air passengers; and
- (b) if so, what action Government have taken in the matter?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR) (b) (a) and Indian Airlines received a representation from the Visakhapatnam Chamber of Commerce about the inadequacy of capacity of air service to and from Visakhapatnam before the new schedule of services was introduced effec tive from 18th March, 1974 Some of the suggestions of the Chamber were duly taken into account while announcing the new schedule Separate aircrafts now operate the Hyderabad-Visakhapatnam-Hyderabad and Calcutta-Bhubaneswar - Visakhapatnam-Bhubaneswar-Calcutta services with connections at Visakhapatnam

So far as the provision of canteen facilities at Visakhapatnam is concerned, the Director General, Civil Aviation is making every effort to provide these facilities at the airport as early as possible.

Indian Airlines' Caravelle Flight to Hyderabad grounded at Madras Airport

7483, SHRI M. RAM GOPAL REDDY Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state.

- (a) whether an Indian Airlines' Caravelle flight which was scheduled to take off to Hyderabad was recently grounded at Madras airport due to a fire mishap in the fuselage;
- (b) whether any inquiry has been made into the cause of the fire and
 - (c) if so, the findings thereof?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR): (a) Caravelle aircraft VT-DVJ scheduled to operate the Madras—Delhi service via Hyderabad on the 24th March, 1974 was grounded at Madras due to smoke emanating from the rear passenger cabin at the time of starting the engines due to an electrical fault.

(b) and (c) The cause of the incident is being investigated.

सरकारी क्षेत्र के उपचर्नों में समयोपरि असे की श्रदावनी

7484. डा॰ लक्ष्मीनारायम पाउँय : श्री विश्वनाथ मुंसुनवाला :

क्या किस मन्नी यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) सरकारी क्षेत्र के विभिन्न उप-भ्रमों में गत तीन वर्षों में कर्मकारियों को कितना समयोगरि भ्रक्ता सदा किया गया , सीर (बा) क्या के द्वीय सरकार के कर्म-चारियों के बेतन मानों के पुनरीक्षण के कारण समयोगिंग भत्ते की माला में और स्फीलि होने का सम्भावना है और 1974 तथा 1975 में प्रम्तावित मिनव्यययिता क्या है?

वित्त मंत्रालय मे राज्य मंत्री (श्री के० धार० गणेश): (क) सूचना इकटठी की जा रही है ग्रींग उसे सभा-पटल पर रख दिया जायेगा।

(ख) तीसरे वेतन म्रायोग की सिफारिशों पर सरकार द्वारा लिया गया निर्णय सरकारी उद्यमा पर लागु नहीं होता ।

Opening of branches of nationalised banks in Assam

7485 SHRI BISWANARAYAN
SHASTRI Will the Minister of
FINANCE be pleased to state the number of branches of nationalised banks
opened in Assam for the last three
years?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI-MATI SUSHILA ROHATGI): The number of bank offices in Assam increased from 74 as on the eve of bank nationalisation to 179 as at the end of December, 1973. The bank group-wise distribution is set out below:

BANK GROUP NU	mber of As	OFFICES ON
	19-7-69	31-12-73
State Bank of India .	37	54
14 Nationalised Banks	30	113
Others	7	12

426 LS-8

74

17)

निर्यात से हाने वाली विवेशी मुझा की । ।

7486. श्री विभूति निश्च क्या विस्तमती यह बताने की कृपा करेगे कि

- (क) वर्ष 1973-74 मे निर्यात से कितनी राशि की विदर्ण मद्रा प्रजित की गयी है;
- (ख) वर्ष 1974-75 मे अनुमानत. कितनी विदेशी मुद्रा की श्राय होगी ;
- (ग) पाचवी पचवर्षीय योजना के क्रियान्वयन पर इसमे से कितनी धनराशि खर्च करने का विचार है; ग्रीर
- (घ) निर्यात से प्राप्त विदेशी मुद्रा तथा विदेशी महायता की पूरी राशि की विभिन्न कार्यों के लिये किस प्रकार खर्च करने का विचार है ?

वित्त मंत्री (शो यशबन्तराव चव्हान)

- (क) मीमा शुल्कों के उपलब्ध ग्राकडों के अनुसार 1973-74 के पहले दम महीनों में लगभग 1921 करोड रूपये की वस्तुये निर्मात की गयी थी।
- (ख) अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक स्थिति के अनिश्चित बने रहने के कारण खास नौर से कीमतो मे आरी घट बढ़ होने रहने के कारण ठीक-ठीक यह बताना कठिन है कि 1974-75 मे विदेशों को निर्यान की गयी वस्तुओं में कितनी आय हुई।
- (ग) ग्रीर (घ) विदेशों से लिए गये ऋषों के क्याज की श्रदायगी के लिये तथा ऋषों की वापस ग्रदायगिया जिन पर सर्व-प्रथम हमारे देश की विदेशी मुद्रा से खर्च किया जाता है, उसके लिये जरुरी रकम निकाल केने के बाद सेच विदेशी मुद्रा की ग्राय ग्रीर विदेशी सहायता की ग्रयं व्यवस्था बनाये रखने के निमित्त जरूरी खर्चों को पूरा करने के लिये तथा स्वीकृत प्रायोजनाग्रों ग्रीर कार्यकाों के लिये इस्तेमास किया जायेगा।

Allocation of Foreign Exchange to Bibar for purchase of Aircraft

7487 SHRI BIBHUTI MISHRA: WILL the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

- (a) whether the Bihar Government have approached Central Government this year for allocation of foreign exchange to the tune of Rs. 21 lakhs to purchase an aircraft; and
- Government's reaction (b) if so. thereto?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR), (a) and (b) in 1972 that the Bihar Government applied for release of foreign exchange of Rs. 20.00 lakhs for importing one twin-engine and one aircraft. Foreign exsingle-engine change amounting to Rs. 8,70,400/was released for the import of one twin-engine aircraft.

Jute Export

7488. SHRI K. MALLANNA: the Minister of COMMERCE be pleased to state:

- (a) whether his Ministry has received a request from the Baled Jute Association seeking permission to export raw jute:
- (b) whether the Jute Corporation has been exploring the possibilities of increasing emports but the Ministry is not in a position to announce its decision in this regard; and
- (c) if so, the broad outlines regarding the policy of Government in this regard?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE); (a) Yes, Sir.

(b) and (c). Government already advised the Jute Corporation of India to export a substantial quantity of raw jute during this year. as a price stabilisation measure in view of the bumper crop. The exact quantity will depend upon market conditions.

Confirmation of Employees working in IT.D.C.

7489. SHRI ISHAQUE SAMBHALI: Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

- (a) the number of temporary and permanent employees Unit/Department-wise out of the total number working in India Tourism Development Corporation:
- (b) whether all the employees got their confirmation letters after completing their probation periods, as specified in their letters of appointment: and
 - (c) if not, the reactions therefor?

THE MIMISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR): (a) A statement showing the number of employees (excluding apprentices/trainees or those engaged on specific contractual basis or who have been employed on a Durely temporary/casual/part-time basis) in India Tourism Development Corporation Headquarters and its various units is enclosed.

- (b) On successful completion of probationary period, an employee of India Tourism Development Corporation is automatically considered as a 'permanent employee'.
 - (c) Does not arise.

Statement

UNIT TOTAL NUMBER India Tourism Development Corporation (Headquarters) 370 Transport Division 425 Hotels :-Ashoka Hotel, New Delhi 1563 Hotel Ranitt, New Delhi . 306 Hotel Janpath, New Delhi 665 Lodhi Hotel, New Delhi . 317 Akbar Hotel, New Delhi . 385 Hotel Ashoka, Bangalore . 232 Outab Hotel, New Delhi 100 Varanasi Hotel, Varanasi . 57 Kovalam Palace Hotel & Grove 82 Laxmi Vilas Palace Hotel, Udaipur 31 Aurangabad Hotel, Aurangabad. 29 Khajuraho Hotel 32 Travellers' Lodges . 146 Jammu Motel, Jammu 43 Hassan Motel 32 Kosi Restaurant, Kosi 12 Tai Restaurant, Agra 16 Sagar Restaurant 5 Ajanta Restaurant 3 Elephanta Restaurant 7 Kovalam Project 55 Dum Dum. Calcutta 7 Faridabad Set Up, Faridabad . 17 Duty Free Shops 29 TOTAL 4966

Policy for serving liquor in Hotels/ Restaurants and Clubs in Delhi

73 10 SHRI D. B. CHANDRA GOV/DA; Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

- (a) whether recently Government have changed its policy for serving liquor in Hotels/restaurants and clubs in Delhi:
- (b) if so, the broad features thereof as well as of the change in timings, if any; and
- (c) whether Indians and foreigners will now be allowed to take liquor at these places without any distinction?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR): (a) No change has been made in the policy, but certain rationalizations have been made by the Delhi Administration in respect of licence fee, assessment fee, service hours, etc.

- (b) The licence fee and assessment fee have been raised, and the hours for the sale of liquor in bars attached to hotels have been extended
- (c) The distinction between Indians and foreigners has been removed only in respect of service of liquor to the residents of a hotel in their rooms in licensed premises.

Civil Airports in India

7492. DR. KARNI SINGH: Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state the number of civil airports in India together with their names, State-wise?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHA-DUR): A statement giving the required information is laid on the Table of the [Placed in Library. See No. LT-6761/74]. Besides, civil air services can operate to a number of airfields. private state govt. owned and Detence.

Written Answers

Survey on price trend by the Consumers Council of India

7493. SHRI C. K. CHANDRAPPAN: SHRI M. M JOSEPH:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) whether the attention of Government has been drawn to results of the nation wide post budget survey conducted by the Consumer Council of India;
- (b) whether they have stated that the prices of consumer goods had registered an indiscriminate rise all over India after the new taxes were announced:
 - (c) if so, the reaction thereto; and
 - (d) steps taken to check this trend?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): (a) and (b). Yes, Sir.

(c) and (d). There is no doubt a tendency for producers and traders to use higher indirect taxes as on excuse for raising prices. However, it will be incorrect to state that there has been an indiscriminate increase in prices all over India as a result of new tax proposals announced in the budget for 1974-75. The indirect tax proposals by and large do not cover articles of mass consumption and as such cannot be the basis for price increases. Government are fully aware of the inflationary pressures in the economy and have taken a number of fiscal, monetary and administrative measures to check the growth of inflationary pressures.

Repatriation by fereign companies

7494 SHRI NAWAL KISHORE SINHA:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) the implications in terms of foreign exchange when a manufacturing company operates as a Branch or as a wholly owned subsidiary; and
- (b) on what basis is Head Office Expenses repatriation justified how it is computed and controlled by Government?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN) (a) If the foreign company is operating in India as a branch the remittances will mainly relate to profits and head office expenses: If however, it is operating as a subsidiary, the remittances will generally relate to Dividends and Royalty and Technical know-how if there is a technical collaboration agreement in addition to the above items, both the branches and subsidiaries would be effecting remittances for imports against licences, if any, held by them

As rgeards the foreign exchange earning of the companies, it will be in the form of export proceeds realised by them.

- (b) Remittances of Head Office Expenses are generally claimed by foreign enterprises on one or more of the following reasons:
 - (i) Expenses incurred by Head Office and identified with the Indian Branch:
 - (iii) Expenses incurred by Head Office for several Branches and proportionate amount being allocated to the Indian Branch.
 - (iii) Expenses incurred bv Office which are not identifiable with any one or more branches and are allocated proportionately to all the branches including the Indian Branch.

The general criterion applied in determining the admissibility of Head Office expenses as a deduction in computing their taxable income, is the one laid down in section 37(1) of the Income-Tax Act, 1961, viz., whether the expenditure is laid out or expended wholly and exclusively for the purpose of the business and is not in the nature of capital expenditure.

Indian Airlines Flights to Port Blair

7495. SHRI B. V. NAIK: Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

- (a) whether the Indian Airlines flights to Port Blair have been resumed; and
- (b) if not, when they are likely to he resumed?

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI RAJ BAHADUR): (a) and (b). Indian Airlines resumed air services to Port Blair with effect from 26th March, 1974 on a temporary basis for the present.

Ex-gratia compensation for properties left over in Pakistan

7496. SHRI SAMAR GUHA: Will the Minister of COMMERCE be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 5221, on the 31st August, 1973 and state:

(a) whether (i) Ganesh Flour Mills and Co., Delhi (ii) Delhi Cloth General Mills and Co., Delhi, (iii) Sutlej Cotten Mills Limited, Amritsar, (iv) Okara Flour Mills, Amritsar, (v) Forbes Compell and Co., Bombay, (vi) Property and Finance Private Limited, Calcutta, (vii) Tide water oil and Co., (viii) India Trade and General Insurance and Co., (ix) F.L. Dinsay Limited and (x) National Insurance Co. Ltd. received large amount of ex-gratia compensation for their porperties in Pakistan;

- (b) if so, details of their companies in Pakistan in regard to (a) names of their former directors (b) location (c) when these companies shifted to India and (d) what type of organisations and where these companies were located in 1965:
- (c) facts about the compensations received by these companies according to evacuee property left by them in Pakistan; and
- (d) the names of the persons who received ex-gratia compensation?

THE DEPUTY MINISTER IN 7HE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI A. C. GEORGE): (a) What the Government has paid to these ten Companies is not compensation but an adhoc interim relief in the form of exgrating grant from the Consolidated Fund of India.

- (b) and (c). All these Companies have their registered offices and Directors in India and not in Pakistan. These Companies were taken over by the Custodian of Enemy Property of Pakistan at the outbreak of September 1965 Conflict. The question of compensation under the Evacuee Properties Act did not arise.
- (d) Ex-gratia grant were given in the names of the Companies listed in(a) above and not to individuals.

Functioning of Branches of Nationalised banks and SBI in West Bengal Assam, Tripura, Karnataka, Maharashtra, and Gujarat

7497. SHRI S. N. SINGH DEO: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) number of branches of nationalised banks and the State Bank of India functioning in Assam, Tripura, Karnataka, Maharashtra and Gujarat, during the last three years;

- (b) number of the persons employed by these banks in these States, district-wise during the last two years, and
- (c) number of the branches likely to be opened in these States during 1974-75 and the persons likely to be employed, category-wise during that period?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRIMATI SUSHILA ROHTAGI) (a) The data in regard to the number of offices of nationalised banks, State Bank of India and its Subsidiaries functioning in the States of Assam, Tripura, Karnataka Maharashtra and Gujarat as

- at the end of December, 1971, 1972 and 1973 are set out in the Statement attached.
- (b) The present system of data flow does not provide for global compilation of information relating to employment by banks districtwise
- (c) All commercial banks now prepare three year rolling plans for branch expansion. While the plan for the first year 15 to be set out in detail, the plan for the next two years is to be in broad aggregative terms. Banks are currently engaged in finalising the rolling plan for the three year period 1974—76.

•	
=	
£.	
2	
æ	
•	
•	
20	
•	
•	
-	

Vame of the State		Z	Number of Offices as on,	28 OU.					
		35-12-71			31-12-72		31-13	31-12-73	
	Nationalised	State Bank of India	Subsidence of S B L	Nationa- lised Banks	State Bank of India	Subsi- durnes S.B I	Nationa- lised Banks	State Bank of India	Substanties of S. B.I.
Азшт	26	80	1	96	25	н	113	53	
Tripura	ø	ĸ		11	E.		7	ж	
Karnataka	\$8\$	8	ž.	674	£	249	732	85	270
Maharashtra	1080	235	Ł	1221	256	43	1339	267	93
Gujarat	893	168	125	126	183	9£1	1050	200	140

Opening of branches of nationalised banks and SBI in West Bengal during 1974-75

7498. SHRI S. N. SINGH DEO: Will the Minister of FINANCE be pleased to state the names of the places where nationalised banks and State Bank of India will open new offices and branches in the State of West Bengal, District-wise during the year 1974-75 and the number of persons of various categories likely to be employed in these branches?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRIMATI SUSHILA ROHATGI): In terms of the directive of the Reserve Bank of India, the commercial banks prepare three-year rolling plants for branch expansion. The plan for the first year is a detailed one, while those for the subsequent two years are generally in aggregative terms. The banks are currently engaged in formulating their branch expansion plans for the three year period 1974—76.

The public sector banks had at the end of January, 1974 licences/allotments for opening 241 offices in West Bengal. The staffing pattern of branches varies from bank to bank and from branch to branch depending upon the area of operation, potentialities for development, volume of business etc. Banks undertake formulation of their manpower plans only after the details of their branch expansion plans are finalised.

Losses suffered by public sector

7499. SHRI S. N. SINGH DEO:

SHRI SHANKAR DAYAL SINGH:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) the amount of net loss suffered by the Public sector during 1972-73 and 1973-74, unit-wise; and

(b) the action taken by Government to make public sector profitable and the results schieved so far?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): (a) During the year 1972-73, the public enterprises collectively made a net profit after tax of Rs. 19.85 crores (after prior period adjustment) as against the net loss of Rs. 16.74 crores in 1971-72. The statements indicating the net loss suffered in 1972-73 by 29 enterprises and the net profit made by 68 enterprises are laid on the Table of the House. [Placed in Library See. No LT-6762/74). The audited accounts for the year 1973-74 are not yet due.

- (b) Steps taken to improve the working results of public enterpuses include:
 - (i) better maintenance organisation and practices to reduce equipment downtime;
 - (ii) improvement in production planning and control, personnel management, materials management, industrial engineering;
 - (iii) introduction of incentive scheme for improving motivation;
 - (iv) training at all levels for better managerial performance and increased productivity;
 - (v) wherever demand has been inadequate, diversification and greater export efforts; and
 - (vi) import of raw materials and components, wherever necessary.

The effect of these steps is already reflected in the working results for 1972-73 which show that after a lapse of many years, the Public Enterprises as a group have earned a net profit Nevertheless. Government are maintaining vigilance for improving the performance of the enterprises which are still incurring loss.

7500. SHRI P. G. MAVALANKAR: Will the Munister of FINANCE be pleased to state;

- (a) whether effices and buildings of various nationalised banks were the targets of popular frenzy and mob attack in Gujarat during the three months, January—March, 1974; and
- (b) if so, the broad features thereof including the estimated loss on this score?

MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): (a) and (b). During the disturbances which took place in the State of Gujarat from January, 1974 onwards, the premises and other property of some of the branches of nationalised banks located in Ahmedabad and some other cities/towns are reported to have suffered damage as a result of stonethrowing and arson. The reports received from 12 natonalised Lanks indicate that the estimated loss suffered by them was of the order of Rs. 7 lakhs.

Policy of advancing leans to individuals and industries by nationalised banks

7501. SHRI P. G. MAVALANKAR: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

- (a) the present policy of advancing loans to individuals and industries by the nationalised banks in the country; and
- (b) whether the said policy is working satisfactorily and if so, with what result?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO (a) and (b). Within the evallable resources and subject to overall the credit policy laid down by the Reserve Bank of India, public sector banks including nationalised banks extend credit for various economic activities. including production and distribution of goods and services. They are devoting greater attention towards meeting the credit requirements of small borrowers in the priority sectors like agriculture, small scale industry, road and water transport etc. Within the constraints of limited resources, limited manpower, absence of complementary infrastructural facilities etc. the efforts of the public sector banks, including the nationalised banks, towards achieving the socio-economic objectives of the credit policy are progressing satisfactorily. The priority sector advances of public sector banks increased from Rs. 441 crores in June, 1969 to Rs. 1295 crores at the end of June, 1973. These advances, as a proportion of public sector bank's total advances constituted 14.9 per cent and 24.3 per cent respectively on these dates. Correspondingly, the number of borrowal accounts/ units in the priority sectors has increased from 2.6 jakhs as at the end of June, 1969 to 19.22 lakhs as at the end of June, 1973.

भारत और क्स के बीच प्रश्नक के संबंध में व्यापार समझीता

मिन्न 7502. श्री शंकर स्थाल सिंह : क्या चाणिक्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भारत और इस ने मार्च.
1974 में अभ्रक के व्यापार के सम्बन्ध में
कोई समझौता किया है; और

(ख) बदि हां, तो तस्सम्बन्धी तथ्य क्या हैं और अनुविध्यक्त अश्रक का निर्यात कब तक कर दिया कायेगा ?

वाजिक्य संज्ञालय में उपसंजी (श्री ए० सी० जार्ज) '(क) जी हां।

(ख) खनिक तथा घातु व्यापार निगम ने सोवियत संघ को 5.44 करोड़ रुपये मूल्य का लगभग 313 मैं० टम साधित अञ्चक नियंति करने के लिये एक सविदा की हैं। संविदा के आधार पर श्रश्नक की सुपुदंगी अवस्त्रवर, 1974 सक पूरी हो आयेगी।

Correction of Answer to Unstarred Question No. 5678 gated 5th April, 1974 regarding Officety Working in Syndicate Bank After Completion of Age of 58 Years

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO (HAVAN): While replying to the Unstarted Question No. 5678 for the 5th April, 1974 regarding officers working in Syndicate Bank, after completion of the age of 58 years I had stated that Syndicate Bank has reported that since nationalisation only one officer has been resmployed on contract basis after his retirement on attaining the age of 58 years for a period of one year. 'there has been a discrepancy in reporting the facts by Syndicate Bank. The correct position, as reported by Syndicate Bank is that after nationalisation 13 officers continued to work in the bank on contract basis for varying periods upto 2 years after completion of 58 years of age. At present only one such officer is still working. Shri N. B. Haribal who has been given an extension for one year from 13-7-1973. I regret the discrepancy which had crept in the earlier reply.

Question of Answer to Unstarred Question No. 2784 dated 9th March, 1872 regarding Assessment of Wealth of Top 75 Families in India

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): The names of top 75 wealth-tax assessees and particulars of their returned of assessed net wealth in each of the assessment years 1969-70, 1970-71 and 1971-72 were furnished in reply to Lok Sabha Unstarred Question No. 2724 on 9-3-1973...

- 2. The name of Shri P. K. Aggarwala was shown at Serial No. 65 of the list for the assessment year 1970-71, with a wealth of Rs. 41.80.323 'since been ascertained that the wealth of Shri P. K. Aggarwala for the assessment year 1970-71 was Rs. 4.80,323/and that the wealth Rs. 41,80,323/r was shown owing to a typographical error. This name should, therefore, be deleted as it would not fall within the list of top seventy-five wealth-tax assesses. The subsequent Serial Numbers may be changed accordingly and the name of Shri Mano; KR Jain may be added at Serial No. 75. with assessed wealth of Rs. 38.19.000/-. for the assessment year 1970-71
- 3. The name of Maharani Jain. Chaibasa was mentioned at Serial No. 62 with wealth of Rs. 42.22.428 'for the assessment year 1970-71 and at Serial No. 43 with wealth of Rs. 46,30,228/- for the assessment year 1971-72. It has since been discovered that there was a typographical error and that the name of the assessee should really read as Mishri Lal Jain. Chaibasa. The name at Serial No. 63 for the assessment year 1976-71 and at Sérial No. 43 for assessment year 1971-72 may, therefore, be read as Mishri Lal Jain, Chaibasa,
- 4. The errors are regretted. They came to right only recently. However brief reasons for not having been able

to correct the reply earlier are given as under:-

- 1. Reply to Lok Sabha Unstarred Question No. 2724 was furnished on 9-3-1973 on the basis of information received from the field officers of the Income-tax Department in connection with provisional Unstarred Question with D. No. 1558 for reply in the Lok Sabha on 23-2-1973 which, however, was not admitted.
- 2. Subsequently, there were two Lok Sabha Unstarred Questions (i) Diary No. 3868 for reply on 4-5-1973 and (ii) No. 6386 for reply on 6-4-1973. Both these referred to Lok Sabha Unstarred Question No. 2724 replied on 9-3-1973 and sought further particulars in respect of persons mentioned in the reply to Lok Sabha Unstarred Question No. 2724.
- 3. The question with Diary No. 3868 was not admitted. An assurance was given for Lok Sabha Unstarred Question No. 6386 which is yet to be implemented. The mistakes mentioned in the Statement correcting the reply were recently pointed out in the reports sent by the field officers for implementation of the assurance given to Unstarred Sabha Question No. 6386. The mistakes had earlier been rectified in the reports from the field in connection with Question with Dy No. 3868. But as it was not admitted there was no occasion to look into these reports.
- 4. Delay in correcting the Statement was thus inadvertent and unavoidable.

12.01 hrs.

QUESTION OF PRIVILEGE—contd.

ALLEGES MISLEADING INFORMATION GEVEN BY THE MINISTER

MR. DEPUTY SPEAKER: Yesterday I held over for consideration the notice of a privilege motion by Shri Jyotirmey Besu.

I have had the opportunity to go through his letter and also to examine the relevant proceedings in the House on that day and what I found was that there is a dispute with regard to facts. Shri Jyotirmoy Bosu contends that there was an order to shoot-at-sight and the Home Minister in his statement says that there was no such order and whatever action was taken was on the order of the Magistrate on the spot and not on any order of shootat-sight. At the most, this is a dispute of facts and since the discussion on the Bihar situation will be taken up right now, I shall give Shri Jyotirmoy Bosu an opportunity to speak on it and he may make that submission.

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): On a point of submission. You have said something and you must hear me.

MR. DEPUTY SPEAKER: I have given my ruling, and I must hear him?

SHRI JYOTIRMOY BOSU: You cannot hang me without hearing me.

MR. DEPUTY SPEAKER: I am not hanging you.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: The purpose of my privilege motion is that I wanted to highlight that the Home Minister came and deliberately misted the House and stated an untruth on the floor of the House which amounts to a contempt of the House.

MR. DEPUTY SPEAKER: Order, please. I have ruled that there is no privilege involved.

SHRI JYOTIRMOY BOSU; You canno; ride rough-shod over rules. There is a specific rule.

MR. DEPUTY SPEAKER: Order, please. I have ruled out the question of privilege.

12.03 hrs.

PAPERS LAID ON THE TABLE

NOTIFICATION UNDER CENTRAL EXCISE RULES, 1944, AND A STATEMENT ON THE REPORT OF WORKING GROUP RE. BUREAU OF INDUSTRIAL COSTS & PRICES

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): I beg to lay on the Table a copy of Notification No. G.S.R. 349 (Hindi and English versions) published in Gazette of India dated the 6th April, 1974 issued under the Central Excise Rules, 1944, together with an explanatory memorandum. [Placed in Library See No. LT-6747/74.]

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PETROLEUM AND CHEMICALS (SHRI SHAHNAWAZ KHAN): I beg to lay on the Table a statement (Hindi and English versions) on the Report of the Working Group under the Chairmanship of the Chairman of the Bureau of Industrial Costs and Prices on the cost structure of certain bulk drugs, etc. [Placed in Library. See No. LT-6748/74.]

Interim Report 1973 of Warf Inquiry Committee

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI F. H. MOHSIN): I beg to lay on the Table a copy of the Interim Report 1978 of Wakf Inquiry Committee. [Placed in Library. See No. LT-6749/74].

12.031 hrs.

PUBLIC ACCOUNTS COMMITTEE

REPORTS AND MINUTES

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): I beg to present the following Reports and minutes of the Public Accounts Committee:—

(1) (i) Hundred and seventeenth Report on the Report of the Comptroller and Auditor General of India for the year 1971-72—Union Government (Civil) relating to Departments of Labour, Rehabilitation and Supply.

- (ii) Minutes of the sittings of the Committee relating to the above Report.
- (2) (i) Hundred and twerty-fourth Report on the Report of the Comptroller and Auditor General of India for the year 1971-72—Union Government (Civil), relating to the Ministry of Health and Family Planning (Department of Health).
- (ii) Minutes of the sittings of the Committee relating to the above Report.

12.031 hrs.

COMMITTEE OF PRIVILEGES

EIGHT REPORT

SHRI VASANT SATHE (Akola). I beg to present the Eight Report of the Committee of Privileges.

12.04 hrs.

DISCUSSION RE. SITUATION IN BIHAR

MR. DEPUTY SPEAKER: Now, we take up the discussion on the statement of the Minister of Home Affairs regarding the situation in Bihar.

SHRI S M. BANERJEE (Kanpur): With a very heavy heart, anguish and anger I beg to move:

"That this House take note of the statement made by the Minister of Home Affairs in the House on the 17th April, 1974 regarding the situation in Bihar"

MR. DEPUTY SPEAKER: There is no motion It is only a discussion. You may say 'I raise a discussion'

SHRI S. M. BANERJEE: Sir, I raise a discussion under Rule 193 and request this House to take note of that.

I request that my hon. friend, Shr: Bhogendra Jha who is in possession of all facts and figures may kindly be given the chance to speak on my behalf.

MR. DEPUTY SPEAKER: You both belong to the same Party. Yes, Shri Bhogendra Jha.

SHRI S. M. BANERJEE: Thenk you, Sir

श्री भोगेन्द्र क्या (जयनगर): उपाध्यक्ष महोदय, बिहार में जो जानें गई हैं, खास कर बी० एस० एफ० भीर पुलिस की गोली से जो जानें गई हैं, उन में भ्रधिकतर निर्बोष लोग हैं जिन की जानें गई हैं। मैं भ्रपनी भोर से, भपने दल की भोर से भीर मैं समझता हूं कि पूरा सदन भी इस में एक साथ होगा, उन निर्बोष लोगों के प्रति जिन की जानें गई हैं, श्रद्धांजलि भ्रपित करता हं।

उपाध्यक्ष महौदय, बिहार में जो बातें मामने धाई हैं वह उस नारे का ही प्रतिरूप हैं—"मुजरात की जीत हमारी है, धव बिहार की बारी है।" । इस से यह साफ जाहिर हो जाता है कि यह मामला सिर्फ बिहार को लेकर ही नहीं उठा है । यह सही है कि कांग्रेसी सरकार ने 1971—72 में जो बायदे किये थे, गरीबी हटाने के, वे बायवे पूरे नहीं किये गये । जिन शक्तियों वे उस समय पुरानी कांग्रेस से बाहर शा कर नई कांग्रेस का निर्माण किया था और जिस से जनता में खुमी की लहर बोड़ी थी आज वह खुनी समाप्त होती जा रही है । आज फिर वही जमीदार, पूंजीपति, बोरबाजारी इस कांग्रेस में बाखिल

हो गये हैं। केवल शरीर से ही दाखिल नहीं हुए. बिल्क उन की नीतिया भी कांग्रेस में चली ग्राई हैं जिनके चलते हम ने देखा कि मुनाफाखोरों को पूरी छट दी गई। पिछले माल गेहूं का शोक-व्यापार नाम के लिये लिया गया, जो गल्ला खुद-ब-खुद ग्रा जायगी उम को ले लेगे, इस तरह से जान-बृझ कर अप को नाकाम बनाने की कोणिश की गई ग्रीर इस माल तो ससे भी खित्म कर विया गया।

भारत सरकार पूर देश में बड़े पैमाने पर चौरबाजरियों, के मामने, बड़े बड़े भू-स्वामियों के सामने झुकी है । कल्याणी अधिवेशन में जो फैसला हुआ था कि 1973 तक हदबन्दी कानून लागू हो जायेगा, 1973 बीत गया, 1974 जा रहा है, हदबन्दी कान्न लाग करने की चर्चा तक नहीं हो रही है। इस लिये कि जमीदारों का बड़ा तबका कांग्रेस में घुसता चला जा रहा है भीर उन्होंने कांग्रेस पर दखन कर लिया है। इसी तरह से जो बड़े भूस्वामी हैं, चोर-बाजारी हैं, करोड़पति हैं उन्होंने कांग्रेस पार्टी के ऊपर, इस सरकार पर एक बड़ी हद तक दखल कर लिया है, कन्जा कर लिया है भीर यह उसी का नतीजा है कि भभी कुछ दिन पहले 30 प्रतिशत कपड़े की कीमत बढ़ाई गई। गल्ले की कीमत तो बढ़ी ही है, लेकिन जो रामन भीर गेहं पिछले साल का या, उस की कीमत भी रामन की दकानों पर बढ़ा दी गई है । सरकार की नीतियों में जो परिवर्तन हमा है उस के परिणासस्बद्ध्य बाप सब जानते हैं कि तीसरे [श्री भोगेन्द्र शा]

वकें के मुताफिरों के लिये रेलवे का किराया बढ़ाया गया, इस तरह से धान जनता पर बोस बढ़ा है, करोड़पतियों का मुनाफा बढ़ा है, कड़े भूस्वानियों का न्याईवारों पर बेदबल बढ़ा है, इन नीतियों के चलते जनता के धन्दर असन्तोच बढ़ा है । हम चाहते हैं कि जनता के धन्दर यह असन्तोच जो बढ़ा है इस सदन के जरिये हम उस का समर्थन करते हैं हम चाहते हैं कि यह असन्तोच संगठित जन-धान्वोलन का रूप ले।

उपाध्यक्ष महोदय, बिहार में यह श्रमन्तोष बहुत ही शन्तिपूर्ण श्रान्दोलन का रूप ले चुका था। 14 मार्च को पूरा विहार बन्द हुमा या जिस में कालिज के शिक्षक, हाई स्कूलों और प्राथमिक स्कूलों के जिक्षक मे लेकर बान मजदूर, कारखाने के मजदूर, रिक्शा चलाने वाले मजदूर, सभी एक साथ शामिल हुए थे। एक जगह भी लूट नहीं हुई, एक जगह भी दंगा नहीं हुआ, इसी से घटरा कर कांग्रेस के बाहर के प्रतिकियावादियों ने, चौरवाजारियों ने, जमीदारों से कांग्रेस के अन्दर के कुछ लोगों की मदद से बिहार में ग्राम लगाने की कोशिश की भीर यह कोशिश कोई झनहोनी नहीं है, क्योंकि देश के करोड़पति और वे लोग जो कल तक पालियामेन्द्री हेमोकेसी का उपदेश किया करते थे, लेकिन श्रव कुलक्स की श्रेणी में हैं, वे भव कहने लगे हैं कि पालिया-मेन्द्री जनवन्त्र भारत के लिये मौजू नहीं है। चाप स्टेट्समेन मखबार को सीजिये, जो साज टाटा का प्रखबार है, जो कल तक भारतीय जनवन्त्र की प्रशंसा करता था, जो हमारी

करकार के प्रति बहुत शक्ति बीर सहयर विकाता था, वह समावार विकास है कि----"Election and Parliamentary Democracy has become irrefement? उस ने इस को इरेलेबेन्ट कह दिया है और पौर जयप्रकाश बाबू जो स्वतन्त्रता संग्राम में हमारे साथ थे भीर 1952 तक उन को चुनाव में विश्वास या । लेकिन मतदाताओं ने जो 1952 में ठुकराया उसके बाद उन्होंने म्रयुव खांकी तानाशाही को कहा था कि गाइडेड डिमोकैसी का हम निरादर करते हैं और भाज वे पार्टिलेस की बात कह रहे हैं। सरकार में भगर फौजी तानाशाह होता है वह पार्टियों पर रोक लगाता है। मरकार के बाहर जयप्रकाश बाबू कह रहे हैं हम पार्टीलेस करेंगे, पार्टी विहीन करेंगे भौर यह नारा जयप्रकाश बाबू का केवल जन ग्रसंतौष का नारा नही है । संगठित रूप से जवप्रकाश बाबू का यहां दिल्ली में सम्मेलन हुआ, ऊपर से वे जरूर होंगे कि हम हिंसा नहीं चाहते हैं लेकिन यहां जो निस्तील वाला झावा था उसको भी उन्होंने घोन किया कि मेरे प्रति लोगों की घारणा हो गई है इसलिए मेरा नाम लेकर उन्होंने ऐसा किया है (ज्यब्यान) इस तरह से मैं चाहता हूं वाजपेशी जी इस पर गीर करेंगे क्योंकि हुम सभी इस बात की शपव लेकर बैंडे हैं कि पार्लियामेन्टरी डिमोक्सें को हम निभाषेषे । (क्यकान) हम विश्वास करते हैं कि पूजीपति सपनी मर्जी से नहीं चलने देंगे। भगर पुंजीयति इसे कब्ल करले तो मजदूर वर्ग सी फीसदो विश्वास करके चलेगा लेकिन हमें शासंका है कि पूजीपति वर्ष नहीं चसने वेंगे भीर यह संका सावित हो रही है। इस तह किल के, इस्नानदारी से

समझी है कि हिन्दुस्तान वे शातिपूर्वन क नित हो सकती है भीर शांतिपूर्वन हिन्द-स्तान में पर्जा काव की मिटाया जा सकता है। इसी विश्वास पर हम शबे हैं कि हिन्द्स्तान के बेहनतकम मध्यमवर्ग के लोग मिलकर विका तलकार के, विना बन्छक के हिन्दूस्तान में इनकशाब ना सकते हैं। यह चीख जब भागे बढती है तभी हिम्द्रस्तान मे करोडपतियों ने चंडराकर जनतस्त्र के खारवे भीर चनाव के खाल्मे वा नारा किया है । चौचरी चरणसिंह अब बोलते हैं तो प्राप सभी जानते हैं वे हिंसा का खने क्राम समर्थन करते हैं। प्रथने को जो प्रसिक्ता का प्रजतार कहते ये, जी मृत्र-हडलाल के खिलाफ वे अनकन के खिलाफ के वे ब्राज हिमा का ममबंद कर रहे हैं।

जो कुछ सभी विहार में बाते हो रही है वह देश के प्रसादार प्रीप सरकारी रेजियो ने लिए इस कडा हविकात कर वई हैं, हथा कहा वन गर्द हैं देश में इस बाद को चैसाने से लिए माज यह विद्वार का मानला के बत विहार का बामला नहीं है, बला कथ्य प्रदेश के. परतं उत्तर प्रदेश में भीर फिर सारे देश से चताव प्रवाली को खत्म करके फासिएम नाने की साजिक का यह हिस्सा है एक फोटोस्टैट काफी झानन्द मानी की झावजी इजाजत सै रखना भाहंगा बिस ने दिया है । प्रतेल, 9 शहेल, 24 प्रतेल, को समी मानन्दमाविकों के नाम यह सर्वातर है कि परे विहार में बड़े पैमाने पर इस दिवस की मनामो भीर दक्तरों को बेरी एक अवैल की औ उनके सरकार साहबं है उनकी भूख हकताल

ना एक साल पूरा हो जायेगा इसलिये उस दिन से मुक्त करो। 9 प्राप्तैल का जी दिन है उसको याद रखेंसे माननीय सदस्य, 9 सप्रैल की मक्कं मोर्चा चलाया गया । ग्रगर वाजपेयी जी की मालूम न हो तो मालूम कर लंड उनका जो परिपन है उसकी फोटोस्टैट कार्प। है जोकि 13-3-74 का है भीर 18 की विहार में ग्राग लगाने की घटना हुई है । 16 तारीख की, शायद वाजपेयी जी का पता नहीं यह मैं मानकर चलता हु, वाजपेयी भी भी और गुहा भी भी उस जाल मे फम गए 16 तारीख को । वहा पर बी० के० डी० का कोई सगठन नहीं है लेकिन वे भी पहुंच गए। सिडीकेट के मेहता साहब भी गए। धगर मिश्र जी जाते तो मैं समझता वे विहारी है इमलिए कए। इस तरह से 4 नोग पहच गए 16 तारीच को भीर 13 का परिपन है । मैं भापकी इजाजत ने इसको देविल पर रखना * चाहता हु क्योंकि यह बहुत महत्व-पूर्ण है। इसके भलावा यह जो 16 तारीख को जेल में मुलाकात करने गए, क्या बात हुई जेश वे उसके सम्बन्ध में उस दिन गृह मंत्री जी ने कहा कि पता नहीं है । मैं धाना करता हु सभी भी गृह मन्नी जी बताये नवा बात हुई क्यों कि जेल में कोई प्राइबेट वात नहीं कर मकता, वहा पर प्राफिसर मीजद रहता है । इमलिए नमा उनके पास कोई रिपोर्ट है कि क्या वाले हुई हैं ? में यह भी जानना चाहता हु क्या वाजपेनी की को कोई इजावत की े मुझे सकर है बाजपेयी जी की मुकाकात के लिये इकाजन

The species net having suppo-quently accorded the necessary permission the documents were not treated as laid on the Table

[श्री भोगेन्द्र झा]

नहीं थी, ग्रन्य तीन के लिए थी। वाजपेयी जी की उससे मुलकात हुई जो सी लोगों की हत्याओं का मुजरिम होकर बैठा है, क्या वाजपेयी जी की ग्रानन्द मार्ग में दोस्ती हो गई है या ग्रानन्दमार्ग को ले ग्राये हैं भपने में था स्वयं ग्रानंद मार्ग में चले गए है. वे स्वयं कहेंगे। लेकिन ग्रगर जेल वालों के लिए सहानुभूति हो तो हमारे 600 माथी जेल में बन्द हैं। हम वाजपेयी जी को ग्रभी भी निमन्त्वण देते है। (श्यवधान)

तो मैं इस बात पर जोर देना चाहना ु कि एक नरक जयत्र गण बाब जिनके लिए 51 मंसदस्यों ने श्रद्धा की बात कही थी. मैं समझता हूं उम्म के लिए श्रद्धा का होना कोई बुरी बात नहीं है। हम सब में जो वृद्ध है उन सभी के प्रति हम श्रद्धा भ्रापित करेंगे लेकिन जो राजनीति का मामला है, जो व्यवसां की गाइडेड डिमोर्ज नी को लेकर वे खड़े हुए हैं, जिसके लिए वे खड़े हुए है उसका क्या यह संसद् या संसद् का कोई सदस्य समर्थन क सकता है ? भ्रागर नरता है तो जो कसम ली गई है संविधान के मुताल्लिक उस शपय के खिलाफ वह काम करता है। वह पार्वि बिई न व्यवस्था इस देश की हो, वह व्यवस्था लावू कैसे हो ? जबर्द-स्ती लोगों के अस्तीफे दिलाकर । मैं आपके सामने बात रख रहा हूं कि 14 तारीख को दरमंगा में बादिम हुसेन जो बिहार प्रसेम्बली के एम एल ए हैं, उनके बर पर बार एस एस के 25-30 व्यक्तियों ने हमला किया,

मारपीट की। (क्यबबान) में पूरी जिम्मेदारी के साथ इस बात को कह रहा है। मैं दरमंगा में था। (ध्यक्षधान) एक हिस्से में मुझे मालुम हुआ। तो जब उनके घर पर हमला हुआ, पुलिस को खबर दी गई लेकिन पुलिस ने किसी को गिरफ्तार नहीं किया। क्या बिहार सरकार को शकवा मार गया था? जब झाग लग रही थी बिहार में, 10-12 हजार लोग इकट्टा हुए थे ग्रसेम्बली के सामने उनकी संख्या बहुत नहीं थी। हम समझते है अभी भी दस दिन की तैयारी से जनतन्त्र की रक्षा के लिए पटना में 10 लाख लोग इकट्ठे हो जायेंगे । उन धाग लगाने वालों के खिलाफ जनतन्त्र की रक्षा के लिए, चोरवाजारी भीर मंहगाई के खिलाफ और रोजी रोटी के लिए 10 लाख लोग इकट्टा हो जायेंगे। 25 तारीख को मैं समझता हूं बिहार में लाखों लोग कुच करेंगे, हर जिले में लाखों लोग कुच करेंने, इसमें सी पचास का सवाल नहीं । नेकिन हालत क्या हो रही है ? तीन चार सक्के जाते हैं तो शकसर दफ्तर बन्द करके चना जाता है । सेकिन यह गिरपतार किसको करते हैं ? जो भाग लवाने से रोकता है उसकी । मिविना विश्वविद्यालय यूनियन का सेम्बेटरी बैजनाय चौक्षरी, सी • एम • कालेख की मृनियन का ते कैटरी जिसने पूरी जमात को रोका, न शाम समने दी, न सूट करने दी, न इटें फेंकने थी, विश्वापियों का समृह उसके साव था हो उसकी निरक्तार करके नीसा सें नवस्थन्द कर शिया गया । उससे यहां के एस॰ पी॰ ने कहा तूम भारम से बैठे एही

जेस में । कम्युनिस्ट पार्टी, जिला कौंसिल का मेम्बर झाज भी मीसा में नजरबन्द है। (व्यवधान) दरभगा मे मैं कहता ह उसके पहले एक ईट नहीं फेकी गई। जब लोग निकल रेल मे भाग लगाने के लिए तो हजारों विद्यार्थी खडे हो कि रेल की सम्मति काग्रेस सरकार की सम्पत्ति नहीं है, श्री लितिन नारायण मिश्र की सम्पत्ति नहीं है इसके वदले में हम लोगों को ही किराया चुकाना पडेगा इमलिए इसकी रक्षा उम करेगे। तुम्हे बदला लेना है तो किमो । मनिस्टर के घर पर बदला लो । लेकिन उनको नजरबन्द कर लिया गया । मिथिला टाइम्स के कम्पोजीटर, प्रुफ़ रीडमं को पकड़ कर गिर-पतार कर लिया गया। क्या दरभगा मे जहा कोई भी ऐसा वाकया नही हम्रा, मै जाना चाहता ह कि क्या इनके अफमरो का बडा हिस्सा इस बात के लिए कोशिश नहीं कर रहा था कि यहा आग लगे, क्या वे इस बात में हमदर्दी नही दिखला रहे थे कि यहा धाग लगे भीर बर्वादी हो श्रीर दफ्तर बन्द हो ? मैंने पटना में देखा है तीन चार भ्रमीर घरों के लड़के है मसनद ग्रीर इनलपिलो पर धारम करने वाले वे निकल कर गए तो ग्रफसर ने दफ्तर बन्द कर दिया लेकिन अगर 10-15 या 20 हजार लोग जाते है बात करने के लिए तो उन के पास उसके ने लिए समय नही रहता।

दूसरी तरफ बिहार यूनिवासिटी टीचर्स फेंडरेशन ने प्रस्ताव पारित किया था, विद्यायियों की जो मागे थी उनका समर्थन करते हुए तथा साथ ही जनतन्त्र पर जो चोट है उसका विशेध करते हुए और पार्ल-426 I.S-9

मेन्टरी डिमोकैसी की रक्षा करने के लिए लेकिन इनके माल इंडिया रेडियो ने पटना से जो बाइकास्ट किया उसमे जनतन्त्र बाले भौर रक्षा वाले हिस्से को गायब कर दिया। में यह शाल इंडिया रेडियो की बात कर रहा । बिहार यनिर्वामटी टीचमं फैडरेशन के मेत्रेटरी श्री एम० के० बोस का जो खत है, मे चाहगा ग्राप इजाजन दे उसको मै टेबिल पर रखा में चाहगा म्टेशन डायरेक्टर माल इंडिया रेडियो. पटना के खिलाफ दीक्षित जी कार्यवाही करे। विहार के विश्वविद्यालय टीचर्म का जो सगठन है उसकी भोर से जनतन्त्र की रक्षा की माग की गई, वह ग्रखबारों में नहीं ग्राई तो चुकि करोडपतियों के हाथ में है इसलिए मैं उनकी बात नहीं कर रहा है। लेकिन ग्राल इंडिया रेडियो जो भारत सरकार का है उसके लिए गा। गुजराल साहब का हुनम बा, दीक्षित जी का हुकम या या गफ्र साहब का हुनम था, किसके हुक्म से उसकी काटा गया ? इस पर यह कार्यवाही करें। मै चाहगा इस खत को में टेबिल पर रख द्ताकि इस पर समुचित कार्यवाही हो । (क्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय. जहा पर यह भ्राग लगाने की घटनाए हुई वहा पर खुद यह लोग गये, ला ठया ले ले कर भ्रार० एस० एस० के लोग पहुचे भीर उहोने उपद्रव किये।

भी घटल विहारी वाजपेयी (ग्वालियर) विस्कृत गलत ।

श्री भौतित झा इस पर भी वे गिरक्तार नहीं हुए। श्रगर 20 25 गिरक्तार कर जिये जाते, तो झाति रह जाता। उन को बाद मे छोड़ देते।

भी घटल बिहारी बाजवेथी : मेरा व्यवस्थाका प्रश्न है। यातो बाद में इन के अनवैल आरोपों का खण्डन करने का आप हम को प्रवसर दें या प्रभी बीच में टोका-टोकी कर के जो सच्चाई है, उस की सामने लाने की मैं कोशिश करूं।

DEPUTY-SPEAKER: pary's time is there. When his trun comes, he can have that time.

बी बटल बिहारी बाबवेबी : उसमें नही होगा । उस में हम बारोप नहीं सर्वाएमें । हमारी लड़ाई तो सरकार से हो रही है। यह हम से लड़ रहे हैं। इन से निपटने के लिए हमें प्रलग से टाइम चाहिए भीर उन से निषटने के लिए अलग से टाइम चाहिए।

ची भागेन्द्र का: उपाध्यक्ष महोदय, में यह जानता हूं कि सरकार चोर व्यापारियो के समर्थकों को जेल नही भेजती। मैं जानता ह कि जिन लोगों ने झाग लगाने का प्रयस्न किया, वे सबी बाहर है और जिन्होंने भाग ल्याने को रोका, वे जेल में हैं। बिहार में 690 कम्युनिस्ट अभी जेन में बन्द हैं इसी धान्दोलन के सिलसिले मे। मैं किमान धान्दोलन की बात नहीं कर रहा हूं। धगर गया में 20, 25 को पकड़ लेते भौर पकड़ कर उन को बाद में म्बागत करते, उन को मालाएं पहनाते, तो हमें एतराज न होता, लेकिन जब भीड़ इकट्डी ही गई, ती निर्दोष भोगों पर गोलियां चलाई गई भीर उन की हत्याएं की गई। बहुत से निर्दोष लोग उस में मारे गये। मेरा कथन है कि इन के अफलरों का एक हिस्सा निष्टोंची पर योली इसलिए चलाता है कि लोगों में असन्तोष फैने भीर भनेन्वली की भंग करने

का माधार तैवार हो भीर हिन्द्स्नान से जन-तन्त्र खत्म हो। इसनिए गोलियों से हरवाएं हुई हैं। वे भाग लगाने वाले नहीं है जिम की गीलियों से हत्याएं हुई हैं? वे लूटने वाले और उपद्रव करने वाले नहीं हैं, जिन भी हत्याएं हुई हैं। वे निवींय लोग हैं जिनकी हत्याएं हुई हैं। जो लोग आग लगा रहे हैं, जो लूट-पाट कर रहे हैं। उन्हें संरक्षण मिल रहा है। उपाध्यक्ष महोदय मैं यह कहुंगा कि व्यक्तिगत मिनिस्टर्स के, पहले के भी और घव के भी, भादमी इन साग लगाने वाले गिरोह में हैं। यह पैसा देने हैं भीर यह बात श्रेशी भी चल रही है ।... (व्यववान)....

भी स्वाम नम्बन निमा: (बे सराय) नाम लीजिए।

भी भोगेमा माः यह वेलेंज करेंगे या यह खण्डन करेंगे, तो मैं नाम लूंगा।

उपाध्यक्ष महोदय , ऐसी स्थिति में. मैं यह आनना चाहंगा कि बिहार के अनमत ने क्या इन को इसीलिए चुना था कि भाग लगाने के लिए या सारे कारोबार को उप करने के लिए कुछ लीगों को मौका बो जबकि जाखों लीग चाहाँ रहे हैं कि सरकार की नी सियों में परिवर्तन भाए। सरकारी नीतियों को नही बदला गया ग्रीर नरकार धनर मुनाफाखोरों या जमींदारी के साथ रहेगी, तो सरकार का नी परिवर्तन होगा। प्रवर सरकार यह फैपला कर लेती है कि वह व्यापारियों का माथ देगी, तो उस के लिए भी लीग तैवार हो जाएंगे। भाज जिस तरह सं सरकार का एक बहुन बड़ा अंग , अक्सरों का एक अंग, मिनिस्टरों का एक अंग और भाल इण्डिया रेडियों इन के सहयोग से जिस दरह से घटनाओं को प्रसारित कर रहा है, उस से

एक भयकर हालत पैदा हो गई हैं। बानन्द मार्गी भीर भार० एम० एम० श्री जय प्रकाश का समर्थन पा कर जो हत्याकाड विहार में कर रहे हैं,, वह मारे देश के लिए खतरे की चडी है भीर जनतन्त्र के लिए चुनौती है। बाजपेयी जी के पटना जाने से पहले बर्ले साहब वहा पहुच जाते हैं ? बाजपेयी जी 16 मार्च को गये भीर वे उस से पहले पहच गये। लेकिन इम सरकार के पास ताकत नहीं है, इस को लकवा मार गया है कि वह उन को परसन नान ग्रेटा खंक्लेयर कर है, उस के पास इतनी ताकत नहीं है कि वह उन को देश निकाला कर दे। ऐसी स्थिति में , उपाध्यक्ष महोदय , मैं इस बान की मोर घ्यान दिलाना चाहता हु कि देश में एक बहुत बडी ग्रशान्ति लाने की साजिश है। जनमत के जरिये से देश के करोड़ों किमान, खेत मजदूर, कारखानो के मजदूर, दफ्तरों के वर्मचारी जी कि इस महंगाई से तबाह हैं, वं ज्ञान्ति पूर्ण तरीके में मरकार से लड़ना चाहत हैं। वे उस सरकार की नीति मे परिवर्तन लाना चाहते हैं, जो कि ब्यापारियो , मुनाफा-खारा, बहे जमीदारों भीर करोडपितया से आम्नी कर के आम जनता को मुसीवत मे टाल रही है? इसलिए उन का गुम्मा है। माज चौर व्यापारी, करोडपति सौलहा माने सरकार पर फासिस्ट रूप ने कब्बा करके यह माजिश चल रहे हैं। इसलिए मैं नमश्रना ह कि वाजपेयी जी के लिए यह खुशी की बात नहीं हैं। प्राखिर वे भी इर्ग वीट के बल पर आए हैं, औ पील् मोची के लिए भी खुनी की बाद नहीं होनी चाहिए। क्योंकि बे भी इसी बोट से वहां पर आएं हैं। इसलिए नै कह रहा हू कि हुने इस बात का विश्वास है कि

माज नहीं तो कल . मगर देश में शान्ति रही , देश का बहुमत , देश का लोकमत , श्रम जी वियो का बहुमत कोट के जिर्चे से , ज्ञान्त भान्दोलन के जिर्चे से पूर्वीपतियों की सत्ता को उखाड फे हेगा भीर देश को समाजवाद की भीर ले जाएगा भीर यह काम बिना खून-खरावें के होग, , लेकिन जो लोग भाग से खिलवाड कर रहे हैं, वे यह कहते हैं कि देश को फीज के हवाले कर बा। यह मसानी माहब , जो कि पीलू मोबी साहब के साथी हैं भीर पहले इस पार्टी के अध्यक्त भी थे, इस 'जेड' मेगजीन में लिखते हैं। वे देश को फीज के हवाला कर देना चाहते हैं।

SHRI PILOO MODY (Godhra). On a point of order I think before somebody who is not in the Huose is mentioned there are well-established practices. Nevertheless when somebody who is a leader of our party is mentioned in this flippoint way by somebody who, after reeding the newspapers, does not understand it. I think there is something the Chair should do to protect not only the person who is not here but the reputation of the best party in India.

श्री भोगेन्द्र शा . उपाध्यक्ष महोदय,
मैं यह कह रहा था कि 'बेड' नाम को मैंग जीन
में मनानी माहब ने लिखा है कि देश का फांज के
हवाले कर दिया जाए और ग्राना काम चलाने
के लिए फोब को जा प्रकाश जी जैना या मेरे
जैना मलाहकार चिहर। यह भी राय उन्हाने
बी। इमलिए मैं कहना ह कि जो लोग शाम में खिलवाड कर रहे हैं, वे समज ले कि
देश के अवर्षांगं। कभी हिमा पर उनारू नहीं
हुए। संसार भर में बाप देखें के कभी हिसा
पर नहीं उनरे। बाप देखें कि रूस के जार ने
चुनाव पढ़ित की खल्म कर दिया, ज्यांग-काईश्रीक ने चीन से कभी चुनाव नहीं होने दिया [श्री भीगेन्द्र झा]

भीर भाज वह समुद्र में जन सेवन कर रहे हैं। धगर देश में कोई हिटलर के रास्ते तर चलने हैं, तो समाजवाद की रक्षा के लिए जनतन्त्र की रक्षा के लिए जनतन्त्र की रक्षा के लिए जनता लड़ेगी और हमें तिण्याप है कि अगर वाग्रेम पार्टी में नाकत नहीं होगी, तो आम जनता के जोर से यह पार्टी फिर टूटेंगी और ने लोग चोरबाजारियों को निकाल बाहर करेंगे और देश के सभी देशभवा वे किनी भीर पार्टी के हों, मिल कर जनतन्त्र को सचाएंगे और देश को समाजवाद की ओर ने आएंगे और ये जो करोडपित है, उन की दमड़ी भी जाएगी और और चमडी भी नाएगी।

इसलिए उपाध्यक्ष महोदय, बिहार मे जो घटनाएं घट रही है, मैं ग्राप के जरिये से सदन से और सरकार ने आग्रह करूंगा कि निदोषों का करने माम बन्द हो भीर जो यह गोली चल रही हैं, यह बन्द हो ग्रीर मरकार के भीतर श्रीर बाहर जो लोग साजिश मे लगे हए है, इटेलिजेंम से सरकार को भी माल्म है श्रीर ग्रागर नहीं माल्म है, तो मै खबर देने को तैयार हूं, उन ग्रफसरो के खिलाफ कार्यवाही की जाए भीर वहां पर कुछ केन्द्र के अफसर भेजे जायेजो कि वहा शान्ति कायम रखे। वे लोग वहा पर संविधान का गला घोटना चाहते हैं भीर देश को बर्बाद करना चाहते है। यह चाहते हैं कि श्रगर बिहार में कामयाब हो जाएंगे, तो फिर यु० पी॰ श्रीर मध्य प्रदेश की सोचेगे, लेकिन हम जनमत की रक्षा करेंगे। इसके लिए ्रैंब्ह जरूरी है कि सरकार हिम्मत करे और एक बहुत बड़े पैमाने पर मृनाफाखोरों के खिलाफ श्रमियान चलाए। श्रभी विहार में जो चोर

व्यापारियों ने यह माग लगवाई भीर वहां पर रेलो को चलने नहीं दिया, तें चीं जों की कीमते ड्यांदी हो गई और व्यापारियों ने करोडां रुपया इस में कमा लिया। इसलिए मेरा सझाव है कि वहां पर डी-होडिंग कम्पेन बडे पैमारे पर चले और वह सहयोग गे चने श्रीर जो भूमि-सुधार कानून पास हो गये हैं, पारित हो गये है, उन को सरकार लाग नरे भौर गोली वहां पर न चलाई जाए भौर बी० एस० एफ० को वहां में हटा दिया जाए, तो बिहार के किमान, मजदूर मध्यवर्गी लोग, देश की रक्षा करेगे, जनतन्त्र की रक्षा करेगे श्रीर इस तरह में यह हिसा का जो रास्ता भ्रपनाया हमा है भीर एक मकट वैदा हो गया है उस का ट.चा जा सकता है।

बस यही मुझे आप से निवेदन करना था।

SHRI PILOO MODY: What is all this santimonious humbing about democracy. They do not even have elections in their own party, let alone in the country of their mentors.

SHRI BHOGENDRA JHO: Shri Piloo Mody has no idea about democracy.

SHRI PILOO MODY. You have no idea of elections. You do not have elections in your party, and you are talking about democracy.

MR DEPUTY-SPEAKER: Shri Nawal Kishore Sinha.

Order, please. Now, I have been requested by the Whip of the Congress Party that the Congress Members new please take not more than seven minutes each in order to give chances to as many as possible. (Interruptions).

SHRI NAWAL KISHORE SINHA (Muzaffarpur): I could not follow.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I have been requested by the Whip of your party to allow the Congress Members seven minutes each in order to accommodate the maximum number.

SHRI NAWAL KISHORE SINHA: When I am in the Chair I try to maintain discipline, and therefore, I shall keep that in view.

MR. DEPUTY-SPEAKER · Thank you.

भी नवल किशोर सिंह : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यहां जिस विषय पर हम लोग विचार कर रहे है वह गम्भीर चिता का विषय है ऐसा हमें माय लेना चाहिए और इस में कोई छोटी मोटी बातें लाने या छोटी-मोटी भावनाओं से प्रेरित होने का सवाल नही उठता है। हमारे पूर्व वक्ता श्री भोगेन्द्र का ने अपने भाषण में बार-बाद इस बात पर जोर दिया कि ये लोग जो मीड़ित हुये हैं वें निद्रोंष है। इसमें कोई शक नहीं कि समय की गम्भीरता का उन्होंने भी ख्याल रखा। लेकिन जहां तक इन लोगों को निर्दोष घाषित करने का सवाल है हमें भ्रपने मित्र से यह उम्मीद करूंगा कि जो कुछ झान्दोलन हो रहा है उस प्रान्दोलन की बुनियाद में क्या है उस को जानने की कोशिश करें। इस घान्दोलन का बिहार में नारा क्या हैं ? इस का नारा हैं -पैरा-लाइज दि गवनं मेंट , सरकार के सारे काम काज को बन्द कर दिया जाय। ग्राज बिहार में जो कुछ भी हो रहा है उस का उद्देश्य जो कुछ भी हो लेकिन जो उस उद्देश्य को प्राप्त करने का माध्यम है वह माध्यम है कि सरकार के सारे कार्यक्रमों को बन्द कर दिया लाय। गया के बारे मंजो कुछ भ्राप लोगों से सुना वह उसी

श्रादोलन का एक श्रंग था। 48 घंटे तक जनरल पोस्ट माफिस भीर टेलीफोन एक्सचेंज का घेराव, बार-बार श्रफसरों के मिन्नत श्रीर खुशामद करने के बाद भी घेराव का न हटाया जाना भीर तीन व्यक्तियों के गिरफ्तार होने पर हजारों व्यक्तियों का जमा हो कर गिरफ्नार व्यक्तियों को छुड़ाने की कोशिश करना, ये बात यह बताती हैं कि इस सब का उद्देश्य था सरकारी कामकाज को बन्द करना। ग्रब में एक बात ग्राप से जानना चाहता हू कि सरकारी कामकाज बन्द हो जाय, सदन या सदन का कोई सदस्य चाहे वह इधर का बैठने वाला हो या उधर का बैठने वाला हो, क्या इस बाद का किसी भंश में भी वह समर्थन करता है? मेरा ख्याल है कि चाहे वह इस पक्ष के हों चाहे उस पक्ष के हों, इस की वकालन नहीं कर सकते।

हमारे देश में विद्यायियों का समाज एक बड़ा समाज है भीर नौजवान समाज है। जो लोग इस भादोलन को बढ़ाना चाहते है वह ऐसा कह रहे हैं कि इस भान्दोलन में विद्यार्थी मारे कए, इस भान्दोलन में विद्यायियों के साथ दुर्व्यवहार हुआ। लेकिन जो लोग वहां मारे गए हैं उन में चाहे वह जांच हम लोगों ने कराई हो या सरकार ने कराई हो, दो विद्यार्थी थे।..(ध्यवदान).. वे लोग दावा करते है तो हम मान लेते है लेकिन उन के दावा करने के बाद भी दो ही थे। जो 13 शयख हैं उन में एक भी विद्यार्थी नहीं [भी नक्ल किशोर सिंह]

है। जो 88 गिरफ्तार हुए श्रीर जैसों में हैं उन में एक भी विद्वार्थी नहीं है। तो मैं भाप से यह जानना चाहता हूं कि इस तरह से हमारे देश के नौनिहालों को भड़का कर भीर उन की भाड़ में छिप कर जो लोग भ्रमने स्वार्थ की पूर्ति करना चाहते हैं वह क्या देश की सेवा कर रहे हैं या देश के साथ गहारी कर रहे हैं?

जो कुछ गया मे हुझा उस को देखे। 12 बजे से अफसरो ने मिन्नत भीर खुशामद गुरू की भीर वह खुशामद चलती रही 4 बजे तक । पहली फार्यारग गया मे 4 बजे हुई थी। 4 बजे के बाद जब स्थिति बेकाबू हो गई ता कोई भी व्यक्ति चाहे भोगेन्द्र मा हो या ज्योतिर्मय बसु हो भगर वह सरकार मे हो भौर ऐसी हासत हो तो वह क्या करेंगे वे 4 बजे तक रुकते इस में भी मुझे सन्देह है। मैं भाप से यह भी कहना चाहता हूं कि यह क्यो हो रहा है ? यह हो रहा है इस-लिए कि सोकतन्त्र में हमारे देश में चुनाव हुए हैं। मै नही कहता कि मैं भारत मैं सब से प्रच्छी पार्टी हूं। लेकिन मेरा यह दावा जरूर है भीर सन्त विनोवा जैसे सन्त ने इस बात की पुष्टि की है कि हम भाष सब से भक्छे है। यह उन का स्टेटमेट एक जनह नही वस्तियो बनह का है। श्रव शुनाव में भाप जीवते नही हैं तो यह कौत सा तरीका है चुनाव की हार का बदला लेने का ? इस में काग्रेस जन का तो नुकसान नहीं होता । यह ठीक है कि मुखक्फरपुर में दो एम एव एव को मारने की कोशिश की वह भीर किहार के एक एम भी का चेराव हुन्ना। नेकिन बाप बदबा इस तरह से केना बाहते हैं ? आप फिर सोविए कि क्या कर रहे हैं? भुनाब की हार का बदला लेने का जो तरीका है यह

बड़ा ही नेफीरयत है और यह हमारे लोकतान का नाम कर देगा। इस मे उन का भी नाम होगा, वह भी बजेबे नही।

एक बात में भीर कहना चाहता हूं । इस में कोई शक नहीं कि बिहार में हिसा की रोकने में जयप्रकाश जी का योगदान रहा है । लेकिन जय प्रकाम जी को सोचने की जरूरत है कि वह जो कुछ कर रहे हैं उस का लाभ कौन उठाएगा । क्या उन के पास हेमोकेसी को चलाने के लिए कैडर है ? इस का लाभ फिर कौन लोग उठाएंगे ? उन की जो फिलास्फी श्राफ नान-वायलेंस है भीर जो पार्टिलेस गवर्नमेट की फिलाम्फी है क्या एक भी ब्राइमी विरोधी दल में ऐसा है जो उन के इस ग्रादर्गको ले कर बल सकता है? उन की फिलास्की ग्राफ नान-वायलेंस को ले कर चल सकता है? उन की पार्टीलैस गवर्नमेंट को ले कर चल सकता है? जाज जयप्रकाश बाबू को यह सोचने की जरूरत है कि वह जो कुछ कर रहे हैं उस का साम कीन उठाएगा ?

मै एक बात भीर गृह मन्त्री वीक्षित जी से कहूगा कि बिहार मे 7 लाख टन का रेकरिंग हे फिसिट है माजादी के पहले से। हम ने मनाव बढ़ाया है 50 लाख टन से बढ़ कर 90 लाख टन पर भा गए हैं लेकिन हमारी भावादी भी बढ़ गई है। इस 7 लाख टन की पूर्ति तो ब्रिहार ने करनी ही है। भगर बिहार का साराधी-होकिंग हो जाय तब भी यह 7 लाख टन का हेफिसट तो रहने ही बाला है। इसलिए केन्द्रीय सरकार को इस के ऊपर भारम-निरीक्षण भीर आत्म-पर्श्व का करने की जकरत हैं। जो बार प्लान हुए हमारे देश के उस मे पर कैंपिटा भाउटले बिहार में कितना हुमा?

लोएस्ट इन दि कन्ट्री 99 क्पए। शायद हमारे मुकाबिले बेस्ट बंगाल ही खड़ा हो सकता है जहां पर कैंपिटा घाउटले 73 क्पये है। तो इस बात को भी ध्यान में रखने की जरूरत है। दूसरी बात में घपने मिन्नों से कहना चाहता हूं कि वे लोग चुनाव में घपनी हार का बदला इस तरह से हम से न लें। फिर चुनाव की हीं तैयारी करें घौर बिहार में जो कुछ हो रहा है उस को रोकने में सहयोग दें।

भी भागवत सा भाजाद (भागलपुर) उपाध्यक्ष महोदय, बिहार की स्थिति से हम मब को गहरा दुख ग्रीर क्षीम है। इन का प्रारंभ वहा के विद्यार्थियों ने अपनी मागो को ले कर किया। लेकिन प्रश्न यह है कि इन मागों के नाम पर जो भाज वहा पर भाग, लूट भीर सहार की घटनाए हो रही है उन के लिए अबाबदेह कीन है ? मैं इस बात को पूर्णतया मानता ह कि गगतन्त्र में भ्रपनी मागों के लिए शान्तिपूर्ण प्रदर्शन ग्रीर घरना ये तम म चीने सही है। लेकिन इस की ब्राड ने जो ब्राज बिहार राज्य मे भाग भ्रीर लूट की बडनाएं हो रही है इसके लिए जबाबदेह कीन है। विद्यापियों ने बार बार इस बात के लिए कहा कि इस बाग मीर नूट में उन का हाब नही है। उन के नेतामों ने कहा, उन सब ने यह कहा । विद्यापियों की मांगी का मैं पूर्व समर्थन करना हूं। भगर विद्यार्थी मागते हैं चच्छी शिक्षा पद्धति या विद्यार्थी मांगते हैं पढ़ाई, विद्वार्थी चाहते हैं उन को चीबें कम दामो पर भिले, उन्हें कम बार्च पर पढ़ने की सुविधा दी जाए तो इस में कीन सी विक्कत है ? सगर विद्यार्थी कहते हैं कि हमें स्वस्थ गासन चाहिए तो इस में कीन सी बात गलत हैं लेकित प्रश्व मह है कि इन मागों के लिए

बिहार के विद्यार्थी शाम को प्रदर्शन करते हैं तो उन के पीछे एक हाथ में पैट्रोल और किरासिन का टिन लेकर, एक हाथ में दियासलाई लेकर कीन चलता है? इन विद्यार्थियों को आगे कर के उन के पीछे आग कौन लगाना है? मुख्य प्रज्न तो यह है कि आग कीन लगाना है.....

श्री पीलू मोबी: सी० पी० ग्राई० के लोग।

श्री सागवत सा झाखाद: पीतू मोदी कहते हैं कि ग्राग लगाने वाले ऐसे व्यक्ति हैं जो उग्र-पर्वा पार्टियों के है. प्रतिक्रिशवादी पार्टियों के हैं— उदाहरण स्पष्ट है। ग्रव झगर ग्राप गया की फायरिंग की बात करते हैं तो यह भी पता लगाइये कि गया में टेनिकोन एक्सबेरव को किम ने सुक्सान पहुंचाया....

एक माननीय सदस्य: सरगग्र हियों ने ।

श्री भागवत कामाजाद : सत्यावहियों के नाम पर माग लगाना मीग सत्यावह इस दोनों में फर्क होना है — माननीय मंसद सदस्य इम बात को समझ ले — माग लगाना एक बात है मीर घरना देना दूमरी बात है — माम हमाजा एक बात है मीर घरना देना दूमरी बात है — माम इस इन तमाम बीजों के नाम पर चुनाव में हारी हुई परियां हमारा मुकाबना करती हैं, हमीरा घराव करती है। याद रिवये, हम भी माम का घराव कर सकते है। माम प्राम् माम का घराव कर सकते है। माम प्राम् माम को लोड़ना चाहते हैं तो माम कहा रहेगे? मैं कराई इस बात का विरोध नहीं करना हूं कि इन कांचों के लिए मानत पूर्ण प्रदर्शन किया थाई, लेकिन माम साप कोर्ट बन्द कर के शामन को सवार्य करना बाहते हैं सासन को चवने नहीं

श्री भगवत झा माजद]

देना चाहते हैं तो हम समझने है कि भ्राप जनतन्त्र मे विश्वास नही करते हैं। लेकिन हम जननन्त्र में विश्वास करते है और हम कहते हैं कि हम विद्यार्थियों की मागो का समर्थन करते है। हम इस बात का समर्थन भी करते हैं कि इस वान की जाच कराई जाए कि सर्व लाइट प्रेम किस ने जलाया, सर्व-लाइट प्रेस जलानेवालो की एन्क्वायरी कराई जाए, हम इस बात की जोर दार माग करते हैं उन के सम्पादक ने, प्रदीप के सम्पादक ने. जो बयान दिया है, वह बडा भ्रामक है, कठोर है, बडा भजीबोगरीब है। मैं समझता हु कि काग्रेस पार्टी भीर हम मधी लाग प्रेस की बाजादी में विश्वास करते है और हम बराबर विश्वाम रखेगे, इस में हम उन का ममर्थन करते है। इसलिए हम माग करते है कि सर्व लाइट प्रेस जलाने वाले को पकडा जाए, सजा दी जाए। चगर इस बात में हम पीछे हैं तो हमें सजा दी जाये । लेकिन मैं इस बात को भी नहीं मानता नि बिहार में जो भाग लगाई गई, जो होटल जलाया गया, जो धाफिम जलाया गया, वह विद्यायियों ने किया। वह जनाने वाले भाप थे. जिन्होंने लोगों को भडकाया, जिन्होंने विद्यार्थियों को झाने किया, अब गोलिया चली तो झाप भाग गये और विद्यार्थी मारे गए।

गया के बारे में सभी नवल किशोर जी ने बतलाया कि 8 मारे गए, लेकिन उन में मुशिकिल में एक विद्यार्थी है, एक सम्भवतः हो या न हो, लेकिन ये 6 कौन है ? 13 व्यक्ति घायल हुए, इन में कीन से विद्यार्थी है, एक भी विद्यार्थी नहीं हैं 1 88 गिरफ्तार हुए, इन में कितने विद्यार्थी हैं ? इस लिए मैं साप से कहना चाहता हूं कि श्राप नाम पर न जाइये, मैं भपनी पार्टी की तरफ से कहना चाहता हूं कि हम सब मिन कर इस पर विचार करे। क्या विधान सभा टूट जानी चाहिए, ग्रगर इस को नोड़ दिया जाना चाहिए, तो लोक सभा को भी तोड़ दिया जाना चाहिए तब फिर जब कल चुनाव होगा भीर ग्रगर कही चुनाव मे भाप का सपना सफन हो जाए, भाप जीत जाएं, भाप की सरकार बन जाए, नो फिर हम भी कहेगे कि उस को तोड़ दिया जाए।

इस लिए प्रश्न बड़ा साफ है-प्रश्न सिद्धान्त ना है- जहां हम उन की मागा का समर्थन करते है वहा इन राजनीतिक पार्टियों के दाब-पेच को भी समझते है कि वे इन विद्यार्थियों की शक्ति का उपयोग नहीं , दूरपयोग करना चाहते हैं। यहा बार बार कहा गया है कि केन्द्रीय सरकार ने सी० झार० पी० और पी० एस० एफ० का उपयोग किया, यह इयो करने दिया गया । क्या भाष यह नहीं मानते कि तमिलनाडु मे विपक्ष की सरकार है, पाण्डिचेरी मे कल थी, धगर वहा शासन व्यवस्था भग हो जाए भीर धगर वे बी० एस० एफ० भेजने की महायता मागे तो उन को नदी जाए। क्या माप का सम 'न करेंगे, मैं समझना ह कि आप नहीं करेंगे। इस लिए बिहार मरकार को भी मधिकार था कि ऐसी परिस्थिति में इस फोर्स को बुलाए। लेकिन इस के धारों बढ़ कर में स्वयं कहता ह कि धगर शान्ति धीर व्यवस्था कायम करने वाली इस फोर्स ने कोई दुरुपयोग किया ह नो निष्यय ही गृह मत्री जी सजा दें। मैंने स्वयं भागलपुर महर का उदाहरण रखा है-वता की स्थानीय पुलिस ने वहा के एक नौजवान की, जो अपनी बेटी का आद कर रहा था, भांख फीड़ दी, उसके हाच तोड़ दिए।

लेकिन ऐसे कुछ उदाहरण इस बात का सबून नहीं है कि माग लगाने वाले पर बी ०एम ०एफ ० या सी ० मार ० पी घावा न करे, हमला न करे मैं जोरदार शब्दों में माग करना हू कि ऐसे नत्वों का दृढना से मुकाबला किया जाये क्यों कि इस से माप के गासन के प्रति, इस फार्म के प्रति मादर होगा, वरना इसके प्रति मनादर होगा।

एक सभात नागरिक शाह मन्तूर के घर पर पुलिस ने छापा मारा धौर कहा कि हम कल्प्रिट को खोज रहे हैं। भले सज्जन के घर कल्प्रिट के नाम पर उसके वक्से खोजने लगे—ऐसी बातो की जाच होनी चाहिये! लेकिन जहा तक बुलाने का सवाल है हमे फछा करना चाहिये कि कोई भी सरकार जरूरत पडने पर ऐसी फोर्स को बलाये।

श्राज बिहार में राजनीतिक स्तर पर एक बड़ा कदम काग्रेस ने उठाया है। उन्होंने वहा के मिल्रियों की सख्या 46 से 14 की है, इमिल्रियें की है कि श्राप स्वय कहते हैं कि गाम्पैक्ट सरकार होनी चाहिये, बड़ा मिल्रिम् महत्त नहीं होना चाहिये। मिल्रियों की सख्या मम होनी चाहिये। मैं उम्माद करता हूं कि यह नया मिल्रिम्डल कुछ नये कदम उठायेगा ...

भी स्थामनन्दन निश्व . सुरेश कुमार जी उसमे नहीं हैं।

भी भागमंत सा भागाव . इस नवे मिलमडल को तुरन्त अपने प्रशासन मे सुधार करना चाहिये । वहां के उन अच्छ अधिकारियों को निकाल बाहर करना चाहिये, जन्होंने अपने स्वार्थ के लिये और खाने-पकाने के लिये काम किया है, जहां के डबलफ मेट कनिम्लर, जहां के डिप्टी चेयरमैन, प्लानिय कमीशन, चेयरमैन ने अपने स्वार्थ

के लिये गोइडा समग्र विकास समिति बना दी, वहा के एम॰ पीज को नही पूछा, बहा के एम० एल० एक को नहीं पूछा, वहा के पोलिटिकन पार्टीच को नही पूछा, अपने खाने के लिये सोमायटी रिजस्टर कर ली, इन व्यक्तियों के खिलाफ श्रविलम्ब कार्यवाही की जाय, ये शर्म-शम के लायक है। वहा के मवी मडल को इनको निकाल बाहर करे। वहा के मित्रमङल विद्याधियों के साथ सीधी वात करें, राजनीतिक पाटियों के जरिये नहीं। उनके नेनाओं को छोडे भीर कहे कि तुम्हारी मागो के लिये बात करना चाहते हैं। भीर उनका भविलम्ब मुधार करेगे । वहां का मिलमडल बिहार के जामाखोरी, मुनाफा-खोरों के खिलाफ़ कार्यवाही करे, कीमतो को कम करने के निये, स्वस्य शासन के लिये कार्यवाही करे।

जहां तक कीमता का प्रश्न है—गृह मत्री जी यह काम आपको स्वयं भी करता हागा । केन्द्रीय स्तर पर इसके लिये 10 रुपये से अधिक क नोट्स का डीमोनिटाइ-जेशन कीजिये, यह बहुत आवश्यक हैं। उत्पादन अधिक होने ने कीमने घटेंगी, उत्पादन अधिक होने के लिये देश में शान्ति और व्यवस्था चाहिये। धरना कम हो, हडताले कम हो गेले ठीव में चनायी जाये, इनकी हडताले बन्द हो। ये नमाम बाते राष्ट्रीय स्तर पर बिना किसी पार्टी का बिल्ला लगाये हम सभी को करनी चाहियें। हम विश्वास करते हैं कि बहा की छात्र समर्थ समिति इन बातो पर विचार करेगी और बहा के नये मिलामडम से बात करेगी।

मैंने भापके समक निम्न सुझाव दिये है—

- । स्वस्य शामन, प्रशासन मे परिवर्तन ।
- 2. नोटों का मुद्रीकरण।
- इसानायिक काइम्ब का कोडिफि-केवन किया जाये कि जमाखोरों, मुनाफाखोरों

[की भगवत हा प्राजाद]

के खिलाफ़, जो कीमतें बढ़ा कर परेशानी पैदा करंती हैं, उनके खिलाफ़ कार्यवाही की जा सके।

ज्याण्यक महोवय : ला एण्ड धार्बर का प्रथन एक्सोल्यूट नहीं है । ला एण्ड धार्बर का सीधा सम्बन्ध मनुष्यों के पेट धौर भूख से हैं, धन्न की कमी को पूरा किया जाये । जमाखोरों, मुनाफाखोरों और बाजपेयी जी के मिलों के खिलाफ़ धाना बोला जाये, जो कीमलें बढ़ाते हैं । हमारा विश्वास है कि इन तमाम नीजों को करने के लिये नहां का राजनीतिक नेतृत्व, प्रकासनिक नेतृत्व कुछ काम करके दिखलायेसा, हम उनके साथ है । लेकिन धगर वे इन बानों को नहीं करते हैं तो मैं यह कहूंगा—

मसय शेव है, नहीं भाप का सपराधी है व्याध,

जो तटस्य हैं, जो परम्य हैं, जा पिछे हैं (हाम में दिन लेकर) समय गिनेगा जनका भी भ्रपराध।

SATYENDRA NARAYAN SHRI SINHA (Aurangabad): Mr. Deputy-Speaker, Sir, the discussion on subject of this dimension has arisen because of the point raised by Spri Jotirmoy Bosu the other day about the use of excess force by the BSF in Gaya. The hon. Members who have spoken before me have referred to the explosive situation in Bihar. There is no doubt that. But I was surprised to hear the adverse criticism given to Shri Jayaprakash Narayan from this forum. Unfortunately, he is not here to defend himself. But it is known to all of us that Shri Jayarrakash Warayan is not there to destroy democracy. He has made it very plain that he wants to preserve democracy, to give more content to it. He does not believe only in formal democracy. The organisation that he has set up is for saving democracy. While I am not here to defend him. I must say that but for his leadership Bihar would have been facing a large violent movement today. It is because of his gracious personality and leadership that the movement in Bihar is peaceful and non-violent.

I would like to ask some questions here. Who started the movement on the 16th March in Betiah? started the movement on the March in Patna? It was not the students. The Students' Committee appeared on the scene on the 18th March. Nobody accuses them having resorted to violent activities. It is they who came out with a statement condemning arson and looting done by anti-social elements. The Students Action Committee is a nonpolitical committee. Members owed allegiance to all parties, including the ruling party. Therefore, to characterise such a body as being engineered or supported by any political party would be wrong and it would not be giving a correct picture to the House.

The discussion today is on the points raised by Shri Jyotirmoy Bosu on the happenings in Gaya. What happened in Gaya on the 12th of April? The statement made by the Home Minister has pained me because it is a gross understatement of what happened on the 12th April. He has stated that firing had taken place at three places only. He has mentioned that only eight persons were killed and ten persons injured. This is a gross understatement. Even the subsequent reports that the Home Minuster might have got would confirm this statement or mine that firing was resorted to at five places at least, if not at six places. The fixing never took place near the Telephone Exchange as stated by the Home Minister. The number of persons killed in the firing would be more than 50.

THE MINISTER OF HOME AF-FAIRS (SHRI UMA SHANKAR DIK-SHIT): There were five firings at three places.

SHRI SATYENDRA NARAYAN SINHA: It was never near the Telephone Exchange, as was mentioned by the Home Minister in his statement. I say that the firing took place at five places. My information is from a source which cannot be considered to be hostile to the State Government or the ruling party. The number of persons killed would be more than 50. I have with me a list of at least 17 persons who were killed in the firing.

Sir, if you would permit me, I am prepared to read out the list of the persons who have been killed. One man lost his right hand.

What was the genesis of the trouble? Actually, the tension built up on the 11th April when Sargeant Lal took into custody four ladies and wanted to take them away. He has a very unsavoury reputation in Gaya. People sourrounded him. It was the intervention of the District Magistrate. who arrived on the scene, and on the assurance by D.M. that Sargeant Lal would be withdrawn to the police line, that the people were pacified. On the 12th April what happened was that one Mano; Kumar Bose was arrested along with two ladies. His mother and other persons, including women, prostrated before the joep to prevent the arrested persons being taken away. When the policemen caught hold of those ladies by hand. it infuriated the mob. Although there were women constables, they were not utilized. This infuriated the mob and somebody from the crowd threw a brickbat. That started the trouble. The Home Minister might have received subsequent reports to show that there was no tear gas party. There was only a lathi party. The SDO and DSP came with one havildar and four armed police, with whom they wanted to control the crowd. When they failed in their attempt, they requisitioned the services of the BEF and the CRP.

We are not against the deployment of BSF as such. I have great admiration for them. The BSF has been reared up by a person with imagination, drive, skill and dedication, namely, Shri Rustomji, the Director-General of the BSF. He has stated only recently that they should not use 303 lethal weapons for quelling riots, they should have a humane approach and that they should develop riot guns to deal with the situation so that it may not prove lethal. Shri Jayaprakash Narain has also appreciated this humane approach. What has pained us that the personnel of the BSF should have chased people who were running away, and fired at them. There was curfew for 39 hours continuously without a break to provide cover to the administration to dispose of the dead bodies without being detected.

The District Magistrate says that he did not issue the shot at sight order. At least that is what the Home Minister has said in his statement. There are many persons who have said that they have heard Shri Thakur, the Public Relations Officer, Gaya, announcing from the mike that anybody violating the curiew would be shot dead. The Government has denied it. The District Magistrate later on stated "no, it was meant for those who were indulging in arson and looting."

The hon. Member, Shri Bhagwat Jha-Azad, has given some instances of excesses committed by the BSF. I am not making a statement of my own. I am only relying on the statement of Shri Jai Kumar Palit, President, Town Congress Committee, Gaya, belonging to the ruling party, that the personnel of the BSF chased people away, pursued them, entered even his private apartment, beat the inmates mercilessly, including his uncle. Shri Hazi Presad, a freedom fighter aged 80. Is it something which is normal for the BSF force to do? While I have all admiration for them, they will lose our respect and admiration if they behave like this.

[Shri Sotyendra Narayan Sinha]

Situation in Bihar

(Disc.)

Ť

247

Shri Jai Kumar Palit, Shri Mudrika Singh, ex-MP and former General Secretary of the BPCC and Dr. Jugal Kishore Prasad, MLA, all of the ruling party, have demanded a judicial probe into the excesses committed by the BSF. Shri Mudrika Singh has stated that they were virtually interned in their houses and that they were not allowed to go out. The District Magistrate did not hold even a press conference nor did he issue curfew passes even to MLAs. So they were not allowed to go out and see what was happening. At that time the dead bodies were being disposed of. We are told that they took the dead bodies to five places for burning. One driver of a Government vehicle has stated that he was employed for taking away dead bodies to Dehri-on-Sone for disposal

If there is a yudicial enquiry, all these facts would come out. I would, therefore, say that either the Home Minister should graciously agree to a judical probe or, alternatively, appoint a committee of this House to go into this question. Let some members of the opposition and the ruling party go there and hold an enquiry. Shri Jaiprakash Narayan has appointed a non-official committee, which has its owns status. You cannot say that a non-official committee has no importance. After the Jallianwalla massacre Motilal Nehru headed a nonofficial committee to go into it. Even though Shri Jaiprakash Narayan has appointed a non-official committee so that all the facts might be collected, it would be better if the Government appointed a judicial committee which would command the confidence of the people and let a time limit be fixed for the report. Therefore, my submission is, whatever my hon. friend, Shri Bhogendra Jha, and others have said, the Students' Action Committee has not been inspired by any political party. Secondly, the movement is being conducted on peaceful and nonviolent lines....

13.00 hrs.

SHRI BHOGENDRA JHA: They are demanding the dissolution of the Assembly.

SATYENDRA NARAYAN SHRI SINHA: When they came out with their demands, I suggested in this House, the other day, that their demands should have been discussed with them. But nobody cared to talk to them. The Government was keeping quiet. Now, they have increased their demands.

My hon. friend, Shri Bhagwat Jha Azad, has said that the Ministry has been cut down to 14. I would like consider for himself: Will him to this Ministry deliver the goods? Are they capable of taking the action that he has suggested. No. Then, it is being said that this is the politics of disruption. I say, it is the callous attitude, the cavalier attitude, of the Government which is driving people to despair and desperation. 1 would say, actually, it is not the politics of disruption but it is the politics of despair and desperation.

भी राजेम्ब प्रसाद यादवः (मचेपूरा) : उपाष्यक जी, बिहार में गत महीने में जो बाक्यात हुये और धर्मा जो हो रहे हैं. वे वास्तव में चिन्ताजनक भीर शर्मनाक हैं। हम इस सदन के इस भाग के लोग उस से ज्यादा चितित हैं बजाये उम भाग में लोगों से क्योंकि वे लोग इसक पीछे हैं और वे लोग इन्हें कराने में अपना सहयोग दे रहे हैं।

13.62 hrs.

[SHRI VASANT SAITHE in the Chair]

यह बात सही है कि दुनियां की हालत अनाज के मामले में तथा भीर मामलों में विगड़ गई है भीर उसके साथ साथ भारत शीर विहार की भी। इसी बीच में यू० पी० श्रीर कुछ श्रीर प्रदेशों के चनाव श्राये श्रीर बिरोधी दलों में यह ममुबा बनाया कि वे वहां भपनी सरकार बना लेगे भीर इस बिगडी हुई हालत से नाजायज फायदा उठायेगे. लेकिन बास्तव मे परिणाम दूसरी तरह का निकला । उनके सब ममुबो पर पानी फिर गया। वहा की जनता ने उनको यह बता दिया कि श्रभी उनकी धास्था काग्रेम के ही साय है। इसमे बिगड कर विरोधी पार्टियां ने भीर खास कर हमारे वाजपेशी जी की पार्टी ने यह समक्षा नि उन्हें दूसरा तरीना अपनाना होगा । मझे याद है चन्द एक माननीय सदस्यों ने यह बान इसी सदन में कही थी वि यदि हम वोट में सरकार नहीं बदल सके तो बोट से सरकार को बदलेंगे, (क्रदबधान) . उमी साजिश के पलस्वरूप ग्राज ये वाकयान पटना में देखने में इ. ये है क्यों कि गत महीने 16 तारीख भीर 18 तारीख को जो कुछ बिहार में हथा उसकी जाच पढताल से जो कुछ निकला है, उससे यह साबित हो चुका है कि उसमे किन लोगों का हाथ था। यह बात भी सदन के सामने था चुकी है कि पटना में डिस्टिरवेस होने मे पहले यहा के चन्द एक नेता वहा पर गये थे भौर वहा जाकर उन्होते जैस में धानन्द मृति जी से बाते की धीर उसके बाद ही बिहार मे ये घटनाये घटी। आगे आगे बाजपेयी जी जाते है और पीछे से ये घटनाये बिहार में घटती हैं। जहां वे उधर से भाग भीर ये घटनामें हुई... (ब्यदबान).., वहा जो बात हुई है. उनमे यह देखा गया है कि धानन्द मार्गी लोग उस भीड मे थे। इससे गह साफ जाहिर होगा कि इन उपद्रशों के पीछे कौन है। विरोधी दलो के लोगों ने यहा पर जोरदार शब्दों से कहा कि विद्यायियों का यह एजीटेंगन था भीर उनकी कुछ मांगें थीं। विद्यायियों की जो मांगें हैं, हकीकत यह है, कि ये राजनीतिक मांगे हैं, और यह एक राजनीतिक मांगि हैं।

मभापति जी, हमारे यहा ग्रभी 15 प्रतिशत ही लोग मुश्किल में ऐसे खुशकि इमत है जा कि अपने बच्चों को कालेजा और स्कूलों में पढ़ने के लिये भेज सकते हैं और 85 प्रतिशत भ्रभी भी ऐसे लोग है जो कि गावों से रहते हैं. श्रीर जो अपने बच्चों को कारिजा में पहने नहीं भेज सकते है। उन 15 प्रतिगत म मे 5 प्रतिशत ही ऐसे लोग होने जो कि इन विरोधी दलों के बहकावें मे आ कर इस पडयंत्र मे सहयोग करेंगे। यह भारत की खुशकि उमती है कि बे 85 प्रतिशत लोग ऐमा कोई काम नहीं करते है। जिनको लायन शेयर मिल रहा है, वही ऐसा कर रहे हैं श्रीर 25 वर्ष की घाजादी के बाद भी जिनको कुछ नहीं मिला है, वह गड बड नहीं करते हैं। भीर शान्त है यदि वे बिगड जाये, तो प्राप समझ सकते हैं कि विरोधी दलों का क्या हाल होगा भौर उसके साथ साथ हमारा भी क्या हाल. होगा । में अपने को एक एक्सक्लुड नहीं करता हु । उनके साथ हमारा भी क्या हाल होगा, इसवा द्याप धन्दाजा लगा सकते हैं।. इसलिये में अपील करना चाहगा श्रीर खास कर बाजपेयी जी भीर उनके दल के लोगों रे भीर भाप सभी से कि कम से कम इस भाग को धार्गे न भडकाये जिसमे हम सप्रेलोग मुलमकर मरते वाले हैं।

विं राजेन्द्र प्रसाद मादब

मंत्री जो गया में घटनायें हुई हैं, उसकी यात याई मीर हमारे कुछ बोस्तों ने यह कहा है कि यह स्टूबेट्स एजीटेशन है। में मापको बताऊं कि 8 मृतको में से एक को मार्बेटी-फाई किया गया है कि वह स्टूबेंट है, छ: को कहा गया है कि वे स्टूबेंट स नहीं हैं घौर एक के बारे में मंग्री स्थित सन्वेहजनक है, वह वि स्वर नहीं हो पाबी है। इसी तरह से 88 लोगों को जो गिरफ्तार किया गया है, उनमें एक भी विद्यार्थी नहीं है भौर पालीटिक्स पार्टीच के कार्यकर्ताभों को उसमें भाइबेंटी-फाई किया गया है। इसने साफ जाहिर होता है कि दुबेंटनायें कीन कर रहा है भौर इनमें किन की साजिश हैं भौर किन का हाय है।

नया में जो उपद्रव हुवे, उनमें श्री नवीन कुमार सिन्हा के बारे में बताया गया है कि उनकी गोली से मौत हुई। उनके शरीर से एक पिलेट निकला है। पुलिस की तरफ से 303 के अलावा दूसरी गोली नहीं चली भीर उनके शरीर से पिलैंड का हिस्सा निकसा है। इससे धाप धन्दाजा लगा सकते हैं कि क्या साजिश है। इसी तरह से कहा गया है कि जैन मन्दिर में गोली का दाग है। जब यहां से लोग गयं भीर उस दाग को देखा तो यह पाया गया कि वह एक डेढ़ इन तक छेद है पर उसके अन्दर से कोई गोली नहीं निकली इन सब बातों से जाहिर है कि क्या क्या स जिश की गई और क्या यह कराना चाहते है और किसके इशारे पर ये सारे वाकयान हो रहें हैं।

की ईप्तवर चीचरी (गया) : इसकी ज्यायिक जाच हो . . . (च्यावचान) . . !

श्री राजेन्द्र प्रसाद वादव : एक वास भीर जाहिर होगी । इस बीच जब पटना में ये बाक्यात हुए, तो हमारे एक दोस्त हमारे अजना सहरसा में गये हुये थे । वहां

इन पालिटीकल पार्टीज ने खास कर जम सब पार्टी के लोगों ने किस तरह से हमारे माननीय सदस्य, श्री, चिरंजीत क्षा , जो यहां पर बैंडे . हुए हैं, को जलील किया भीर बाद में जंब इंक्वायरी हुई ती इन के एक एम० एस० सी० एरेस्ट हए और सोशेलिस्ट पार्टी के कई कार्य-कर्ना एरेस्ट हुए है। तो इस से जाहिर होका कि किस तरह से पार्ल।टोकल पार्टी ने यह तय कर लिया है, बास्तव में डेमोकेसी में जिन का विश्वास नही है, कि वे देश की बबाद कर बेंगे। हम उन्हें सागाह नहीं बल्कि चेतावनी देना चाहेगे कि यदि वे ऐसा करते रहेंगे, तो हम को भी बाध्य होकर कुछ करना होगा। यह देश के लिए खतरनाक बात है भीर जनता तो इसके जिए कुछ करेगी ही लेकिन जनता यदि बिगड गई तो जैसा कि मैं ने पहले कहा उन के लिए तो खतरा है ही, हमारे निए भी खनरा होगा। इसलिए मैं उन से भाग्रह करूगा कि वह इस तरह की कोई कार्यवाही न करे जिससे देश को खनरा पहुंचे । यह पार्टी की बात नहीं है, यह देश की बात है। संबैजानिक तरीके से वे धगर कुछ करें , तो उसमें हमें एतराज नहीं है लेकिन उन को हिया का सहारा नहीं लेना चाहिये।

हमारे यहा मथेपुरा में 19 नारी को फायरिंग हुई थीं। मैं वहा पर नया था। स्टूडेट्स की जो डिमाड है, उसका मैं समर्थन करना हूं। हम ने देखा जहां फाइरिंग नहीं होनी चाहिए थीं वहा फाइरिंग हुई। इक्वायरी जो चल रही है, उस से पना चल रहा है कि किस तरह से पोलोटी कल पार्टी क के लाग उस के पीछे थे और किस नरह से वे साजिश कर रहे हैं। ये सब बानें हो रही हैं। जो लोगों की माग है और जो स्थित वहां पर है, उस को देखनें हुए वहां पर अनाव ज्यादा दिया जाए और वहां वो इसरी दिकते हैं, उसको हुर किया जाए और जना कि हम ने पहलें भीं कहा है, कि उस में हम उन से सहबोग करना चाहने हैं। यदि वे जानितपूर्ण डंग के कोई

काम करना चाहते हैं भीर हैगोकेंटिक तरीके से इस तरह की कोई मांग रखते हैं लो हम उनका समर्थन करते हैं चाहे वह विद्यायियों की मांग हो या किसी भीर की मांगें हों, लेकिन हम नहीं चाहते कि वेश वर्बाद हो भीर हम कोई ऐसी चीज नहीं होने देना चाहेंगें भीर जनता भी इसकी वर्बाक नहीं करेगी । यदि यू० पी० के चुनाव के बाद भीर उड़ीका के चुनाव के बाद में जनता के फैसले की नहीं पहचान पारहे हैं। तो कल को उन को दिक्कत होगी भीर देश को दिक्कत होगी । इसकिए मैं कहना चाहता हू कि इस तरह के कामों में वे इडल्ज न करें।

MR. CHAIRMAN: Shri Ishwar Chaudhry.

भी देव्यर चौथरी: सनापति महोदन, लोकतन में सत्पन्नह, प्रदर्शन, भरना जनः-धिकार है।....

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): On a point of order, Sir. This should have been my turn. But I do not mind as we both belong to the Opposition. But I should have been consulted in the matter. My consent should have been taken and then only he should have been called.

MR. CHAIRMAN: This is not your turn. The Chair has the duty to balance the debate and I go by the list before me.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: That list is wrong.

MR. CHAIRMAN: There is no point of order. It is for the Chair to decide whom it should call.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: There is an order of the House.

MR. CHAIRMAN: You may show me the rule.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: There is an order of the House. It has been done all the time like that.

MR. CHAIRMAN: You must regulate yourself according to the rule. You point out to me the rule by which I have to go according to your wish or I have to decide who is to speak. You cannot dictate to me. When I am standing, please sit down.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I am on a point of order.

MR. CHAIRMAN: Please sit down.
You must appreciate that after Mr.
Bhogendra Jha, the Congress turn
came and then Mr. Satyendra Narayan Sinha spoke

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Because I gave my consent to the Deputy Speaker who made an announcement—you may look at the record—

'If others have no objection, may I call Mr. Satyendra Narayan Sinha'. I said, I have no objection. Because it was my turn to be called, I allowed it

MR. CHAIRMAN: You gave precedence to one person.. (Interruptions). Please do not create any disorder. I recognise you as the main Opposition. But where is the humiliation in this?

SHRI NOORUL HUDA (Cachar): There is no humiliation But that is the convention

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI K. RAGHU RAMAIAH): I have to make a small representation to make the position clear. I think it was agreed, and the Deputy Speaker also announced that the Chair would call speakers in the order of two Congress Members and one from the Opposition, and I request you to follow that. Inter se between them it is for you to decide.

MR. CHAIRMAN: I am her, to balance the speeches. Mr. Chaudhry comes from that region. So I thought that he might make some contribution. If you have a quarrel over that, all right, you speak.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I would like to put on record what an irregularity has been committed in this debate.

It is a very important matter. Shri S. M. Banerjee was the Mover, according to the order paper. He got up and spoke just for one minute and the next speaker should be a congressman. Mr S M Banerjee's place was taken by Mr. Bhogendra Jha. I did not object because he comes from Bihar. The Deputy Speaker said I will allow Mr. Satyendra Narayan Sinha to speak. Then I did not mind Now this is the third time. What is this? The Chair thinks anything can be done....

SHRI K. RAGHU RAMAIAH: Sir to put the record straight, call one more person from the congress and then you may call one from the opposition.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: No. no.

MR. CHAIRMAN: Please see Rule 350 It says: 'When a Member rises to speak, his name shall be called by the Speaker. If more members than one rise at the same time, the member whose name is called shall be entitled to speak.' This is the rule which has been given and I follow the rules.

भी ग्राटल विहारी वाकपेयी: ग्राध्यक्ष महोदय, ग्राप नियमों में मत जाइए। हम ज्योनिर्मय बसु साहब से कहेंगे कि यह हमारा उनका ग्रारेजमेंट होता है, मगर सक्या के हिसाब से वह सब से बड़ी पार्टी है, उन्हें मीका मिलना चाहिए, इस में कोई दो राय नहीं है। लेकिन श्रव ईश्वर चौधरी ने शुरू कर दिया है तो उन को बोलने दिया जाये।

SHRI JYOTIRMOY BOSU: It is **

MR. CHAIRMAN: You must withdraw that word. Otherwise I will have to proceed under the rules. You cannot insult the Chair. Direction 115 A says that 'Any one of the following three methods may be adopted by members who desire to notify the Speaker of their intention to take part in a debate or discussion....

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I gave that in writing.

MR. CHAIRMAN: Please wait. Then it says:

- "(a) The names of members who wish to participate in a particular debate or discussion may be supplied to the Speaker by the parliamentary parties or groups.
- (b) A member who prefers to write direct to the Speaker may do so without having to go through the machinery of parliamentary party or group
- (c) A member who may not it is to give his name to the Speaker through his party or to write direct to the Speaker but wishes to adopt the well-known parliamentary practice of catching the Speaker's eye may stand in his seat whenever he wishes to take part in a debate."

(Interruptions) Please listen to the whole thing. Then it says:

"The Speaker shall not be bound by the lists or order in which names have been given by parties or groups or individuals directly. The lists shall be for his guidance only

^{**}Expunged as ordered by the Chair.

and it shall always be open to him to make changes whenever necessary in order that the debates are regulated in accordance with the general principles laid down by the Speaker from time to time."

Therefore, I was perfectly within my right to call Shri Ishwar Chaudhry.

The use of the word spoken by Shri Jyotirmoy Bosu against the Chair is irregular. I ask him to withdraw that. (Interruptions) ' have already pointed out to you Direction 115A of the Speaker. I think the order in the House can be maintained only if I go according to the vules. If I go beyond the rules, you have every right to question. But, as long as I go according to the rules, you must cooperate with me to see that the order in the House is maintained. This is my request to you all. I do not understand how Shri Bosu made this uncharitable remark against Chair. As long as I was within the rules, will it be all right to allow this remark to remain on record? This is for the House to decide. Otherwise it is impossible to function.

(Interruptions)

SHRI BHOGENDRA JHA: Mr. Chairman, Sir, will you kindly permit me to make my submission?

MR CHAIRMAN: On what? Is it a point or order? I must know whether we should go according to the rules or not. Do you want me to regulate the proceedings under the rules or not?

SHRI BHOGENDRA JHA: Sir, according to the rules quoted by you, you are right. And what Shri Bosu said was this. His Party being the next majority party, he should have been give i precedence over the other parties. From that point of view I

think he is right. Because you have called Shri Chaudhry and you have permitted him, you may ask him to speak.

MR. CHAIRMAN: Have you finished?

SHRI BHOGENDRA JHA: In regard to the word uttered by Shri Bosu, if you deem fit, that can be expunged.

SHRI S. M. BANERJEE: I want only half a minute. My name was mentioned properly and it was in the list. I have asked Shri Jhn to speak.

MR. CHAIRMAN: Mr Guha, are you making a submission or speech?

SHRI SAMAR GUHA: I am making my submission. As per the rule read out by you, you are within your rights to regulate the business of the House. Anyway, the word ** is a very uncharitable remark Except on rare occasions only, generally, it has been the convention that, according to the party position, you ask the speakers to speak. I think the matter should end there and Shri Chaudhry may be allowed to speak.

MR. CHAIRMAN: I think the matter can be settled here. I believe that Shri Bosu agrees with me that Shri Chaudhry may now speak. Now, will you withdraw the remarks made by you against the Chair?

I think that remark will have to be expunged.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I rise on a piont of order Under what rules do you expunge it? You kindly read out the rule.

MR. CHAIRMAN: I shall show you the rule. The remark made by you is undignified.

^{**}Expunged as ordered by the Chair.

श्री डी॰ एन॰ तिवारी (गोपालगंश):
समापति महोत्य, 15 मिनट टाइम वरवाद
हो गया है, यह टाइम प्रगेजीशन में काटा
जाना चाहिये, हम लाय शान्ति में बैंडे रहें,
लेकिन उन्होंने इम टाइम को बरबाद किया
इमलिए यह समन उन के समय में से काटा
जाना चाहिये।

SHRI JYOTIRMOY BOSU: May I know the rule?

MR. CHAIRMAN: It is rule 380.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: You may ask Shri Chaudhry to continue.

MR. CHAIRMAN: I do not think that I yield to you. I have done it under the rules.

SHRI P. M. MEHTA (Bhavnagar).
On a point of order.

MR. CHAIRMAN: What is your point of order, Mr. Mehta?

SHRI P. M. MEHTA: Sir, you had been pleased to direct that the words **should be expunged. My point of order is, are those words unparliamentary, defamatory or derogatory to anybody. He expressed an opinion You cannot expunge anything which is not unparliamentary, derogratiny or defamatory

MR CHAIRMAN. Rule 380 says:

"If the Speaker is of opinion that words have been used in debate which are defamatory or indecent or unparliamentary or undignified, he may, in his discretion, order that such words be expunged from the proceedings of the House."

This remark against the Chair is an undignified remark and therefore it is expunsed.

(Interruptions)

SHRI PILOO MODY: Is it your contention that if the Chair ** it is permissible?

MR CHAIRMAN: That is hypothetical and I can not give any opinion on your hypothetical remark.

SHRI PILOO MODY. Sir, once the Chair arbitrarily puts things out of the record, entire passages of debates concerning allegations against the Government can be removed in the same manner. There will be no end to it. Therefore, I recommend to you, if Parliamentary democracy is dear to your heart suffer the insult rather than ruin the procedure.

MR CHAIRMAN: Simultaneously with this, Mr. Mody, you will appreciate that unless we agree to honour the Chair which has to regulate the proceedings—in its best wisdom and according to the rules—and unless this cooperation is given it would be impossible to regulate the oroccedings of the House and the very basis of the parlimentary system would be threatened. I do not say I have got all the experience and wisdom of the other Members. But I am doing my best. You must cooperate with me to enable me to regulate the proceedings.

सी ईव्यर चौचरी (गग): समापति
महोय लोकतन्त में देश की जनात को
शान्तिपूर्ण देग में प्रदर्शन भीर मन्याग्रह करने
का श्रीध्यार है और इसी श्रीध्यार को लेकर
सम्पूर्ण बिहार में छात्र सचर्ष मिनित दारा
भ्रष्टाचार, धूसखोरी, मखसरी, मंहराई,
शिक्षा में सुधार, भादि मामलो को लेकर यह
शान्तिपूर्ण प्रदर्शन चल रहा था। इसी

^{**} Expunged as ordered by the Chair.

वरमियान नया में ता० ६ को मान्तिपूर्ण धरना पोस्ट-माफिस, स्टेट बैंक मौर रेलवे को छोड़कर बाकी सारे सरकारी प्रतिष्ठानो पर मारम्भ किया गया था। यह प्रदर्शन महिलामो, बच्चो और विद्यायियो द्वारा शुक्क किया गया था। मह प्रदर्शन ता० 9 भीर 10 को भी शान्तिपूर्ण रहा, ता० 11 को साजेट मेजर लान जो गया के नागमणि भपने कुकर्मों के लिए प्रसिद्ध हैं, उन्होंने एक महिला सत्यग्रह। के पास जा कर उम के सीने के पास हाथ लगा कर उस को एरेस्ट करने का प्रयास किया।

उनके कुकर्म देखकर मारे प्रदर्शनकारियो मे रोष भ्रा गया किन्तु वातावरण शात रहा। उस महिला को एरेस्ट करने में वह मफल नहीं हो सके और वामना के वशीमन मि० लाल वापिम लीट गए। 12 तारीख को 12 बने दिन मे श्रीमान् एस हिं। भी०, सदर भीर उन के साथ में कुछ भीर लाठीधारी भादमी आये, बहा पर, भीर स्पष्टत सारा काम ठप्प पड गया था इसमे कोई हो मत नहीं परन्तु प्रदर्शन बिल्कुल शन्तिपूर्ण या जिसमे महिलाये और बच्चे थे। एम० डी० मा० क आने के बाद उन्होंने एक मजमदार बोम नामक विद्यार्थी को भ्रोग्स्ट करने का प्रयास किया । यह देखकर मारे विद्यार्थी भीर महिलाये मा गए भीर बहाकि लोकतन्त्र मे हम यह नहीं चलने हेंगे। यह कम जारी रहा। फिर पता नहीं एसं की प्राठ न मन में हिंसा का रूप दने की इच्छा थी कि उन्होंने धन्तोगत्वा धपने सारे नाठीधारिया का यह आदेश दे दिया कि लाठी चलाग्री। नतीजा यह हुआ कि उन महिलाओं बच्चां, विद्यापिया भीर साथ साथ नागरिका पर अनिगनत ल ठिया बरमाई गयी । परिणाम-स्बरूप लाठियों की मार के भय से, इस इर में कि हम मार खा जायेंगे या फिर झपने को बचाने की सावना से उन्होंने पथराव किया। पगराब में सरकारी गृहें भी हो सकते हैं। यथराव प्रदर्शनकारी नहीं कर सके । मेरा

यह अनुमान और धारणा है कि प्रवर्शनकारी अपने बचाव में कुछ नहीं कर सके क्योंकि वे निहत्ये थे । वितना उनको पीटा गया श्राप भन्दाजा लगा सकते है। इन सारी वातो के बाबजद 4 वजे के लगभग जिलाधीश महोदय ने प्रादेश दिया कि गोली मार बो । गोली का ब्रादेण होने के साथ में कें पी० रोड, र्जन मादर लिइरिया मराय ग्रादि स्थानो पर गोली की बछार हो गई। जलियावाला बाग का बाह बैभाखी के दिन हथा था लेकिन वहा पर उसके एक दिन पूर्व 12 नारीख को जिल्यावाला बाग के काह की रचना हो गई। जिल्यावाला बाग की रचना डायर ने की थी भौर यहा पर जिलाधीश महोदय डायर की उपाधि से धपने को बचा नही सकते । देखते देखते बहा पर करीब 70 लागे पट गयी और बो सौ से अधिक प्रदर्शनकारी जिनमे निरीह बच्चे और महिलाये थी, चोट खा गये। वहा पर दो मी राउन्ड गोलिया चली, साठ गऊड श्रश्र गैस फेकी गई और अनेको बार लाठी चार्च हथा। भाज भाष जैन मन्दिर भीर उन गलियों मे जा कर देखें जहा पर बम बम कर लोगों को गोली से मारा गया । यह सचना देने के बाद कि गोली मार बो, फिर क्या या गोलियां बलने लगी लेकिन यह मरकारी ग्रिशिकारी अपने स्टेटमेट में बहते हैं कि केवल 8 मरे हैं। मैं इस बान की चनानी देना ह कि धाप इस बात की जाच कराये, ग्रगर २० से ग्रायिक व्यक्ति न मरहाता मैं दावे के साथ कहता ह लाक सभा भी मदस्यता मैं स्वीकार नहीं करूबा। मैं भाप को इस बात की चतौती दे रहा ह श्राप इमकी जाच कराये । मैं उस स्थान का वर्णन कर रहा ह जहा पर

सभाषति महोदय क्या ग्राप ग्रपने दलकासाराटाइक लेने जारहे हैं ?

भी **ईश्वर चीधरी** वाजपेयी जी भी बोसेंगे । सभावति महोबय : सात मिनट झापके पक्ष के लिए हैं और मात मिनट तो प्राय आपने ही ले लिए हैं।

भी ईश्वर चौधरी: मैं समाप्त कर रहा हूं।

चीक का वह स्थान जहा राजाराम स्त्रणंकार की दुकान है वहा पुलिस ने अन्दर षुस कर गोलिया चलाई भीर उम द्कान में राम खिलावन स्वर्णकार भीर मुरेश राम को मारा गया। इतना ही नहीं, इतने लोगों को मौत के घाट उतारने के बाद पता नहीं चला उनकी लाणे कहा गयी। प्रगर लाशों का कुछ पता है तो माई० डी० मो० हास्पिटल, कालरा हास्पिटल और पूलिस लाइन ब्रादि स्वानों पर पता नहीं लाशें क्या हुई। मैं उन स्थानों को देख कर आया ह, गया से बोध गगा पूल न० 18 वहा पर लाशों को पेट्रोल भीर लकडी के नीचे जलाया गया है। मैं सरकार से माग करता हु भीर चुनौती देता हु भगर मेरी सारी बातें मूठ है, महिलामा बच्चों को न मारा गया हो तो आप इन सारी बातों की न्यायिक जाच करवायें, भगर यह भनत्य माबित हो गया तो कम से कम मैं इस बात का भरोसा रखता ह कि मैं लोकसभा की सदस्यता ने भवना त्याग-पत्न दे बुंगा ।

एक बात भीर कहूगा कि जब बिहार जल रहा था तो बिहार के मारे मंत्री यहा पर गुणा जोड भीर घटाने में व्यस्त थे, भपने स्वार्थ में फमें हुए थे। मेरी भ्राप में मांग है कि भ्राप इन मारे तथ्यों की न्यायिक जाच करवाये।

SHRI JYOTIRMOY BOSU: This is a police raj where we are living today. It has been very rightly pointed out by no less a paper than The Free Press Journal, an ardent supporter of the Government; in a caption:

"More people are believed to have died in police firings all over the country in the 26 years since independence than in all the two centuries of alien rule? What has made the policeman in India so much despassed by the public whom the seeks to serve?"

This is the context in which we riseto speak, today.

Today I was surprised to read apress clipping of 21 March 1974 which says that they have formed a Cabinet Panel on the War Council pattern....

AN HON. MEMBER: Where?

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Here. This is to fight the starving millions of the country, to let loose the blood-hounds to suck their blood and get at their throat. A Cabinet Panel on the War Council Pattern! 'An Inner Cabinet to be charged with the integrated responsibility for the whole range of government policies is being suggested here to deal with the crisis that has gripped the country'. This is for what? To let the blood-hounds loose and suck the blood out of the starving millions of the country.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA-No, no. This is Shrimati Indira Gandhi's war on corruption.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Then let her threat herself.

This is amply demonstrated by figures. In 1950 the Central Police budget was Rs. 3 crores. In 1973, it is Rs. 166 crores. The State police budget in 1950 for all the States it India was Rs. 51.78 crores. In 1973, it is Rs. 312.93 crores.

This is democracy and socialism, Mr Congressman around us here which you have brought to this country! You are living surrounded by blood-hounds whom you let loose on the people who ask for the minimum requirements for human living.

SHRI M. RAM GOPAL REDDY (Nizamabad): How many people have you murdered in Bengal?

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Keep quiet.

In Gujarat-I am sorry I angered you; but I have reasons for it-around 140 people were shot dead. In Bihar also, they want to be ruthless and make it a battlefield. On the one side, you are armed to the teeth; we know the weapons the BSF and CRP carry are almost like those of infantry battalions. It is only for tackling unarmed civilians on the other side. You are on the one side armed to the teeth; on the other side are the starving population, millions of people confronting you. This is the implementation of Shrimati Indira Gandhi's garibi hatao programme.

What is happening? The people are only demanding implementation of the garibi hatao slogan on which votes were taken from them by Shrimati Indira Gandhi. They are struggling for survival, for food and against high prices, against blackmarketeers and hoarders, kulaks and corrupt practices.

One student came and saw me the other day. He asked: what will hap-pen in this country? The Bihar Education Minister asked the college exaauthority to give 15 grace mining marks to his son so that he could pass. Naturally he is to be taken as Minister. Mr. Lalit Narayan may help him. He must be made a Minister! So, 15 grace marks. The demand was everybody has to be given that mark. Otherwise. there would be trouble, and that is what has happened. I say that the demands of the youth and the students are more than justified, and therefore. they must be accepted.

Then, I would like to quote from the Far Eastern Economic Review, a very well known paper from Hong Kong. It says:

"The student violence in Gujarat and Bihar, says officials, was fanned

by vested interests and those who do not want democracy. But the truth is that life has become unbearable for the vast majority of the people, while a few thousand wallow in luxury, unlimited corruption and power."

For example, Shri L. N. Mishra.

"More than 100 lives were lost in the two States after battles with the police....'

It is a scathing attack on this Government.

Then, I wish to quote the views of a former Inspector-General of Police. I do not like to quote in fact, but then, even a former diehard police officer like him says:

"Speaking gently and yet delivering hard punches, Mr. Mithilesh Kumar Sinha, who retired rearly 15 years ago as Inspector-General of Police, said: If you can't give the people food, there is bound to be a revolution.....Nearly two months ago I wrote to the Chief Secretary that your distribution system is so rotten that I am surprised there is no uprising. I had told him that the situation was so fraught with danger that Bihar could go the Gujarat way...."

It is not from the RSS or Anand Marg nor from the CIA. It is from no less a person than a retired Inspector-General of Police.

What is happening? Instead of registering the protests, bullets have been showered. Shri Jaiprakash Narayan, with whom we differ on many things—my party differs—and we do not agree with many things that be says, but here we congratulate him for coming up to organise the masses against this government of kulaks, thieves and butchers. He has successfully done it.

Another thirg is this. I am glad you are sp'ling. I got a very shocking news. The Government of India'

[Shri Jyotirmoy Bosu]

have considered Bihar to be their immediate battle-field against the Opposition. The Centre is to meet the Opposition's offensive. Bihar is regarded as a test case. The Centre regards Bihar as the scene for the final bid to meet the Opposition offensive. It does not see the Bihar case as a State problem but as one which has all-India implications for the Congress and the Government.

My memory is not quite short. In 1942, in the Quit India movement, though our party had our own stand and we did not approve of certain things, we know that Bihar's sacrifices, Bihar's contribution was about the highest in the country. Do not forget that you will not be able to tackle Bihar in this manner. The only way is to face them, meet their demand, and give up your association with the kulaks, thieves and reactionaries.

Then, about the shoot at sight order. I was surprised. Only the other day, this Home Minister, Shri Uma Shankar Dikshit, piousely-dressed person, had apologised before the House for telling a thing which I would like to say, a lie,—but it is unparliamentary—and so I would say it was an unmixed untruth. What has happened again? He has made a statement about Gaya wherein he has said:

"The State Government have intimated that no shoot at sight order was given at Gaya and that all the three firings took place under orders of the magistrates on the spot."

Of course the whole statement is a monument of falsehood. I shall come to that slowly. The shoot at sight order in West Bengal—have experienced it. In British days when there was alien rule it was mandatory to hold an enquiry after each and every police firing but under Mrs. Gandhi's orders that was done away with in West Bengal. I have with me enough correspondence with the Prime Minister on this matter and I can exhibit it

before the House. It is being done daily. In the speeches of Mr. Uma Shankar Dixit, scruples are not to be seen, morals are done away with and lying also is not punishable. They have discovered that....(Interruptions).

MR. CHAIRMAN: According to the Business Advisory Committee, your time is 9 minutes.

SHRI JYOTIRMOY BOSU; I know that Mr. Bhogendra Jha whose party has a lower strength was given 25 minutes.

MR. CHAIRMAN: The C. P. I. had 20 minutes. I am saying from the paper given to me. He moved the motion on behalf of Mr. Banerjee. He took 20 minutes.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I shall take a little time. Here is an item in Hindustan Times, front page story: shoot at sight order in Patna following day long....

I shall come to the main point. take the entire responsibility to prove that Mr. Uma Shankar Dikshit has deliberately told an untruth in this House. Shoot at sight orders were given in Bihar, in Gaya. I take the responsibility. You are an upholder of traditions here. Let Mr. Uma Shankar Dikshit face it if he is worth his salt. According to the Times of India dated 14th April, 1974, "the Border Security Force patrolling the streets has been ordered to shoot at sight those violating the curfew and indulging in violence". Secondly, the Times of India on 16th April, 1974, says: "The District Magistrate Confirmed that he had issued shoot at sight order on April 14. against curfew violators, etc." Then I come to the real thing, the PTI creed: it starts "Del 76 gen-curfew". It goes on to say:

"Mr. Lal confirmed that he had issued a shoot-at-sight certar on April 12 against curiew violators indulg-

ing in violent activities like loot, arson, etc. He said the order had also been announced through loudspeakers on mobile vans..."

On April 13, PTI had put out a story from Gaya about the order to shoot at sight violators of curfew indulging in violent activities like loot, arson, etc. On April 14, the UNI had put out a story from Patna, quoting unidentified 'official sources', denying any such order. Then again on April 15. the P.T.I. confirms that when the district magistrate was asked about it, he confirmed the order. The PTI takes the responsibility. Either the Home Minister is misleading the House or the PTI is doing so. Let there be a probe. If the Minister has any sense of self-respect he should come for a probe and establish once for all that in this House lying cannot be allowed. I can tell you that this Home Minister will be required to go if he conducts a probe. It shows how muschievous they are. On 13, April around 4.45 p.m. the Government PRO Mr. Thakur announced that those who violated the orders would be bayoneted and shot. He has denied it but the denial has no basis because not less than three Congress legislators heard with their own oars sitting in the first class in the refreshment room in the first floor in Gaya station.. (Interruptions) a sitting MLA of Gaya, sitting M. P. of this House from Gaya and an ex-MP ... (Interruptions) Mr. Sukhdev. These people heard with their own ears what Mr Thakur was announcing with a microphone and an amplifier and he was announcing that those who were seen in the town breaking the curfew will be bayoneted. They are all preaching non-violence. Have you seen beyoneting? I have seen. You do not know.

Sir, we have Ananda Marg. RSS and CIA. Who had been their protector? Who had been their collaborator? It is all the administration, persons sitting in the official gallery, administrators and policemen. They are hand in gloves with these people and they are

protected. Whenever something happens.... (Interruptions).

I know of the recent dialogue of Mr. Naik in Bombay with the leader of that party in Bombay. We know what goes on. We know Mrs. Gandhi is close to all these forces. We know all that.

The question is, in Gaya, it all started with molestation of a lady by a policeman, by a sergeant. Sir, do you know, even Professors have been arrested. When a deputation of Picfessors went to meet the District Magistrate, it was of no use. Prof. J. C. Jha-he contested the last electionsof Gaya College was suddenly arrested Students to All India Students Federation have been arrested. The question is, this firing had taken place in five places between 1 and 3 PM on 12th April. Scores had died and dead bodies have been given a mass burial and burning. Police have burnt the dead bodies. The Bihar Military Police refused to fire. That is one good thing.

Firing had taken place in Chattaki Masjid, Clock Tower, near Kotwali, near market and at Jain Mandir. Youth aged between 8 and 12 years have been found dead. The pretext was, there was loot. The Police went to a place called Jain Mardir and started smashing glasspanes of houses to prove that there was violence, and therefore, firing had been resorted to. In a hospital, 13 dead bodies were seen. The Border Security Force sealed the hospital, the largest hospital Sir, Curfew orders were given hours late and when the curiew lapsed, that was not intimated.

I would say, they cannot see the writing on the wall. There is no Government functioning in Bihar. All of them are fiddling in Delhi and the head man is sitting here. Sir, many congressmen have unequivocally condemned this. But, most of the corrupt Ministers like Shri Daroga Rsi and others are still going strong. The

[Shri Jyotirmoy Bosu]

funniest thing is, this gentleman, Shri Jagjivan Ram, whose son has been named as a Cabinet Minister, neither he knows about it nor his father knows about it.

Therefore, I demand immediate dissolution of the Assembly and you should seek fresh mandate from the people if you are worth your salt. You had to lick the dust. Here also, the same thing, unless you do it.

भी संकर बवाल सिंह (कोतरा) : सभापति जी, छात्र झान्होलन या युवा-झाक्रोश जिस की चपेट में बहुत सारी बातें कही गयीं हैं जिसकी हवा गुजरात से शुरू हुई और बिहार में भभी तक वह भाग लगी हुई है उस संबंध में बहुत कुछ कहा गया है। मैं यह कहना चाहता हूं कि जहां तक प्रष्टाचार के खिलाफ बात है हमारी नेता प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने युवकों की सभाषों में बार-बार कहा है, यवक काग्रेम की समाधों में कहा है कि युवको को ग्रामें बढ़कर भ्रष्टाचार के जिलाफ बाबाज उठानी चाहिए भीर जहां तक युवा भाकोश की बात है, छालों के भ्रष्टाचार के खिलाफ भागे बढ़ने की बात है बंगाल भीर केरल ग्रांदि बहुत सी जबही में यवक-काग्रेस ने पावाच उठाई थी और प्राप्ते मा कर प्रव्याचार को बत्भ करने का काम किया था । लेकिन युवा झाकाश और झान्होलन के नाम पर जो हिमात्मक घटनाएं भड़काई जाती हैं भीर युवकों को गुमराह किया जाता है यह कोई अच्छी बात नहीं है। देश को इस तरह से विषटन के मार्ग पर लाया जा रहा है।

बिहार की घटनाएं यह सही हैं कि 16 मार्च से मुक्त होती हैं जब बेतिया में आन्बोलन हुआ, गोलीकाड हुआ और लोग मारे गये। 16 के बाद 18 तारीख को पटना में जो कुछ भी हुआ उस संबंध में भी मैं बहुत नहीं कहना बाहता इनलिए कि पूरा देश जानता है कि क्या हुआ। हां, एक बात मैं जरूर कहना

चाहता हं कि 16 को जब बेतिया में गोलीकांड हबा था भीर 18 को जब पटना में गोलीकांड हमा या माग लगी उस के दरमियान मटल बिहारी जी भीर एक दूसरे नेता पटना जरूर गए थे, यह मैंने भखबारों में पढा था। मैं भीर कुछ नही कह रहा हु। मैं यह नही कह रहा हं कि उन्होंने झाग लगा बी । यह मैं कैसे कह सकता हु ? लेकिन मैं यह जरूर कहता हं कि वह बेचारे वहा गए थे भीर ग्रखवारों में यह बात अ ई थी । यही मे शुरूआत नहीं होती है। 21 जनवरी को बिहार बन्द का एक नारा दिया भ्रपोजीशन पार्टीच ने । 21 जनवरी के दिन कही कुछ नही हुआ। मेरे क्षेत्र कोडरमा मे भीड ने क्या किया कि रेलबे स्टेशन पर शाक्रमण कर दिया. गोली चली. दो धादमी मारे गए। शुरुमात वहां से हुई। बड़े योजना-बद तरीके से चला था रहा है।

12 अप्रैल को गया मे जो घटनाएं हुईं उनमें ये कितने बोषी हैं, मैने उम दिन कहा वा जब आदरणीय वाजपेयी जी बड़े शुंकला कर खड़े हो गये थे, लेकिन वह कोई बे-बुनियाद बात में ने नहीं कही थीं । 12 अप्रैल को जो कुछ गया में हुआ उस की नीव पिछले 17 मार्च को गया में डाली गई थीं । 17 मार्च को गया में जनसंघ ने यह कहा था अपनी एक मीटिंग में जनसंघ ने यह कहा था अपनी एक मीटिंग में जनसंघ ने यह कहा था अपनी एक मीटिंग में जनसंघ हैं कि दिखन ने कन अखबार में 18 तारीख को प्रकाशित हुआ था और इनी में यह भी लिखा हुआ है कि :

The concluding function was also attended by Shri Atal Behari Vajpayee.

यह 17 तारी को हुआ था। यह मैं इसिलए कह रहा हूं कि मैं ने बे-बुनियाद बात नहीं कहीं थी भीर जब कभी इस तरह के रेजोल्यूमन पास किए गये, घटैक हुए या धान्होलन किए गए तो उस का जिकार किस को बनाया गया? केन्द्रीय कार्यालयों को, पौस्ट-धाफिसेख को, रेसके स्टेगंस को भीर टेलीफोन एक्सचेंब को। वे बीजे किस के लिए हैं? ये जनता के लिए हैं। उन में धान लगती है तो किस का बर जलता है? जनता का बर जलता है। बराजकता फैलती है तो उस से किस को नुकसान पहुंचता है? जनता को नुकसान पहुंचता है। लेकिन बहुत से ऐसे दल हैं जो बाग लगा कर हाथ सैंकने में मजा लेते है। यह जनतंत्र का बर्ग नहीं है।

मैंने जैसा भाप में निवेदन किया गया 12 मन्नेल को जो घटनाएं हुई उस से हर व्यक्ति दुखी है। गया एक ऐसी जगह है जहा की घरती पर बाजसे हजारों साल पहले भगवान गौतम बद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई। गया एक ऐसा स्थान है कि जहां भगवान विष्णु का मन्दिर है भौर जहा लाखो लोग प्रति वर्ष दर्शन करने जाते हैं। वह एक ऐसी जगह है जहां भन्त:सलिला फल्गू प्रवाहित है। हर व्यक्ति को वह शांति का पाठ पढ़ाता है और उस गया में अशाति का पाठ पढाने की कोशिक किस ने की ? यह मैं नहीं कहना चाहता हं. यह इंडियन नेशन अखबार फहता है। जहां तक गया की घटनाओं का जिक है ठीक ही इसरे सावियों ने कोट किया है, गबा काग्रेस कमेटी के श्रध्यक्ष भी जयकुमार पालित ने वह मांग की है कि वहां जो कुछ भी हुमा उस में कुछ पदाधिकारिया, घधिकारियों भीर पुलिस का भी बहुत बड़ा हाथ है भीर उन्होंने न्यायिक जाब की माम की है। बहां के एम० एल० ए० ने भी कहा है कि सारे मामले की न्यायिक जांच होनी चाहिए और मैं भी यह मांग करता हं कि न्यायिक जाब होनी बाहिए जिस से बहुत से लोगों के मुखड़े साफ हो जाये। क्योंकि नया में शान्ति बाहने वाले लॉग कथी भी मशान्ति में विश्वास नहीं करते, मर्यादा शंव करने में भारचा नहीं रखते, सन्तुलन बोने में उन का विश्वास नहीं है, वे चाहते हैं कि देश में जनतन्त्र ठीक ढंब से चले । लेकिन उन सब को भड़काने में जो तत्व सकिय रहे, उन का वेहरा साफ्र होना चाहिये।

14.00 hrs.

मान्यवर, गया में जो घटनाऐं हुई— उन का नारा क्या था?

जो लोग एरेस्ट हुए उन का नारा था—कौतवाली जलाबो, नाथी छुड़ाबों :

भी ईश्वर चौबरी: कही भी लुटाई नहीं हुई, एक भी भागजनी नहीं हुई, लेकिन फिर भी गोलिया चलाई गई।

भी अंकर बयाल सिंह : धव मैं एक मिनट का समय धीर लेकर धपने कुछ मुझाव धाप के माध्यम में मरकार के समझ रखना चाहता हूं। गृह मन्नो जी से मेरा मुझाव है ——

- वे स्वयं जा कर गया की इन घटनाओं का निरीचक्क करे।
- मैं चाहता हूं कि गया काब्ड की न्यायिक जांच हो ।
- 3. दोषी अधिकारियों के विकद्व कार्यवाही की जाय।
- 4. खाद्याघ्र की कमी, किरामिन तेल की कमी, धावश्यक वस्नुधो की जो कमी है, उन की पूर्ति की जाय।
- 5. सबैधानिक मर्यादा के धनुसार विधान मण्डल के फन्सन मे सब का सहयोग मिलना चाहिये।
- 6. केन्द्रीय सरकार ने जिस तरह से प्रश्नी बहा के मती मण्डल की घोर घ्यान विवा है, उसी तरह से वहा जो बड़े पैबान पर फाष्ट अधिकारी हैं, उन का तबाबसा होना चाहिये, मुप्रसासी होनी चाहिये, उन मैं भी सफाई की खरूरत है।

भी शहल विहारी वाजनेथी : मती मंच्हल में जो प्रष्ट हैं उन का क्या होता १ श्री शंकर बयाल सिंह: अन्त में मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि छात नेताओं के साथ बातचीत केन्द्रीय सरकार के किसी वरिष्ठ मंत्री को करनी चाहिये, क्योंकि छात्र बुरे नहीं हैं, छात्रों को प्रागे रख कर पीछे कुछ ऐसे असामाजिक तस्य थे जिन का जन नन्त्र में विश्वाय नहीं हैं और बेही शिकार खेल रहे हैं।

एक बात में जरूर कहना चाहुंगा, जिस के लिये प्राप मुझे क्षमा करेगे — हुमारे मादरणीय मित्र भागेन्द्र झा ने हाथ उठ -उठा कर बडे जो अगोर से चर्चा की कि 51 लोगों ने दस्तखत कर दिये जयप्रकाश नारायण जी के बारे में। किस चीज पर दम्तखत किये थे ? हम ने दस्तखन किये के इम लिये कि यहां कुछ लोग इन्दिरा जी भीर जयप्रकाण बाब के बीच कन्फ्रेन्टेशन करना चाहते थे, उस के लिये दस्तखत किये थे। मैं यह स्पष्ट रूप से कहना चाहना हं कि बिहार में जो भाग लबी है, उस में कम्युनिस्ट पार्टी पीछे नही है। बेतिया में इन्होंने ही शरू किया था भीर यहाभी भागे रहे हैं इस लिये इनको अपने फंक्शन को मुधारना होगा। ये लोग बारबार हमारी मदद से यहां जीत कर आते हैं भीर फिर ऐसा अवहार करते हैं। भगर हमारी मदद न होती नो यहां एक भी जीत कर न धाने . . . (व्यवचान) . . . यहां जीत कर भाने हैं भीर फिर हमारी पीठ में ही छुरा घोंपने हैं . . (व्यवकान) . . धगर कांग्रेस की मदद न हीती तो कोई जीस नहीं मा । हमारी मदद के साने हैं और यहां या कर जिस पलल में खते है उसी में छेद करते हैं-यह बात मनत हैं । (व्यवधान).... इस लिये. मान्यवर, जो बातें मैंने कही हैं मैं बाहता है कि सरकार उन पर गम्भीरता से विचार करे..... (व्यवधान)...

सभापति मंहोबब : जब बार का समय बाबे तब बार बोलिबे बीर जितमा कड़ा बोलमा चाहते हैं, बोलिये।

भी ग्रांकर बयाल सिंह : दिक्कत यह हैं कि जब ये लोग बोलते हैं तो हम शान्ति से सुनते हैं, लेकिन जब हम बोलते हैं तो ये लोग प्रकबकाने लगते हैं, यह क्या बात है। जो मही बात हैं उपको मानिये।

श्री सुस्रदेव प्रसाद वर्मा (नवःदा) : सभापति महोदय, माज सदन में बिहार तथा गया गोली काण्ड पर जो बहम चल रही हैं, वास्तव में वहा की स्थिति बड़ी गम्भीर हैं भीर उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की ग्रावश्यकता है। ग्राथ ही साथ यह भी जातना मावश्यक है कि क्या सबम्ब में यह विद्यावियों का म्रान्दोलन हैं भीर उन की मांगों के समर्थन में कुछ प्रतिकियाबादी तत्वों ने हास बटाया हैं, क्या शचम्य में विद्याधियों की मांग के लिये उन के मन में महानुभृति हैं या चुनाव में मार खा कर इस तरह का भान्दोलन कराने का कार्य उन लोगों ने भारम्भ भिया है। इन मारी चीजां को गम्भीरता ने देखा जाना चाहिये, तब मारी बातें सारह का में सामने भा जायें भी।

मामनीय ज्योतिनर्थ बसु जो ने क "
कि श्रीसती इन्दिरा गांधी जी में गरीई।
हटाने के नाम पर. बेकारी दूर करते के
नाम पर जनता से बोट सिये थे, निकि कि
न गरीबी हटी ग्रीर न बेकारी दूर हुई।
मैं कहना चाहता हूं कि श्रीमती इन्दिश
गांधी जी तो रान-दिन गरीबी दूर करों
में ग्रीर बेकारी दूर करने में जुटी हुई हैं,
लेकिन ये कुछ ऐसे श्रीतिकियाबादी तत्व
हैं, जिन का जनतन्त्र में विश्वास नहीं हैं,
श्रीर वे ऐसे कामों ने बाधा दे कर देश की
गरीबी ग्रीर बेकारी की बनावे रखना

षाहते हैं और इस आन्योलन के पीछे भी ऐसे ही तत्यों का हाथ है। वे उन नीतियों को सफल नहीं होने देना चाहते हैं, चूंकि वे चुंनाव में मार खा गये हैं वे सोचते हैं कि अगर सारा काम कांग्रेम ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में पूरा कर लिया, तो हुमारा अस्तित्व ही मिट जायगा और हम इसके बाद कर ही क्या सकेंगे? इस लिये ग्राज हिमात्मक आन्वोलन का महारा से रहे हैं। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये देश को और जनतन्त्र को न जलाइये, और देश जल जायगा और जनतन्त्र मिट जायगा तो हम ग्रीर आप कहा रहेंगे। दौनों ममाप्त होंगे।

जहा तक विद्यार्थियों की मागों का सम्बन्ध है मैं भी उन के साथ ह, भौर उचित मांगों का समर्थन करता हू। मै भी चाहता हं कि देश ने गरीबी, बेकारी, भ्रष्टाचार को मिर्मुल किया जाय, लेकिन इन को निर्मल करने का जो तरीका है उस को अपनाइये । मान्यवर मैं ता० 12 को गया में था। यह मत्य है कि विद्याधियों ग्रीर महिलाग्रों का यह सत्य पह भीर धरना ता० तक शान्तिपूर्ण ढग से चलता लेक्नि ता० 11 से उस को हिमात्मक बनाने का जो चडयन्त्र विरोधियो द्वारा रचा गया, विस दल ने घडयन्त्र किया, कहा मीटिंग हुई-मैं बाहता हूं गृह मंत्री जी इस की जाच कराएं। धाप को पता लगेगा कि तार 11 को जिला प्रशिकारी ने बड़ी सन्जीदगी से उस को बचाया, लेकिन इन लोगो की यह बरदास्त नही हमा, ता । 12 को ये लोच निश्चय कर के आये भीर उसके बाद भाग भीर गोली काण्ड की घटना हुई। यह इस बात का सुबृत है कि को विद्यार्थी और महिलावे वहां सत्याग्रह में थे, उन में एक भी वायल नहीं हैं, एक भी बक्सी नहीं हैं। हमारे मानवीय सबस्यों ने नवा बोजी काव्य की वो चर्चा की है उस से मुझे भी दुख है। मैं बहुत दुखी हूं और चाहता हूं कि इस की जांच कराई जाये।

माननीय ईश्वर चौधरी जी ने कहा है है कि गया में 70 और 100 के बीच मौत हई है और 200 घायल हुए है और लाओं को जला दिए गया भ्रगर यह बात सही भी हो तो मैं पूछना चाहता ह कि जो जरुमी हाए उन का इलाज कहा हुआ। r जख्मी लागों के नाम बताइये, विन यस्पताल में भरती हए, कहा इलाज बराया, आज उन लोगों को सरवार की तरफ़ में मुझावजा दिया जा रहा है, लेकिन एक भी नाम अभी तक सरकारी मुची के अलावा नही बताते हैं। हमारे गृह मंत्री जी ने वालाया है है कि 23 भादमी भ्रम्पनाल में भरती हए जिन मे 8 की मौतें हुई ग्रीर 15 जब मी हए, उनमें से दो-सीन चले गये थें-यह ग्रम्पताल के रिकार्ड में है। भीर अस्पताल के रिकार्ड के धलावा इन के पास कोई खबर है तो बतानी चाहिये नाम के माथ। ये कहते हैं कि 200 जब की हए, लेकिन उन का इलाज कहां हुआ। हमारे संगठन कांग्रेस के ब्रादरणीय सदस्य श्री सत्येन्द्र नारायण सिंह कहते है कि मीतें श्रधिक हुई है-श्रगर उन की बात मान ली जाए तो क्या जिन को गोली लगी सब मर गये, जरुमी कोई नहीं हुए। विस्ती लोगों की लिस्ट 14-15 है, बाकी कहा गये। मैं चाहनाह कि इस बात की आव कराई जाय। इस तरह से घमत्य बाते कह कर देश और जनना को गुमराह नहीं करना चाहिये। यह जनतन्त्र के विरुद्ध है। कोई भी घादमी जो जान्तित्रिय है आज इस तग्ह की हिमात्मक कार्यवाही घोखों से देखे तो सचमुच मेवडी ग्रसहनीय है। मैं गृह मंत्री जी से निवेदन करूगा कि जो वहां पर भापकी बार्डर सिक्योरिटी फोर्स है भीर तेण्डल रिजर्व फोर्स गया में है,

280

भी सुबदेब प्रसाद वर्मा] उसने बहुत ग्रधिक जुर्म किया है। निर्दोष व्यक्तियों के घरों ने घुस कर पीटा है।

सनापति महोदय: आप मेरी बात सुन लीजिए। कांग्रेस पक्ष के लिये यह मुझे बिल्कुल बताया गया है कि 7 मिनट से ज्यादा किसी को न दें क्योंकि आपकी तरफ के काफी लोग, करीब 15 लोग बोलने बाले है। भ्रापके 6 मिनट हो चुके है ।

🌃 भी सुसारें महत्व वर्गाः तो मैं यह कह रहा या कि प्राज इस बात की जांच करानी चाहिए कि जयकुमार ·पालित, जो प्रखण्ड कांग्रेस कमेटी के श्रध्यक्ष हैं उनके वर में बुस कर फीज ने उनके परिवार के लोगों को पीटा है। मै चाहगा इस तरह के जो जुमें हुए हैं उनकी जांच की जाये और ऐसे व्यक्तियों को सजा मिलनी ही चाहिए।

🗭 मैं यह भी, चाहुंगा कि घाज विद्यार्थियों की जो मांगे हैं, श्री संकर दयाल सिंह और श्री भागवत बाजाद से मैं सहमत ह कि उनकी मांगों की पूर्ति के लिए भविलम्ब कदम उठाये जायें। धीर माननीय गृहाँ मंत्री स्वयं विद्यापियों के नेताओं स बात करेंग्रीर समस्यामों का समामान करे। में इस बात की भी चर्चा करना चाहता हं कि हिंसात्मक घान्दोलन को भाननीय जयप्रकाश जी ने घाँहसात्मक बना कर बिहार को जलते से बचा लिया है। श्रहिसात्मक श्रान्होलन चल रहा वा लेकिन विरोधी दल जो प्राज उनके लिए प्रांस बहाते हैं, उन्होंने उसमें हिंसा की भावना लाकर उनकी पीठ में छूरा मारा है। उन्होंने झहिंसात्मक रूप से जो झान्दोलन चलाया वह सराहनीय है।

में माननीय गृह मंत्री जी से यह श्री च हता हूं कि भाज विहार में जिन चीजों की कमी है, अनाज धौर इसरे उपधोगी सामान की जो कमी है उसकी तरफ भी सरकार को घ्यान देना चाहिए। उन चीजों की सरकार वहां पर पृति करे। सबसे बड़ा काम यह है कि भ्रष्ट श्रधिकारी वितरण में गड़बड़ी करते हैं, जिन चीजों की धाव-श्यकता है उनको जनता तक पहंचने नही देते हैं उनके खिलाफ ग्राप कार्यवाही कीजिए भीर उन बीजों को जनता तक पहुंचाइये। इस प्रकार के जो भी भ्रष्ट प्रधिकारी हों, चाहे कोई मन्त्री ही हों या किसी पार्टी के ही लोग क्यों न हों-- जो भी इस तरह के गलत काम करने हैं उन की कटबरे में खड़ा करना चाहिए।

SHRI V. MAYAVAN (Chidambaram): Mr. Chairman, Sir, we have heard the speeches of hon. members. Mr. Jyotirmoy Bosu has rightly said that it is 'Police Raj' which is going on in Bihar. The other members have also pointed out that looting and shooting have taken place in Bihar. Whether the Treasury Benches are going to accept this or not, history will speak for itself about the facts.

Why is Bihar in the vanguard of this revolution? That will have to be considered in the House. are the reasons for this situation and for the activities that have taken place in Bihar? It is the economic backwardness. Nobody had thought of it. Bihar has got almost the major heavy industries. Yet, Bihar is economically backward. So far as per capita income is concerned, Bihar is the second from the bottom. What is the reason for this? We have been spending crores of rupees in Bihar; even then we find that it 15 economically backward, facing this kind of situation and activities. More than economic backwardness, the

State is now in the clutches of casteism, and the common people of the State are the victims of the vagaries of he dominant caste leaders. Political instability and insecurity and economic backwardness of the State are the result of the neverending see-saw battle between different castes. The unscrupulous political learders exploit for their own ends the cleavages in the castes.

The Central Government are the silent spectators. Prime Minister, Shrimati Indira Gandhi nominated Shri Kedar Pandey for the Chief Ministership of that State. But what did happen? He was removed unceremoniously from the gaddi by one of the cabinet colleagues of Mrs. Gandhi. You can very well imagine the currents and under-currents in the political field.

Now, another eminent leader, after the formation of the new Ministry, has rightly pointed out and characterised the new Ministry as old wine in a new bottle. There is no change at all and this Ministry also will not last even a few months. It is from his speech we can conclude that it would not last even three or four months.

Students' unrest in Bihar is in-Why? Because the stucreasing. dents when they go to the mess, they could not see the food being served. Provisions are not available. The food situation there is so bad. When I had been there recently, personally I asked them and I was told that rice is selling at Rs. 11 per kg. Why is this situation? What is the State machinery doing? Is it not the duty of the State to procure foodgrains for their own people? these things will have to be viewed seriously by the. Treasury Benches and they will have to come forward with some solution o solve all these problems. This is a never-ending thing. It will have to be solved effectively and I call the Minister for

Home Affairs to see that these thingsare solved.

Sir, Bihar is the home of the Sadaquat Ashram and the Sarvodaya Leader, Jayaprakash Narayan. Jayaprakash Narayan is the only one great leader of the pre-Independence era. Yet, the Prime Minister accused Jayaprakash Narayan of speakerheading the politics of disruption in the country. I am compelled to say that, if men like Jayaprakash Narayan are accused of having personn! motives, the doomsday of the ruling Congress Party is fast approaching.

The ruling Congress Party leaders talk ceaselessly about the establishment of a casteless society but the ruling Congress Party leaders in Bihar themselves are fathering casteism and factionalism in the State. One who sows the wind will have to reap the whirlwind. That is the proverb which I would like to quote here. That is the situation being faced by the ruling Congress Party in Bihar.

The people of Bihar seem to be the fodder for the burning jealousies among the different castes in Bihar.

Coming from Scheduled Castes, I am pained to say that the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes in Bihar are going back to the stoneage civilisation. We read also in papers about naked parades being conducted by people. These things will have to be curbed and curtailed once for all if we talk of democracy and a casteless society.

Our leader, Jagjivan Ram is being brushed aside by the ruling Congress in Bihar. I warn....

SHRI DHAMANKAR (Bhiwandi):
Are you worried about it?

SHRI V. MAYAVAN: When we talk of a casteless society, why cannot I mention these things?

[Shri V. Mayavan]

I warn the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes people will never tolerate any insult to this venerable leader.

In Gaya, Mr. Choudhari has already stated the situation there warrants immediate action by the Home Ministry. I would request the Home Minister to solve all these problems immediately.

भी जननाथ निभ (मशुवर्नः) : सभापति जी, ग्राज कपिल, कणाद, गौतम, महाबीर, जनक भीर जानकी की भूमि में जो कुछ हो रहा है उससे मैं चनि दखी हूं और उन राजनीतिक दलों की, जिनका इममे हाय है, भर्सना करना चाहता हूं। मुझे प्राश्चर्य है कि इतने चुनाव लड़ने के बाद भी वे दिवा स्वप्त देखने में क्यां लगे हैं। उन्हें वस्तु-स्थिति का ज्ञान क्यों नहीं होता है। मुझे यह भी कहते परम दुख हो रहा है कि वे इसे स्वीकार क्यों नहीं करते हैं। चुनाव के मैदान को छोड़ कर वे भन गुछ और मोचने लगे हैं। जो बात सभी के लिए दुखाद हो सकती है वह उन लोगों के लिए भी द खद है। उनका यह ख्याल है, जो मत्य से परे है कि छात्रों के नाम पर हम प्रपनी किनी गलती को पचा लेगे । लेकिन हमारी मरकार, हमारा दल छात्रों की जो जायज मामें है उन मागों के मान ने में थांड़ी भी हिचकिचा-हट नही दिखाता है भीर इस नरफ के सदस्यों ने इस मदन ने झाज और इस में पहले भी ऐसा एलान किया है कि छात्रों की जायज मांगों को मामने में हमें कोई एतराज नहीं है लेकिन उन्हें विस का बकरा बना कर प्रवर

वे कुछ करना चाहेंगे, तो यह चलने वाली बात नहीं है। मैं भाज भपने इन सब्बों के साथ राजनीतिक दलों के नावधान करना चाहता हूं कि छात्र भीर जनता कांक्स पार्टी भीर काग्रेस मरकार के साथ है। इन्दिरा जी के नेतृत्व में उन को विश्वास है। इसलिए वे अपने मन में इस भ्रम को दूर कर वें। जब मैं यह सोचता हू कि इन की बै हरकते क्यों हो रही है. ता मुझे यह स्पष्ट दीखता है कि उड़ीसा और यू० पी० में जो चुनाव के नतीजे निकले भीर भाम जनता ने उन को तिरस्कृत कर दिया, उस से से बहुत ज्यादा परेणान हुए। उन की परेशानी का एक और भी कारण रहा। स्रीर वह का मध्वनी का उप-चुनाव, जहां में मै भाता हूं। उन की बहुत तमका थी और उन्हें बहुत भागा थी कि वहां सं उन का उम्मीदवार विजयी होगा, लेकिन जनता ने जिस जोश के साथ, जिम उत्साह में, जिस उमन में काग्रेम के उम्मीदबार बिहार के मुख्य मती श्री गफूर को, श्रपना समर्थन दिया था इन के पाव के तले की मिट्टी खिनकने लगी (क्य**बकाय**) वाजपेयी जी, धाप की हरकता की चर्चा, धाप के दल की हरकतों की चर्चा बहुत हो चुकी है, इमलिए मैं उन का दोहराना नही बाहता. लेकिन मैं इतना श्रवश्य कहुगा कि भाप भावावेश में न बहे और प्राप गभीरता से इन पर विचार करे. ग्राप विषय को जानने वाले है, इसलिए भाप पूर्विन्तन करें कि भाप का दल, भाप की पार्टी भाप के लिए वबा करने जा रही है . . . (ध्यन्धान) . धाप के पटना के नमन भीप नवा के नमन ने क्या गुल बिसाए । इसलिए धाप परहेव

शि काम कें। भाप का वह वाक्य हमेशा मेरे कान में गूंजता रहता है। बंगला देश के निर्माण के ममय जब पाकिस्तान से हमारी सड़ाई चल रही थी, तो भाप ने कहा था कि देश का एक नैता है और वह है इन्दिरा गांधी। तो भाज इम वर्तमान महंगाई के समय में भाष को उसी दृष्टिकाण से सोचना चाहिए भीर भाग आप कें जसी दृष्टिकाण से सोचना चाहिए भीर भाग कुछ सोचते नहीं हैं, भाप जरा चितन नहीं करते हैं तो भाप देखेंगे कि भन्न तक तो भाष जनता के द्वारा ठुकराते जाते रहे हैं भीर इस बार अगर ठुकराए गए तो फिर गिर कर उठने बाले नहीं हैं। इसलिए मैं भाप से सयम में काम लेने को कहगा।

जो कुछ निहार में हो रहा है, वह दुखर है, यह मैंने पहले कहा । मरकार बडा सयम स काम ले रही है, सरकार बड़े विवेक से काम ने रही है वरना गुछ ग्रीर हुमा होता । मैं विश्वाम करता था कि इसके निए सरकार को सदन के सभी लोगों की धोर से वाह वाही मिलनी च।हिए थी। मरकार कभी भी परहेज के दायरे से बाहर नहीं गई। गया की बात कर रहे हैं, तो केवल फेक्किशन हो रहा है, बान का बनगड बनाया जा रहा है। जब मरकार के पास कोई चारा नहीं रहा, तो उस को फाइरिंग करनी पड़ी। इपकी वर्चा हमारे माननीय गृह मत्री जी ने की है भीर बढारों में भी समाचार निकला है। उन को एक बार फिर वे देख ले या फिर मेरे कथन पर विश्वास कर ले। मेरी अपनी सरकार में पूर्ण झास्था है और झाज जो स्थिति पैदा हो गई है, उस को सरकार अपने नियंवण में कर लेगी। इस में मेरा अविश्वास नहीं

है लेकिन बाप लोगों को बिवस्सास भने ही। इसलिए मैं अपने इन जन्दों में इन का घ्यान बाकित करूगा कि जो यह ममझ रहे हैं कि जो कुछ हो रहा है यह किरण नये सूर्योदय में परिणत होगी, तो मैं कहता हू कि यह जो किरण है, यह नये सूर्योदय ने परिशत नहीं होगी बल्कि इस में बाप जल कर खाक हो जायेंगे और वह जंगल की बाग की लपेट की तरह बुझ जायेंगी।

मैं श्रभी समाप्त कर देता हू। मैं पूछता हं कि ब्रतिपक्ष हिमा ग्रीर दबाव-धमकी की राजनीति में उलझ कर ग्रराजकता भीर भव्यवस्था का मूलधार बन कर रह जाएगा या ग्रधिक दूरदर्शिता, विवेक एव शान्ति की रीतियों का महारा ने कर समस्यायों . के लोकन बीय राजनैतिक समाधान खोजेगा। मैं उन मे जानना चाहता हूं कि भराजकता श्रीर हिमा के उफान ने क्या मदा ही श्रविक द्यातकपूर्ण, निरंकुण ग्रीर जालिम को जन्म नहीं दिया है ? वया मार्वजनिक ग्रौर निजी सम्पत्ति के विनास ग्रौर हिमा के पीछे कोई नैतिक मृत्य है और यदि है ना क्या वे जोकनंत्रीय अनुगामन के नियमों के मनुकूल है ? ⊣या यह म्रान्दोलनकारी देश की इस मूल समस्या में परिचित है कि भावश्यक वस्तुमी वा भगाव भीर भशाध गति में बढ़नी हुई कीमनों का चक भारत की भात्मा को उनना पोडिन नही कर रहा है. जितना कि विवेक और भनेउना का दुर्भाग्यपूर्ण यभाव।

स्र शापित महोदय प्रव प्राप खत्म कीजिए। ग्राप जहां में पढ़ रहे हैं, उस का नाम बता दीजिए।

थी जनमाथ मिथा: मैं प्रभी खत्म कर रहा हं।

मैं जानना चाहता ह कि क्या वे दुर्भाग्य-पूर्ण कटु यथार्थ से परिचित है कि देश मे फैले प्रष्टाचार के लिए विरोधी राजनीतिज किसी से कम जिम्मेदार नहीं है जो काले धन के बल पर देश की राजनीति भीर राज मत्ता पर अधिकार जमाने का स्वयन देखते हैं।

इस स्थिति में यदि हम ब्रहिसात्मक बीर शान्तिपूर्ण रीति नीति का परित्याग कर के निराशा के भावेग में हिंसा भीर भराजकता पर उतारू हो जाएं, तो यह संकट संहारक बन जाएगा। यदि हम हठ पर डटे रहे तो मानना होगा कि हारे हए पाडवों में लोकशाही की द्रोपदी को भी दाव पर लगा दिया है। इसलिए कोधावेश के बजाए होश ग्रीर विवेक से काम लेना निनात जरूरी है।

याद कीजिए, बापू ने तनिक मी हिंसा ...

भी प्रदल बिहारी बाजपेबी : यह हम को पाडव बता रहे हैं और ये कीरव हैं। यह हम स्वीकार करते हैं।

श्री जगन्ताम मिश्र हारे हए, तिरस्कृत। मैं कह रहा था कि याद की जिए, बापू ने तनिक सी हिमा होने पर एक महान देशव्यापी शान्दोलन बापम ने लिया था भौर भपने साधियों के प्रतिवाद करने पर साफ़ कहा था कि महिमा के बिना भाषा स्वराज्य मेरे किमी काम का नहीं।

श्रीमन्, मैं ग्रपने इन शब्दों के साथ ग्रपने दोम्नो मे आग्रह करूगा कि वे पुनचिन्तन करे और बिहार में नामें लसी आए और हमारी सरकार का जो प्रयास है उस में धगर वे ध्रपना योगदान दें नो उन को यश मिलेगा. बढ़ी तो वे अपयश के भागीदार होंगे।

SHRI HARI KISHORE SINGE (Pupri): Mr. Chairman, Sir, I was listening with due attention to the speeches made by Shri Bosu and Shri Mayavan from the DMK. Shri Bosu, by quoting from newspapers, said that the ruling party has made Bihar a test case for the violence of State power.

This is hardly true. His demand for the dissolution of the State Assembly is highly erroneous and misleading. I hope he realises the implications of that remark which is a danger to the proper functioning of Parliamentary institutions and for its very survival in this country. This betrays his real intentions and this was made very clear in his concluding remarks when he demanded the dissolution of the Bihar Assembly. This is the crux of the problem and express the motivation behind the movement that the Opposition Parties are instigating some young men and youths in Bihar and other parts of the country to launch.

What is the objective behind thus movement? It is to demand the dissolution of the elected institutions, resignation of the elected Members of the legislature and later on of this Parliament as well I hope Mr. Mayavan who was very lavish in his compliments at our party, realises the implications of this demand. I think he has heard the name of Shri M. G Ramachandran and the charges he has made about the functioning of D.M.K. government in Tamil Nadu.

SHRI C T. DHANDAPANI (Dharapuram): I want to know about the allegations levelled against DMK. by a man purchased by central leadership.

SHRI HARI KISHORE SINGH: I do not know whether he has been purchased by central leadership but till the other day he was the Tressurer of your party. (Interruption).

What has happened in Gava is very tragic. As Shri Shankar Dayal Singh has pointed our Gaya is a place where Prince Sidhartha sought liberation of Buddha soul and attained enlightment and preached message of peace and hope to the humanity at large. Gaya is also a place where people go to pay homage to the dead and the buried. I would request the hon. Members of Opposition to realise the gravity of the situation and have second thoughts about the intensity of the movement. I do not know whether they want parliamentary institutions to flourish in this country and the praceful methods of social change to continue. But I would like to know whether gherao and violence have any place in a democratic society. If you indulge in gherao and prevent people from going to post offices, railway stations or hospitals then what recourse the ordinary citizens have unless State authorities provide protection and facilities and if the Government is not competent to provide these ordinary facilities to the ordinary citizens then that Government has no right to exist. people are prevented violently from getting ordinary Civil benefits, then the Government is justified in using force. I am sorry eight persons were killed. I do not want to enter into the controversy whether they were students or not but as far as information goes most of them were not students.

No student was killed in Bettiah. Very few were killed in Patna, and my information is that in Gaya also only two persons could be described as students, but I am not sure about that. But what is more important is not whether they were students not but the fact that precious human lives have been lost. And for what? What is the objective of this move-That is the question that I ment? want to ask. I would most humbly request Shri Vajpayee to clarify this because the Vidyarthi Parishad

is the mainstay of the movement in Bihar. I do not know whether he will accept it or not, but the Vidyarthi Parishad is the main force behind the movement. I do not know about RSS but the Vidyarthi Parishad has been clearly the mainstay of this movement. I do appreciate the feelings of my Marxist friends, but they have nothing to gain from this movement in Bihar, because Bihar has shown clearly and categorically that the CPM has no place in the political life of Bihar.

SHRI NOORUL HUDA: Nobody is talking of gaining anything. Our party is not interested in gaining anything from the movement.

SHRI HARI KISHORE SINGII: They are interested in the dissolution of the Assembly. Their leader has just said that they are interested in the dissolution of the Assembly. So, we know what they are aiming They are not interested in the functioning of , this parliamentary institution and the democratic way of We know that very well. Therefore, my appeal to friends of Jan Sangh, S.P. and S.S.P. is this: For God sake, do not destroy the very basis of democratic institutions and parliamentary system government in your hatred of the ruling Congress Party. To my friends of Jan Sangh, I would request that so long as Jan Sangh accepts the parliamentary way of life, and here I would request Shri **V**ajpayee particular, they should consider and ponder over the fact whether the way the movement is going on it will be conducive to the effective functioning of parliamentary demogracy in this country or not.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: What about the CPI? He has no advice to the CPI?

SHR HARI KISHORE SINGH: In the context of Bihar, I would request the Home Minister to make an inquiry whether the holders of edible oil who were caught for adulterating edible oil in Gaya are financing this movement or not.

SHRI BHOGENDRA JHA: They are financing it.

SHRI HARI KISHORE SINGH: Who is financing this movement in Bihar. From where is the finance coming?

AN HON. MEMBER From black money.

SHRI HARI KISHORE SINGH. Of course, it is coming from black money. Therefore, I would request the Home Minister to make an inquiry and to take autable action

The economic situation in Bihar is very difficult. We forget the fact that in Bihar, the small cultivators and peasants have been forced to buy diesel at Rs. 3 per litre. This is within my personal knowledge. These people have also been forced to buy urea at the rate of Rs. 2.50 per kg. This is also within my personal knowledge. In this backward State which has been chronically suffering from food shortage there is a shortage of about 7 lakh tonnes. are we going to meet a situation like this where the peasants have been forced to buy diesel, urea and fertilisers at very big highly inflated blackmarket prices. It is not real shortage which is there, because things are available in plenty but at higher prices. Therefore, I would request the Central Government to take immediate and effective action so that the agricultural production in Bihar may not suffer and our friends who are not interested in the working of this system may not profit from the difficulties and hardships of the people.

I wish to congratulate the students of Bihar on the fact that most of them have not fallen prey to the machinations of the Opposition parties. They are a very healthy element. I am glad that they have drawn our attention to the rottenness of the educational system Whatever Prof. Nurul Hasan may say or whatever we may say the fact remains that all of us are for improvement and change in the educational system, but nothing has happened in this regard the last 27 years. It is high time that our educational system is made job-oriented and more productive and more useful.

भी रामावतार शास्त्री (पटना) : सभापति महोदय, बिहार में जिस तरह का सबट भ्रान उपस्थित , ऐसा संबट पहते कभी नहीं था। लोगों को खाने को नहीं मिल रहा है, भ्रष्टाचार चरम सीमा पार बर च रा है कोई चीज नहीं मिलती है सौर कीमतें दिन प्रति दिन श्रासमान छूनी जा रही है। इसी पृष्ठभूमि में बिहार के किसान. मजदूर, छात्र, नौजवान, तमाम लोगो ने यह तय किया है कि महंगाई के खिलाफ, बेकारी के खिलाफ, धभाव के खिलाफ, पेशा टैक्स के खिलाफ, भ्रष्टाचार के खिलाफ्र, एक भ्रान्दोलन चलाया वाय । इन मांवों के भतिरिक्त छात्रों ने यह मांग भी की कि विश्वविद्यालयों की किथा पद्धति को सुधारा जाय । तमाम विश्व-विद्यालयों में जात पात घर कर ग्राया है, उसका खात्मा किया जाय। इन मांगों को लेकर, ता॰ 16 मार्च, को पूरे बिहार में बिहार राज्य छात्र नौजवान मोचें की तरफ से शान्तिमय ग्रान्दोलन किया गया, तमाम विलों में प्रदर्शन किया गया। उस मोर्चे मे माल इण्डिया स्ट्डेण्टब फेडरेमन, स्ट्डेण्ट

श्रॉफ इडिया श्रीर स्ट्डेण्टस फेडरेशन एसोशियेशन शामिल थीं। उस दिन तमाम जगहों पर शान्तिमय प्रदर्शन किये गये। लेकिन दुर्भाग्य से पुलिस के लोगों ने शान्त प्रदर्शनकारियों पर बेतिया में गोली चलाई श्रीर वहां पर 11 या 12 ग्रादमी मारे गये, जिन में 4 छात्र थे। बाद में कुछ समाज-विरोधी तत्वों ने ग्रलग ग्रलग जगहों पर जा कर कुछ गोलमाल करने की कोशिश की। पटना में भी छात्रों ने प्रदर्शन किया। इस तरह से पूरे राज्य में प्रदर्शन हुम्रा इस से प्रतिगामी खेमें में घबराहट मच गई ग्रौर उन्होंने ता० 18 मार्च, का इस्तेमाल किया। छात नौजवानों की जायज मांगों की स्राड में उन्होंने हत्या, लूट, ग्रागजनी, वगैरह करने की कोशिश की । उस के बाद पुलिस ने मंगा नाच किया -- पूरे शहर को उन लुटरों की मर्जी पर छोड़ दिया गया, आगजनी करनेवालों की मर्जी पर छोड़ दिया गया। पुलिस चुपचाप बैठी रही-यह सब मैं खुद देख कर ग्राया हूं। हमारे यहां पुनाईवक मुहल्ला है --- पुलिस ने घर घर में गली गली में लोगों को घुस कर मारा। एक दो छात्र खड़े थे, सिर पर गोली मारी गई. एक का सिर उड़ गया, वह वहीं मर कर गिर गया, लेकिन दूसरा भाई संयोग से बच गया ।

इसी तरह से सर्चलाइट में हुम्रा ---उसका दफ्तर जल रहा था, लेकिन पुलिस का कहीं पता नहीं था । उसके बगल में जनरत पोस्ट ग्राफिस में कोई गड़बड़ी नहीं थी। बी० एम० पी० वहां रक्षा के लिये मौजूद थी। लेकिन उस के बावजूद बाहर

श्री हरिकिशोर तिह: गलत है।

श्री रामावतार शास्त्री: लखी सराय स्टेशन पर गोली मारी गई, मुंगेर में गोली चलाई गई, देवघर में गोली चलाई गई, इस तरह से सारे सुबे में गोली चलाई गई, जिस की जितनी भी निन्दा की जाय थोड़ी है। तरह में जहां जहां लूटपाट ग्रौर श्रागजनी की गई है तथा कम्युनिस्ट पार्टी के दफ्तरों पर हमले किये गये हैं उस की भी निन्दा की जानी चाहिए। मैं मांग करना चाहता हूं कि इन तमाम घटनात्रों की न्यायिक जांच करवाई जाय ताकि जो इस के पीछे तत्व थे, फासिस्ट तत्व थे, चाहे वे मार॰ एस० एस० के हों, जनसंघ के हों, श्रानन्दमार्ग के हों या कांग्रेस के अन्दर जो गोरिंग और गोवल्स के चेले घुस ग्राये हैं--जिन में से कुछ के भाषण अभी हम ने सुने हैं --वे ही इन लोगों के काले चेहरे बेन्नकाब हो सके। यहां लोग तमाम गड़बड़ी करवा रहे हैं। सभापति जी, ग्राज जरूरत इस बात की है कि ग्रगर ये ईमानदार हैं तो जुडिशियल एन्क्वायरी करवायी जाय श्रीर जितने लोग मारे गये हैं, उन निरप-राध लोगों के परिवारों को मुम्रावजा दिया जाय। जनता के अन्दर जो असन्तोष है,

विं। रामावतार णास्त्री

खाने को नही मिल रहा है, गल्ला नही मिल रहा है, उस को पहुचाये। डीहोडिंग कर-वाइए, जो छिपा हुआ गल्ला है उस को निकलवाइये।

श्रन में एत बात करना चाहता ह—

प्राह्म मिनिस्टर माहिया वा भारतीय
कम्युनिस्ट पार्टी की बिहार स्टेट कोन्सिल
के सैकेटरी श्री जगन्नाथ सरकार ने जो
चिट्ठी लिखी है जिस में उन्होंने जगारा
किया है कि किस तरह से सरकार में
सानन्द मार्गी और श्रार० एक एम० के
साफिसर्ज चुसे हुए है, उस पत्न के दो पैरो
को में पढ़ देना चाहता हू —यह पत्न उन्होंने
4 समैन को प्राहम मिनिस्टर को लिखा
था ——

"We have always suspected that many Anand Margis and RSS men have infilterated inside the administration. We recently received some concrete instances which we would like to bring to your notice.

Akhaura Himachal Pradesh, IPS, Commendant, Bihar, Military Police, at Dehri-on-Sone, posted at the eastern gate—

MR CHAIRMAN. Under the guise or reading a letter, you must not refer to a third party.

भी रामायतार झास्थी: लेकिन एक बात में जरूर कडूंगा कि सभी भोगेल झा जी बोल रहे थे, उन्होंने एक चिट्ठी टेंबिस पर से सी है.... सभापति महोत्रवः उसी तरहसे भ्राप भी लेकर दीजिए।

भी रामाबतार शास्त्री: मैं उसे पढ़ देना चाहता ह —

"A R. Sarengi, Under Secretary, River Valley Project Department, received a printed circular letter of d by A and Marg to its members exhorting them to step up heir agitation in the month of April We are enclosing a fascimited of the said letter for your reference."

इम पत्न को श्री भोगेन्द्र झाजी ने टेबिल पर रखा है। मेरी माग है कि इन तमाम बानों की जाच करवाई जाय धीर इस तरह के ग्रफमरो के खिलाफ मस्त में सस्त कार्यवाही की जाय। भ्राज जो लोग माग कर रहे है. कि समदीय जनतन्त्र खत्म किया जाय. माग वरने वालों में जनमध के लोग है, एस० एस० पी० के लोग है में उन में कहना चाहना ह कि ग्राप उस्तीफें द सकत है, नग चनाव हो सक्ते है. इस से कोई हर्ज नहीं है। लेकिन जा उस तरह ही मारा कर रहे है वे जनतन्त्र के विरोधी है भीर यह अफ्मीस की बात है जि ऐस जनतन्त्र के विशेषियो. की मदद श्री जयप्रवाण नारायण कर रहे है जिन में इस तरह की वोई उम्मीद नहीं थी। मझे विश्वास है कि जय प्रकाश जी इन बातों को समझगे श्रीर इस तरह के जमतन्त्र विरोधियों को असग-अलग करेंसे, बरना विहार की जनना इन्हें खुद अलग-वसन कर के छोड़ेशी और इस लोग सिर पर कफन बान्ध कर मैदाने-जंग मे निकलेंगे भीर धन कासिस्टो के खिनाफ अग करेंगे, समर्थ करेंगे-यही मेरा निवेदन है।

थी डी॰ एन तिबारी (गोपालगंज) : सभापति जी, मैं सब मे पहले श्री जयप्रकाश नारायण जी को साध्वाद देना चाहता ह उन्होंने बिहार के अन्दर हिसा की जो अग्नि सगी हई थी, उस को एक मोड दिया। मै यह बात अपनी तरफ में ही नहीं कहता ह---बहै-बहै ग्रफसरो ने भी मुझे बताया है कि यवि जयप्रकाश जी नही रहते ती हिंसा की आग श्रीर ज्यादा भड़कती । उन्होंने माट दिया है, इस म काइ शक नहा है उस से कुछ शानिन आई है। हमारा उन से मनभेद राजनीतिक हो सकता है, दूसरे महो पर तो सकता है लेकिन जो ग्रच्छा काम वर उस को कहना चाहिए कि अच्छा काम किया है

भी नागेन्द्र प्रमाद घादव (मीतामटी) : श्राप कैसे कहत है कि जय प्रकाश जी विहार में भक्छ। काम कर रहे है वह गलन काम कर रहे **R** 1

श्री डी० एन० तिवारी मत कहिएगा, लेकिन हमारे मन का राकने का ग्राप का ग्रधिकर नहीं है।

सभापति महोदय उनको ग्रपनी बान कहने दीजिए । उस पर शार्याल मन कीजिए। काई भी बिना चेयर की पर्मीमन के खड़ा हो कर न बाल।

भी बी० एन० तिकारी नियभ नहीं है कि काई भ्रपना मत व्यक्त करे उसका मैं राक। नै अपने साथियों से आग्रह करू ि मैं भएना मन द तो उसमे कोई क्कावट न करें। मैं किमी से भी झगड़ा नहीं करना चाहरा । मैं अपने साथियों से इधर के या उधर के, कहना चाहना ह कि दोष यदि अपने मे भी हो ना उसको भी बहना चाहिए, उसे छिपाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। यह सही है कि हम या हमारी पार्टी या हमारी मणकार दो चीज नही कर सकी । हम अनैक-मार्केट नहीं रोक सके भीर धुसखोरी को बन्द नही कर सके। चाहते हए भी यह हम नहीं कर सके तो यह भी हमारी कमजोरी है। वैसे ही अगर कम्यनिस्ट पार्टी में या जनसब में दोष हो तो उसको कहने मे भडकना नही चाहिए।

गया का जो वाकया हम्रा उसका एक लिक पहले से है। बिहार में जो कुछ शुरू हुआ या जो होन वाला था 18 को उसकी मुख्यात दो-तीन दिन पहले हुई। वह बेतिया में शरू हुआ आर भागेन्द्र हा मुझे माफ करेंगे, उनकी पाटी वालान किया। (य्यवधान)।

MR CHAIRMAN You should not discub him like that.

BHOGENDR 1 JHA Tiwaiji demand a judicial enquiry into Betia

SHRI D N TIWARI I am for it.

इक्वायरी हो, मने उसमे वोई विरोध नहीं है लेक्नि में वह रहा है कि सबकी इक्वायरी करन के लिए । (ब्यबदान) मुझ से क्यो झगडा करते है। देता मरकार की कमजोरियो का भी वणन करूगा । (इयवधान)

भी घटल बिहारी वाजपेबी मभापति जी अपनी पार्टी का नाम लेकर इधर में बोले ह हमने इनकी नहीं टाका हम बाद में इनका जबाब देगे।

SHRI D N TIWARI You may differ with me, but do not disturb

MR CHAIRMAN He should not be disturbed, that much tolerance must be shown

भी भी० एन० विवासी में यह कहना चाहता है कि वह भी सही है कि 16-17 के बाद कम्युनिस्ट पार्टी ने भ्रपना हाथ खीच लिया इसमें भी कोई शक नही है। पटना में जो घटना हुई उसमें इनका बहुन कम बोग श्री डी॰एन॰ तिबारी

था। नेकिन शक्करने गइनका याग था (ब्यवधान) एक बात भीर यह है कि चिक शुरुआत हो चुकी है इसलिए बडे वडे नताआ को छोडकर इनकं भीर वर्कम की यह भावना गई नहीं थी कि इसलिये कही कही देखा कि कम्युनिस्ट पार्टी र लाग भी आ गए लेक्नि इन्होने अपना हाथ खीच लिया था इसम भी कोई शक नही है।

श्रभी तो मैं ने दो मिनट भी नहीं लिए।

सभापति महोदय पांच मिनट हो गए हैं, दो मिनट भीर है। मुझे सात मिनट पर स्टिक्ट रहने के लिए कहा गया है।

भी डी॰ एन॰ तिबारी : मुझे अर्नाडस्टर्व्ड बोलने दिया जाय । एक बात और है कि जवान और बूढ़ों में टिफरेन्स किया जात । जवान जन्दी जादी वानत है ने जन्दी-जल्दी नहीं बात सर्वा हं दर्नाला ज्यादा समय चाहिया । दनः

सभापति महोदय उसके निप्र दो मिनट और ।

श्री डी० एन० तिबारी दसरी वात में यह कहना चाहता हू कि यह मामला केवस एकोनामिक्स का नहीं है यह पोलिटिकल है। पोलिटिकल ज्यादा है भौर एकोनामिक्स का कम है। वजह है कि स्ट्डेन्टम की जो माग थी उनमे 90 प्रतिशत के करीब बिहार गर्वनमेट ने मान भी भी इमलिये एकोनामिक फंट पर बहुन कम गए थ। चीफ मिनिस्टर ने कहा कि इस दस प'येन्ट को भी हम बात करके तर कर सकते है। जब पालिटिक्स की बात बाई तो स्टडेस्ट्स प.छे । ३ वए बार पार्टी बले प्राणे चले गए। इसने हान मी पार्टी ज है उसकी जाच सरकार कर्गी

श्री मागेन्द्र झा श्रापको पतानही है।

भी डी० एम० तिबारी: । लेकिन हम बोलेंगे तो धाप झगड़ा करन के लिए तैयार हो जायेंगे। कहा जाता है कि गया में बहुत ज्यादा मृत्य हुई । हो सकता है लेकिन किनकी मृत्यु हुई और क्यो छिपाया गया ? इसमे मृत्ये मालम होता है कि उसमे बूछ दल के लोग रहे होंगे जा मारे गए और उनकी लाशे इसलिए छिपाई गई जिससे उस दल की बदनामी न ही अगर कोई डेथ हुई है ता। यदि नहीं हुईतो सभी लाश पोस्ट मार्टम के लिए गई। अगर नहीं गई तो यह मालूम होता है कि दल के लोगों ने लेकर उनको छिपा दिया ताकि उनके दल की बदनामी न हो जाय। हमन देवा है जब उनैत मारे जाते हैं तो अपो साथियो की लाश लेकर वे चले जाते हैं, उनको छोडने नहीं है। (व्यवधान)

नो स्टडेन्टस का प्रोमेशन जवप्रकाश जी के ब्रान्टोनन के बाद बहन पानिमय ढग ा चला भीर ब्राज तक भी चलता हहमार जिले ग भी एक जगह फांजिल गानी चनी जा सरकार की कमा की भी। जमार जिले के टाउन छपरा में विनागानी चरभी नाम चन माना था वेबल धमारा संभाम चन सक्ताथा साती चलाने वः जरूरत ना यी जीता गती। टातायहरे कि ज रार्टतनाव ना स्थिति आती है ना नैय लोगा ता मह रिगड जाता है वैस ही सरकारी अफसरा जा भी मह बिगड जाता है। बिगडना नही चाहिए लेकिन बे भी मनप्य है हाड जाम के हाने है, उनका भा मुख बिगडता है भीर कुछ ज्यादनी भी हो जाती है। भव कहा कहा सीमा से भ्रधिक हथा है, कहां कहा फाजिल हमा है वह नी जान करा से ही पता लग सकता है। इसकी जाच की जाये।

एक बात में भीर बहुगा कि हमारे यहां बाजार म चीजे मिल नही रही है। तो यह हमारा एडमिरिस्ट्रेटिब फेल्योर उन चीजो को ब्लैक मार्केटम बिकने दिया जाये श्रीर ग्रमल दाम पर बाजार में वह राज न मिले यह ए अमिनिस्ट्राटक था । ह, पा दाव भे ने हिन न ।। नी ना नगृहिमिनिस्ट्रेशन की जनना मजबूत नहीं बना मर हैं कि वसे रोक सरें।

ंइसलिए मैं गृह मंत्री जी से कहंगा कि इस पर भी उनको बडी गंभीरतां से विचार करना चाहिये कि जो चीजें ब्लैक मार्केट में मिल नहीं रही हैं वह त्राती कहां से हैं? ग्रगर ब्लैक मार्केट में मिल रहीं है तो उनको यह जब्त करके ठीक दाम पर बाजार में विकवाने का प्रयत्न करें। ग्रगर इस बात को नहीं देखा गया तो हम समझते हैं लोगों का ग्रात्रोश कम नहीं होगा। बिहार के लोग बहत गरीब हैं जैसा कि स्रभी डी० एम० के० के मित्र न कहा कि वहां की सबसे कम पर-कैंपिटा इनकम है। जब वहां पर सब से ज्यादा गरीबी है तो ग्राप जानते हैं 'बुभुक्षित किन करोति पापम्' जो भूखा है वह कौन सा पाप महीं कर सकता है । इसलिए यदि व्लैक मार्केट को रोक कर वहां पर बिहार में सामान नहीं पहुंचायेंगे स्रौर लोग भुखे रहेगे तो ऐसी घटनायें होती रहेगी। इन शब्दों के साथ में कह-ना चाहता हूं कि सरकार को भी सचेत. होना चाहिए और हमारे जो राजनीतिक के भाई हैं उनकी गलती है तो उसकी सुधारने की कोशिश करें।

सभापित महोदय : साढ़े तीन बजे प्राईवेट मेम्बर्स का काम शुरू होना चाहिए है ग्रीर ग्रव आधा घंटा बचा है इसलिए ग्राधे घंटे में ग्रापको समय का एडजस्टमेंट करना चाहिये ।

15.00 hrs

श्री चिरंजीव झा (सहरसा) : सभापति जी हमारा बहुत सा समय चला गमा है, इस लिए इन सबका ध्यान रखते हुये, हमें समय क्षीजिये।

पहली बात तो मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि मेरे पास हमारे माननीय सदस्य श्री वाजपेयी जी की जनसब का कच्चा चिट्ठा है। मैं भुक्तभोगी हूं इसिंखए मैं समय चाहूंगा ताकि इन लोगों की क्या हरकतें है वे सब मैं श्रापको तथा इस महान सदन को बता सकूं;। सभापित यह कहावत है, गधा गिरा स्नास-मान से और रूठा नगर के लोगों से । इन लोगों की हालत यही हो गई है। बार-बार ये लोग मार खाते हैं जनता इनको पीटती है स्नौर हर चुनाव में यह पछाड़ खाकर बोखला जाते हैं स्नौर यह जनतंत्र पर ही स्रणना दोष दिखाते हैं स्नौर चाहते हैं कि जनतंत्र को उखाड़ कर फेंक दिया जाये। ये फासिस्टवाद की प्रवृत्ति पदा करना चाहते हैं।

सभापति जी साफ बात है कि देश में भ्रष्टाचार है, ग्रभाव है, मंहगाई है ग्रौर उसके खिलाफ ऋगर देश में जमाखोरी और मनाफा-खोरी है, ग्रीहंसक ग्रान्दोलन होता है, छात ग्रान्दोलन होता है जो यह स्वागत की बात है हम भी उसका समर्थन करते हैं। उनकी यह बात उचित है ग्रीर इसमें कोई इंकार नहीं कर सकता । लेकिन अगर वह आन्दोलन हिंसा का रूप ले ले ग्रौर वह जनजीवन को ग्रस्त-व्यस्त कर दे सार्वजनिक संपत्ति को नष्ट करें तो सरकार एक तटस्थ दृष्टा की तरह देखती नहीं रह सकती। ऐसी ग्रवस्था में किसी भी सरकार के लिने लाजमी हो जाता है कि राष्ट्र की संपत्ति एवं साधन तथा लोगों की जान माल की रक्षा के लिए ऐसे बर्बर समाजदोही तत्वों पर गोली चलाये।

सभापित जी, मैं ग्राप को वताना चाहता हूं कि हाल ही में जब मैं 7 तारीख को ग्रपने क्षेत्र में गया था, तो मेरे साथ क्या घटना घटी ग्रीर इसमें इन लोगों का किंतना बड़ा हाथ है——(डियवधान) जनसंघ ग्रीर संयुक्त सोशलिंस्ट पार्टी के लोगों को ।

[SHRI ISHAQUE SAMBHALI in the Chair]

15.04 hrs.

सभापित महोदय, जरा ध्यान दें। जब मैं 7 तारीख को अपते क्षेत्र सुपौल पहुंचा, जो कि एक सब डिबीजनल टाऊन है, तो मैंनें अपने

[थी चिरंजीव मा]

मिलों से मिलकर वहां की स्थिति की जानकारी ली। उन लोगों ने बताया कि वहां 19 मार्च को स्टेशन को नुक्सान हुआ था और गोदाम लुटा गया था उसके बाद से उन लागों बताया पर शान्ति है वहा भौर किसी तरह का उपद्रव नहीं है। भौर माजकल चार जगहो पर कुछ छात दिन भर का उपवास रखते हैं। मैने उनसे कहा कि हम चाहते ई एक बार उन लोगो के पास चलें। उन लोगो ने भी मलाह बी। उसके बाद में सभी मिन्नां के माथ चारो स्थान पर उन लोगो क पास गया और उन लोगों से मिला भीर उन लागों ने वाने की। बड़ी शान्ति में उन लागों ने ग्रानी बाते कही ग्रीर हम ने भी अनती बाते कड़ी। फिर वहा से चलकर मे महरमा गया जा कि डिस्ट्रिक्ट टाउन है वहा पर मैंने कलैक्टर मे बाते की भीर उनको मुपौल की वर्तमान स्थिति की जानकारी दी। मैं। यह भी मलाह ही कि दूमरे तीमरे दिन जो हगामा होने वाला है उसके लिए भी प्रशासन को मावबान रहना चाहिये। इसके बाद क नैक्टर ने हमसे पुछा कि क्या भ्राप सहरसा भी घुमे हैं। मैंने उनसे कहा कि मै यहा नही घुमा ह क्वोकि हमारे लोग यहा उपस्थित नहीं हैं, उनसे हमा बातें की हैं। इसके बाद जब मैं वहा से निकला और रोड पर भाया ता जनसभ के जो एम० एल० सी०है, वे पीछे वैठे हये थे ग्रीर वहा पर ग्रार० एस० एम० के लोग श्रीर संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के लोग भी थं श्रीर उन लोगों ने समझ लिया था मेरे बारे मं कि मैं यहा आरो वाला हू। उन को यह सुचना थी। उन सब लोगों ने साजिश करके ग्रपने लोगों को मेरा घेगव करने के लिए

भेजा भीर उन लोगों न बेराव करके हम से कहा कि हम उनको भ्रपना त्यागपत लिखकर देवे । मैंने कहा कि मैं त्यामपत्र नहीं बंगा भौर इसलिए नही ब्ंगा क्योंकि मुझे विश्वास है कि त्यागपन से समस्या का समाधान नहीं होगा। मैंने कहा कि अगर वे लोग मुझे कंविन्स कर वे कि मेरे त्यागपत देने से समस्या का समाधान हो सकता है, तो मै त्यागपत्र दे सकता हु। जब मैंने उनकी बात को नहीं माना नो उन लोगो ने हमारे माथ जार जबर्दस्ती की और हाथापाई करना प्रारम्भ कर दिया। उसके बाद सभापति जी, करीब एक घटे तक उन लागों ने मेरा घेराव किया और बाद मे पुलिय ग्राई ग्रीर उसन ग्राकर म्झे छुडाया । पुलिस भ'एक दर्शक की भाति बहुत देर तक हा हा, ह ह गरती रही। इसी बीच घेराव करने वाले लोगो कपड़े फाड़ दिये ग्रीर हाथ की घड़ी खीच ली। चम्मा ग्रोर कलम ले लिया (व्वयधान).. इस तरह वा इप्वमं इन लोगां ने विया है।

सभापित जी, मैं इनको चेतावनी देना चाहता ह ग्रार बहना कि इन लोगो को भी हम लोग इसी तरह से परेणान कर सकते हैं। हमारे साथ जनता है ग्रीर विद्यार्थी हमारे साथ है। ये लोग हत्या करने हैं भीर घरो में बोरी करते हैं। यह लोग जनता के सामने कभी खड़े नहीं होते हैं और खड़े होने हैं तो बुरी तरह पछाड खाते है। इसलिए ये लोग चौरी चौरी हम लोगो पर हमला करना च हते हैं। मैं ग्रापको बताना चाहता ह कि इन लोगा की ऐ सी करतूर्त है, ऐसी घ नोनी करतूर्त है कि इन लोगो को खुद शर्म झानी चाहिए। इनकी इन हरकतो के कारण बार बार जनता इन नी पिटाई करती है, फिर भी ये लीग ऐसी हरकत करने पर ग्रामादा है।

सभापति जी. ग्राज ग्रगर छात्र ग्रान्दोलन करता है. कि हमारी पढ़ाई का जो तरीका है. वह ठीक नहीं है और उसमें सुधार हो, तो यह ठीक बात है। स्रगर वह कहता है कि हमको सामान नहीं मिलता है स्रौर वह हमको मिलना चाहिये और ठीक से मिलना चाहिये, उचित दाम पर मिलना चाहिये, तो यह बात ठीक है । महगाई, जमाखोरी, मुनाफा-खोरी तथा भ्रष्टाचार के खिलाफ ग्रगर उन सब का भान्दोलन है तो हम लोग भी उसका स्वागत करते हैं। हमे विश्वास है कि उसका असर हमारे अधिकारियों पर भी पडेगा और हमारे एडमिनिस्ट्रेशन पर भी स्रौर उसमें सुधार ग्राम्मा लेकिन ये जनसंघी लोग ग्रौर यह म्रार० एस० एस० वाले चाहते हैं (व्यवधान...)

SHRI DHAMANKAR (Bhiwandi): Sir, this sort of boeing is not Parliamentary. Hon. Members should not indulge in this.

SHRI K. P. UNNIKRISHNAN (Badagara): This is RSS training.

सभागित महोदय: स्राप सही फरमाते हैं मैं भी समझता हूं कि इत तरह की कोई चीज नहीं होनी चाहिए । ये सीनियर मेम्बर हैं स्रीर उनके लीडर भी यहां मौजूद हैं । मैं उम्मीद करता हूं कि इस चीज का वे ख्याल करेंगे । इतना ही कहना काफी होगा ।

श्री श्रटल विहारी वाजपेयी: सभापति जी, हम नहीं चाहते कि इस तरह की बीज हो। श्री उन्तीकृष्णन ने कहा कि यह श्रार० एस०. एस० की ट्रेनिंग है, इस से हम प्रोबोक होने वाले नहीं हैं। (बब्ध बन...)

श्री चिर शिव झा : सभापति जी, स्राज की जैसी स्थिति है, उनमें जहां सरकार का कर्तव्य है कि वह जनता की कठिनाईयों को दूर करने के लिये जल्द से जल्द समुचित प्रयास करे। वहीं इन विरोधी पक्ष के लोगों का भी यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि जो लोग हिसा करते

हैं, उपद्रव करते हैं, लट खसोट, तोड़-फोड़ ग्रौर ग्रागजनी करते हैं, उसका वे खुलकर विरोध करे। इस तरह से किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता है । लेकिन ऐसा वे नहीं करेंगे । इन को तो ग्रपना उल्लु सीधा करना है. विद्यार्थियों का मखौटा स्रोढ कर उनको बदनाम कर के ये यह सब कुछ करते हैं। जैसे गधा शेर की खाल स्रोढ कर खेत चर रहा था वैसे ही ये लोग विद्यार्थियों का मखौटा लगा कर सारी गडबड करना चाहते हैं। ये जो छात्र समुदाय है, विद्यार्थी है, वे हमारे राष्ट के भावी कर्णधार हैं। इन के ऊपर देश का बहत बडा भरोसा है स्रौर कल सारी जिम्मेदारी उन के कन्धों पर जाने वाली है। हम मानते हैं कि वे किसी से भी कम देश-भक्त नहीं हैं। हमारे छात्र समझदार हैं ग्रौर ग्रसल बात को भी समझते हैं। इसलिए उन की जो कठिनाई है, उनकी जो दिक्कतें हैं. यह महान सदन और हमारे पक्ष के सारे लोग उस को महसूस करते हैं, हम लोगों की उन के प्रति पूरी सहानुभृति है। हम लोग जल्दी से जल्दी उस का समाधान चाहते हैं। हम चाहते हैं हमारे गह मंत्री जी ऐसी व्यवस्था करें कि विद्यार्थियों के नेताओं से सीधे सम्पर्क स्थापित करें, उनकी बातें सुनें, उन की मांगों की पृति करें स्रौर ये जो विचौलिए बीच में जा कर ग्रपना उल्लु सींधा करना चाहते हैं इन लोगों को उस का मौका न दें। इन शब्दों के साथ मैं ग्राप को धन्यवाद देता हं कि ग्रापने हमें इतना समय दिया।

श्री श्रटल बिहारी वाजपेयी: सभापति जी, इस चर्चा में बार बार मेरे दल की श्रीर स्वयं मेरी श्रालोचना की गई है। मैं यह दावा नहीं करता कि हम कोई गलती नहीं कर सकते, कोई लुटि नहीं कर सकते। उदाहरण के लिए सहरसा में जो कुछ हुश्रा वह निन्दनीय है। उस कांड के साथ हमारे दल का जो भी व्यक्ति शामिल है उसका श्राचरण श्रापत्तिजनक है। हम ने उन से सफाई मांगी है श्रीर श्रगर उन का हाथ उसमें पता [श्री ग्रटल विहारी वाजपेयी)

लग जायगा तो हम दलीय स्तर पर उन पर कार्यवाही भी करेंगे। लेकिन कांग्रेस के मित्रों से मेरा एक निवेदन है कि विहार मे जो कुछ हुम्रा उसकी गहराई जा कर सोचने का प्रयत्न वे बलि के बकरे न ढुंढें। विफलता पर परदा डालने के लिए वे बहानों की तलाश न करें। राजनैतिक लाभ उठाने के लिए वे स्रारोप लगाने की प्रकिया में न फसें। गुजरात में जो कुछ हुम्रा म्रौर बिहार में जो **कुछ हो रहा है वह कोई राजनैतिक दल नहीं** कर सकता। सब राजनैतिक दल मिल कर भी नहीं कर सकते। जनता बिगड़ गई है। लोग बगावत पर स्रामादा हैं। स्राम स्रादमी के धैर्य का बांध टूट रहा है। सारी वस्तुओं का ग्रभाव हो रहा हैं, महंगाई चूम रही है, विषमता की खाई बढ़ रही है श्रौर प्रशासन में चोटी से लेकर एडी तक भ्रष्टाचार व्याप्त है।

श्री नागेन्द्र प्रशाद यादव : गलत है।

श्री श्रटल बिहारी बाजपेशी : बिहार में श्रान्दोलन श्रभी शुरू हुश्रा है मगर मेरे पास 11 सितम्बर 1973 का कांग्रेस के एक एम एल ए का दिया गया बक्तब्य है, उसर्का दो लाइनें में उद्धृत करना चाहता हूं :

"Shri Jai Narayan: The State Congress is full of corrupt and discredited leaders. He charged the Government with functioning as a private concern of the Ministers and officials."

यह हमारा कहना नहीं है। कांग्रेस में भी ऐसे लोग हैं जो यह अनुभव करते हैं कि प्रशासन जिस तरह से चलना चाहिए नहीं चल रहा है। विना पैसा दिए आज सरकरी दफ्तरों में काम नहीं होता है। इस से आम आदमी का क्षुब्ध होना स्वाभाविक हैं, आवश्यक हैं। मैंने पिछले विवाद में कहा था कि एह एक पार्टी की विफलता नहीं है, सारी व्यवस्था

टूट रही है, जनता लोकतंत्र में निष्ठा खो रही है। किसी के भड़काने ने लोग गोलियां नहीं खाया करते । अगर बिहार में जो कुछ हो रहा है वह हम कर रहे हैं तब तो हम बड़े शक्तिशाली हैं। मगर हम इतने शिव इशाली नहीं हैं। गुजरात में तो हमारी कोई स्थिति भी नहीं है । मगर गुजरात में सरकार को त्यागपत्न देने के लिए मजबुर होना पड़ा । गुजरात की विधान सभा तोड़नी पड़ी क्योंकि गुजरात में जनता बिगड़ी स्रौर श्राज विहार में जनता का रोष जाग रहा है। श्राप उस के कारणों में जाने की कोशिश कीजिए। क्या कोई इस बात से इनकार कर सकता है कि बिहार आर्थिक दिष्ट से, सामाजिक दृष्टि से पिछड़ा हुम्रा है ? प्राकृतिक साधनों से भरपूर लेकिन गरीबी में स्रकाण्ठ डूबा हुन्रा विहार भ्रभी तक नहीं बिगड़ा यह ताज्जुब की वात है, श्रब बिगड़ गया यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है। 21 सितम्बर 1973 को विहार के राज्यपाल क्या कहते हैं, यह मैं बताना चाहता हूं, श्रान्दोलन तो बाद में हश्रा । हिन्दू के संवाद-दाता ने बिहार के राज्यपाल से भेंट की। 37 लाख रुपये के एम्प्लायमेंट देा के ऋश प्रोग्राम के बारे में पूछा। भण्डारे साहब ने क्या कहा ?

"There is no crash programme in Bihar. There is only one programme in the State, and that is crush programme."

यह ग्रान्दोलन से पहले की वात है। बेकारी से तस्त विद्यार्थी बिगड़े। ग्रव कहा जा रहा है, कांग्रेसी सदस्य कह रहे हैं, हमारे ग्रन्य मित्र कह रहे हैं कि विद्यार्थियों की मांगें उचित हैं। ये मांगें कब से उचित हो गईं? क्या यह सच नहीं है कि ग्राज मांगे तभी उचित होती हैं कि जब उन के समर्थन में लोग सड़कों पर निकल ग्राते हैं? शिक्षा पढ़ित में परिवर्तन की मांग ग्रगर उचित है तो उस को मनवाने का तरीका क्या है ? इस सदन में सब

कांग्रेसी सदस्य कह रहे थे कि शिक्षा पदिति दोषपूर्ण है। उस को बदलेगा कौन? शासन बदलने के लिए तैयार नहीं है तो क्या विद्यार्थी ग्रपने भविष्य को ग्रधकार में इवा कर विश्वविद्यालयों की खाक छानते फिरे ? मैं बाहर के विद्यार्थियों को बधाई देना चाहता हू कि वे अपनी उचित मांगो को मनवाने के लिए ग्रान्दोलन के रास्ने पर आए । यह ठीक है कि स्नान्दोलन शातिपूर्ण होना चाहिए । लेकिन गै कास्टीट्यूशन में श्रीर एक्स्ट्रा-कास्टीट्यूशन मे एक झतर करना चाहता ह । आन्दोलन शानिपूर्ण हो । मगर ब्रान्दोलन एक्स्ट्रा शस्टः च्युगनल हो सनता है । हमारे कांस्टीट्युशन में सत्याग्रह भी नहीं है। किसी से हाथ जोड कर कहना कि भाप त्यागपत्र दे दे कास्टीट्युशन में इस की व्यवस्था नहीं है। विहार की विधान सभा भग करने की माग करना सविधान के अतर्गत नहीं है। लेतिन एक बार केरल की जनता बिगडी थी ना वेरत की विधान सभा भगकी गई थी।

श्री भोगेन्द्र झा वंग्ल ेसता नहीं ।सनाथी। ऊपर से फिसिस विद्यागपाथा।

श्री पटल बिहारी वाजपेशी . जो वात राग्न के लिए भोगेन्द्र झा जी कह रहे हैं वह विहार के लिए नहीं कह रहे हैं। केरल श्रीर विहार को नापने के दो बज नहीं हो सकते।

सभापति जी, स्थिति वह है कि तकेंसंगत श्रीर न्यायोजित मार्गे भी तब तक मुनी नहीं जाती, जब तक जनता उन के पक्ष में सडकों पर नहीं झाती । रेलवें कर्मचारयों ने हड़ताल की धमकी दें दी तो बोनस के बारे में श्री लित नारायण जी मिश्र चर्चा करने के लिये तैयार हो गए, वरना वह बात करने के लिये भी नेयार नहीं थे....

रेल मंत्री (श्री एल० एन० मिश्र): ं नेमशा तैयार था। हम बार बार कहते है कि चर्चा करने के लिये तैयार है। श्री प्रटः बिहारी साजपेशी प्राप ने कहा था कि बोनस नहीं मिलेगा, बोनस के बारे में बात नहीं हो सकती।

श्री एस० एन० सिथा साय प्रामीडिंग्ज को देखिये।

श्री श्रटल बिहारी वाजपेयी . मेरा निवेदन है कि श्राज लोगा के श्रन्दर से यह विश्वाम डिंग गया है कि शान्तिपूर्ण तरीके से उन की बात मुनी जायगी । यह विश्वास फिर में प्रतिष्ठित होना चाहिये । यह प्रश्न श्रारोप-प्रत्यागेप वा नहीं है, इस विश्वास को कायम करने के लिये श्रारंग्या कर रहे है?

सभापति जी, गृह मत्री जी न ग्रपने वननव्य मे यह बात नही हे—

"I sincercly hope that all sections of the House would join in my earnest appeal to the students and other in Bihar, Gujarat and clsewhere to eschew volence and cooperate wholeheartedly in maintenance of prace and harmony and in upholding the basic values of our democracy society"

मझे लगता है वि बहार ने विद्यार्थी जो कुछ कह रहे है उस में और गृह मबी जी हे कथन से कार्ड ग्रन्तर नहीं हैं। विद्यार्थी जो कह रहे हैं उस का एक ग्रम मैं पढ कर मुनाना चाहता हु—

"प्रदेश की मीजूदा सरवार कातिल है,
यह खत्म हो । लेकिन मात्र मित्रमङल
में हेर-फेर हमारा लक्ष्य नहीं है ।
सरकार बदलना या नयी विधान
सभा को चुनान भी हमारा लक्ष्य नहीं
है । हमारा तक्ष्य ह उन के चरित्र को
बदलना । लोकतातिल मृत्य नगर होते
हे, लाकताबिक प्रत्याय भ्राट होती
है, तो लोकताबिक मन्याये खिलोना
बन जानी है। ग्राज यही स्थित है,

[श्री ग्रटल बिहारी वाजपेयी]

इसी कारण लोकतंत्र की ग्रीपचारिकता एक मखौटा वन गई है जिस के पीछे भ्रष्टाचार, दामों की लुट ग्रौर ग्रातंक का राक्षस ग्रपना मुंह छिपाता है । हमारा लक्ष्य है बालिग वोट के स्रधि-कार को वास्तविक बनाना, लोक-तांर्जिक मुल्यों, प्रक्रियायों ग्रौर संस्थायों के पीछे बिराट ग्रौर संगठित जनशक्ति को खडा करना क्योंकि ऐसी लोक-तांतिक शक्ति ही महंगाई, भ्रष्टाचार ग्रौर बेरोजगारी के राक्षस का वध कर के प्रत्येक नागरिक को सुरक्षा ग्रौर ग्रात्म सम्मान का जीवन प्रदान कर सकती है। हमारी लडाई म्राथिक, सा-माजिक ग्रौर राजनीतिक क्षेत्रों के मौजुदा घिनौने स्वरुप को बदलने की जनता को उस की शक्ति और अधिकार से लैस करने की लडाई है।"

श्री हरि**कि कोर सिंह** : **य**ह ग्राप का ड्राफ्ट है ।

श्री ग्रटल बिहारी वाजपेयी: ग्रगर मेरा ड्राफ्ट है तो ग्राप ने जो दोषरोपण मेरे ऊपर किये हैं उन का कोई ग्राधार नहीं रह जाता । बिहार के विद्यार्थी वड़े उद्देण्यों के लिये लड़ रहे हैं। सरकार को गम्भीरता से विचार करना होगा कि देश के ढांचे में बु-नियादी परिवर्तन कैसे लाया जा सकता है।

मैं कांग्रेस के मित्रों से पूछना चाहता हूं—— ग्रगर सरकार शिक्षा पद्धित में परिवर्तन करने की उचित मांग को न माने तो क्या विद्यार्थियों को हाथ पर हाथ धरे बैंडे रहना चाहिये ? ग्रव वे नहीं बैंडेंगे——यही परि-वर्तन ग्रा गया है ग्रौर यह परिवर्जन लाने में हमारी प्रधान मंत्री जी ने वड़ा योगदान दिया है। ग्रव जनता मन को मसोस कर नहीं बैठेगी, ग्रव जो ग्रमाव से पीड़ित हैं जो बंचित हैं, जो शंधित हैं, जो दलित हैं, ये वर्तमान के साथ समझौता नहीं करेंगे। स्राप ने स्रपेक्षा का ज्वार जगाया है, स्रगर वह स्रपेक्षा पूरी नहीं करेंगे तो स्रपेक्षा वगावत के रूप में सडकों पर निकलेगी—स्राज यही हो रहा है।

29 दिसम्बर, 1970 को प्रधान मंत्री जी ने चण्डीगढ़ में भाषण करते हुए कहा था— ग्रगर गरीबी बढ़ेगी, विषमता बढ़ेगी तो लोग हिंसा का ग्राश्रय लेंगे, लोग सड़कों पर निकल ग्रायेंगे—श्राज बही हो रहा है । जिन्होंने ग्रांधी के बीज बोधे हैं उन्हें तूफ़ान की फसल काटने के लिये तैयार रहना चाहिये।

बिहार में जो कुछ हुन्ना है—उस में एक घटना स्रभी तक पूरी तरह से सामने नहीं स्नाई है। सरकार ने भी सर्च ल इट पर हुए हमले की जांच का श्रादेश नहीं दिया है। यह प्रेस की स्वाधीनता का मामला है। विहार के काण्ड के लिये हमारा दल दोधी ठहराया जाता है। किन्तु सचाई क्या है? कुछ दिन पूर्व सर्च लाइट के सम्पादक यहां स्नायेथे। उन्होंने एक प्रेस कान्फरेंस की थी। मैं उन के कुछ शब्दों को यहां उद्धृत करना चाहता हूं—

"The burning down of the offices and press of the Searchlight was a deep-laid conspiracy against an outspoken newspaper, Shree S. K. Rau, its Editor, said here today.

He said the complicity of the State Government in the conspiracy was clear from the facts that the Police were not ordered to take action against the mob and the fire-brigade services were not available even on the day after the arson.

Mr. Rau was emphatic that the mischief-mongers were neither students nor the Anand Margis. He also excluded the R.S.S. and the Jan Sangh.

He said, the Bihar CPI was particularly uphappy because of the criticism it got."

(Interruptions).

SHRI BHOGENDRA JHA: Mr. Rau is himself a Jana Sanghi...

श्री श्रटल बिहारी वाजपेथी: सभापित जी, सर्च लाइट के सम्पादक ने जांच की मांग की है श्रीर यह कहा है कि ग्रगर जांच कमीशन बनेगा तो वे ग्रीर तथ्यों को कमीशन के सामने रखेंगे। मैं जानना चाहता हूं कि सरकार सर्च लाइट पर हुए हमलों श्रीर ग्रीन काण्ड के लिये जांच कमीशन बनाने को तैयार क्यों नहीं है?

दूसरी बात — गया के बारे में है। बहुत सी बातें कही गई हैं, मगर मेरे सामने श्री मुद्रिका प्रसाद सिंह, एक्स एम०पी० का बयान है, वे कांग्रेस के हैं, एक जिम्मेदार श्रादमी हैं— उन्होंने कहा है—

"He told reporters here today that about 40 to 50 persons were killed in indiscriminate police firings at Gaya on April 12, according to a general public belief.

He said that for 48 hours the entire people of Gaya were under house arrest. The patrolling armed forces announced every five-minute that anybody coming out of his house would be shot dead."

यहां गृह मंत्री महोदय का बयान गलत साबित हो जाता है ।

"Mr. Singh said that according to official figure only 8 persons were killed in the police firing. But God alone knew how many people were killed. But the fact remained that several bodies were whisked away in pelice vans. The bodies were also dragged up to a considerable distance. The clot of bloods on several roads spread over a distance of 20 ft. bore testimony to it.

He said that the police opened fire near the post office, Jain Mandir, Wool House, Kiran Cinema, Sabji Market, Motimahal and at other places. The body of a 12-year boy was found abandoned in the river Falgu.

The students agitation, he said, was most peaceful. It was spontaneous. There was a mass upsurge among the people as well. The work in all the Government offices had been totally paralysed by offering dharna which had been most peaceful. There was no physical obstauction by the students.

He said that the local officials had conspired to resort to firings only to teach a lesson to the students and the people of Gaya. Although the firings were opened at 3 P.M. he had secret information that the conspiracy was hatched at 9 in the morning on that day."

यह किसी प्रतिपक्ष के सदस्य का बयान नहीं है, यह श्री मृद्रिका प्रमाद सिंह जो कांग्रेस के एम०पी० रहे हैं, उन का बयान है । हमारे कांग्रेस के सदस्य कह रहे थे कि जो मरे हैं उन में विद्यार्थी नहीं हैं। क्या इस का अर्थ यह नहीं है कि आन्दोलन केवल विद्यार्थियों तक सीमित नहीं है, इस में जनता भी वड़ी माला में शामिल हो गई है ? क्या यह जन-ग्रान्दोलन नहीं बन गया है ? क्या यह सही नहीं है कि पुलिस ने महिलाओं के साथ दुर्ब्यवहार किया है ?

श्री उमा शंकर दीक्षित: यह सही नहीं है।

श्री ग्रटल बिहारी वाजपेयी क्या ग्राप देखने गये थे? मेरा दीक्षित जी से निवेदन है कि विहार की सरकार जो कुछ कर रही है केवल उस पर भरोसा न कर के ग्राप केन्द्र की तरफ़ से जांच कराइये। महिलाग्रों के साथ दृट्यंवहार का मामला किसी पार्टी का [श्री ग्रटल बिहारी वाजपेयी]

मामला नहीं है । ग्रगर यह ग्रारोप गलत है तब तो सरकार को ग्रदालती जांच की मांग स्वीकार करने में ग्रौर भी श्रापत्ति नहीं होनी चाहिये । तथ्य सामने ग्रा जायेंगे, दूध का दूध स्रौर पानी का पानी हो जायेगा जो झूठे स्रारोप लगा रहे हैं उन की कलई खुल जायेगी। बिहार में गोली चली, इतने लोग मारे गये, सर्च लाइट पर हमला हुग्रा-इन सब बातों की जांच से सरकार क्यों डरती है ?

मुझे खेद है कि इस चर्चा में श्री जय प्रकाश नारायण जी का नाम भी घसीटने की कोशिश की गई है। जो उन के चरणों में बैठने की पावता भी नहीं रखते, वे ग्राज उनके माथे पर कीचड़ उछालने की कोशिश कर रहै हैं।

जय प्रकाश जी से मतभेद हो सकता है लेकिन उनकी देश भिकत में कोई सन्देह नहीं कर सकता है। लोकतंत्र एक साधन है, साध्य नहीं हैं। जयप्रकाश जी को पूरा ग्रधिकार है कि वे यह कहें कि लोकतन्त्र के वर्तमान ढांचे में बुनियादी परिवर्तन की म्रावश्यकता है। लेकिन इसके कारण कोई यह नहीं कह सकता....(व्यवधान)..

ग्राज बिहार जल रहा है, बिहार की सड़कें रक्तरंजित हैं, सरकार जुल्म श्रामादा है। संगीनों से लोगों को मारा जा रहा है लेकिन संगीनों पर वैठा नहीं जा सकता

में साहिर लुधियानवी की एक गजल का एक हिस्सा रखते हुये खत्म करना चाहता हूं :---

> जुल्म फिर जुल्म है बढ़ता है तो मिट जाता है,

> खुन फिर खुन है, टपकेगा तो जम जायेगा.

> तुमने जिस खून को मक्तल में दाबाना चाहा,

> ग्राज वह कूचा ग्रो बाजार में ग्रा निकला

कहीं शोला, कहीं नारा, कहीं पत्थर

खुन चलता है तो रकता नहीं संगीनों से, सर उठता है तो दबता नहीं ग्राईनों से, जुल्म की बात ही क्या, जुल्म की श्रीकात हीं क्या,

जुल्म वस जुल्म है श्रागाज से श्रंजाम तलक खून फिर खून है, सौ शक्ल बदल सकता है,

ऐसी शक्ल कि मिटाग्रो तो मिटाये न वने, ऐसे शोले कि बुझाओं तो बुझाये न बने,. ऐसे नारे कि दबाग्रो तो दबाये न बने ।

पुलिस अत्याचार से समस्यायें हल करने के बजायें विद्यार्थियों के साथ, नयी पीढ़ी के साथ सम्पर्क करने का सेत् स्थापित की जिये, सरकार और प्रतिपक्ष के बीच पूल टूट गया है वह स्थापित कीजिये । ग्राप की विश्वस-नीयता खत्म हीं गई है। उसको कायम करने की कोशिश कीजिये। हमको दोष देने से समस्या हल नहीं होगी। यह प्रश्न एक पार्टी का नहीं है, सारे देश का है । गुजरात एक चेतावनी थी, विहार में वह चेतावनी दोहराई जा रही है। अगर हम नहीं सुनेंगे तो देश भर में स्राग भड़केगी जो हम सबको ले बैठेगी ।

श्री विभृति मिश्र (मोतीहारी) : ग्रभी बिहार के बारे में बहुत तरह की मांग हुई। एक बात यह है कि विहार का मामला राशन श्रीर भाषण से तय होने वाला नहीं है। यदि श्राप चाहते हैं कि विहार के मामले को राशन श्रीर भाषण से तय कर लें तो यह तय होने वाला नहीं है। बिहार की आर्थिक पीर-स्थिति बहत खराब हैं। स्रंग्रेजी राज्य के जमाने में बिहार की ऋषिक दिष्ट से 11वीं पोजीशन थी लेकिन ग्राज नागालैंग्ड के बाद स्राखिरी पोजीशन बिहार की हो गई है। गरीवी की वजह से आज बिहार में छात्रों के अन्दर असन्तोप है। छात्र समझते हैं हम पढ़ कर क्या करेंगे ? ग्रंपने मां बाप की जायदाद जमीन को बेचकर छात्र पढ़ता है ग्रौर फिर वी० ए०, एम० ए० पास करने के बाद उनको कहीं जगह नहीं मिलती है। इस तरह उनके घर की जमीन जायदाद भी बर्बाद हुई स्रौर पढ़ाई के बाद छात्र भी बेकार हो गया। यह बेकारी का मसला जो बिहार में है उसको केन्द्रीय सरकार को हल करना चाहिये। कितना ही समय बीत गया लेकिन विहार की भ्रार्थिक परिस्थिति में सुधार नहीं हुन्ना । त्रगर ग्राप वहां पर ग्राथिक स्थिति में सुधार नहीं करेंगे तो बिहार की यह ज्वाला मिटने वाली नहीं है। (ब्यवधान) पीलू मोंदी जी, हां कारखाना बिहार में है लेकिन एक बिहारी को ीकरी नहीं मिलती हैं, बम्बई से श्राकर लोग नौकरी पाते हैं।

सभापित जी, मैं चाहता हूं गृह मंत्री जी छात ग्रौर शिक्षक दोनो को बुलायें। पहले भी मैंने यह मांग की है कि इन दौंनों के नेताग्रों को बुलाकर ग्राप बात करें ग्रौर केन्द्रीय सरकार की ग्रौकात में जितनी ताकत हो, ग्रविलम्ब उनकी समस्या को हल करने का प्रयत्न करें ग्राप छात्र के नेताग्रों को जरूर बुलायें ग्रौर शिक्षकों के नेताग्रों को भी बुलायें, बात करें ग्रौर फिर यह जो कहते हैं कि जन ग्रान्दोलन हैं वह जन ग्रान्दोलन नहीं रहेगा।

तीसरी बात यह है कि जैसा बाजपेयी जी ने कहा, वे जिसकी साठ-गांठ में है, उन्हौंने मात्रो त्रौर गांधी की एक साथ तुलना की है। मात्रो कहता है राज्य निकलता है बैरल ग्राफ गन से ग्रीर गांधी जी कहते थे सत्य श्रहिंसा श्रीर तपस्या से राज श्राता है। अब बोनों लाइन बाई लाइन एफर्ट करते हैं पटना के मैदान में तो यह कैसा मेल है। वाजपेयी जी बतायें कि गांधी जी स्रौर मास्रो का कैसा मेल है जोउनकी तुलना की जाती है कि माम्रो भौर गांधी एक हैं? (व्यवधान) आप यह विहार का म्रान्दोलन बिहार मत समझिये. यह सारे देश का म्रान्दोलन है। बिहार के श्रान्दोलन में दुनियां की ताकतें काम कर रही हैं। वाजपेयी जी को पता न हो तो वहां स्टेशन पर जाकर देखें कि कहां कहां के लोग म्राते हैं स्रौर जाते हैं। इसलिये में चेता-वनी देना चाहता हूं कि सरकार को कि वह समझे, ग्रगर नहीं समझेगी तो फिर बिहार का मामला श्रापके हाथ में नहीं रहेगा, हिन्द्स्तान का मामला नहीं रहेगा। इसमें मात्रो ग्रौर गांधी, दोनों के भाव एक साथ हैं। दोनो भावीं को लेकर यह श्रान्दोलन श्रागे बढ़ रहा है। मैं चाहता हूं विद्यार्थियों ग्रौर शिक्षको से बात करने के बाद जो इसमें कैद हैं उनको म्राप छोड़िये मौर फिर विद्यार्थी या शिक्षक जो भी हों, उनसे बात करने के बाद ग्राप इस मामले को शीघ्र से शीघ्र हल कीजिये।

वहां पर महंगाई की हालत मैं ग्रापसे क्या बताऊं, मुझको रिपोर्ट मिली है कि मेरे जिले में दो रुपये किलो नमक बिक रहा है। इसलिये मैं कहूंगा कि ग्राप महंगाई को दूर कीजिये। मैं कांग्रेस पार्टी का मेम्बर हूं, जवाहर लाल जी ने कहा था कि कोई ब्लैक-मार्केटीयर हो तो उसको लैम्प-पोस्ट के पास मार दिया जाये। मैं ग्रपनी सरकार से पूछना चाहता हूं कि 25-26 साल की ग्राजादी के बाद ग्राज तक कितने ब्लैक-मार्केटीयर्स को ग्रापने पकड़ा है ग्रीर कितनों को लैम्प-पोस्ट के पास सजा दी हैं। एक भी ब्लैक-

[थी विश्वति निथा]

मार्केटीयर को नही । इसलिये मैं वहगा कि आप राज चलाना वाहते है ता वर्षत-मार्के-टीयमें को पशाद . चारे जिए पाटी वे भी दां भीर पन डकर उनका लज दानिय।

एक बात की मेरी माग है कि वन्द्रक के टोटे और गोली को सस्ता न की जिए। यह बन्द्रक की गोली और टोटे इमलिए नहीं बनाये गए हैं कि हमारे ही बाल -च्चा पर चलाये जाये । मैं भ्रापको बेतिया घटना बताता हु कि एक लडके ने ईटा फेंका; एस॰ पी॰ के गाल पर लगा, मैंन मुना है एस॰ पी॰ ने तुरन्त उसको गोली से मारा भीर वह मर गया । तीन घट के बाद दूसरी बार गोली चली । मेरा कहना है किसी ने हमको ईटे से मार दिया तो उसको गोली मे मारने का हक हमको नहीं है। मैं चाहता हूं भाप इसकी जाच करवाये । हमको माहस होना चाहिए कि मारी बिहार की घटनाम्रो की जाच हम करवाये । जयप्रकाण जी के चैलेज को हम म नन हैं, उन्हें रहा सरकार रिटायहं भ दमी को रख देती है, भ्राप रिटायहं ब्रादमी नो नही बल्कि मुत्रीम कोई के किमी जज को लीजिए और उससे किया एक अवधि निश्चित करके कि 10-15 राज य एक महीने मे सारी घटनाथ्रो की जाच रखके हमकी दीजिए ।

सचलाइट के साथ मेरी पूरी महानुभूति है। जब हम बच्चे ये तब सर्चलाइट को पढ़ा करते थे, उसकी भी जाच होनी चाहिए क्योंकि सर्वनाइट की जला देने से बिहार का इतिहास अल गया है।

एक बात में भीर कहन। चाहता हु कि जहां पर लेडीज सत्याग्रह करें वहा उनके लिए लेडीज फोसं होनी चाहिए। बिहार में इसकी वमः है। जहां लेडीज का सत्यापह हो वहां पर माप लेडीज फोर्न रखिए तभी वाजपेगी र्जा ना जबाब हम दे सकते है। वाजपेयी जी के नाय मेरी सहानुभृति है लेकिन इनके

अपर प्राक्षेप करने के पहले हमको प्रपना दिल सर्च करना चाहिए । लकडी जब सूची हो तभी उन रे भाग लगती है, भगर लक्दी गीली हो तो उसा धाग नही लगेगी। बह लकड़ो सूखी हम। की है। पिछले 20-25 वर्षों मे हम रे गवर्न हेट चलाई है तो हमको कब्ल करना चाहिए। गाधी जी जैसे बादमी न भी यता था विहिमानयन कान्डर हुई । एक हिंसा भी वजह से जो चोरा चोरी' प हुई धमहयाग भ्रान्दोलन उन्हों। बन्द रर दिया। हम को सरकार चलानी है इसलिए यह न समक्षिये कि जिसवा भाई भतीजा या बेटा मारा गया वह हमारा साथ देगा । हमन देखा था कि मरेश प्रसाद सिंह हार गए महा माया बाबू में एक विधवा श्रीरत को खडा कर दिया जिसका पति पटना म गोली से मारा गया था। ग्रब वहा के रहत वाले महेश प्रसाद सिंह को सारन के रहन बाबे महा माया बाबू में हरा दिया । इसलिए हमको बहत द ख है भीर बद है कि गाली से जितन लोग मारे गए उस से कितनी भीरते विधवा हो गई और वितनी मा बगैर बच्चे ही हो गई।

सभापति महोरय ग्राप रा टाइम खत्म हो चुना है। माफ नीजिएगा, ग्रीर समय देना मुच्चित है। इस सब्दा पर जिल्ला भी डिस्कणन दुझा है, इसमें बुछ ग्रच्छा नतीजा निवलेग। यह बहुत ग्रन्छी बात है लेकिन जो प्रीग्राम दिया गया है, उसके मुताबिक 4 बज बर 15 मिनट पर मिनिस्टर साहत को रेप्लाई देना है भीर भभी मेरे पास लम्बी लिस्ट है 14 माहबान बोल ने वाले हैं। भाप तो बजर्ग है, भाप को खुद इस सिलसिले मे कीधापरेशन करना चाहिए।

श्री विभूति शिश्र में दो मिनटमें खत्म कर दूगा।

में प्रपने गृह मत्री जी से कहना बाहता हं कि जितने लोग धपोजीशन भे बैठे हुए हैं, उन से वे माबधान रहे क्योंकि हमारे यहां

जैसी कहावत है, 'वधवा धईलख त घर गईम बचीनिया धर्दलखत घर गईत '। किसी ने 16 को मुरू किया और किसी ने 18 को किया। ये सब हम को खाने वाले हैं। इसलिए मैं कहता ह कि आप सचेत रहिये और अपनी ताकत पर भरोसा कीजिए । ग्रगर किसी विरोधी पार्टी की ताकत पर यह मरकार भरोसा करेगी, तो यह जिन्दा रहने नाली नहीं है। प्रगर कोई पार्टी लेफटिस्ट है, तो हमें लेफटिस्टेम से आगे होना चाहिए, अगर कोई तपस्वी है, तो हमें उससे ज्यादा नपस्वी होना चाहिए। इमलिए किसी के भरोसे हमे नहीं चलना चाहिए और भ्रपनी ताकत पर भरोसा होना चाहिए। भगर हमारी ताकत में कोई कमजोरी है, तो उस को दूर करें। पहले लोग जंगल में जा कर तपस्या करने वे भौर तपस्वी बनते थे। इसलिए मैं भपनी सरकार से कहंगा कि ग्रगर ग्राप न्याय, त्याग भौर नपस्या के बिना राज्य करना चाहते है, तो भ्राप इस गद्दी पर नहीं बैठे रह सक्ते हैं। वस मुझे इतना ही कहना था।

श्री यमुना प्रसाद मंडल: (समस्तीपुर):
मभापित महोदय, प्राज यहा बिहार की
स्थिति के बारे में विचार नहीं है, प्राज तो
तिक्वीडेशन ग्राफ डेमोकेसी का जो प्रो-प्लान
नग्ने वाले लोग है, उन के विषय में हमें
विचार करना होगा। फामिज्म लाना है,
प्रजातक को बढाना है, प्रजातंत्र के रास्ते
किनने कड़े होते हैं, कितनी हडिल्स होती हैं,
इम पर विचार करना है।

बिहार को स्थिति के बारे में वो एक गाउद में आपसे पहले कहना चाहता हूं। मैं मब से पहले उन निर्दोष व्यक्तियों के प्रति, जो इन लोगों के बहकाबे पर मुण्ड में गये वे—उन का कोई दोष नहीं था—मौर उस म व मौत के शिकार बने, अपनी श्रद्धांजिल अपिन करना चाहता हूं। उन के परिवार के लिए जिननों भी दया हमारे मजी करें, वह बहुन कम होगो। मैं आप को बताज अपने संमदीय

क्षेत्र समस्तीपुर की बात, वहा की प्री-पल निग की बात । 27 फरबरी को समस्तीपूर बन्द का आयोजन किया गया । कहा गया और नारे लगाए गये, हर गलियों में नारे लगाए गये कि खून की घारा बहायेगे, खुन की धारा बहायेग । वह डिवीजन र हेडक्वार्टर है...... (व्यवधान) ग्राप हमें शिक्षा दीजिए हनुमान जी। तो मैंने देखा कि इस गड़बड़ की स्ट्रेटजी पहले ही कर ली गई थी। 27 तारीख से पहले ही इन लोगो ने इस को गुरू किया था भीर एक निरीह राम बाबू माह को इन्होंने राम के घर पहुचा दिया। यह इन की करामात है। सन् 1967 में भी इन लोगो ने समस्तीपुर से ही यह शुरु किया था और वह 1967 का इतिहास ये फिर समस्तीपुर से दोहराना चाहने थे। मगर वहां की जनता चेत गई। वह जान गई कि 1967 में उन लोगों ने क्या गलती की थी। इस तरह राम दयाल कालेज से कैसे दीना नाथ पांडे को लाया गया । तो यह प्री-प्लानिंग सभापति महोदय, 27-2-74 से पहले से ही हो रही थी मगर जनता ने इन स्थानो पर इन का साथ नही दिया। फिर बा कर क्या हवा। इस हाउम में मैंने प्रश्न किया कि क्या यह सही है कि मानन्द मूर्ति से माप मानन्द की शिक्षा-दीक्षा लेने गये थे? तो नया जशब दिया था गृह मत्री जो ने । वह सारे हाउस को इस महान लोक सभा को मालूम है कि वहां ए,बी सी नहीं , वहा एम बो, बी गये वे भीर उन के साथ तीसरे भी गये थे । (व्यवकान) श्री घटल बिहारी का नाम मैं घब नहीं लूंगा। धव वे घटल नहीं रहे भण्छे रास्ते पर । आज बे हिंसा के रास्ते पर उतर भाए हैं। एक श्रव 'ए' के साथ 'बी, बी' की है, एक ब्लंडी बाथ ए ब्लंडी बाथ.... (व्यवसम्) भाप गालिया दोजिए, मैंने उन को स्वोकार नहीं कर सकता। तो घव व्नेडी [की यमना प्रसाद संडल]

रास्ते पर आ गये है। ए, बी, बी साहब, आप के मास्ते बड़ी वस्तृता की शक्ति ै, आप बहुम्यारी हैं। आप बाते तो ऐसी लम्बी लम्बी करते है मगर क्या बते करने गये थे और क्या क्या बात को । 18 तारीख को सब से घणित बात जो सारी दुनिया मे हुई वह यह थी कि चार अखबारो पर बड़ा भारी आपात हुआ। शी बी० एन० आजाद जो कि आल इण्डिया एडीटर्स वान्के: क प्रेम - डेट हैं, वह क्या कहते हैं:

"This was an attack on the very concept of freedom of expression It must have been inspired"

I correct the great President, not inspired, but instigated" by believers in suppression of human liberty"

माज हमे बडी मंत्रीरता से इन सब बातों पर विचार करना है। ग्रम्प वे यह समझते हैं कि ग्रखबारों को बन्द कर देवें से वह जनता की इच्छा को बन्द कर सकते हैं, तो उन का ख्याल मही नहीं है। उन के बाद हमारे श्री चन्द्रजीत यादव वहां गये और उन्होंने एन्टी-सोझल एली मैट्स को तो शान किया और सब कुछ किया, मगर बहां क्या हुआ, उन के बारे में मैं दो एक शब्द आम से कहना चाहता ह।

स्रामाणि महोदय, काग्रस (स्रो) के एक वहें नेता' हैं। व यह नेता है सौर उन के फिला का स्थान देशभक्तों में नम्बर 1 की पिता का स्थान है। उन्होंने जो करामाल वहां पर भीतर ही भीतर की, उस के बारे में मैं यही कहता हूँ, "ने दूबता हैं एक बागी नाव को मसदार में।" सारे पाटलिपुत को, सारे दुझ के बिहार को एकदम उन्होंने पूर्ण रूप में कर्णाकत कर दिया। सब वह यहा नहीं हैं। मैं उनसे जवाब चाहता हूं कि भाप लोगों ने 18 के पहले ही 15 तारीख को एक गुष्त बैठक की बी या नहीं की बी? क्ताइए जवाब दीजिए।

These groups held a most secret meeting and decided to exploit the issue of soaring prices and all these and what not.

मे मानता हू कि विहार गरी ब है, प्रथम प्रान में यह तीमरी केगी में या घोर घव यह बीन वे स्थान पर है। पा कीण्टा इन-म में, गृह मती महा य, में बाऊ कि वह 19 वें स्थान पर चला गया है। सब केवल दी सीढी उस को नीचे घीर जाना है घीर बस, खत्म है। इस इम्बैलैस को दूर करना होगा। मैं गृह मती महोदय से कहना चाहत। ह कि उन्होंने इत लिया है 22 लाख बिलो पावर्टी लाइन के लोगों को ऊपर उठाने का तो जम वह पूरा करें। विद्याधिया के विषय में मैं ज्लात हू कि विद्याधि विद्याधी विद्याध

गर । द्रा सवा व सब्ध मे पहला चाला। ह को कि जनसम्ब के श्रीई श्वर जी ने बड़ी भविष्यवाणिया की है। ईष्ट्रवर जी सन ले वह बी बी लाल बाई ए एम वही के रहने वाल थे. वही के प्रोफेसर थे। उन को बडा अन्भव या इमलिए उन को बहा मेजा गया था और गफर साहब ने भेजा था। वह जानते थे वि नायम (ता) रे यह नगः तहा रहते हैं सी व कुछ न कुछ झसर भाज नहीं तो यल वहा मचाएगे। इनलिए उन को बहा भेजा गया था। 18 तारीख की जब सब कुछ शानिपूर्वक वहा हो गया तब वह बी बी लाल अच्छे थे। भीर 7 सप्रैल को साकर वह खराब हो गए ? वही बी बी लाल क्या 7 अप्रैल की बदल गए? मैं क्हता ह आप की करतूर्त बदल गई होगी। भाप की करतूते काली हो गई होगी। लाल साहब का उस में कोई कमूर नहीं है।

श्रंत में एक बता मैं और कहन। चाहता हूं । कास्थलेसनेस के बारे में मेरा एक दिल है। गृह पंत्री महोदय की भैं एस की प्रति दूंगा। वहत सिम्पल विल है । उस की वह पढ़ें ग्रीर देखें । गंपारहर्श्वात ७३ पर विचार 📑 सीर ास्टिजम का हटाने का 🕝 स घर ।

SHRI SAMAR GUHA (Contai): Sir, when a man is off his head we know by what name he is described. To-day the Congress Party is seized with political lunacy, and that is the reason why they are finding, either in Gujarat or in Bihar, that somebody has been planted from outside; some agent provocateurs are there; some CIA agents are there; even the Sarvodaya people and Shanti Sena people have become CIA agents create all kinds of troubles! Fortunately, they have not said as the word lunacy means that somebody has come from the moon to plant this kind of trouble either in Gujarat or in Bihar,

What has happened in Gujarat and what is happening in Bihar is not merely an agitation; they are not mere students' agitations, they are not mere demonstrations; they are not mere movements-they are of greater significance and of greater values. The people having vested interests, when they are going to lose pelf, pomp and power, and everything, like naturally they are terribly afraid and fail to see the real meaning of such happenings. What is happening is of greater significance and has greater meaning.

You will remember, Sir, the other day, Shri Dikshit bantered when I said that Gujarat has shown a new way between election and revolution. They have shown the way, the way of moral revolution. The banner that was raised by the youth, the green souls of Gujarat, the great community of people of Gujarat, that banner has been taken a step forward to Bihar. That banner of revolt, the banner of moral revolution

against all kinds of corruptions,political corruption, economic corruption, social and cultural corrupadministrative corruption, corruption galore, corruption which the whole country has been swamped-has been taken a step forward. When the people have lost in the political set-up, they have lost faith in all kinds of politics and when they have faith in either leftism or rightism or any 'ism', when they started hating the political communities or political parties, there, should say, the ethical or moral revolution has been started by the youth, and that banner has been taken a step forward from Gujarat Bihar.

This banner of revolution is now in the hands of the hero of the August revolution, Shri Jaiprakash Narayan. Unfortunately, I know, and I have seen and I have heard that so many statements are being issued against Shri Jaiprakash Narayan by so-called progressive congressmen. There are m y sparrows which try to spite the lions. There are many political sparrows also who are trying now to spite the lion, the lion of patriotism, the lion of sacrifice, the liton of all the embodiments and the concepts of Indian democracy, freedom and patriotism,-Shri Jaiprakash Narayan. They are trying to smite him, spite him and do what not.

Recently, Shri Chandrajit Yadav, Congress General Secretary made a statement in Calcutta which appeared in Jugantar. He says: "The peace committee of Jayaprakash Narayan and Sarvodaya people have joined hands with reactionaries. Not only black-moneys were exchanged but foreign agents were working with them in Bihar." Today we hear echoes of what some of the allies of the ruling party say and what they charge against J.P. I ask: is there any clearer person in India to-day than J.P.? He has given up all aspirations. Perhaps the young upstarts of [Shri Samar Guha]

the Congress do not know that in 1954 J.P. was invited to be the Deputy Prime Minister of India. The question was on everybody's lips at that time, after Nehru who? After Nehru who will rule India? answer was-J.P. Here is a man who sacrificed everything and has dedicated himself completely to the cause of Indian freedom and Indian cratic movement and regeneration of the whole Indian nationhood on the basis of Gandhism Unless you have been off your head you would not have chosen to attack a man who has disowned everything in the world except his idealism. That shows what kind of lunacy has seized the minds of the Congress people.

I am reminded of a mythological story. When the oceans were churned for getting nectar, poison came and later on nectar also came The devils who were ruling the world at that time were terrorised by the emergence of nectar Ultimately nectar came and nectar ruled the world It is devil which wields power in the country today, they are terribly afraid of this new wave, impact and surge of the current moral revolution, the flag of which has been raised by the youth.

I know there have been many ugly incidents and I kept silent. A man was shaved in Gujarat by angry youngmen, certainly it is not commendable. I ask Mr. Dikshitji: now whether it is a fact that in many cities of Bihar your policemen have seized young men and shaved off their heads and shaved off every thing. Is it civilized? It would have been better if such things had not happened.

What is happening and after these things happened in Bihar if it goes to U.P. and from U.P. if it goes to M.P. and then to West Bengal and then to whole of India....(Interruptions) people might call be irresponsible or insensible, yet I well hail it.

I was one who did not attack Indiraji even for a day after she assumed power, through immoral means. Such immoral thing never happened in any democratic country. The Prime Minister was the first to propose and nominate the candidature for the President. She then scuttled the party's nominee. I tried to argue to myself and convince mypolitics self that in revolutionary means and ends are perhaps always compatible if the ends are clear, if the objectives are clear if the means are revolutionary, even it is apparently immoral, then I support it I kept mum at that time When there was bank nationalisation, when there were slogans like Garibi Hatao although I was in the Opposition, I made it a point that I will support each and every progressive move of the Congress Government But now, after these years, what do we find now? Not only, the means have been lost, but the ends have been totally lost in a pool, in a whirlpool of total corruption in the country. Everything-all ethics are gone, all values are gone No political values, no economic values exist now-all values are gone in the country (Interruptions)

16 00 hrs.

You congressmen may laugh at In Bihar, in Monghyr, about 10,000 widows brought out a procession It is very significant; why these widows brought out this procession. I would say, if anybody has planted anger in the minds of the common people, if anybody has sabotaged the present political set up by rousing the hunger of the common people, if anybody has made the blood boil in the viens of our young men, it is those people who by their corrupt rule, by their lack of sense, by their lack of morality, by their denial of sense of values, by sabotaging and values. scuttling democratic sabotaging and scuttling political values, by sabotaging and scuttling the tenets and basic values of democracy, are responsible for spontaneous upsurge of the people.

Not only that. Now, the economic life of the common men has become impossibie. Can you imagine the miserable plight of the common people today? Take for example, Class III and Class IV employees cases. How can the non-wage earners live? How can these people live, the village people, the 75 per cent of the population of our country who the landless live in the villages, people, those people who have less than two and three acres? According to your statistics 42.6 per cent of the population live below poverty line. Now, the value of the rupee has gone down. According to the latest bulletin of the Reserve Bank, it is now worth 24 paise. Do you know the terrible condition in which the common people live now? Do you realise their acute pangs hunger and misery? Do you understand what is a political volcano? Where lies the lava? Where is it boiling? It is in the heart of tho common people. You do not know because you are terribly afraid, as the devil, of the mystical days about the nectar, about surge of the moral revolution raging in the country today.

Before concluding, I would say this. I do not want any enquiry committee. There is no necessity for an enquiry. The revolution has started surging, swarming, sweeping the whole of India, new revolution, new upsurge, new moral revolution and that is the only way to defend the future of democracy, future of freedom because the might of the people will ultimately triumph over the arrogance and corruption of the administration.

सरवार स्वर्ण सिंह सोखी (जमलेदपुर): वैयरमैन साहब, मैं श्री धटल विहारी वाजपेयी जो के भाषण को बड़े गीर से सुन रहा था। श्री बाजपेयी जी ने कहा कि सहरसा में बो कुछ उन के धादिमयों ने किया है, उस में से अपने लोगों के खिलाफ एक्शन लेंगे—यह अच्छी बात कही है। लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि गया में इन लोगों ने जो किया है उस पर बे क्या एक्शन लेंगे। जब इन की पार्टी—जनसंघ पार्टी दूसरी अपोजीशन पार्टियों के साथ बिहार में राज्य करती थी तब इन्होंने कितना करण्यन बिहार से हटा दिया। आज ये हम लोगों को क्लेम करते हैं—इस के लिये इन को सोचना चाहिये, ऐसे ब्लेम करना अच्छी बात नहीं है।

भीनती सहोदरावाई राय (सागर): 18 महीने मध्य प्रदेश में भी राज्य किया था, जब नहीं चला तो छोड कर भाग गये।

भी ईश्वर चौबरी : गया में जो हुआ। उस का उदाहरण दीजिये ।

सरवार स्वर्णसिंह सोकी: कहा गया है कि वहां जिल्यावाला बाग बना दिया था। ऐसी बान नहीं हुई थे। प्रभी सिन्हा जी ने कहा कि पुलिस के पास झांसू की गैस भी नहीं थी लेकिन मेरी जानकारी है कि पहले पुलिस ने उन को वानिंग दी, मजिस्ट्रेट ने वानिंग दी, उस के बाद टीयरगैस मैल्ज चलाये गये, 27 मैल्ख चलाये, उस के बाद पुलिस का विराव किया गया, तब उन्होंने अपनी हिफाजत के लिये गोली चलाई।

रामावतार शास्त्री जी ने कहा कि लोग दौडते हुए मारे गये—यह गलत है, दौड़ते हुए नहीं मारे गये। जब उन्होंने पृलिस पर हमला करना चाहा तब दो एक राउप्ड चलाये गये। धगर दौडने हुए मारे जाते तो पीछे से गोलिया लगनी चाहिये थी—इस लिये यह बात गलन है।

यह जो सर्च लाइट की रिपोर्ट निकली है, यह भी गलत है। असलियन यह है कि 8 आदमी मारे गये और मात आदमी घायल हुए ये अपोजीसन पार्टियों के लाग लड़कों को आये ने धाते हैं, मैं एक-एक अपोजीशन पार्टी सा नाम ले सकता हूं, लेकिन नाम क्या सूं, जहां इन को मंग मिलता है उन को आगे ला कर मरवा देते हैं और फिर कांग्रेस गवर्नमैंट को बदनाम याति हैं।

जनसंघ के मिलों ने कहा कि वहां जन-संघ के जो लोग थे उन पर मार पड़ी मैं कहता हूं कि किसी जनसंघी पर मार नहीं पड़ी, वे अपने लोगों को तो वहां से उठा कर भाग गये, इन का तो काम ही यही है कि सीधें-सादे लोगों को भड़का कर यहां ला कर भिड़ा देते हैं और बाद में खुद भाग जाते हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि कितने जनसंघियों पर मार पड़ी, कितने लोगों को चोट लगी ?

जयप्रकाण जी की बात कही जाती हैं — बे जो बयान देते हैं ये प्रेस वाले उस को गलत तरीके से पेण करते हैं, उन के मुंह से ऐसी बात कैसे निकल सकती हैं। उन के बारे में किसी को कोई सन्देह नहीं होना चाहिये। उन्होंने इस मौके पर जो कुछ को शिश की है, बिहार में णांति लाने की को शिश की है।

अयोजीशन पार्टीज के बारे में मैं फिर कहना चाहता हूं—जब मैं ने पिछली दफ़ा यहां बमान दिया कि जमशेदपुर में कुछ नहीं हुआ, तो दूसरेदिन ही इन्होंने 10— 20 या 50 गुण्डे खादी भण्डार में भेज दिने, वहां पर हल्ला करवा दिया—यह चीज आप को शोभा नहीं देती ।

ज्योतिर्मय वसु साहब ने स्टूडेन्ट्स के बारे में कहा कि उन का इस में विल्कुल हाथ नहीं है । गया में यह जरूर है कि मुल्क में आज जो महगाई है उस का ग्रसर पड़ा है। हमारे यहां उर्दू की एक कहावत है "तंग ग्रायद वजंग ग्रायद " जब ग्रादमी तंग हो जाता है तो जंग पर उतर ग्राता है— वर्ह हालत इन ग्रपोजीशन पार्टिंग की हैं। में ग्रपोजीशन पार्टियों से कहना चाहता हुं— श्रगर ग्राप भी चाहते हैं कि कभी राज्य

करें तो कम से कम हंगामा तो न करें, ताकि लोग महसूस करें कि हिन्दुस्तान में कांग्रेस के ग्रलावा दूसरी अच्छी पार्टियां भी हैं। लेकिन ग्राप के इस तरह के कामों का तो जनता पर ग्रच्छा ग्रसर नहीं पड़ेंगा।

मैं मत्नी जी से कहुगा कि—इस में क्या हर्ज हैं ग्राप जांच करवाइये, सच्ची वात सामने ग्रा जारेगी, इस से लोगों के दिल शांत हो जायेंगे। लेकिन में अपोजीशन पार्टीज से भी कहूगा कि ग्राप लोगों को भड़काने की कोशिश न कीजिये। ग्रसेम्वली को डिजाल्व कराना है तो कराइये, जो कुछ होना हैं वह होगा, लेकिन लोगों को भड़का कर काम खराव न कीजिये। ग्राप लोग समझदार ग्रादमी हैं, सोच समझ कर काम कीजिये।

श्री राम भगत पासवान (रसडा):

सभापति महोदय, विहार की स्थिति भयंकर जरूर है ग्रौर इस भयंकर स्थिति का कारण गरीबी, महंगाई, भ्वमरी ग्रौर वेरोजगारी हैं । इस बेरोजगारी ग्रौर भुखमरी की समस्बा को सूलझाने के लिये जिस तरीके से हमारी प्रधान मंत्री जी तत्पर हैं, ठीक उसके उलट हमारे विरोधी पार्टियों के लोग ग्राग में घी डालने का काम कर रहे हैं। सभापति जी, म्राज वे म्रान्दो-लन नहीं करते हैं जिन के पास लाचारी हैं, भृखमरी हैं, जो गरोब हैं, क्योंकि उन्हें तो प्रधान मंत्री जी के समाजवाद में पूरी ग्रास्था है । वे देखते ग्रा रहे हैं, जनता देखती ग्रारही है कि ग्रभी तक देश में कितनी विपत्तियां आई हैं उन सभी को प्रधान मंत्री जी ने बडी तत्परता के साथ ग्राशिर्वाद में परिवर्तित किया हैं । ठीक उसी तरह से महगाई, बरोजगारी और गरीबी की समस्या जो हमारे सामने उपस्थित है उस को भी प्रधान मुद्री जी ने ग्रपने सिद्धान्त अपने समाजवादी सिद्धान्तों के द्वारा तत्परता

धीर सतकता के साथ बार्शीविद मे परि वर्तित पर देशी । आंन्दोलन तो हथा करते है। जो बार बार चनावीं मे हार पछाड खाते रहे हैं, जिन्हे समाजवाद में विश्वास नहीं है, जो पंजीरित त के साथ स ठ-गाठ करते हैं वे लोग ऐसा करते हैं। मैं बहुत सक्षेप मे बताना चाहता ह ि बिहार में जयप्र ाश बाब के प्रति बहुत श्रदा है लेविन उन के प्रति लोगो की श्रद्धा भीर भी बढती यदि वे गरीबों के बीच जाते, मजदूरों के बीच जाते भीर जो भूस्वामी हैं जिनके जयर लैंड-सीकिए लागू होने जा रही है, जो भूमि का चुरा रहे है, उन भूस्वामियो भीर पुजीपतियों की लिस्ट वे तैयार ५ रते भीर ममाजवादी व्यवस्था लाने में महयोग देने । उस दशा भे जयत्रकाश बाब के प्रति लोगों की श्रद्धा और भी बढ़ती। हम ममाजवादी व्यवस्था लाना चाहते हैं, समाजवाद के लिए सारे प्रयास करते हैं लिन इस में जो चतुर व्यकि हैं वे फायदा उठाते हैं। यह मही है नि हमारी प्रधान म ही ने बहुत सी समाजवादी व्यवस्थामों का लाने वा प्रयास या है लेकिन उन से बड़े बड़े लोग ही फायदा उठाते रहे हैं। में सरकार से आग्रह करूगा कि हमारे देश की जा वर्तमान स्विति है जो गरीबी, बंकारी भौर भखमरी की स्थिति है उसके लिये हमे ठोस म ठ भ कदम उठाने पहेंगे । हमने लैंड सोलिंग की वर्ची कर दो लिकन उस को कार्यान्वित नहीं कर रहे है। इस से भूस्वामियों का, जो भूमि के मालिक है उस जमीन को च्राने का मौका मिनगा। वे अपनी जमीन तो च्रान हो हैं, गरीबों की जमीन भी हड़पने की चेस्टा करते है। इस प्रशार गरीबो बढती बली जायगी। मेरा गृह मली जो से साबह है कि लैड सीलिंग के द्वारा जिन के पास फाजिल भूमि है वह नेकर जल्दी से जल्दी गरीबो को बांटी जावे और वैकारी की समस्या को हल क्या जाये। येरा यह भी आग्रह है कि प्रखण्ड बाईज छोटी ोटी इण्डस्ट्रीख की स्थापना की जीय तथा दफ्तरों में बडी बड़ी तत्ख्वाह पाने वा ग कर्मचारियों की तनख्वाह दम कर के नये पदो का सृजन करके नवपुवकों की काम दिया जाये क्योंकि प्राज लाखों की सक्या में हमारे देश में नब-युवक प्रैजुएट होकर निकल रहे हैं हर माल उनकी समस्या ना समाधान हम नहीं करेंगे तो जरूर हमारे देश में कभी भयावह स्थिति पैदा हो मकती हैं। इस निए मेरा ग्राप में ग्राप्यह ई कि बकारी की समस्या महाने के निए भीर गरीबी की ममस्या मिटाने के निए भीर गरीबी की ममस्या मिटाने के निए श्राप नुरन्न ठोस कदम उठाये।

SHRI PILOO MODY. Mr. Chairman, I was not intending to participate in this debate because it would be pointless pleading my case before the very guilfy men who are responsible for what is happening in Bihar. It is quite evident that when things transpired in Gujarat this Government and this party were warned by all of us that this is not just another one of those accidental things that has happened. I think they took no notice. They even ridiculed us. They thought that what happened in Gujarat will not repeat itself elsewhere.

It is quite evident that there has been a great deal happening in this country for which this Government directly responsible Can you think that a Government like this, an all-powerful Government like this, can shirk its responsibility about high prices, can shirk its responsibility about ever-spreading and perennially increasing unemploycan shirk its responsibility about monumental corruption, about shortages and about every conceivable sort of injustice political, social and economic? The very fact that a debate is going on about Bihar teday and nebody has mentioned the central figure of Bihar [Shri Piloo Mody]

and, that is, Mr. Lalit Narayan Mishra I just don't understand. Are you living in this world or are you thinking of giving up this world and going to some other world faster than it is your time to go? Any speech on Bihar that does not mention him, is dishonest.

We have a puppet Government in Bihar, created by a Minister of the Central Government who took the entire Government, purchased it and did what he liked—I do not know what—and put it in his pocket, appointing every Minister of his own liking. And that Ministry is brought down by the people. Is there any reason to be surprised that this thing is happening?

How did it all start in Gujarat? It started very innocently about some mess bill. The students thought it was too high for them to pay. And yet, overnight, starting with that little mess bill, 500 units of the Nav Nirman Samiti grew up all over Gujarat. Do you think that Mr. Vaipayee or Mr. Anand Murti who has been in fail for so many months or any C.I.A. agent or even a K.G.B. agent or even Mr. Bhogendra Jha or, for that matter, anybody in this House could do anything like that? SHRI VASANT SATHE (Akola):

SHRI PILOO MODY: Perhaps But, nevertheless, this had to be washed off in some fashion or the other.

Excepting you.

I think, it was last year I warned this Government that unless they learn to admit their mistakes in all humility and to make amends, genuine and sincere amends, to the people for all the oppression that they have brought about in this country, this country will not be safe this party will not be safe and, certainly, this Government will not be

What has happened in Bihar? By saying that it was so and so who instigated the people, and so and so

who didnt, and that it was Mr. Vajpayee and some people who stripped some man, do you think that is a reasonable excuse for explaining away what happened in Bihar? The fact is that the anger of the people is rising because of all the hardships they have to bear and in addition to having to bear all these hardships. see the miserable manner in which they are treated and brushed aside. Is there any person in this country who comes in contact with the Government at any level who does not get bruised, hurt, insulted and humiliated, whether he is rich or poor? If he gets a cheque of Rs. 11 from the Government which is six months overdue, he spends three days in the Bank in trying to cash it!

This is the sort of administration that these people have created and, they think, in an administration like that, the people are not likely to get angry. Well, the rising anger of the people is rising higher than even the corruption that you can perpetrate. And it is rising at such a speed! There are no safety valves. There was a time when you expected that if you went to a law court, you might get some justice. But look at the manner in which they have fiddled with the courts. There was a time when you raised a matter in Parliament or when some Members of the Opposition raised a matter in Parliament, you expected that that would have some effect on the Government. There was a time when you could take out a demonstration Today, the mere fact that you want to take out a demonstration, it calls for repression. If you shout a few slogans against the Government, you are muzzled-section 144 is They infiltrate deslapped on. monstrations with their agent provocateurs to throw stones so that that gives an excuse to the police to resort to firing. If there is breaking of window-panes or shouting of a few slogans against the Government, they resort to shooting people down in cold blood. I have seen

it happening. This is what has been happening. As for Mr. Bhogendra Jha who initiated this debate, I would like to know whether he was on the 16th

SHRI S M BANERJEE: I will just go and call him here.

SHRI PILOO MODY: It is quite obvious that Mr. Banerjee was not there He is a little smarter than Mr Jha. Therefore, all this hypocrisy goes on-and the constant search for a scapegoat. As somebody said, pretty soon you will be blanung it all on the man in the Moon because you would have run out of all alibis and excuses that human ingenuity can find After having run out of all excuses, the only person that they can peg the whole thing on is a man like Mr Jayaprakash Narayan I think, we have reached the nadir of public life I am no follower of Mr. Jayaprakash Narayan; I do not even believe him; nor have I any close contact with him; nevertheless, if one were asked to find one good, honest decent man particularly in the public life of this country, one would think of Mr probably Jayaprakash Narayan He may not be a genius, he may not be a guru, he may not be anything at all; but, nevertheless, he is a good, honest man. And in this country we have lost all sense of values Even a good, honest man is no longer needed! He is to be abused when the occasion arises. I have heard pank kids signing memorandum and speaking in a manner which would shock even their own parents; sometimes wonder how they address their own parents.

Therefore, it is with the heaviest heart that I condemn this Government, not because of the mistakes it has made; mistakes it has made by the millions. But let them come forward and admit one mistake. It will make it easier for them to admit two and then ten any maybe, a time will come when they will admit all the

mistakes they have made and then perhaps we will have a happier country.

श्री नागेन्द्रप्रसाद यादव : (सीनामढी) मभापति जी, मैं भाप के माध्यम में गृह मत्री जी वा ध्यान विहार की ग्रोर ले जाना चाह त ह। मनापति जी बिहार में 16 तारी व को णान्तिपूर्ण प्रदर्णन भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से किये गय। इस के बाद बिहार मे जा हमारे जनसघ के नेता हैं खासकर कि श्रदल जी वे 16 तारीख में पहले गया में गये थे अपनी मीटिंग में श्रीर वहा पर उन्होंने अपने माथियों के बीच में भाषण दिया था कि बिहार के साथियों तम भी गजरात की तरह तैयार हो जाम्रो । जो जनसभी विधायक बिटार ने थे, उन को इन्हाने सम्बाधित किया। म्रटल जी ने कहा था कि बिहार के विधायको, तुम भी गुजरात के लोगा की तरह भ्रपने इस्नीफ़ो देने की नैयारी करो । ग्रटल जी. आप को याद होगा, कि आप ने गया मे यह कहा था। 18-3-74 की भटल जी गया मे थे भौर घटल जी के साथ हमारे गृह माहब भी पटना की जेल म गये थे ग्रीर वहा पर इन की मुलाकात आनन्दमागियो नेता के साथ हुई थी। काफी फल, मेवे भीर मिठाई बै उन को जैल में खिलाने के लिए ले गयं थे।

भी भटल बिहारी वाजपेवी : बिल्कुल गनत बान है। एक साल से वे भूख हडनाल प थे, मेबे कैसे खिला दिये।

स्रो नरोगेस प्रसाद यादव । घटल की ने स्रानन्द मागिया के नना को जेल में जा कर काफी मिठाई खिलाई फल खिलाए ग्रीर बैठ कर रे इन्होंने एक नाड फोड योजना इमलिए बनाई कि जब इन की हार बैलेट पेपर की उड़ी हैं में उड़ीमा और उत्तर प्रिदेण में हुई ग्रीर इन की करारी हार हुई ता यह पटना क्ये गुह माहब के साथ मिठाई ले कर मानन्द मागियों के नेता से उन्होंने महाण। की कि बिहार में गजरा के बाद किस तरह शास्कोलन [श्री नागैन्द्र प्रसाद यादव]

किया जाए, किस तरह सम्मिकाण्ड कराया जाय। वाजपेयी जी ने यह योजना बनाई और पटना जेल के एक किनारे में इन्होंने झानन्दमामिंगों के नेता से मुलाकात की और उसी का फल यह हुझा कि 18 तारीख का पूर बिहार में हमारे झानन्दमामियों ने, जनसियों ने झौर झार०एस०एस० के लोगों ने झान्होंनन किये, मकान जलाए गये और मर्चलाइट को भी इन्होंने जलाया। झाप के ही झादभी जनस्व के लोग झडा ले कर वहा गये थे।

श्रीमन् मुझे छ।प ने छन्त मे समय दिया है । इसलिए कम से कम मात मिनट ता ीजिए !

स्भापि। जी सर्चलाइट जनस्मिया न जलाया ग्रीर झूठा इन का प्रचार होता ह कि कम्युनिष्ट पार्टी के लोगो ने उस का जलाया। यह गलत है। कम्युनिस्ट पार्टी के लोग तो शान्तिपूर्ण ढग से 16 तारीख को प्रदर्शन कर रहे थे। 18 तारीख के प्रदर्शन में कम्युनिस्ट पार्टी का कोई हाथ नहीं था (ख्यादाषा क)

श्री भोगेन्द्र झा . 16 नारीख को इन्होंने क्या किया भीर वे वहा क्यो गय, इस के बार बारें मे बाजपेयी जी पर्सनल एक्सप्लेनेशन व ।

, श्री झटल विहारी द∖ज्येयी सभापति जी, द्याप मुझे मौकादेगे तो मैडम कादन केलिए तैयार हू।

श्री मागेन्द्र प्रसाद यादवः सभापित जी, 18-3-74 को बिहार के छाता न जान्तिपूर्ण प्रदर्शन निया लेकिन उन के साथ उन वे गिरोह में ग्रटल जी के चेले चले गये बिना झडा लिये, उन्होंने झडा नहीं लिया। छातों वे बीच में ग्रानन्दमार्गी ग्रीर जनसघ चले गये ग्रीर उन्होंने बोललों में पेट्रॉल ले कर छीटे दिये ग्रीर दियामलाई लगा बी ग्रीर बिहार के छात्रों को इन्होंने बदनाम किया। समापित जी, बिहार के छातों ने कहीं भी प्रांग नहीं लगाई। उन्होंने प्रपनी मांगों के समर्थन में शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किया। सभापित जी, मैं गृह मती जी से धनुरोध करूगा कि बिहार के छातों की जो भाग है, धाप उसे स्वीकार करे और बिहार के मुख्य मत्नी जी में भी कहें कि जो उन की मांग है छात के जो नेना हैं हमारे गफूर साहब मुख्य मत्री, बिहार उन से बातचीत करें। गृह मती की भी छातों के नेतायां और शिक्षकों के नेनायों को दिल्ली बुना कर उन से बातचीत करें पार जो उन की डिमान्डे हा उसे स्वीकार करें।

समापित जी, मैं सर्वोद , ने त जब प्रकाण जी की मोर ध्यान दिलाना चाहता हु ग्रथने माथियो ना । सभापनि जी, जयप्रकाश जी न मन् 1942 की अगस्त कान्ति मे भाग लिया. यह बिलकुल सही है । 1942 के ग्रान्दोलन भीर उस के पूर्व भी उन का बहुत बड़ा त्याग है आजादी के लिए लेकिन इधर जयभकाश जी ने मन् 1952 र इलैक्शन मे प्रपने उम्मीदवारों को खडा किया विहार में ही नहीं बल्कि पूर हिन्द्रतान से और उस से उन की पार्टी की करारी हार हुई। फिर 1957 में भी उन्होंने पार्टी के लोगो की खड़ा विया और उन की करारी हार हुई। इस के बाद 1962 में भी उन्होंने लोगों का खड़ा किया और उस में भी उन की हार हुई। इस के प्रदेशन 1967 में भी, उन्हार लोगो को खड़ा किया भीर उन के लोग चुनाव मे हारे। इस तरह में चुनाव में हार खाने के बाद जयप्रकाश जी विनोबा जी के साथ सर्व उदध का काम वन्ने चल गये। उस के बाद भी उन से नही रहा गया क्यांकि गर्ह। का नशातों उन को याही। वह ती झठे ही बिनोबा जी वे साथ चले गए थे कुछ दिनों के लिए। सभापति जी को स्मरण होगा जब बिहार ने मुख्य मन्नी स्वर्गीय बाबू श्रीकृष्ण सिह जी ये भीर बिहार के मित महल मे **कृष्ण बन्लम सहाय नहीं लिए वह ती उन्होंने**

एक बहुत लम्बी चिट्ठी तीन पेज की श्री कृष्ण सिंह को निर्धाः । उन्ने बहत तकलीफ हुई ि श्रीकृष्ण सिंह ने उन को मंत्री नहीं बनाया वह लम्बी चिट्ठी जयप्रकाश बाब ने लिखी श्री वाब को और श्री बाब ने उस का उत्तर विया। तीन पेत्र की बडी लम्बी लम्बी चिट्ठिया थी । मैं दिखलाऊंगा, ग्रभी भी कही होगी। उन्हें बड़ा क्षोम हमा कि कृष्ण वल्लभ सहाय को मंत्रिमंडल में नही लिया गया । उस के बाद जयप्रकाश बाब पटना में गए ग्रीर पटना जाने के बाद जब 18 तारीख को जनस्थियो भार भानन्दमागियो ने धान्दोलन किया, भागजनी हुई तो जयप्रकाश बाब अपने को बचाने के लिए फिर उस के बाद गांतिपूर्ण प्रदर्गन किए। उन के 1 हजार बेले बिहार से लाए गए और एक एक आदमी पर दो दो मी रुपये जय प्रकाश बाबूं ने खर्च किए। उस के बाद क्या हुआ ? जब प्रकाश बाब् अपने जेले के मृह पर पट्टी बाधे हुए थे। उस के बोनो हाथ पीछे रस्सी मे बाघे गए। इस के माने वह लोगो को दिखला रहे थे कि इदिरा गाधी के राज्य में हिन्द्स्तान मे किमी को बोलने नहीं दिया जाता हिन्द परिवार से वाब माते है उनकी माय 70 साल की हो गर्य। है उन के दिमाग का खराब हो गया है । जय प्रकाश बाबू के दिमाग का मंतुलन खराब हो गया है इसीलिए कभी वारधा में जा कर कभी गुजरात में जा कर कभी बिहार में जा कर पहले तो ग्रागलगी करा देते है आगे छात्रों को भोक देते है और पीछे काली पड़ी बाध कर भीर हाथ बाध कर लोगों को दिखलाने के लिए जलम निकालते हैं। कहते है कि हम शांति में विश्वास करते हैं। यदि जयप्रकाश बाब की चलती-जय प्रकाश नान् कभी शेख प्रम्दल्ला जब जेल मे थे तो शेख प्रम्युल्ला की वकालत करते ये जेल से छड़ाने के लिए कोशिश करते थे धगर उन की चलती तो काश्मीर पाकिस्तान में चला गया द्वीता । यही घटल जी जयप्रकाश

बाबू के बारे में कुछ दिन पहले क्या बोलते थे? लेकिन इनके साथ जय प्रकाश बावें की एक बटाई पर गांधी मदान में मीटिंग हुई, उसमें इनके भी नेता थे, कर्रूरी जी भी थे, और लोग भी थे। तो उस दिन जय प्रकाण बाबू ठीक साबित हुए और जब शेख प्रव्हुल्ला को छुड़ाने की बात करते थे तब ग्रटल जी उनके बारे में क्या बोलते थे? कहना तो बहुत कुछ था लेकिन ग्रापने जो भी समय दिया उसके लिए धन्यवाद।

SHRI TRIDIB CHAUDHURI (Berhampore): Sir, I have been here long enough to lose all interest in speech-making on this forum; of that I have had enough in the past; but time comes when one has to break his silence. I can only pray that good sense may yet dawn on the ruling party.

With all the seriousness that I can command, as a fairly senior Member of this House and also an humble soldier in the struggle for freedomthere are many colleagues on the other side of the House with whom I had the privilege to work-I tell them 'pleased search your heart; this is not a mere momentary effervescence of mass movement that has come up suddenly'. In Gujarat it was just the beginning; in Bihar, it has spread fast Perhaps, if you are serious enough, you will understand that unless you change your ways very radically, this is going to be the beginning of your

Sir I need not speak about or quote anybody else. But, the Congress President himself, Dr. Shankar Dayal Sharma said the other day—what did he say? He said that if inequalities and injustices that still persist are not eradicated or are not done away with, then nobody can prevent a violent revolution in this country. The Prime Minister, the other day, expressed herself more or less in same terms in Chandigigarh and Shri Vajpayee

[Shri Tridib Chaudhuri]

referred to that. In Bihar, what is happening is only the first tremor of an earthquake Do not think that even if the people in the Opposition keep quiet, then, everything will be all right. There are certain aspects in the handling of the situation about which I wanted to refer. But, there is hardly any time to refer to that. But, I feel that it is my duty to refer to one fact that even when we are discussing the situation in Please look at the extraordinariness of the situation in Bihar where we are suppressed to have an elected con-Government stitutional happened in Bihar, primarily, concerns the law and order. Even then this Parliament has felt compelled to discuss Bihar because the situation there is very extraordinary.

Just at this moment, an announcement had been made about the change of Government in Bihar everything was all right, then why do you feel that the Government should be changed there? Have you pondered over direction of the change? The Bihar Chief Minister said that he was forming a war Cabinet. against whom? A new Government has been constituted; a smaller Government has been constituted already. Even before the Opposition parties could speak out, from your own party and from your own ranks, accusations have come that this new and smaller Cabinet is loaded in favour of a group dominated by a certain person, sitting here in New Delhi

SHRI PILOO MODY: Name him

SHRI TRIDIB CHAUDHURI: Sir, it is not my practice or habit to refer to particular persons or to indulge in what is known as character assassination. But, certain accusations have been made against certain persons—certain families—who are said to held the Government of Bihar in their pocket. We all know what is discussed in the lobbies; we know what our friends from Bihar discuss in the lobbies. We do not come here in

order to keep quiet. So, I again appeal to the best sense of patriotism and far-sightedness and constructive imagination of the Congress Party and their sense of responsibility. Let them remember that they have been returned to power in a inassive majority; they have certain promises to keep and certain duties to discharge And let them take the right steps in the light of the tragic happenings that have taken place in Gujarat and that are taking place in Bihar. If not, I can only say 'God save the country'.

SHRI M. SATYANARAYAN RAO (Karimnagar): Sir, although I was not willing to participate yet when I saw that there is no seriousness among the ruling party Members about the situation prevailing in Gujarat and Bihar I was compelled to speak. am really sorry to see the Members indulging in things which are very objectionable. We know that a grave situation prevails in the country not only in Bihar but everywhere Last time when I spoke in this House I told this House and requested the Members of the ruling party that don't think you are ruling to defend the Government but you will have to defend the country. Even if I am there I will defend but you must realise the difficulties of the people. They know everything. Whenever we meet them in the Central Hall they speak out their mind but when they participate in the debate they say so many things against this party or that party I am telling you my dear friends this is not going to satisfy the people You cannot blame the Opposition parties always. With seriousness I am telling you to not utilise the services of students. They have had enough. In Telengana and Andhra we have seen what is the stuff of those students. They have spoiled their eareer. They have become completely useless. They have become a great burden on us. So, please realise With experience I am telling my dear friends on this side also if you have got any problem do not depend upon

students and spoil their career. request my friends there, you please see the difficulties of the people. Shortages are there. Because of the price rise middle-class is affected. For the first time the common man is affected. There is no safety. Last time when I mentioned about it I was told that that was not their experience but it was only our experience. While travelling in a bus or train if you say you are a Member of Parliamenteither Congress or Opposition-there is no security for you. The people are hating all the politicians This is the tragedy in the country. This is a fact and this fact should be kept in mind. There is no safety for anybody whether Congress or Opposition. That means parliamentary democracy is in danger. If you really want the parliamentary democracy to survive then it is the responsibility of everybody, including the Opposition parties, to sit together and try to solve the problems that are facing the country. Unless you do that I do not think you will be able to satisfy the poor people. This must be kept in your view.

As regards Bihar-I am very sorry to know-today we have seen in the papers that some Cabinet has constituted. We know from very reliable sources and from responsible persons like Congress M.Ps. and MLA: that again most corrupt people are there in this Cabinet. They are continuing the same gentlemen again in the new Cabinet. What effect will it have on the people? This is what I want to ask the Home Minister. If such a Cabinet is there, it will have no impact on the people, and the people will not be satisfied and their problems will not be solved. Government say that they are doing all this because they want to maintain law and order. But I submit that this is not a law and order situation at all. I do not want dissolution of the Assembly and the introduction of President's rule thereafter. Let the Assembly continue, But it then pick up such persons and put them in the Cabinet.

Nowadays. there is so controversy about Mr. Jaya Prakash Narayan. Last time when I spoke here, I had also criticised him. When he spoke about the situation in Gujarat and called upon the students and teachars to come out of their rles es and start an agitation, I took great objection to it and said that it was a very dangerous thing. A person like Mr Jaya Prakash Narayan who is a very good man asking the students and teachers to come out of their classes and start an agitation is very bad, and, therefore, I had also criticised him last time. But to say that he is dishonest man, to say that he takes money from very rich people is a very dangerous thing. Those who say so are unnecessarily having confrortation with that man. He may be committing so many mistakes. about his honesty and his sacrifice for the country, there are no two opinions in the country. So, those who are making such remarks are unnecesarily criticising him and unnecessarily having this confrontation with him. I know that there are some gentlemenin the Congress Party, not all, but some of them, who want some confrontation between Prime Minister Mrs. Indira Gandhi and Mr. Jaya Prakash Narayan; they are very happy with this and that is why they go on issuing statement after statement. This is very bad, and I would request the Home Minister to rectify this matter.

MR. CHAIRMAN: Now, the hon. Home Minister.

SHRI PILOO MODY: Have they no sense of shame? What are they clapping for? This is a solemn occasion. What are they celebrating?

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT): They are only starting to follow his example. When he talks about celebrating I am remind-

[Shri Uma Shankar Dikshit]

ed of what had happened at the time of the election of the last President. Long before the election was held, he was celebrating and wanting victory to Mr. Subba Rao. He was there in the' plane, and I was also there, and I was perhaps unknown to him then. I do not know whether he wants other people to follow his example or not.

SHRI PILOO MODY: He will admit that he would have made a better President.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: In any case, he should not have celebrated it before the election, at least in the manner in which he was doing it.

SHRI PILOO MODY: I am not a hypocrite. I drink in public.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: That apart, I agree with him that this is a solemn occasion, and I do not want to import irrelevant things or matters which are below the dignity of this House or the decorum of this House. These are serious matters and we must consider them with all the seriousness at our command every section of this House should do so I have intervened or spoken in this House more than half a dozen times but this debate has been on the whole a rather painful experience for two particular reasons

Firstly, when facts were stated or denied, when references were made to important people or to events ro respect was given to fact or to reality or to some proportion of reality, and any kind of statements were made.

Secondly, to begin with, I would refer to the speeches of the last three hon Members. I was deeply impressed by the manner and the approach of Shri Tribid Kumar Chaudhuri's speech and also that of the young Member who followed him. It is a serious matter. It is a question on which the ruling party and also the Opposition.

in my opinion, have to search their hearts. We have to search our hearts and take a serious line of action which will meet the situation.

For instance, it has been asked: 'When it is admitted that there is corruption, when it is admitted there is shortage, when it is said that prices are rising, what are you doing? Why do you speak of yourself? Why are you governing? Why are you in the Government?' and so on. What kind of logic is the?

SHRI S. M BANERJEE Why don't you arrest them?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT-Arrest the prices or arrest whom?

SHRI S M. BANERJEE Arrest the hoarders and blackmarketeers.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT In one State alone, 5000 raids have taken place, and thousands of people have been arrested in the country

SHRI S. M. BANERJEE: But they had released Shri S K. Mody on bail

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT Large number of people have been arrested, and some paraded in the streets and convicted.

They have been convicted. He is greatly ignorant if he says that smugglers and blackmarketeers are not being punished or that their places are not being raided. In Gujarat alone, within a short time, there were 500 cases. (Interruptions) Therefore, let us not make this kind of sweeping statements, such kind of generalisation painting everything black, everybody black. It is not proper; it is not true

So far as these last three gentlemen are concerned—I refer to them again—Shri Yadav made some observations. We have no right to expect Java Prakashji to agree with us or ourselves to agree with him politically. He does not belong to the Congress Party. He has taken certain stands from time to

time according to his conscience. He has not been particularly consistent also. He is not really fit to be a partyman. Otherwise, he would not have allowed that party to be broken up to which he belonged; he would not have let slip that historic opportunity he had in the shape of the socialist party and would not have let it be broken up in the manner it did. He is a man of conscience. Let us understand this. I would request my friend, Shri Yadav, to realise that if he is going to apply the ordinary cheap standard to a man like that, he mistake. I will be making a great do not want the Congress Party to be misunderstood in this respect. I feel very strongly on this not because I worked with him or he worked with me during the 1942 movement, but because when we take a public stand. we have to have some sense of proportion.

Now, therefore, on behalf of the Congree Party, I would like to say this that this is not the view of the Congress Party. Jayaprakashii being a person who in the matter of personal integrity or intellectual integrity or as a man who is a public-spirited gentleman, as a man with a clean conscience, as a man who is devoted to a high standard of life, in these matters we hold him in high respect That has not prevented us from not finding ourselves in agreement with him in most matters for the last 25 years. Therefore, I beg of you all not to say anything that will unnecessarily embitter that man of conscience and man of soul.

I was dealing with this question of whether we should learn lessons from history or not. What has happened? Have we forgotten 1971? Have we forgotten 1972? Is not the public a good judge? Everybody has got the name of the public on his lips like that of God whom we remember when seeking blessings. These leaders who are so bitter in their criticism of the Congress Party Governments have been weighed by the public; tried and found wanting.

My friend, Shri Piloo Mody's party, when it started with Rajaji and Shri K. M. Munshi and others, appeared to have some sort of a big future as a kind of alternative. But where is he now? Where is it now? The party has been rejected outright.

SHRI PILLO MODY: My dear Sir, this has nothing to do with parties.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: It is all right as a cheap joke to say that his is the best party.

SHRI PILOO MODY: I would like you to consider where you are before you ask where I am. This has nothing to do with parties. I will not stand such bloody nonsense. Do not tell nonsensical nonsense to me.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Parties are judged by their representatives.

SHRI PILOO MODY: Your talking about Rajaji is like a prostitute talking about love.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Let him not excite himself.

SHRI K. P. UNNIKRISHNAN: Would you expunge these words if you find them abjectionable?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: If that expression suits Shri Mody, let him have the pleasure of it.

MR. CHAIRMAN: Mr. Mody, you are a man of humour. Please take it in the proper spirit.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I am sorry if I have hurt him.

SHRI PILOO MODY: My dear Sir, apparently the Minister seems to think that what is important in this world is to win elections, by creating, by thugging, by money, by skullduggery, by stopping the voters from going to the booths, by stuffing the ballotboxes and finally by miscounting the votes. You take pride in winning such elections.

MR. CHAIRMAN: Mr. Mody, the hon. Minister has said that he is sorry if he has hurt you.

SHRI PILOO MODY: Winning the elections in this country like that is nothing. (Interruptions) If you had fair elections, you would not have this sort of trash over here.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Sir, I was to begin by saying that in today's debate, either the hon. Members have gone by the general approach, the budget approach or by the Presidential Address approach by speaking everything they liked on any subject while dealing with the question which is before the House.

Sir, this discussion was asked for by the hon. Member Shri Jyotirmoy Bosu and also by some other friends in the Opposition. I had expected that they would either ask for some information or some clarification the position. I made a statement that day in which I mentioned a number of salient points, and I gave a fairly clear picture of what had happened in Bihar They should have, as responsible Members of the Opposition, accepted the facts. When earlier, the question came up, Shri Chaudhuri that day made wholly untenable and unsupportable statements. peated the same allegations today. I am really surprised and am greatly disappointed that his leader did not pull him up. He has the audacity to say that over a hundered people were killed and that over 200 people were injured. It all happened between about 3.35 and 5.35 p.m. It was not in the dark of midnight when injured people could have been carried away. How could they have removed the injured persons or the dead bodies? It is something utterly fantastic and unworthy to be stated by a responsible Member of Parliament to say that hundreds of people were killed and then were quietly removed somewhere and buried or burnt. Mind should have been applied as to what could have happened during that short time of the day.

I would like to point out the circumstances under which this is supposed to have happened. Large crowds were there pressing towards the kotwali or towards the telephone exchange. All this happened within a radius of half a mile or less than half a mile. The crowds were advancing and all the time the SDO and others were giving warning. Then tear-gas was used. On one occasion as it took time before teargas arrived, they made a lathi charge. Otherwise, on all the four occasions. first tear-gas was used The warning was repeatedly given. Time after time they were asked to go away. Nobody listened, and the warning and tear-gas only had the effect of bringing the crowds forward and nearer to the authorities making their position dangerous At one point the position was so bad that they were hemmed in on both sides in one small lane and then possibly the entire force would have been wiped out.

Therefore, what I am begging of you consider is that you should not give any weight to the allegation which has been made by hon. friends opposite, that hundreds of people were killed or hundreds of people were injured, which is entirely without foundation.

17.00 hrs.

Certain other matters have been referred to. The main point in my opinion, of having a discussion on a subject like this was to find out whether there was any excess committed by the police, whether more pople were killed than was inevitable, whether there was delay in taking action and whether it led to wider repurcussions and whether the Government took maximum care as provided in the Rules. In this respect I beg to submit that every rule was followed.

SHRI S. M. BANERJEE: How do you say that? Why not have a judicial enquiry?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: It is a highly fallacious argument. First you state a falsehood as high as the sky and then you say: what is the harm; if you are not afraid why not have an enquiry?

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYFE: I quoted a statement made by a former Member of Parliament belonging to the Ruling party.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: It may be whoever, for whatever reasons. . . (Interruptions).

SHRI S M. BANERJEE. You accept whatever the Bihar Government says

भी देवर भीषरी 13 तारीख की रात्रि को बसी बुमाने का क्या कारण था और बसी वृथा कर मारी जामों को मिलिट्री हास्पीटल में ढोंने का क्या कारण या और फिर मिलिट्री हास्पीटल, पुलिस स्टेशन और रेलबे होस्पीटल में लामों और मरीजों को रखने का क्या कारण था? इस मब बारों की सच्चाई तभी पना चलेगी कर पाप स्याधिक जान करगएंगे।

भी उमा शंकर दीकित आपने जितनी वार्त कही है, वे विल्कुल गरत हैं और वस्तु-स्थित से उनका कोई ताल्कुक नहीं है। माडे तीन बने से माडे पांच बने तक जब फाइरिंग हुई, तो इस बात को मानने का क्या कारण है कि जो घायल हुए ये उनको हमने छिगा दिया, पुनिस ने छिपा दिया या जो मर गये उनको कहीं दकता दिया सा कोई उनको लेकर कहीं चला बया ? मेरा यही बाहुना है भीर मेरी 426 I.S.—18 / यही मुख्य दलील है। इस पर आप विचार करें और बाद में अगर आप समझा दें कि इसमें यह खामियां हैं या कमियां हैं तो हम उनको मानने के लिए तैयार हैं।

एक दूसरी बात मैं यह कह रहा था।
... (व्यवधान).... ग्राप जो कहते हैं,
उसमें भ्राप की बात विख्वमनीय नहीं मालूम
हाती है। ग्राप भ्रमी युवक हैं भीर ग्रापको
सीविता चाहिए कि भ्राप ऐसी बाते कहें जितका
कुठ रनाव पड़े। ग्रापर भ्राप किसी बात को
दुगुना, चौगुना या दस गुना बढ़ा कर कहेंगे, तो
कौन उसका मानेगा।

भी ईस्मर चौमरी . जा आपने बताया है उमको मानने के लिए तैयार नहीं हूं।

भी उमा शकर दीक्षित न मानिये।

I was saying that the police acted with care by giving warnings by using other measures for dissuading the crowds, by first using tear gas and making lathicharge- and finally when they are completely forced, in resorting It was done under the orders of the SDO, by a responsible officer of the CRP or BFS. It happened five times: two rounds, just two rounds first time, then one round then two rounds: then one round and finally two rounds. That is thrice two each and thrice one each. I say that I have taken special precaution by deputing a responsible officer . ..

SHRI SAMAR GUHA: You are giving the official version...(Interruptions) On a point of order. The hon. Minister is giving certain information on what took place in Bihar. They have given their verrion about deaths, about casualties and about firing.

MR. CHAIRMAN. What is your point of order?

SHRI SAMAR GUHA How are we to believe it? Are we to take the official version? Are we going to prosecute the Press and newspapers in Bihar where they have given... (Interruptions).

SHRI UMA SHANKAR DIK-SHIT. If he has believed Press reports, he need not come to us for ascertaining the facts. As we have to take responsibility, we had checked the information reported by the Bihar Government through our own officers We had specially deputed a responsible officer to go all-round to see the places, come back to us and report the facts so that we are able to give these facts to you, as they stand today Up to the point of time of my speaking I have placed the facts as ascertained and checked by us (Interruptions)

MR CHAIRMAN Please do not interrupt the Minister.

SHRI BHOGENDRA JHA I do not dispute what he is saying But, I would like to know, whether he will advise the Government of Bhiar to order a judicial enquiry

MR CHAIRMAN. We had a debate Members of Opposition had their full say and I think we had a very good atmosphere. I think, the Minister should be given an opportunity to place certain facts, and therefore, please do not interrupt the Minister

SHRI S. M. BANERJEE. Supposing we accept these facts that only eight people were killed. Take it for granted. Eight lives do not justify a judicial probe. But, what about the ten-year boy who was killed? Was he an Ananda Margi? Did he belong to RSS? Who was this ten-year old boy? Why was he killed? Who killed him?

MR. CHAIRMAN: You made your point. It is upto the Minister either to accept or not to accept it. We should give him an opportunity to have his say.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Then I shall briefly refer to the last point made by the last speaker. Mr. S M Banerjee said yesterday that he had more regard for me than some of my own Members I accept that statement I would like to submit for your consideration the fact which one of the Members had also mentioned though I do not know whether he had given prior notice

SHRI S M BANERJEE I do not have any personal quarrel with you. But, I only want that you should punish the murderers, human murderers

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT Now, Sir it was said that police, BSF or CRP, pursued the running mob and killed some of them without any cause, without justification. Also that something wrong had happened and that it is necessary to go into a roving or detailed enquiry Crowds are pressing forward towards the Telephone Exchange Despite warning those were doing 'dharna' or 'gherao' refused to allow any one to go maide Though the nicketers were once persuaded to make a little room, the workers refused to go inside because they were This continued on the 9th. 10th and 11th On the 11th-I say this from what has been communicated to me-information was received that something more serious was going to happen the next day. That evening. information was sent to the Chief Secretary of Bihar Government that more forces should be sent Up to the 11th evening the gherao, or dharna or picketing was quite peaceful. Nobody was hurt although the work was comrletely at a standstill. They might not have been able to paralyse the entire Covernment of Bihar or other Governments in the country, but they had exchange naralysed the telephone About half a dozen officers tried to

nun a skeleton service. Then, with great difficulty, the picketeers were persuaded not to prevent the General Manager or SDO Telephones to scale the compound wall and inside. This was the maximum concession which was granted to the officer-in-charge. Such was the situation which continued right up to the evening of 11th. On the 11th evening information was received—I do not know who was responsible....

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: He has to find out wherefrom the information came.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT. I have found out, but I am not willing to say it here. I am not going into names. Two parties were definitely involved in all that happened from the 9th to the 12th. Whoever it may be, I do not want to mention any names.

SHRI BHOGENDRA JHA: Why can't he gives the name of the party, if not the individuals?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Intelligence reports are reports of a different kind. I am giving the reason why force was sent. Force was made available after information went to the Chicf Secretary of Bihar Government that unless more force was sent, there would be difficulty. Therefore, three or four companies came in the night. The situation was very serious....

SHRI BHOGENDRA JHA: Why not name the two parties?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: To the best of our information, CPI was not involved. But certain necessary precautions were taken.

Shri A. K. Sinha, Magistrate and Shri P. B. Roy, Deputy Commandant BSF whose party fired three rounds have stated that they checked the unfired ammunition of the party and empty cartridges collected after the firing immediately after the operation was over and verified that only 3

rounds were fired. Shri Quasim Magistrate and Shri Roy again checked the remaining ammunitions and the empties collected by the BSF also of Naik Shri B. L. Chosh and found that only three rounds had been fired. The Platoon Commander of the CRPF Sri Mohan Singh also checked the empties and the unired cartridges and had verified that only two rounds had been fired. (Interruptions).

52 policemen including 3 of BSF and 4 of CRPF were injured by the missiles hurled by mobs at different places on the G. B. Road, K. P. Road and other places. Three were grievously injured. Another noteworthy point is that for the first time, not only brickbats but cut ice blocks and bottles were thrown in ample quantity.

I do not want to give unnecessary publicity to a device of this kind. The important aspect to note is that an ice block hits and it melts. Nothing is found afterwards. We could have got photographs of pieces of bottles strewn on the road, stones lying, but not of ice blocks. (Interruptions).

Twenty-seven rounds of tear-gas were burst to disperse the crowds, 17 between Telephone Exchange and Kotwali on G. B. Road and 10 on K. P. Road. I am giving the facts which have been ascertained by the officers who went to the spot and took evidence, as panchnamas were signed. On that basis, I am making this state ment.

One Police Pick-up was set on fire on Riverside Road in Kirani Ghat Mohalla. The police driver ran up and reported to the Kotwali Police Station at about 5 P. M. where a rescue party was sent and vehicle brought to Kotwali after the crowd was dispersed.

A jeep under use of D.S.A. Home Guards was forcibly taken charge of by the mob in the lane running east almost in front of northern edge of the Post Office. Shri S. K. Vij, Dy. Commandant, B.S.F. rescued this jeep from

[Shri Uma Shankar Dikhsit]

the hands of the mob and deposited it at the Collectorate.

Extensive enquiries have been made to ascertain if any more persons had been reported killed or injured in the incidents of the 12th afternoon. But despite every effort made, no such information has been forthcoming yet. Enquiries in this direction are still continuing.

It is possible that some injured people might have gone away out of the fear, that if they went with their injury to the police station or to the hospital, they might be arrested. In saying so, I have this purpose in mind that if there is anybody who was injured but who did not report, let him come forward and we will not harm him provided he gives full statement to us.

As regards deaths, I do not believe that deaths have taken place in large numbers as alleged by the Opposition Members. Death is a far more serious matter. We will, certainly, welcome any information on this point. upto now-I went outside about half an hour ago-upto that time, we have no further information.

One of the dead, namely, Navin Kumar Sinha is said to have been fired upon near the Jain Temple. They talked about the Jain Temple. Some of our friends were excited that Jains being so peaceful and non-violent, how could these people with rifles etc. go to the temple. The Doctor who conducted post mortem on his body has recovered a small metallic piece in his liver. The B.S.F. and the C.R.P. did not use any pellets. In every case, without exception no other ammunition except bullets, was issued. Therefore, it could not have come out of an official arm at all. A look at the metallic piece would show that it cannot at all be a part of a bullet. It has been sent for examination and report to

ballistics experts of forensic science laboratory....

SHRI PILOO MODY: On a point of order, Sir.

The Minister is reading from particular document. That document should be placed on the Table of the House, according to the rules. If he wants to break the rules, then let him go ahead.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: These are my own notes. I got them prepared last night. If he wants, I can give to him tomorrow.

SHRI PILOO MODY: Why not today?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I have got only one copy.

It may also be likely that people from housetops may fired on the policemen operating on the ground which may have Navin Kumar Sinha. The fact that only eight rounds were fired during a total period of two hours-the last two rounds were fired at about 5.35 p.m.-would show that the armed contingents which were called into action acted with commendable selfconfidence and self control.

It is important to note that, of the 16 bullet injuries so far established. only three impacted above the waistline. I am only mentioning the facts. Anybody can contradict these facts if a contrary evidence is available. As I said, of the 16 bullet injuries so far established, only three impacted above the waist-line. This is a reliable indication of the fact that the firing was controlled and. invariably aimed low, and minimal.

With these words, I want to submit for the consideration of the House.... (Interruptions) I think I have made a mistake and I withdraw the offer that I made to Mr. Piloo Mody. I do not know; he might make some wrong use of it.

SHRI PILOO MODY: I will make the same use as you made.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I will consult and then give. These are the main tacts. I expected that all such questions would be asked in order to ascertain whether the police force, BSF and others acted properly or not. But no such questions were asked, on the other hand, other matters going right upto Moon were raised; as hon. Member Mr. Piloo Mody did. There is no part of this world or the other world which has not touched in the course of this debate. I submit with great respect that much of it was not relevant.

I am very thankful for the very comprehensive discussion which has taken place, and I hope that this matter will be considered in the right spirit in which I have placed it before the House.

MR. CHAIRMAN: You said that Mr. Piloo Mody went upto the Moon.

I was surprised how Mr. Piloo Moay could go upto the Moon. Some hon-members rose—

MR. CHAIRMAN. I will permit only two or three members to ask a question each.

भी ईव दर चौभरी: क्या शान्तिपूर्ण सत्या-ग्राहियों ने जनता ने सरकारी भवनों में लूटपाट की हैं? क्या गया के जिलाधीश ने यह बात नहीं कही है कि "वेखते गोली मार वो?" यदि यह बात कही है भीर जनता ने सरकारी भवनों में लूटपाट भीर भागजनी की है तो एन्क्वायरी क्यों नहीं होती है?

SHRI BHOGENDRA JHA: It seems the Home Minister is convinted and confident about the statement he has In that context, I want to ask what is the objection to advise the Bihar Government to order a judicial inquiry. Now the Home Minister must have got sufficient time. I want to know what transpired on the 16th March between Shri Atal Bihari Vajpayee and three other MPs and the Anand Marg chief in the Patna Camp Jail. According to the Bihar Jail Manual Rules, no talk can take place without an officer being present. also want to know what remedy he is suggesting for the consideration of the House. Some of his party-men have demanded dissolution of the Assembly and imposition of President's rule. What is Government's tlunking on this?

SHRI S. M. BANERJEE: My question is this. What specific objection you have to have a judicial probe by the State Government because it was admitted that only 8 people were killed? After all the same efficers who have murdered these people can not sit in judgement.

I also suggest a judicial probe only because those people who were innocently killed, their family members can get compensation only if it was proved that excessive force was used.

My second question is: what is your opinion about the new Ministers?

M. CHAIRMAN: You can ignore the last question,

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I begin with the last question and come to the first later very soon.

Firstly, I regard this, I hope my Party and other hon. Members will not mind, a step in the right direction.

SHRI BHOGENDRA JHA; More corrupt.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I have told you that if you ask a question, you should take my answer He had no right to ask this question about their being corrupt or not. Many of the Opposition Parties have had opportunities in Bihar, UP and MP. and in Tamil Nadu there is an Opposition Party ruling, and if you want to know what kind of allegations are being made against that good party, you will forget accusing us of anything hereafter. That sort of tuing goes on. This means not that they have gone wrong... (Interruptions) It merely means that toey have been there too long and people do not like their faces-ours or anybody else's. There are different reasons for that and we need not go into them. Let us not imput this kind of dark motives....

SHRI S. M. BANERJEE: Nowadays every Minister's conduct is being investigated by the Cbl before he is made the Minister. Even our Assembly Candidates' conduct was investigated.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT. Is he talking of his own Party?

MR. CHAIRMAN: It will not be proper to discuss the conduct of Ministers here.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Shri Bhogendra Jha wants to know what happened on the 16th or rather earlier than the 16th, when, I suppose, Shri Atal Bihari Vaipayce and others went and saw Prabhat Ranjan Sarkar. My reply is that if the hon. Member takes the trouble of putting down a starred question, I shall gladly answer it....

SHRI S. M. BANER/EE. It may not get in the ballot.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT. That is another matter. That is a matter of luck. Better luck next time, I would say.

SHRI SAMAR GUHA: If a shortnotice question will be accepted, I will put it.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: The debate was to end at 3.30 p.m. Instead of 3.30 now it is 5.30 p.m. Therefore, please forgive me and let mc quickly answer the remaining questions.

The hon. Member wants to know as to what is the remedy. I would like to answer that question by putting another question. Remedy what? We are dealing with a situation which has arisen in the country in the most unexpected manner. What kind of remedy do you want? You know situations have arisen in this country for historical reasons, for reasons beyond our control for what are called. Asmanı Sultanı, that is icasons of nature. Extraordinary rise in the price of c-ude and terribly high price rises have taken place in a number of other commodities, and if you ask me why these things have happened, my reply is, I am not able to answer that question.

Two questions my young friend has asked. He wants to know..

SHRI BHOGENDRA JHA rose.

MR CHAIRMAN: No please. You have asked your questions No discussion please.

SHRI VIKRAM MAHAJAN (Kangra). You cannot allow the same member to go on asking question after question. He was given two opportunities before.

SHRI BHOGENDRA JHA: This will help you. The question is: your Party has demanded President's rule. I want to know whether you intend that or not.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: This question does not arise.

SHRI BHOGENDRA JHA: Your Party has raised it.

Situation in

Bihar (Disc.)

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Then do not listen to such questions. Mr. Choudhuri said that they were peaceful picketers. Have they the right to peacefully picket or not? If they have the right, then, why were they interfered with? This is what I understood to be his question. How, what happened was this. So long as they remained peaceful picketeers nothing was done to them for three days. It is only when Mr. Bose and two ladies were taken into custody, who were not allowing anybody to go in and the working of the entire telephone exchange had come to a standstill, at that time when the others prevented this van with these three prisoners to be taken out, action had to be taken. One hon. Member here said that they lay down on the road just in front of it. Now if that happensand that is what happened-action has to be taken. So, that is my answer to his first question.

Now I come to the question about "shoot at sight". My friend-not so a friend,-hon. Member Shri Jyotirmoy Bosu takes particular pleasure in finding a case for breach of privilege. He is in search for some breach or other even if it does not exist. And that day, to make a long story short, I said, with due respect to Members that I was sorry if anything wrong had happened and I said that I did not mean any harm or to mislead the House. The hon, gentleman intervened and then I made a statement. In his letter, he quoted only part of the relevent portion, the upper portion only and not the lower portion. Anyway, I will write that in my reply to him. I wanted to give the facts. The facts are clear. No order was given to shoot at sight. The question was whether such an order was given to shoot at sight.

Now these English words something according to the English Dictionary. The words 'shoot at sight' mean, 'shoot at sight' and nothing else. So, I have said, no order was given to shoot at sight.

Further, no announcement was made telling the people that those who violate the curfew would be shot at. Curfew on the 12th was not there; it came later on. A warning was however given that those indulging in loot and arson were likely to be shot at. And, the A.I.R. Patna did not make any announcement regarding shoot at sight. That is all, Sir. that I have to say.

MR. CHAIRMAN: Now we will Private take up Introduction of Members' Bills Shri Vishwanath Pratap Singh.

17,34 hrs.

RETIRED ARMY SOLDIERS RE-EMPLOYMENT BILL*

VISHWANATH PRATAP SHRI SINGH (Phulpur): Sir, I beg inove for leave to introduce a Bill to provide for the re-employment of retired Army soldiers in the various forces constituted and maintained by the Central and the State Govcrnments.

MR. CHAIRMAN: The question is: "That leave be granted to intro-

duce a Bill to provide for the reemployment of retired Army soldiers in the various forces constituted and maintained by the Central and the State Governments."

The motion was adopted.

SHRI VISHWANATH PRATAP SINGH: I introduce the Bill

^{*}Published in Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 2, dated 19-4-74.

17.341 hrs.

PREVENTION OF FOOD ADULTE-RATION (AMENDMENI) DILL*

[Insertion of new sections 4A, 4B, ETC.]

SHRI VISHWANATH PRATAP SINGH (Phulpur): Sir, I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Prevention of Food Adulteration Act. 1354

MR. CHAIRMAN: The question is

"That leave be granted to introduce a Bill further to aniend the Prevention of Food Adulteration Act. 1954"

The motion was adopted.

SHRI VISHWANATH PRATAP SINGH: I introduce the Bill.

17.35 hrs

ALL-INDIA SERVICES (AMEND MENT) BILL.

[INSERTION OF NEW SECTIONS 2B, 2C LTC.]

SHRI VISHWANATH PRATAP SINGH (Phulpur): I beg to move for leave to introduce a Bill further to emend the All-India Services Act 1951.

MR CHAIRMAN The question is

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the All-India Services Act, 1951"

The motion was adopted

SHRI VISHWANATH PRATAP

SINGH Sir, I introduce the Bill

MR. CHAIRMAN: Shri Hukam Chand Kachwai. He is not here. Shri Hari Singh.

17 351 hrs.

HOMOEOPATHY CENTRAL COUNCIL (AMENDMENT) BILL*

[AMENDMENT OF SECTION 2]

SHRI HARI SINGH (Khurja): I beg to move for leave to introduce a Bill to amend the Homoeopathy Central Council Act, 1973

MR CHAIRMAN. The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to amend the Homoeopathy Central Council Act, 1973"

The motion was adopted.

SHRI HARI SINGH: Sir, I introduce the Bill

17 36 hrs

HOMOEOPATHY CENTRAL COUN-CIL (AMENDMENT) BILL*

[AMENDMENT OF SECTIONS 2, 5, ETC]

SHRI M C DAGA (Pali): I her to move for leave to introduce a Pill to amend the Homoeopathy Central Council Act. 1973.

MR CHAIRMAN: The question in

"That leave be granted to introduce a Bill to amend the Homocopathy Central Council Act, 1973"

The motion was adopted.

SHRI M. C. DAGA: Sir. I intro duce the Bill.

*Published in Gazette of India, Extraordinary, Part II Section 2 dated

^{19-4-74.}

***j69 Bills Introduced CHAITRA 29, 1886 (SAKA) Bills Introduced 370
17.88 hrs. 17.37 hrs.

HOMOPOPATHY CENTRAL COUN-CIL (AMENDMENT) BILL*

[AMENDMENT OF SECOND SCHEDULE]

SHRI M. C. DAGA (Pan): I beg to move for leave to introduce a Bili to amend the Homocopathy Central Council Act, 1973.

MR. CHAIRMAN: The question 15.

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the pathy Central Council Act, 1973".

The motion was adopted.

SHRI M. C DAGA Sir, I introduce the Bill

MR. CHAIRMAN: Shu Madhu Limaye He is not here. Shu Ranu Bahadur Singh He is not here. Shu Panda.

17.37 hrs

CODE OF CIVII. PROCEDURE (AMENDMENT) BILL*

[AMENDMENT OF SECTION 80 AND INSER-TION OF SECTION 80A]

SHRI D. K. PANDA (Phanjanagar): I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Code of Civil Procedure 1938

MR CHAIRMAN The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Cede of Civil Procedure, 1908"

The motion was adopted.

SHRI D. K. PANDA: Sir I introduce the Bill.

*Published in Gazette of India, dated 19-4-74

MOTHER'S LINEAGE BILL contd.

MR. CHAIRMAN: Now, we take up further consideration of the following motion moved by Shri Madhu Limaye on the 5th April, 1974:—

"That the Bill to provide for the right to trace one's lineage from the side of one's mother, be taken into consideration."

There is one amendment in the name of Shri Daga. Are you moving the amendment?

SHRI M C DAGA (Pah): Sr, I

"That the Bill be circulated for the purpose of eliciting opinion thereon by the 3rd August, 1974." (1)

MR. CHAIRMAN: Since Shri Limaye is not here I have given permission to Shri Daga to move his amendment. Shri Madhu Limaye was on his legs last time.

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur): Shri Lima)e has already spoken.

MR CHAIRMAN: But he has not concluded. There is a problem now about the Private Members' Business. The Bihar discussion has taken so long. And so, if we have to take up the Private Members' Business, it mean the House will have to sit upto 8 Oclock I would like to know the pleasure of the House.

THE MINISTER OF PARLIA.
MENTARY AFFAIRS (SHRI K
RAGHU RAMAIAH): I had a talk
with my friends on the Opposite
side I think we shall go on till 18-30
hours if there are speakers. Or else,
let us go on till 18 hours.

Extraordinary, Part II, Section 2,

MR. CHAIRMAN is there anvbody else who wants to speak on Shri Limaye's Bill? I think Shri S. P Bhattacharyya wants to speak on the Bill.

BHATTACHARYYA P SHRI S. (Uluberia); Mr. Chairman, Sir, I rise to support Shri Limaye's Bill to provide for the right to trace ones lineage from the side of one's mother He has brought forward this Bill for a noble cause for the reasons stated in the Bill He has quoted the story of 'Jabali', a maid servant in the ashram of sages Satyakam, the soll of Jabali, was a respected suge son of his mother when questioned about the identity of his father pleaded ignorance, went to his mother when informed that she could not say definitely who his father was, came back and gave a truthful account of what his mother had told him was respected as an honoured sage

The main purpose of the Bill is that in our country, even now, we lo not give the self-respect to the new-born children In our Childrens Adoption Bill we have tried to give some respect to the boys or girls who are born without a proper social curtom Madhu Limaye has brought this thing with a noble ideal so that it must not be compulsory that a how must give his introduction or a female child must give her introduction in the name of her father Mother is sufficient to do that Mother's name is sufficient and that should be honoured 1 filly support it I think respect must be given to the new-born child without considering whether he has a known father or not because a new born child is pure and honest. I fully support the Bill I think Government should consider the mood of the Bill and should give it proper implementation

MR CHAIRMAN Shri M C Daga

श्री मुलबन्द डागा (पानी): समापति जी इस जिल के बारे में मुने दो बार्ने कहती हैं। जो जिल पेस किया गया है, उसके आंबजेक्ट्स कुछ प्रलग हैं भीर जिल की जो जात हैं, उसके जो नेक्सस हैं वह प्रलग हैं। जिल के भावजेक्ट्स में यह कहा गया है

"The concept of "illegitimacy" and the practice of tracing one's lineage solely from the father's side is one such reactionary and fossilized concept. The reactionary attitudes which form the unspelt basis of the present official and non-official practices and decisions of the courts will have to be discarded completely if the egalitarian principles of the Constitution are to inform and elevate our social life"

प्राज तक मैंने कोई भी ऐसा डेनीशन सुप्रीम कार्ट या हाईकोर्ट का नहीं पढ़ा या करी भी ऐसा डेमीशन नहीं दुमा है जिनमें यह कहा हो कि उनके जिटिमेट चाइन्ड का कही नेवाड करने ने या नाम लिखने में इनकार कर दिया हो। ग्राज तक यह बात नहीं हुई कि किसी ने जा कर बह कहा हा कि मरे पिता का नाम मुझे नहीं पता है भौर उसको कह दिया हा कि तुम्हारा रेकाई नहीं करेंगे। मवाल यह है कि हिन्दस्तान के भ्रन्दर, सामाइटी के मन्दर एक घर होता है भीर उसमें पति पत्नी दानों के महत्र में बच्चा होता है, उसकी रक्षा होती है। लेकिन इन् रेजि-टिमेट चाइन्ड की रक्षा करने वाला कीन होगा ? यह एव बड़ा मावल है जैसे मिस्टर बै डर्जी तो जानत हैं कि जिनका कुटुम्ब है, कुटुम्ब के मन्दर बच्चा पैदा होता है या कोई बच्चा पैदा होता है तो वह भकेले न बाप का है न अकेले मा का है, दोनों का है। जब दोनी का संबंध होता है तब बच्चा पैदा होता है और उस चाइल्ड को फैमिनी या वह कुट्म्ब में खेन करता है। . (ज्यवयान) शपनी सोसाइटी के

अन्दर जो फेमिली लाइफ है वह एक नोश इन्टीट्यूशन है भीर उस इंस्टीट्यूश की कायम रखने के लिए यह जरुरी हो जाता है कि या फिर ऐसा प्रापाच होना चाहिए देश के अन्दर उनकी और ने कि फेमिनी लाइफ को खत्म कर देना चाहिए भीर जैसे कि हमारे कई लाग जो भादी किए हुए नहीं हैं ऐस ही उनको कहना चाहिए कि लाग भादी न करे, मैरिज की इस्टीट्यूशन का खत्म कर दिया जाये । यह बहुत वडा मबाल इसमें पैदा हाता है। आज प्राप इस बिल का पास करने के पहल इल्लेजिटिमेसी का बढ़ावा देना चाहते हैं और उसके लिए बाप यह नरीका भी श्रक्तवार कर ले कि मेरिज जा एक माणल इस्टीट्युशन है उसका भाग खत्म करदे ता यह बात कुछ समझ मे नहीं घानी हैं। में ग्रभी इस बात का समझाने को कोशिश करूगा जितना मैं किताबा ने ममझता हु। इसका जा परपज है वह यह है कि

"After the coming into force of the Act, it shall be lawful for any citizen of India to refuse to fill a form requiring him or her to give him or her father's name or her husband's name and which does not give him or her the option to give the name of his or her mother"

यह प्रश्न और तरह का है। याजकल का समाज सब समझता है। लेकिन समाज से यह जो भाग कहने हैं कि इल्लेजिटिसेट जो चोल्ड्रेन हैं समाज में उन के लिए भावर होना चाहिए तो यह तो विश्वकुल मानी हुई बात है कि पाजकस का समाज भगना विकास कर रहा है, नवा शाव यह कहना शरू कर वेंसे कि साज से हिन्दूस्तान के झदर सारी फेमिनीज जो है जनके अदर शादी नहीं होनी चाहिए?

श्री राम रतन झमाँ (वादा) मानृकत्ता न्यक समाज श्री स्थापना हो, यह उन्होंने तिखा है और मातृ सत्तात्मक तथा पितृ-सत्तात्मक दोनो समाज हमारे यहा पहले से चले भा रहे है। श्राप जानने नहीं हैं।

श्री मूलकाय डाका: मैं जैसा समक्षा हू वह बता रहा हूं। जो एम॰ पी॰ सब बैठे हैं इन का नाम भा के नाम से लेना चाहिए, यह अञ्जी बात आप कह में हैं.. (क्यतचान) ..

मैन यह कहा कि चाइल्ड पर मा और नाप दोनो का ग्रधिकार है भीर दोनो का जानाम है उन बोनों के नाम से होना चाहिए। ग्राप जो यह कहना चाहते है कि अगर कोई इल्लेजिटिमेट चाइल्ड हा गया है समाज मे तो उसका निरादर नही हाना चाहिए, यहा तक तो मैं मानजा हू। लेकिन हमारे देश के अन्दर और जहा डाइ वे सं की प्रथा है यू० एस० ए० के ग्रन्दर 70 परमेट **ढाइबोर्स व**हा होने लग गए। वहा क्या हालत हो गई? वहा पर फेंमिली इन्टीट्यूशन खत्म हो गई, लडके का स्वास्थ्य विकास वधी हो सकता है अब मां भीर बाप बीनों का प्रेम होता है... (व्यवसाम).... ग्राप क्या चाहते हैं ? आप कह लीजिए तब मै बोस, . . . (व्यवचार) . . .

श्रिं। मूल चन्द्र डागा

If he says this is not the purpose of the Bill, let him say what the purpose is ... (Interruptions) Let him say what the purpose of the Bill is and then I shall follow.

MR CHAIRMAN: If I permit him to speak in that case he will not be able to continue his speech

SHRI R R. SHARMA. Kindly give me a few minutes.

He can have his say afterwards. [धो मूल चन्द रागा]

इस के ग्रन्दर उन्होंने क्या कर दिय। माग जाने के बाद कि भारत का भपन वित का नाम बनाने की जरूरत नहीं है। उन्होंने यह कह दिया कि औरत को यह भी जबरी नहीं है कि अपने हम्बेड का नाम बनाए। प्रगर उन का काई हस्बंब है तो उम का भी नाम लेने सं इनकार कर दे।

हस्बंड का माननीय सदस्य नाम लेते नहीं हैं हिन्दू समाज मे।

भी मूल चन्द डागा : कर दिया और शायद यह इस ने अन्दर परपज है

'to refuse to fill a form requiring him or her to give his or her father's name or her husband's name and which does not give him or her the option to give the name of his or her mother"

द्मगर चाज हिन्दुस्तान में हम ने यह प्रवा गुरू कर बी कि हर अगह टाइबोर्स हो जाये और उससे पूछा जाये कि तुम्हारा जो लड़का हुम। या ती तुम्हारै हस्बैट का क्या नाम था, वह पह कि करे इस्बैड

का नाम मही पूर्क सकते, तो मैं संयक्ता हु कि जी फीक्सी संदर्भ हुक्ये असावा है, नो डुछ सस्कृति हसने बनाई है और भारतीय संस्कृति के जो पुजारी हैं जनसंब वाले क्या वे बाहते हैं इस की मिली इंस्टीट्यूसन की नहीं मानना चाहिए? में तो धनी तक वह समझताहू जहां तक इस विल का सम्बन्ध है कि जो बच्चे कहीं किसी कारण से इल्लेजिटियेट हो जायें उनका निरावर समाज में नहीं होना चाहिए-इस प्याइन्ट को मैं भी मानता हू। सगर कोई बच्चा इल्लेजिटिमेट ढग से हो गया है तो उसका लालन पालन गवर्नमेट या समाज करे उसमे रुकावट नहीं होनी चाहिए। में नमसता हु इसने लिए किसी प्रकार का डिस्किमिनेशन कास्टीट्यूशन में भी नहीं है। अगर कार्ट लडका इल्लेजिटियेट है ता मैं समझता हू कास्टीट्यूबन में कही यह प्राविधान नहीं है नि उसकी मधिकार कम हैं। कास्टीट्यूशन म उसक बराबर अधिकार हैं। एक सिटिजन के जो राइट्स है वही उसके भी हैं। मैं न ता विशी भी कानून में नहीं पढ़ा है जिसमें यह हो। **ब्राप यह कहेंगे कि सन्सेमन बीर इनहे**रिटेन्स का लागुनहीं होता है तो मैं समझा। ह यह मवाल ऊपर है और ला धाफ इनकेरिटेम्स और ला श्राफ सक्सेंगन का साम् करने क लिए हमे सीचना होगा। जा हमारी फीमशी लाइफ है, जो हमाग एक इस्टीट्यूमन बना हुआ है उसने श्रमकार है। जैसे पहले महायामा होते वे बनके एक हो बीवनी बेडेंड बाइब होती की धीराव्यह रखेन

भी रखते वे जिनसे क्ये होते थे तो उनकी भी हक ही जामें, इस बात का सवाल है। बाप जब इस्टीट्यूकन को बत्य करवा चाहते हैं। तीयकी वेडेड वाइफ की तो देना बाहते हैं लेकिन कोई पास रखता है, उससे बच्चा ही गया, वह इस्लेजिटिमेट बाइस्ड है उसका भी अधिकार होगा, में समझता हूं उसको अधिकार नहीं होना चाहिए सकसेबन और इनहरिटेन्स में। जो बिल रखा है उसमें यह है:

"After the coming into force of this Act, it shall be lawful for any citizen of India..."

ला मिनिस्टर साहब बतायेंगे इल्लेजिटिमेट नाइल्ड के बारे में कि कौन सी बात
किस बिल में है। वह फार्म फिल करके
देता है, उममें फादर का नाम नहीं है,
वह लिखकर नहीं देता है तो क्या उभके
लिए गवर्नमेंट सर्विस मना है? कही
मना नहीं है। तो यह जो इल्लेजिटिमेट
बाइल्ड होते क्यों हैं समाज में? कुछ
लोग होते हैं जिनकी फैमिनी नाइफ नही
होती है। ग्रपने को बड़ा कान्तिकारी
साबित करने के लिए यह बिल पेश किया है।
तो हमारा जो फैमिनी लाइफ का इंस्टीट्यूणन
है...

भी एस॰ एम॰ मनर्थी (कानपुर) : भाष समझते हैं मधु निमये भी की फैमिली लाइफ नहीं है ।

भी जून कव दावा: इसमें मधु तिमये जी की कैजिनी का सवाल नहीं है। हम जनरल जिल्लिक की बात कर रहे हैं। 426 LS.—18. 'What is legitimacy?

"By determining the social placement of the child, the rules of legitimacy help to define the role obligations of adults to the child. The infant is a symbol of many important role functions among adults. It indicates an intimacy between parents, and its existence makes continuing demands on a network of adults."

SHRI S. M. BANERJEE: Read the whole thing. You are reading only a portion.

SHRI M. C. DAGA: Yes. It says:

"If the child has no acknowledged father, or the "wrong" father, these obligations are ambiguous or unmet, or run counter to already established duties. The aready married father of an :llegitmate child cannot take care of it without failing to some extent in his obligations to this own family, even if he is wealthy. The child whose parents are not married does not belong to the father's family, and neither the father nor his family needs to meet more than minimal legal obligations to the child. The child's position is ambiguous,...."

MR CHAIRMAN: If you go on reading it, it will consume the entire time. If you want to read it in full, you may read it to them outside the House.

श्री मृल का बाता: उन्होंने बताया कि इटली में जब कानून लागू किया उमके पहले 1956 में इस्लेजिटिमेट लाइल्ड 16 परसेन्ट वे श्रीर 1968 में 58 परसेन्ट हो गए। पेक में 43 परसेन्ट इस्लेजिटिमेट लाइल्ड हैं। इससे पता चलता है हिन्सुस्तान में इस कानून को लागू करने से क्या फायदा हो सकता है। कोलंबिया में 28 परसेन्ट, पनस्ता में 71 परसेन्ट हैं। हैं ने

यह बताने की कोशिश की है कि उन कन्द्रीज मे क्या हालत हुई है। जहा पर इल्लजिटिमेट चिल्ड्रेन पैदा होते है वहा कोई ज्यादा जान्ति हई हो, ऐसी बात नहीं है। जहां पर फैमिली लाइफ ठीक नहीं होती है वहा पर ही यह ज्यादातर होता है।

MR CHAIRMAN How long will you take to conclude' Or are you concluding?

SHRI M C DAGA 15 minutes more

MR CHAIRMAN We have to rise at 6 O'clock Therefore, I would like to know the pleasure of the House. whether they would like the House to continue to sit for some more time

SHRI K RAGHU RAMAIAH We may adjourn

18 00 hrs

The Lok Sabha then adjourned till Fleven of the Clock on Monday, the April 22, 1974/Vaisakha 2, 1896 (Saka)